प्रकाशक:—
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट
बीकानेर

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
मूल्य—४ रु०

मुद्रक:—
महावीर मुद्रणालय,
अलीगंज (एटा)

सुविहित चारित्र-चूड़ामणि, प्राचीन ग्रन्थोद्धारक
स्वाध्याय रत आत्मार्थी गणिवर्य

श्री बुद्धिमुनिजी महाराज

के कर कमलों में श्रद्धा व
भक्ति पूर्वक सादर

समर्पित

—अगरचंद नाहटा

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एव भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारभ से ही मिलता रहा है ।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध मे विभिन्न स्रोतों से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लवे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारभ करना सभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम सस्कर्ता

२ आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी सग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३–४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेपाक' बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा हैं। इसका अङ्क १–२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपाक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यो की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अक मे प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैंकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाऐं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिहजी की काव्य-साधना के संबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानमारजी के ग्रथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके है।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठोड आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभापक क्रमश: राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद, थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश मे आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री वदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (सपा० वदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० वदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थाड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके सस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट वडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचद खजाञ्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का सपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमाहत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन: मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन. उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०.

जिनराजसूरि कृति-कुसुमांजलि

अनुक्रमणिका

सं०	कृतिनाम	गाथा	आदि पद	पृष्ठांक

श्री वर्तमान जिन चतुर्विंशतिका

श्री विरहमान विंशति जिन गीतम्

श्री ऋषभादि तीर्थङ्कर गीत

रामायण सम्बन्धी पद

आत्म-प्रबोधक गीत

जैनाचार्य जिनराजसूरि और उनकी साहित्य सेवा:—

राजस्थान मे काफी प्राचीन समय से जैन-धर्म का प्रचार रहा है। समय समय पर अनेको जैनाचार्यों और विद्वान मुनियो ने यहां के लोगो को अपने उपदेशो द्वारा सद्धर्मानुयायी बनाया। ओसवाल, पोरवाल, श्रीमाल, पलीवाल, खडेलवाल आदि अनेक जैन, वंश, जाति व गोत्र, जो आज सारे भारतवर्ष मे फैले हुए हैं, वे अधिकांश राजस्थान के ही हैं। कलापूर्ण मदिर, मूर्तियों, चित्रो, हस्तलिखित ग्रंथो आदि का राजस्थान मे जैन मुनियो और आचार्यो द्वारा प्रचुर परिमाण मे-निर्माण हुआ। आज भी सैकड़ो छोटे-बडे ज्ञानभडार, जैन-मदिर राजस्थान मे पाए जाते हैं। अनेकों विद्वान जैन ग्रंथकार राजस्थान में हुए हैं। जिन्होंने प्राकृत संस्कृत, अपभ्रंश राजस्थानी, हिंदी, गुजराती, पजाबी, सिंधी भाषा मे रचनाएं की है। यहां के कई विद्वान तो बगाल तक पहुँचे और वहा भी राजस्थानी एव हिंदी मे ग्रन्थ बनाए। उनके द्वारा कुछ फुटकर भजन बंगला भाषा मे भी रचे गये हैं, इस तरह राजस्थान के जैन कवियो का रचा हुआ साहित्य बहुत विशाल और विविध प्रकार का है-साहित्य रचना मे उनका प्रधान उद्देश्य लोक, कल्याण का रहा हैं। विद्वत्ता-प्रदर्शन, धन एवं यश की प्राप्ति उनका उद्देश्य नही था। जन साधारण के लिए रचे जाने के कारण उनकी रचनाओ की भाषा भी सरल होती थी। प्राकृत एवं संस्कृत ग्रन्थो की भाषा-टीकाएं भी राजस्थानी-गद्यमे काफी

लिखी गई हैं। कुछ कथा-ग्रंथ और पट्टावलियाँ भी राजस्थानी-गद्य मे प्राप्त हैं।

१७ वी शताब्दी के राजस्थानी जैन कवियो मे मालदेव, पार्श्वचन्द्रसूरि, विनयसमुद्र, समयसुन्दर, साधुकीर्ति, कनकसोम, हीरकलश, कुशललाभ, गुणविनय, सूरचंद, सहजकीर्ति, लब्धि-कल्लोल, श्रीसार आदि अनेक कवि हो गए हैं। जिनराजसूरि भी १७ वी के उत्तरार्द्ध के उल्लेखनीय कवि हैं। इनका जन्म बीका-नेर मे ही हुआ था। १६ वी शताब्दो के मस्तयोगी एवं प्रखर समालोचक सुकवि ज्ञानसार जो ने इनके लिए लिखा है 'गुजरात माँ ए कहिवत छै आनदघन टंकसाली, जिनराजसूरि वावा तो अवध्य बचनी' अर्थात् इनके वचनों के प्रति लोगो का बहुत ही आदर भाव था। आपकी चौवीसी, वीसी के गीतों मे भक्तिरस सराबोर है। तो अन्य पदों मे नीति एवं धर्म का प्रेरणाप्रद सदेश है। प्रस्तुत ग्रंथ आपकी रचनाओ का सग्रह है अतः आपकी जीवनी और रचनाओ के सम्बन्ध मे यहां संक्षेप में प्रकाश डाला जाता है।

गुरु-परम्परा—

१७ वीं शताब्दी के खरतरगच्छ के आचार्य जिनचंद्रसूरि जी बड़े ही शासन-प्रभाविक होने से चौथे दादासाहब के नाम से श्वेताम्बर-जैन समाज में सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। उन्होने सं० १६१३ में बीकानेर मे आकर जैन साधुओ के शिथिलाचार के निवारण का महान् प्रयास किया था। सं० १६४८ में सम्राट अकबर ने धर्मो-पदेश सुनने के लिए इन्हे आमन्त्रित किया था और आप खंभात से विहार कर लाहोर पधारे थे। सम्राट अकबर ने इनके प्रति बहुत ही श्रद्धा प्रदर्शित की और जीव-हिंसा निवारण संबंधी फरमान जारी किए। असाढ़ सुदी ८ से चतुर्दशी तक ७ दिन

अकवर के विशाल साम्राज्य में जीवहिंसा निषेध कर दी गई। इसी प्रकाँर 'खभात के समुद्र से १ वर्ष तक कोई भी मछली नहीं पकड सकता' ऐसा फरमान जारी कर दिया गया। इतना ही नही सम्राट अकवर ने जैन धर्म मे जो सवसे अधिक महत्त्वशाली पद 'युगप्रधान' है उससे आपको विभूषित किया इस प्रसंग पर वीकानेर के मंत्री कर्मचंद वच्छावत ने ६ हाथी, ६ गाँव, ५०० घोड़े आदि कुल मिलाकर सवा करोड का दान दिया। १६६८ में जव किसी कारण से सम्राट जहागीर ने समस्त श्वेताम्वर साधुओं को देश से निकालने का हुक्म जारी कर दिया तो सारे जैन-संघ में खववली मच गई। तब जिनचंद्रसूरि पाटण से आगरे पहुँचे और जहाँगीर से मिलकर उस घातक आदेश को रद्द करवाया।

ऐसे महान् आचार्य के शिष्य वाचक मानसिंह हुए जिन्हें सम्राट अकवर और जहाँगीर तथा अनेक राजा महाराजा सम्मान देते थे। सम्राट अकवर के आग्रह से वे काश्मीर-विजय के समय सं०१६४८मे उनके साथ गए थे और श्रीपुर काश्मीर तक इनके उपदेश से सम्राट ने अमारि प्रवर्तित की उनके साध्वाचार से प्रभावित होकर सम्राट अकवरने काश्मीर से लौटने पर जिनचंदसूरिजी से इन्हें आचार्य पद दिलवाया था। जिनचाँदसूरि जी के 'युगप्रधान' पद का महोत्सव और मानसिंह जी का आचार्य-पद महोत्सव मंत्रीश्वर कर्मचंद ने एक साथ ही किया था। आचार्य पद के बाद मानसिंह जी का नाम जिनसिंहसूरि रखा गया। अकबर ने जव जिनचंदमूरि जी को बुलाया था तो आप सूरिजीके आदेश से उनसे पहले लाहौर पहुच कर सम्राट से मिले थे। उन दिनों शाहजादा सलेम के मूलनक्षत्र मे कन्या हुई थी। इसके दोष निवारण और शान्ति के लिए अष्टोत्तरी शान्ति-स्नात्र महोत्सव वाचक मानसिंहजीने करवाया था। जिनराजसूरिजी उन्ही जिनसिंहसूरिजी के पट्टधर शिष्य थे।

प्रस्तुत ग्रंथ के अंत में जिनराजसूरि की विद्यमानता में ही रचित जयकीर्ति रचित जिनराजसूरिरास प्रकाशित किया गया है उसका संक्षिप्त सार इस प्रकार है--

जिनराजसूरि जी का जीवन-परिचय—

बीकानेर नगर में बोथरा गोत्रीय धर्मसी साह निवास करते थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम धारलदेवी था, दम्पति सुखपूर्वक सासारिक सुख भोगते हुए रहते थे। सं० १६४७ वैसाख शुक्ला ७ को धारलदेवी के शुभ लक्षणवान, सुन्दर पुत्र जन्मा[1]। पिता द्वारा नाना प्रकार के उत्सव किए जाकर शिशु का नाम 'खेतसी कुमार' रखा गया। बाल्यकाल मे ही कुमार समस्त कलाओ का अभ्यास कर निपुण बन गए।

एक बार बीकानेर मे खरतर-गच्छाचार्य श्री जिनसिंहसूरि पधारे। उनका धर्मोपदेश सुन वैराग्य-वासित होकर कुमार ने दीक्षा लेने के लिए माता-पिता से आज्ञा माँगी। बड़ी कठिनता से अनुमति प्राप्त कर बड़े समारोह के साथ सं० १६५७ मार्गशीर्ष कृष्णा १०[2] के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। उनका नाम राजसिंह रखा गया। तत्पश्चात् माँडल के तप कराके छेदोपस्थापनीय चारित्र दे कर उनका नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया गया।

राजसमुद्र जी की बुद्धि बडी कुशाग्र थी। अल्पकाल मे न्याय व्याकरण, तर्क, अलंकार, कोष, ४५ आगम आदि पढ़कर विद्वान् हुए। तेरह वर्ष की अल्पावस्था मे चिन्तामणि तर्क-शास्त्र आगरे मे पढा!

१- रास का प्रथम पत्र न मिलने से यहा तक का उल्लेख श्रीसार-कृत 'जिनराजसूरि रास' से लिया गया हैं।

२- श्रीसारकृत रास में स० १६५६ मि० मा० शु० १३ लिखा है। इस रास की प्रति में भी पहले यही मिति लिखकर और फिर काट कर उपर्युक्त मिती दी हैं। अन्य प्रबंध में सं० १६५७ मि० मा० सु० १ लिखा है।

युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने सं० १६६७[1] मे आसाउलि मे राजसमुद्रजी को वाचक पद से अलंकृत किया। वाचकजी ने समसद्दी-सिकदार को रजित करके २४ चोरों को बधन-मुक्त कराया। घघाणी ग्राममे प्रतिमाओ की प्राचीन लिपि पढी। मेडता मे अम्बिकादेवी सिद्ध हुई। आगे संघपति रतनसी, जूठा और आसकरण के साथ तीनवार शत्रुञ्जय की यात्रा की थी, चौथी वार देवकरण के संघ के साथ सिद्धिगिरि स्पर्शना की।

वाचकजी को बडे बडे राजा, महाराजा, राणा मुकरबखान नवाव आदि वहुमान देते थे। मुकरवखान ने सम्राट के समक्ष इनकी वडी प्रसंशा की।

सम्राट जहागीर के आमन्त्रण से श्री जिनसिंहसूरिजी बीकानेर से विहार कर मेडता पधारे। वहाँ सूरिजी का शरीर अस्वस्थ रहने लगा। अन्त समय मे वाचक जी ने वडी भक्ति की और सूरिजी के श्रेयार्थ गच्छ पहिरावणी करने,ज्ञानभडारमे ६३६००० (ग्रथाग्रन्थ) पुस्तकें लिखाकर रखने और ५०० उपवास करने का वचन दिया। सूरिजी के स्वर्गवासी हो जाने पर सं० १६७४ का० शु०७ शनिवार को राजसमुद्र जी को उनके पट्ट पर स्थापित किया गया। संघपति आसकरण ने उत्सव किया। आचार्य हेमसूरि ने[2] सूरिमंत्र दिया। भट्टारक श्रीजिनराजसूरि नाम रखा गया दूसरे शिष्य श्रीजिनसागरसूरिजी को भी आचार्य पदवी दी।

कवि ने पदस्थापना महोत्सव करने वाले सुप्रसिद्ध चोपडा शाह आसकरण का यह विवरण लिखा है–जिनके घर में परम्परागत वड़ाई थी। शाह माला संग्राम की भार्या दीपकदे के पुत्र कचरे ने

१- प्रबंध मे सं० १६६८ का उल्लेख है। इस रास में मूल गाथा में संवत् न लिखकर किनारे पर लिखा है।

२- प्रबंध मे इन्हे पूर्णिमा गच्छीय लिखा है।

बहुत धर्म कार्य किए। आसकरण[1] के पिता अमरसी और माता अमरादेवी और स्त्री का नाम अजायबदे था। अमीपाल, कपुरचंद भाई, ऋषभदास और सूरदास नामक बुद्धिशाली पुत्र थे। संघपति आसकरण चोपडा ने शत्रुंजय संघ, जिनालय निर्माण, प्रदस्थापना महोत्सव आदि धर्म कार्य किए।

भट्टारक श्री जिनराजसूरिको जेसलमेरके राउल कल्याणदासने विनति करके जेसलमेर बुलाए, स्वागतार्थ कुमार मनोहरदास को भेजा। भणसाली जीवराजने प्रवेशोत्सव किया। सूरिजीने चातुर्मास किया, उनके प्रभाव से वहां सुकाल हुआ। बहुतसे धर्म कार्य हुए पर्युषण मे अमरसिंह के पुत्र जीदासाह ने पौषध वालों को १ सेर खांड और नकद रुपये की प्रभावना की। राजकुमार मनोहरदास प्रतिदिन वन्दना करने आते, राउलजी बहुमान देते थे।

संघपति थाहरू शाह[2] जो श्रीमलशाह के सुपुत्र थे, ने लोद्रव-

१- मेडता में इन्होंने शांतिनाथ जिनालय बनवाकर अनेक बिम्बो की प्रतिष्ठा जिनराजसूरि से करवाई थी। प्रतिष्ठा लेख नाहर जी के जैन लेख संग्रह मे लेखांक ७७१, ७८४, ७८७में प्रकाशित है जिनमें इनके सम्बन्धमें लिखा गया है कि गणधर चोपडा गोत्रीय अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्न सं प्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युगप्रधान श्री जिनसिंहसूरि पट्टनन्दिमहोत्सव विविध धर्म कर्त्तव्य विधायक सं० आसकरणेन। × × 'स्वयं कारित मम्माणीमय विहार-शृंगारक श्री शांतिनाथ बिम्बंकारित (सं० १६७७ जेठ वदि ५ गुरुवारका प्रतिष्ठा-लेख)

२- इनके सम्बंध में स्वयं जिनराजसूरि जी ने एक गीत बनाया है जो इसी ग्रंथ के पृष्ठ ६७ मे प्रकाशित हैं। इनकी वंश परम्परा और धार्मिक कार्यों के संबंध में महोपाध्याय समयसुंदर के शिष्य वादी हर्षनंदन ने एक प्रशस्ति बनाई है। सं० १६७५ मिगसर सुदि १२ गुरुवार को इन्होंने लोद्रवे तीर्थ का उद्धार करवाया और मूर्ति की प्रतिष्ठा जिनराजसूरि से करवाई। उनके लेख नाहरजी के जैन लेख संग्रह नं० २५४४,

पुर के मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और सं० १६७५ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ शुभ मुहूर्त में सूरिमहाराज से प्रतिष्ठा करवाई। कवि ने थाहरू शाह के धर्मकार्यों का वर्णन इस प्रकार किया है—लौद्रवपुर का जीर्ण प्रासादोद्धार, ग्रामदो में खरतर गच्छीय ज्ञानभंडार कराया, दानशाला खोली, चारो अट्ठाहियो में ४४०० जिन प्रतिमाओ की पूजा, सातो मन्दिरो मे ध्वजा चढाई, गीतार्थों के पास सिद्धात श्रवण, त्रिकाल देवपूजा आदि धर्म कार्य करता था। लोद्रवपुर प्रतिष्ठा—समय देशान्तरो का संघ बुलाया। तीन रुपये और अशर्फियो की लाहण की, राउल जी को विपुल द्रव्य भेट किया, जाचको को मनोवांछित दिया, हरराज और मेघराज सहित चिरजीवी रहे। उस समय जीदाशाह ने २००) रुपये देकर इन्द्रमाल ग्रहण की। जीवराज भी पुत्र सहित शोभायमान था।

इसके पश्चात् अहमदावाद के सुप्रसिद्ध संघपति रूपजी को चिट्ठी नफरइ (डाकिया) ने लाकर दी। शत्रुञ्जय प्रतिष्ठा के लिए सूरिजी को बुलाया था। तब करमसी शाह और माल्हु अरजुन ने उत्साह पूर्वक संघ निकाला। गांव गांव में लाहण करता हुआ संघ श्री जिनराजसूरिजी के साथ शत्रुञ्जय पहुचा। युगादि जिनेश्वर के दर्शन कर संघ ने अपना मनुष्य जन्म सफल किया।

अब कवि रूपजी शाह केविषय में कहता है कि अहमदावाद के खरतर गच्छीय श्रावक सोमजो और शिवा वस्तुपाल तेजपाल की भाँति धर्मात्मा हुए, जिन्होने सं० १६४४ मे शत्रुञ्जय का संघ निकाला। अहमदावाद में महामहोत्सपूर्वक जिनालय की भी प्रतिष्ठा करवाई। खभात, पाटण के संघ को आमंत्रित कर

२५६१, २५६८, २५७०, २५७२, में प्रकाशित है। सं० १६८२ और १६९३ में भी थाहरूशाह ने गणधर पादुका व मूर्तियो की प्रतिष्ठा, जिनराजसूरि जी से करवाई थी। इनके स्थापित ज्ञानभंडार जेसलमेर मे हैं।

पहरावणी की। राणकपुर, गिरनार, सेरिसइ गोडीपुर, आबू आदि तीर्थों की संघ सहित यात्रा की, साधर्मी वात्सल्य किया। खरतर गच्छ संघ मे लाहण की प्रत्येक घर मे अर्द्ध रुपया दिया। स्वधर्मियो को बहुत बार सोने के वेढ पहनाए। शत्रुञ्जय पर चैत्य बनवाया। सोमजी शाह के रतनजी और रूपजी दो पुत्र थे। रतनजी के पुत्र सुन्दरदास और शिखरा सुप्रसिद्ध थे। रूपजी शाह ने शत्रुञ्जय का आठवाँ उद्धार कराके खरतर गच्छ की बडी ख्याति फैलाई। सं० १६७६[1] वैशाख शुक्ला १३ को चौमुखजी की प्रतिष्ठा श्रीजिनराजसूरि जी के हाथ से करवाई[2] मारवाड, गुजरात का संघ आया। याचक, भोजक, भाट, चारणों को बहुतसा दान दिया।

श्रीजिनराजसूरिजी ने संघ के साथ विहार कर नवानगर में चातुर्मास किया। भाणवड मे शाह चांपसी (बाफणा) कारित बिम्बो की प्रतिष्ठा की। गुरु श्री के अतिशय से बिम्ब से अमृत झरने लगा। जिस से अमीझरा पार्श्व प्रसिद्ध हुए। मेड़ता के संघपति आसकरण ने आमंत्रण कर सं० १६७७[3] मे श्री शांतिनाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई। बीकानेर चातुर्मास कर सिंधु पधारे। मुलतान, मेरठ, फतेपुर, देरा के संघ ने सामैया कर प्रवेशोत्सव किया। मुलतानी संघ ने बहुतसा द्रव्य व्यय किया। गणधर शालिभद्र, पारिख तेजपाल ने संघ निकाल कर सूरिजी को देरावर श्री जिनकुशलसूरिजी की यात्रा करवाई।

१- शिलालेखो में गुजराती पद्धति से सं० १६७५ लिखा है।

२- शिलालेखो में जेठवदी ५ लिखा है।

३- इसके प्रतिष्ठा-लेख जिनविजय जी सम्पादित 'प्राचीन जैन-लेख संग्रह' में प्रकाशित हैं।

सूरिजी ने पंचपीरो को साधन किया, बीकनेर[1] पधारे। करमसी शाह के आग्रह से केरिणी चौमासा करके जेसलमेर पधारे।

सा० अर्जुनमाल्हू ने प्रवेशोत्सव किया। नंदी स्थापन कर कर्मसी शाह ने चतुर्थव्रत अंगीकार किया। जेसलमेर चातुर्मास कर पाली पधारे। संघपति जूठा कारित चैत्य की प्रतिष्ठा की। नगरशेठ नेता ने गुरु श्री को वंदन किया। चातुर्मास पाटण किया। वहा से अहमदाबादी संघ के आग्रह से वहाँ चातुर्मास किया। अनेको को पाठक, वाचकपद एवं दीक्षा प्रदान की।

इससे पूर्व अम्बिकादेवी ने प्रत्यक्ष होकर 'आपको भट्टारक पद पाँचवे वर्ष प्राप्त होगा।' ऐसा भविष्यवाणी की थी वह एवं अन्य पचास बोल फलीभूत हुए। अम्बिका हाजिर रहकर आपको सानिध्य करती थी। जयतिहुअण के स्मरण से धरणेन्द्र ने 'आज से चौथे वर्ष फागुण सुदि ७ को आप भट्टारक पद पाओगे' ऐसा कहा था। श्री जिनसिंहसूरिजी के स्वर्गवास की सूचना तीन दिन पूर्व आपको ज्ञात हो गई थी। बाल्यावस्था मे भी अपने कथनानुसार गच्छ पहरावणी, ६३६००० ग्रंथ भंडार मे रखना, ५०० उपवास करना आदि कार्य सम्पन्न किए।

१- बीकानेर मे आपकी प्रतिष्ठित अनेक मूर्तिया सं० १६७५ से १६९९ तक की प्रतिष्ठित की हुई उपलब्ध हैं, जिनके लेख हमारे 'बीकानेर-जैन लेख संग्रह' में प्रकाशित हैं। बीकानेरके सुप्रसिद्ध आदीश्वरजी के मंदिरमें सं० १६८६के चैत्र बदि ४ को आपकी प्रतिष्ठित जिनसिंहसूरि चरणपादुका और जिनचंद्रसूरिजी की मूर्ति है। सं० १६८७ ज्येष्ठ सुदि १० की प्रतिष्ठित भरत बाहुबलि प्रतिमा और सं० १६९४ फागुण बदि ७ को प्रतिष्ठित पुंडरीक स्वामी, एवं सुविधिनाथ की मूर्तिया है। सं० १६८६ की प्रतिष्ठित मरुदेवी मूर्ति आदीश्वरपादुका आदि है।

सं० १६८१ राखीपूनम के जेसलमेर में युगप्रधान श्री जिनचद्रसूरि जी के शिष्य पं० सकलचंद गणि के शिष्य उपाध्याय समय सुन्दर[1] के शिष्य वादीराज हर्षनन्दन के शिष्य पं० जयकीर्ति ने प्रस्तुत काव्य रचकर संपूर्ण किया।

जिनराजसूरि जो के जीवनचरित्र के संबंध मे श्रीसार नामक एक अन्य कवि ने भी रास बनाया जो हमारे ऐतिहासिक जैन संग्रह मे प्रकाशित हुआ है। वह रास स० १६८१ असाढ वदि १३ सेत्रावा मे रचा गया था। अर्थात् उपरोक्त जयकीर्तिके रास के आसपास के दिनो में ही रचा गया है। अतः उपरोक्त दोनो रास जिनराजसूरि जी की विद्यमानता मे ही रचे जाने से पूर्ण रूप से प्रामाणिक हैं। इसके बाद करीब १८ वर्ष तक और भी आपने शासन-प्रभावना की, जिसका पूरा विवरण तो नही मिलता पर एक ऐतिहासिक गीत से एक महत्वपूर्ण उल्लेख मिलता है कि सं० १६८६ के मिगसर बदि ४ रविवार को आगरे मे आप सम्राट शाहजहां से मिले थे। और वहां ब्राह्मणो को वाद-विवाद मे परास्त किया था तथा दर्शनी लोगों के विहार का जहां कही प्रतिषेध था, उसे खुला करवा कर शासनोन्नति की थी। शाही दरबार मे मुकरबखानने आपके साध्वाचार की बड़ी प्रशसा की थी।

जसु देखि साधु पणो भलो हरखि दियो बहुमान।
साबासि तुम्ह करणी भली कहइ श्री मुकरब खान॥

शाहजहां से मिलने के संबंध में दास कवि ने लिखा है—

"साहिजहां पातिसाह प्रबल प्रताप जाको,
अति ही करूर नूर कौन सर दाखी है।

१- समयसुंदर जी और हर्षनंदन जी का परिचय देखें 'युगप्रधान जिनचद्रसूरि' पृ० १६७ से १७१ तक। जयकीर्ति कृत पृथ्वीराज वेलि बालावबोध उपलब्ध है।

आसीचउ गछ' सब थहराये जाके भय,

ऐसो जोर चकतो हुवौ न कोउ भाखी हो।

श्रीय 'जिनसंघ' पाट मिल्येउ साहि सनमुख,

'धरमसी' नंदन सकल जग साखी है।

कहै 'कविदास' षट्दरशन कुं उवारे,

शासन की टेक 'जिनराजसूरि' राखी है।

'आगरे' तखत आये सबही के मन भाये,

विविध वधाये संघ सकल उछाह कुं।

राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'असरप खान',

'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कुं॥

कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,

अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं

'मिगसर वहु (ल) चोथ' 'रविवाव' शुभ दिन,

मिले 'जिनराज' 'शाहिजहाँ' पतिशाह कुं

इस मिलन के सम्बन्ध मे दानसागर भंडार की एक भाषा पट्टावली मे लिखा है 'सं० १६८६ श्री आगरा माहे पहली आसबखान नइं मिल्या। तिहाँ ८ ब्राह्मणां सूं वाद करि, आठइ ब्राह्मण हारथा। आसिबखान निपट खुसी थया। तिवार पछी कह्यो मइ पातसाहसुं तुमकूं मिलावूं गा। तिवारें मिगसर वदि ४ आदित्यवार पातिसाह साहजहाँ नइ मिल्या। त्रिहजारी बी ऊंवरावी सामामूकि तेडाया, घणउ आदर दिउ अनइ केतरेक देसे यति रह न सकता ते पिण तिवार पछि रहता थया। घणा अवदात छइ।'

अन्य एक महत्वपूर्ण घटना आपके आचार्य पद प्राप्ति के पहले की पट्टावलियो एवं शिलालेखोमे उल्लिखित है कि मारवाड के घघाणी गाँव में सं० १६६२ मे बहुत सी प्राचीन जैन प्रतिमाएं प्रगट हुई थी। मुसलमानी साम्राज्य के भय से उन प्राचीन प्रतिमाओको कभी भूमि-गृहमे बंद करके रख दिया गया था। जेठ सुदि

११ को वे ६५ प्रतिमाएं प्रगट हुई जिनका विविरण महोपाध्याय समयसुंदर ने अपने घंघाणी तीथ स्तवन मे दिया है जो कि हमारे समय सुंदर कृति-कुसुमांजलि में प्रकाशित हो चुका है। वे प्रतिमाएं मौर्य काल तक की पुरानी थी इसलिए उनकी लिपि उस समय पढी जाना बहुत ही कठिन था। पट्टावलियों एवं शिलालेखो में लिखा है कि धरणेन्द्र या अम्बिकादेवी के प्रसाद से आप उस प्राचीन लिपि को पढने मे समर्थ हुऐ।

'वणारस (वाचक) पद थका धरणेन्द्र प्रभावइ श्री घंघाणी नी लिपि वांची अनइ वर दीधउ जेहनइ माथइ हाथि द्यइ ते पिण वाचइ। वलि लघुवइ थकां तपाँरउ उपाध्याय सोमविजय नइं हराव्यउ।'

'अम्बिका प्रदत्त वरधारका स्तद्बल प्रगटित घंघाणीपुर-स्थित चिरंतन-प्रतिमा प्रशस्ति वर्णान्तरा।

आपके शासन मे ६ उपाध्याय और ४१ वाचक पदधारी विद्वान हुए। एक साध्वी को प्रवर्तनी का पद दिया गया। आपके शिष्य और प्रशिष्यो की संख्या भाषा पट्टावलीमे ४१ वतलाई गई है। आपने अनेक शिष्यो को आगमादि ग्रंथ सिखाए थे। इस तरह धर्म सेवा और साहित्य सेवा करते हुए पाटण मे सं० १७०० असाढ सुदि ९ गुजराती संवत् के अनुसार सं० १६९९ में आप स्वर्गवासी हुए।

आपके साथ ही जिनसागरसूरिजी को आचार्य पद दिया गया। वे १२ वर्ष तक तो आपके साथ-रहे, फिर अलग हो गए। उनसे आचार्य शाखा प्रकटित हुई। जिनराजसूरिजी के समय राज-स्थान और गुजरातमे खरतर गच्छ का वहुत प्रभाव था और अनेक विद्वान् इनकी आज्ञा मे गांवो और नगरो मे विचरते हुए धर्म-प्रचार और साहित्य-सृजन कर रहे थे। आपके आज्ञानुवर्ती श्रावको मे भी कई वहुत प्रभावशाली और समृद्ध थे, जिन्होने

बडे २ तीर्थयात्रा के संघ निकाले। बडे भव्य और विशाल जैन मदिरो का निर्माण और जीर्णोद्धार करवाया। हजारो प्रतिमाओं की जिनराजसूरि जी के हाथ से प्रतिष्ठा करवाई। जेसलमेर के थाहरूशाह ने लोद्रवेके चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालयका जीर्णोद्धार करवाया अहमदाबाद के सघपति सोमजी के पुत्र रूपजी ने शत्रुञ्जय पर चतुर्मुख,रिषभ आदि ५०१ प्रतिमाएं और जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई। भाणवड मे चाँपसी साहने अमीझरा पार्श्व नाथ आदि ८० विम्बो की प्रतिष्ठा करवाई। मेडते के चोपड़े आसकरण ने शातिनाथ मदिर की प्रतिष्ठा करवाई। इस तरह जिनराजसूरि बडे ही प्रभावशाली, विद्वान आचार्य हुए है। जिनकी फुटकर रचनाओ और दो रासो को इस ग्रथ मे प्रकाशित किया गया। आपकी रचनाओ का सक्षिप्त विवरण आगे दिया जा रहा है।

जिनराज सूरि की साहित्य-सेवा—

आचार्य जिनराजसूरि जी अपने समय के विशिष्ट विद्वान और सुकवि थे। रासकार जयकीर्ति और श्रीसार दोनो ने उनकी कुशाग्र बुद्धि अध्ययन के सम्बध मे अच्छा प्रकाश डाला है। उनके वाल्यकाल के अध्ययन के संबध मे श्रीसार ने लिखा है।

पुत्र भणइवा माडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय।
विद्या आवो तेहनइ, सरसति मात पसाय।।१।।
भली परइ आवी भले, सिद्धो अनइ समान।
"चाणाइक" आवइ भला, नीति शास्त्र असमान।।२।।
तेह कला कोइ नही, शास्त्र नहीं वलि तेह।
विद्या ते दीसइ नही, कुमर नइ नावइ जेह ।।३।।
कला 'वहुत्तरि' पुरषनी, जाणइ राग 'छतीस'।
कला देखि सहुको कहइ, जीवो कोड़ि वरीस ।।४।।

'पड भाषा' भाखइ भली, 'चवदइ विद्या' लाध।
लिखइ 'अठाहर लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥५॥

जयकीर्ति ने तो प्रारम्भिक अध्ययन के मुहूर्त और उत्सव के सम्बंध मे भी सुन्दर प्रकाश डाला है। उनका बनाया हुआ रास इसी ग्रंथ के परिशिष्ट मे दिया गया है इसलिए उसका उद्धरण नही दिया जा रहा है श्रीसार रचित 'जिनराजसूरि रास भी हमारे ऐतिहासिक जैन काव्य-संग्रह मे छप चुका है। जैन-आगमों और व्याकरण कोश, छन्द, अलंकार, काव्य-शास्त्र का अध्ययन आपने दीक्षा के अनन्तर गुरुश्री के पास किया था। न्यायशास्त्र के भी आप बडे विद्वान् थे। आगरे मे भट्टाचार्य के पास 'चिन्तामणि' नामक नव्य-न्याय के महान् ग्रथ का आपने अध्ययन किया था। जयकीर्ति ने लिखा है–

काव्य, तर्क, ज्योतिप गणित रे व्याकरण, छन्द, अलङ्कार।
नाटक नाममाला अधिक रे, जाणइ शास्त्र विचार ॥११॥भ०॥
तेरै वर्षे आगरइ रे, भण्यउ चितामणि तर्क।

सगली विद्या अभ्यसी रे, भट्टाचारज सम्पर्क ॥१२॥भ०॥

अर्थात् आपका विशेष अध्ययन आगरे मे किसी भट्टाचार्य विद्वान से करवाया गया था। सं० १६६७ मे आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर अकबर-प्रतिवोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने आसावली में इन्हे वाचक पद से अलंकृत किया था। सं०१६५७ मे आपकी दीक्षा हुई थी, अत. १० वर्ष तक आपने अनेक विषयों और शास्त्रो का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसी समय से आप कविता भी करने लगे थे। आपकी उपलब्ध रचनाओ मे संवतोल्लेख वाली सर्व प्रथम रचना गुणस्थान विचार गर्भित पार्श्वनाथ स्तवन सं० १६६५ का है। जो जैन शास्त्र के कर्म सिद्धान्त और आत्मोत्कर्ष की पद्धति के सम्बन्ध मे है इससे आपका शास्त्रीय ज्ञान उस समय तक कितना बढ़ चुका था, विदित होता है।

संवतोल्लेख वाली दूसरी रचना कर्मबत्तीसी सं० १६६९ में रची गई रचना-समय का निर्देश न होने पर भी आपके दीक्षा नाम राजसमुद्र के नाम-निर्देश वाली अनेको रचनाए प्रस्तुत ग्रंथ मे हैं इससे आप आचार्य पद से पूर्व भी कवि के रूप मे काफी प्रसिद्ध पा चुके थे, सिद्ध है। राजस्थानी और हिंदी की फुटकर कविताओ के अतिरिक्त आपने संस्कृत मे भी उस समय कई टीकादि ग्रंथ बनाए थे। कवि श्री सार ने आपके रचित 'ठाणांग' नामक तृतीय अंगसूत्र की वृत्ति रचने का उल्लेख किया है। पर वह आज प्राप्त नही है। उल्लेख इस प्रकार है–

"श्री ठाणांग नइ वृत्ति करीनइ, विसमउ अर्थ बतायो।"

संभव है यह वृत्ति आचार्य पद से पहले ही की हो। सं० १६८१ मे श्रीसार उसका उल्लेख करते है। उससे पहले तो यह प्रसिद्ध हो चुकी थी। पंचमांग भगवती सूत्र के ९ वें शतक के ३२ वें उद्देशक का आपने संस्कृत मे विवरण लिखा था जिसकी ९ पत्रो की एक हस्तलिखित प्रति हमारे संग्रह मे है। पर यह प्रति लिखते हुए छोड दी गई है इसलिए अपूर्ण रह गई है। यह विवरण आपने वाचनाचार्य पद प्राप्ति के बाद और आचार्य-पद प्राप्तिसे पूर्व लिखा है। उक्त विवरण का प्रारंभिक अंश नीचे दिया जाता है।

"श्री पार्श्वनाथ प्रणम्य नवमशतकस्य द्वात्रिंशत्तमोद्देशकस्य टीकानुसारेण वाचनाचार्य श्री राजसमुद्र गणिभिःक्रियते विवरण" इससे आपने और भी कई आगमादि ग्रंथो के विवरण लिखे थे, मालूम होता हैं, पर उनका प्रचार अधिक नही हो पाया।

बीकानेर के खरतर गच्छीय वृहद्ज्ञानभंडार के अंतर्गत महिमाभक्ति भंडार में तर्क शास्त्र संबधी किसी ग्रंथका विवरण राजसमुद्रजी का लिखित प्राप्त है जिसका मध्यम अंश सं०१६६३ फागुण वदि १२ को लिखा हुआ है। इससे उस समय तक आपका न्यायशास्त्र का अच्छा अभ्यास हो चुका था और संभव

है उसी सिलसिलेमे आपने यह महत्वपूर्ण ग्र थ अपने अध्ययनार्थ लिखा हो। १३००० श्लोको का यह महत्वपूर्ण तर्क शास्त्रीय सटीक ग थ की प्रति अपूर्ण रूप मे मिली हैं। इसलिए मूल ग्र थ का क्या नाम है और टीका कब एवं किसने बनाई, निश्चय नहीं किया जा सका। पर, इन सब बातो से यह निश्चित है कि जिनराजसूरि जी बहुत बडे विद्वान हुए हैं।

छोटी २ राजस्थानी रचनाओं के अतिरिक्त आपने राजस्थानी काव्यो का निर्माण भी आचार्य पद प्राप्ति से पहले ही शुरू कर दिया था। जैन रामायण की कथा का आपने राजस्थानी काव्य के रूप मे इसी समय निर्माण किया था। उसकी एक अपूर्ण प्रति कोटा के खरतरगच्छ भ डार मे प्राप्त हुई है। २८ पत्रो की यह प्रति उसी समय की लिखी हुई है, पर अ त मे प्रशस्तिकी ढाल नही है, इसलिए इसकी रचना कब एवं कहां की गई, जानने का साधन नही है।

आचार्य पद प्राप्ति के अनन्तर आपने चौवीसी, वीसी, धन्ना शालिभद्ररास, गजसुकुमाल रास आदि राजस्थानी काव्यों की रचना की, जो प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त कयवन्ना रास, पार्श्वनाथ गुणवेलि, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका बालावबोध, नवतत्वटब्बार्थ, आदि आपकी और भी रचनाएं हैं। जिन्हे हम प्रयत्न करने पर भी प्रस्तुत ग्र थ के संपादन के समय प्राप्त नही कर सके। प्रश्नोत्तर रत्नमालिका, बालावबोध और नवतत्वटब्बार्थ संस्कृत और प्राकृत रचनाओ के राजस्थानी गद्यमें लिखे गए संक्षिप्त विवरण हैं। यह विवरण किसी श्रावक या श्राविका को बोध कराने के लिए रचा गया है क्योंकि मूल ग्र थ संस्कृत-प्राकृत मे होने से उनके लिए सुबोध नही थे।

आचार्यश्री की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण रचना नैषधमहाकाव्य की ३६००० श्लोक परिमित बृहट्टीका है इसकी दो अपूर्ण

प्रतियाँ हरिसागरसूरि ज्ञानभंडार, लोहावट और भंडारकर ओरियन्टल-इंस्टीटूयूट, पूना मे है और एक पूर्ण प्रति जयपुर के एक जैनेतर विद्वान के संग्रह मे महोपाध्याय विनयसागर जी ने देखी थी। पर इन प्रतियो मे भी अंतिम प्रशस्ति नही है। इसलिए इस टीका की एक रचना किस संवत् मे कहा हुई, ज्ञात हो नही सका। इस वृहद्वृत्ति से उनका काव्यशास्त्र का निष्णात होना सिद्ध होता हैं। इस तरह जिनराजसूरि एक बहुत बडे विद्वान और सुकवि सिद्ध होते हैं, जिनकी प्राप्त राजस्थानी कविताओ का संग्रह इस ग्रथ मे प्रकाशित किया जा रहा है।

जिनराजसूरि का शालिभद्र रास तो जैन समाज मे इतना अधिक प्रसिद्ध हुआ कि उसकी सैकडो हस्तलिखित प्रतियाँ गॉव २ और नगर २ मे पाई जाती हैं। केवल हमारे संग्रह में ही उसकी २५ प्रतिया हैं। इस रासकी लोकप्रियता उसके रचे जानेके समयसेही पाई जाती है। सं० १६७८ के आश्विन वदि ६ को २९ ढालो वाला यह रास रचा गया था। सं० १६८८ की लिखी हुई प्रति के अनुसार इसकीरचना आचार्यश्री ने अपने भ्राता गेहा का अभ्यर्थना से की थी। प्रशस्ति इस प्रकार है—

बोहित्थवंशीयावतसीयमान तिसममात महिमा निधान निर्विगान, यशोवितान सावधान प्रधान विद्वज्जनदर्शिताष्टावधानाधिगत चतुर्दश विद्यास्थान श्री शत्रुञ्जय तीर्थाष्टमोद्धार प्रतिष्ठा विधान लब्धमानवमन वामनधीमान मान नान जगम युगप्रधान श्रीजिनसिंहसूरिभि वि रचर्या चक्रे। साह धर्मसी धारलदेवी पुत्ररत्न शाह गेहाख्या भ्रातुरभ्यर्थनयानन्दनादाच द्रार्कं श्रोतव्यैत्रि सुखप्रदा सं० १६८८ वर्षे पंडित ज्ञानमूर्ति लिखित फागुण सुदि १४ दिने। शुभं भवतु श्री जालोर मध्ये।

[पत्र २४। डाह्याभाई वकील सूरत के संग्रह मे]

प्रस्तुत रास की प्रशस्ति मे 'श्री जिनसिंहसूरि शीश मति

सारे' शब्द आता है उससे अनेक लोगो को यह भ्रम हुआ और होता है कि इस रास के रचयिता का नाम मतिसार है। स्वर्गीय मोहनलाल देसाई ने अपने जैन गुर्जर कविओ-प्रथम भाग के पृष्ठ ५०१ मे भी इसका रचयिता मतिसार[१] ही बतलाया था, यद्यपि उन्ही के उद्धृत प्रशस्ति मे 'जिनराजसूरिभिर्चर्याचक्रे' स्पष्ट उल्लेख था। हमने इस भूल की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया तो उन्होने जैन गुर्जर कविओ के तीसरे भागमे उसका संशोधन करके रचयिता का नाम मतिसार की जगह जिनराज सूरि रख दिया। पर आज भी कई ज्ञानभंडारो की सूचियों मे भ्रमवश मतिसार नाम दिया जाता है।

थोड़े समयमे ही यह रास इतना लोकप्रिय हुआ कि सं०१६८१ मे रचना के केवल २॥ वर्ष बाद ही इसकी एक सचित्र प्रति तैयार की गई जिसे बादशाही चित्रकार शालिवाहन ने चित्रित की थी। वह प्रति अभी कलकत्ता के श्री बहादुरसिंह जी सिंघी के संग्रह में है। उसके चित्र बहुत ही सुन्दर हैं और बहुत से पेज तो पूरे लंबे पेज मे चित्रित हैं जिसमें कथा का भाव चित्रकार ने बडी खूबी से अंकित किया है। प्रस्तुत प्रति के कुछ पत्रो एवं चित्रो के ब्लाक इस ग्रंथ मे प्रकाशित किए जा रहे है इसके लिए हम श्री नरेन्द्रसिंह जी सिंघी के आभारी है, प्रति की लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—

'इति श्री सालिभद्र महामुनि चरित्रं समाप्तं ॥ संवच्चान्द्र गजरसरसामिते द्वितीय चैत्र सुदि पंचमी तिथौ शुक्रवारे वलूलवल सकल भूपाल भाल विशाल कोटीरहीर श्री मज्जहागीर पातिसाहिपति सलेमसाहि वर्तमान राज्ये श्रीमज्जिनशासन वन प्रमोद

१- इसी कारण जिनराजसूरि जी के दूसरे गजसुकुमाल रास को उन्होने पृष्ट ५५३में उनके नाम से अलग रूप से उल्लिखित किया था।

आनंद काव्य महोदधि मौक्तिक १ मे सन् १९१३ मे शालिभद्ररास प्रकाशित किया गया था। उसका रचयिता श्रीजिनसिंहसूरि शिष्य मतिसागर बतलाया गया था जो मतिसार शब्द पर ही आधारित था।

विधान पुष्करावर्त घना घन समान युगप्रधान श्री श्री श्री ४ श्री जिनराजसूरि विजयि राज्ये नागडगोत्र शृंगारहार सा० जेत्रमलत तनय सविनय धर्म-धुरा धारण धौरेय श्री मज्जिनोक्त सम्यक्त्व मूल स्थूल द्वादश व्रतधारक श्री पंचपरमेष्ठि महामंत्र स्मारक श्रीमत् साहिसभा शृंगारक सश्रीक संघमुख्य सा० नागडगोत्रीय सा० भारमल्लेन। लघुबांधव नागडगोत्रीय सा० राजपाल। विचक्षण-धुरीण सा० उदयकरण जंवातृक महासिंहादि सार परिवारयुतेन लेखितं। तच्च वाच्यमानं चिरं नंदतात्। सदा। लिखितं चैतत् पं० लावण्यकीर्ति गणिना चित्रितं चित्रकारेण सालिवाहनेन॥ श्रेयः सदा।'

हमारे संग्रह में भी मथेन जयकिसन के चित्रित सं० १८२५ की प्रति है जिसमे ४७ चित्र हैं। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है —

सं० १८२५ वर्षे मिति प्रथम श्रावण सुदि २ शुक्रवारे पुख निखत्र लिखव्यो मथेन श्री श्री रामकृष्ण जी तत्पुत्र मथेन जय किसय। तत्र संजुगते। श्री बीकानेर मध्ये। शुभभवतु कल्याण मस्तु।

बीकानेर–वृहद् ज्ञानभंडार, श्री पूज्यजी संग्रह, बोरान् सेरी उपासरा आदि अन्य कई ज्ञानभंडारों मे भी इस रास की सचित्र प्रतिया मिलती हैं जिनमे से, बोरान्सेरी उपाश्रय की प्रति जो अभी महोपाध्याय विनयसागर जी संग्रह कोटा में है शालिभद्ररास की सचित्र, सुन्दर प्रति उल्लेखनीय है। सैकड़ो प्रतियों की उप-लब्धि और १०-१२ सचित्र प्रतियो की प्राप्ति इस रास की प्रसिद्ध और लोकप्रियता की परिचायक हैं।

शालिभद्र महान् भोगी और महान् त्यागी थे। 'अन्तगड दशा' नामक आठवें अंग-सूत्र में शालिभद्र चरित्र वर्णित है। उसके बाद संस्कृत और राजस्थानी, गुजराती में अनेक काव्य इस कथा प्रसंग को लेकर रचे गए है। सं०१२८५ मे खरतरगच्छीय पूर्ण-

भद्र गणि ने जेसलमेर में 'धन्ना शालिभद्र चरित्र' नामक महाकाव्य बनाया जो प्रकाशित भी हो चुका है। इसीप्रकार धर्मकुमार रचित शालिभद्र चरित्र काव्य भी टिप्पणी सहित प्रकाशित हो चुका है। बहुत से रास भी उपलब्ध है जिनमे से जिनविजयकृत धन्नाशालिभद्र रास प्रकाशितहो चुका है। अमोलकऋषि और शकर प्रसाद दीक्षित रचित धन्नाशाभिद्र चरित्र और शालिभद्र चरित्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। अप्रकाशित रास भी अनेक हैं पर जितनी अधिक प्रसिद्धि जिनराजसूरिजी के प्रस्तुत रास को मिली वैसी अन्य किसी भी रचना को नहीं मिल सकी।

उनके रचित दूसरा राजस्थानी काव्य गजसुकुमाल महामुनि चौपई भी बहुत हा सुन्दर है। इसमे श्री कृष्ण के सगे लघु भ्राता गजसुकुमालका रोमाँचकारी पावन चरित्र वर्णित है। गजसुकुमाल का चरित्र अन्तगड दशासूत्रमे पाया जाता है और इस कथा-प्रसंग को लेकर और भी कई कवियोने रास ढाल एव सज्झाए बनाई हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ मे सबसे पहले चतुर्विंशतिका या चौबीसी नामक रचना छपी है जिसमे २४ तीर्थङ्करो के २४ भक्ति गीत और २५ वाँ कलश है। तदन तर 'विहरमानविंशति जिन गीतम्' जिसे 'वीसी' कहते हैं, प्रकाशित की गई है। जैन मान्यता के अनुसार इस अवसर्पिणी काल के प्रस्तुत जम्बूद्वीप और भरतक्षेत्र के चौबीस तीर्थङ्कर मोक्ष पधार चुके हैं, पर महाविदेह क्षेत्र मे बीस तीर्थङ्कर आज भी विचर रहे हैं। उन्ही बीस तीर्थङ्करो के २० भक्ति गीत और २१ वाँ कलश प्रस्तुत वीसी नामक रचना मे है। दोनो मे रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया पर इनकी रचना आचार्य पद-प्राप्ति के बाद हुई हैं। और इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ स० १६८३ की लिखी हुई हमारे संग्रह मे है इसलिए सं० १६७४ और १६८३के बीचमेही चोवीसी और वीसी का रचा जाना निश्चित है इन रचनाओ का भी जैन समाज मे काफी प्रचार रहा अत. इनकी अनेको हस्तलिखित प्रतिया हमारे संग्रह में एव अन्यत्र भी प्राप्त है।

प्रस्तुत ग्रंथ मे प्रकाशित अन्य फुटकर रचनाए अनेक हस्त

लिखित प्रतियो से वर्षो के परिश्रमसे संगृहीत एवं वर्गीकृत करके यहाँ प्रकाशित की गई है। फुटकर रचनाओ की दो संग्रह प्रतियाँ भी हमे बहुत वर्ष पहले प्राप्त हुई थी जिसमे से एक ३४ पत्रो की प्रति यति जयचन्दजी के भंडार मे है और दूसरी श्री पूज्यजी के संग्रह मे। हमारे संग्रह के कई गुटको एवं फुटकर पत्रो मे भी आपकी रचनाए मिली हैं जिनमेसे कुछ पत्रतो आपके उस समयके लिखे हुए है, जिस समय आप आचार्य पद पर आरूढ नही हुए थे और राजसमुद्र के नाम से प्रसिद्ध थे। ऐसे फुटकर पत्रो मे से एक दो पत्रो के ब्लॉक इस ग्रंथ मे दिए जा रहे हैं जिनसे आपके अक्षरों का भी हमे दर्शन हो जाता है।

आपके कुछ चित्र भी प्राप्त हुए हैं जिनमे से यति सूरजमलजी के संग्रह की शालिभद्र चौपाई की सचित्र प्रति के एक चित्र का ब्लाक हमने अपने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह'-के पृष्ठ १५० में प्रकाशित किया था। सिघीजीके संग्रह की विशिष्ट सचित्र प्रति मे भी आपका चित्र पाया जाता है। यह प्रति आपकी विद्यमानतामे ही चित्रित की गई थी और अवश्य ही इसके चित्रकार शालिवाहन ने आपको देखा होगा इसलिए उसका बनाया हुआ चित्र अधिक प्रामाणिक होने से उसी का ब्लाक इस ग्रंथ मे दिया जा रहा है।

शिष्य परम्परा:—

आपके शिष्य अनेक थे और उनमे कई बडे अच्छे विद्वान् और कवि थे। आपके पट्टधर जिनरंगसूरि भी अच्छे कवि थे। उनके स्तवन सज्झाय, गीत पद की एक संग्रह प्रति बीकानेर सेठिया-लायब्रेरी मे प्राप्त है और कुछ रचनाएं प्रकाशित भी हो चुकी है। आपके द्वितीय पट्टधर जिनरत्नसूरिजीके रचित कुछ स्तवन मिलते हैं। जिनरंगसूरिजी से लखनऊ गद्दी हुई और उस परंपरा मे अभी श्री जिनविजयसेन सूरि हैं। जिनरत्नसूरिजीकी पट्ट परम्परा बीकानेर मे चली। वर्तमान पट्टधर जिनविजये-न्द्रसूरि अच्छे विद्वान हैं। आपके इन दोनों पट्टधर शिष्यो के अति-रिक्त कई उपाध्याय आदि विद्वान शिष्य थे जिनकी परम्परा में

कई कवि हो गए हैं। आपके शिष्य भाव-विजय के शिष्य भाव-विनय के शिष्य भावप्रमोद रचित सप्तपदार्थी वृत्ति, और अजापुत्र चोपई प्राप्त है। आपके एक अन्य शिष्य मानविजय के शिष्य कमलहर्ष तो बहुत अच्छे कवि थे और उनकी बहुत रचनाएं प्राप्त है। कमलहर्ष के शिष्य विद्याविलास और उदयसमुद्र भी अच्छे विद्वान थे।

प्रस्तुत ग्रंथ का मूल संशोधन मेरे सहयोगी भ्रातृपुत्र श्री भंवरलाल नाहटाने किया है और साहित्यक अध्ययन प्रो०श्री नरेन्द्र भानावतने लिखा है। अतः ये दोनो ही मेरे आशीर्वाद भाजन हैं। ग्रंथ प्रकाशन में अत्यधिक विलम्ब होजाने से कठिन शब्द कोश देने की इच्छा होते हुए भी नही दिया जा सका।

—अगरचंद नाहटा
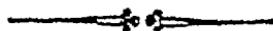
जिनराजसूरि कृति-कुसुमांजलि
एक साहित्यिक अध्ययन

(प्रो० नरेन्द्र भानावत . गवर्नमेन्ट कॉलेज, बून्दी)

१७ वी शती के उत्तरार्द्ध के कवियो मे जिनराजसूरि का महत्वपूर्ण स्थान है। ये खरतरगच्छीय आचार्य जिनसिंहसूरि के शिष्य थे। प्रारंभ से ही इन्होने दर्शन, साहित्य और व्याकरण का अध्ययन किया। काव्य की ओर रुचि थी ही। अध्ययन और अभ्यास का सहारा पाकर इनकी प्रतिभा खिल उठी। सैकडों पद, स्तवन और रास मुक्त हंसी हंसने लगे। जन-साधारण को उनमे मिला हृदय को उल्लसित करने वाला आध्यात्मिक वातावरण, मस्तिष्क को सजग बनाने वाला आत्म-रस और जीवन को मधुर बनाने वाला उद्बोधन। ऐसे आमधर्मी कविकी रचनाओ का समग्र रूपसे एक ही स्थान पर आस्वादन हो सके ऐसे प्रयत्न की महत्ती आवश्यकता थी। 'समयसुन्दर कृति कुसुमांजलि' के ही अनुक्रम मे 'जिनराजसूरि कृति कुसुमाञ्जलि' के प्रकाशन द्वारा यह महदनुष्ठान अब पूर्ण हुआ है। यहा संक्षेप मे आलोच्य कृति का साहित्यिक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) भाव पक्ष.--

भाव कविता का मूलधर्म है। इसके अभाव मे कविता कविता नही रहती। ये भाव कभी सासारिक विषयो से लिपटे रहते तो कभी आध्यात्म-जगत से बधे रहते हैं। हिन्दी का रीतिकालीन काव्य पहली धारा का प्रतिनिधित्व करता है तो भक्तिकालीन काव्य दूसरी धारा का। आलोच्य-कवि दोनो धाराओ के बीच में रहा है। पर उसका स्वाद अपना है, उसकी पद्धति अपनी है।

इसीलिए वह विशिष्ट है। स्थूल रूपसे कविका कार्य-विषय दो प्रकार का रहा है–

(१) गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक

(२) आध्यात्मिक या उपदेशपरक

[१] *गुणगाथात्मक या स्तुतिपरकः—*

अपने से महान और श्रद्धेय पुरुषो का गुणगान गाना, उनके लोकोपकारक कार्यों का स्मरण स्तवन करना भारतीय धर्म और काव्य का मुख्य आधार रहा है। इससे मन पवित्र होता है, मानसिक शान्ति मिलती है और नयी सजीवनी शक्ति का अनुभव होने लगता है। जिनराज सूरि ने महान आत्माओ के अतिरिक्त महान आत्माओ से सम्बन्ध रखने वाले तीर्थादि स्थानो का भी माहात्म्य प्रतिपादित किया है।

महान आत्माओ मे यदि कवि का ध्यान तीर्थङ्करों, विरहमानों, सतियो और अन्य तेजोपुंज व्यक्तियो की ओर गया है तो तीर्थादि स्थानो मे उसे शत्रुञ्जय (विमलाचल), आबू तथा अन्य मन्दिरादि विशेष प्रिय रहे हैं। रामायण की कथा भी उससे अछूती नही रही। संवादात्मक गेय शैली मे जो पद लिखे गये हैं व बडे मार्मिक और चोट करने वाले हैं। स्वप्न पद्धति के द्वारा कवि ने मदोदरी से जो भावी आशंका का वतावरण प्रस्तुत कराया है वह देखिए–

आज पीउ सुपनइ खरी डराई।

जलधि उलंघि कटक लका गढ़, घेरयउ परी लराई ॥१ आ०॥

लूटि त्रिकूट हरम सब लूटी, भूटा गढ़ की खाई।

लपक लंगूर कंगुर वइठे फेरइ राम दुहाई ॥२॥आ०॥

जउ दस सीस वीस भुज चाहइ, तउ तजि नारि पराई।

राज वदल हुणहार न टरिहइ, कोरि करउ चतुराई ॥३आ०(पृ.४)

श्री वर्तमान जिन चतुर्विशतिका मे २४ तीर्थङ्करो का गुणानु-

धाद गाया गया है। इनमे उनकी चारित्रिक दृढता, अपनी भक्ति भावना, उनकी महानता अपनी लघुता का वर्णन है। कवि उन्हे आँखो मे वसाना चाहता है, अपने हाथो से उनकी पूजा करना चाहता है और चाहता है अपनी जिह्वा से उनका सं‍कीर्तन करना—

'इण परि भाव भगति मन आणी, सुध समकित सहिनाणीजी।
वर्तमान चउवीसी जाणो, श्री 'जिनराज' वखाणीजी ॥१॥इ०॥
जउ मूरति नयणे निरखीजइं, जउ हाथे पूजीजइजी।
जउ रसनाइ गुण गाइजई, नर भव लाहउ लीजइ जी। २॥ इ०॥
(पृ० १७)

आदि तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव का स्तवन करते हुए उनकी बाललीला का जो वर्णन किया गया है उसे पढते समय महाकवि सूर और उसके कृष्ण हठात् स्मरण हो आते है। मरुदेवी के मातृ-हृदय को कविने पहचाना है, बालक ऋषभ की सहज-सुलभ क्रीडाओ को कविने देखा है, तभी तो जो चित्र बनते हैं वे उभर उभर कर आखो के सामने नाचते रहते हैं–

रोम रोम तनु हुलसइ रे, सूरति पर वलि जाउ रे।
कवही मोपइ आईयउ रे, हूँ भी मात कहाऊं रे ॥३॥
पगि घूघरडी घमघमइरे, ठमकि ठमकि धरइ पाउ रे।
वाँह पकरि माता कहइ रे, गोदी खेलण आउरे ॥४॥
चिवुकारइ चिपटी दीयइ रे, हुलरावइ उर लाय रे।
वोलइ वोल जु मनमनारे, दंतिआ दोइ दिखाइ रे ॥५॥
तिलक वणावइ अपछरा रे, नमयणा अंजन जोइ रे।
काजल की विंदी दियइरे. दुजन चाखन होइरे ॥६॥ (पृ० ३१)

कवि भावानुकूल भाषा लिखने मे सिद्धहस्त है। 'श्री गिरनार तीर्थ यात्रा स्तवन' को पढते हुए लगता हैं जैसे यात्रियो का एक दल उमडता हुआ चला जा रहा हैं। वहिन द्वारा वहिन को

निमन्त्रण-कितना मधुर सरस और भाव भीना है-

मोरी वहिनी हे वहिनी म्हारी ।
मो मन अधिक उछाह हे, हां चालउ तीरथ भेटिवा ॥म्हा० ॥
संवेगी गुरु साथ हे, हाँ तेड़ीजइ दुख मेटिवा ॥१॥म्हा०॥
चढिसुं गढ़ गिरनार हे, हाँ साथइ सहियर झूलरइ ॥म्हा०॥
सजि वसन श्रृंगार हे, हाँ गलि झाबउ मकथूल रउ ॥२॥म्हा०॥
राजल रउ भरतार हे, हा जादव नंदन निरखिसुं ॥म्हा०॥
पूजा सतर प्रकार हे, हाँ करिसुं हियड़इ हरखिसु ॥३॥म्हा०॥
अदवुद आदि जिणिंद हे, हाँ 'खरतरवसही' जोइसुं ॥म्हा०॥
अमियझरइ श्री पास हे, हाँ मल कसमल सवि धोइसु ॥४॥म्हा०

पृ० (४२)

कही कहीं विरहादि वर्णन में प्रकृति चित्रण के लिए भी अवसर मिल गया है। यहाँ जो प्रकृति आई है वह स्वतंत्र रूप में होकर उद्दीपन रूपमे है। नेमिनाथ के विरहमे राजुल तडफ तड़फ कर चतुर्मास बिताती है श्रावण, भाद्रपद, आसोज और कार्तिक का वर्णन इसी पृष्ठभूमि मे आया है श्रावण मास का चित्र देखिये-

'श्रावण मइ प्रीयउ संभरइ, वूंद लगइ तनु तीर ।
खरीअ दुहेली घन घटा, कवण लहइ पर पीर ॥
पर पीर जाखत पापी, पपीहउ प्रीउ प्रीउ करइ ।
ऊमई वाहर घटा चिहु दिसि, गुहिर अंबर घरहरइ ॥
दामिनी चमकत यामिनी भर, कामिनी प्रीउ विण डरइ ।
घन घोर मोर कि सार वोले, स्याम इण रितु संभरइ ॥

(पृ०४६)

'शालिभद्र धन्ना चौपई' कवि की महत्वपूर्ण कृति है इसकी कई हस्तलिखित प्रतियाँ भांडारों मे पाई जाती हैं। अकेले अभय-जैन ग्रंथालय, बीकानेर मे इसकी २० प्रतियाँ हैं। सचित्र प्रतियाँ

भी मिलती हैं। कलकत्ते की सिंघीजी वाली सचित्र प्रति दस हजार रुपये की कीमत से भी अधिक मूल्यवान है। इससे चौपई की लोकप्रियता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इसकी कथा बडी सरस और मधुर है। वह जीवन के अभेद्य रहस्यो को खोलकर सामने रख देती है। भोग और योग का अद्भुत समन्वय, आत्मा, की स्वायत्तता और परवशता वे चिंतन-बिन्दु हैं जो जीवन के मोड को सहसा बदल देते हैं। शालिभद्र उन नायको मे से है जो स सार को फूल की तरह सुन्दर और कोमल, काया को मक्खन की तरह मुलायम और स्निग्ध तथा अपने आपको सबका स्वामी और नियन्ता मानता है। पर अचानक माता भद्राके वचनो को सुनकर "कि स्वामी (राजा) श्रेणिक अपने घर आया है" शालिभद्र का अन्तर क्रन्दन कर उठता है—

'एतला दिन लग जाणतो, हुं छुं सहुनो नाथ।
माहरे पिण जो नाथ छे, तो छोड़िए हो तृण जिम ए आथ ॥४॥
जाणतो जे सुख सासता, लाधा अछ असमान।
ते सहु आज असासता, मैं जाण्या हो जिम स ध्या वान ॥५॥
(पृ० १३२)

और वह एक एक कर बत्तीस स्त्रियो का परित्याग कर मुक्ति के उस पथ पर बढ जाता है जहाँ कोई किसी का नाथ नही--

"उठ्यो आमणदूमणो, महल चढ्यो मनरंग।
फिरि पाछो जोवै नही, जिम कंचली भुयग ॥' (पृ० १३३)

[२] आध्यात्मिक या उपदेशपरक—

गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक पदो मे भी आध्यात्मिक वातावरण और देशना है। पर वहाँ कथा या चरित्र विशेष को प्रधानता दी गई है। यहा स्फुट पदो मे स सार की असारता, जीवन की नश्वरता धर्म-प्रभावना आदि का जो चित्र प्रस्तुत किया गया है। वह सन्त कवियो की तरह वाह्य क्रिया-काडो का विरोधी

और भक्त कवियों की तरह 'प्रभु हौं सब पतितन को टीको' है।

कवि पश्चाताप करता है कि वह प्रभु का ध्यान नही कर सका। उसने बचपन इधर-उधर भटकने मे, यौवन भोग-विलास में और बुढ़ापा इन्द्रियों की शिथिलता के कारण यों ही व्यतीत कर दिया फिर भी प्रभुने उसे अपना लिया। यह प्रभु की उदारता, भक्त-वत्सलता और महानता नही तो क्या है?

कवहूँ मइ नीकइ नाथ न ध्यायउ।
कलियुग लहि अवतार करम वसि, अघ घन घोर बढायउ ।।१।।
बालापरण नित इत उत डोलत, घरम कउ मरम न पायउ।
जोवन तरुणी तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ ।।२।।
बूढ़ापणि सब अंग सिथल भए, लोभइ पिंड भरायउ।
तउ भी तुम्ह करिहउ अपणाई, या 'जिनराज' बडाई ।।३।।
(पृ० ६२-६३)

जीवन की नश्वरता का चित्र देखिये—

कइसउ सास कइ वेसास।
कुस अणी परि ओस कणकी, होत कितक रहास ।।१।।
जाजरी सी घरी वाकइ, वीचि छिद्र पचास।
तिहा जीवन राखिवइ की, कउण करिहइ आस ।।२।।
रयण दिन ऊसास कइ किसि, करत गवण अभ्यास।
जग अथिर 'जिनराज' तामइ, लेहु थिर जसवास ।।३।।
(पृ० १०७-८)

'शील बत्तीसी' व 'कर्मबत्तीसो' मे शीलधर्म तथा कर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। शील-माहम्य मे कवि कहता है—

सील रतन जतने करि राखउ, वरजउ विषय विकारजी।
सीलवंत अविचल पद पामइ, विषई रूलइ ससार जी ।।
सीलवंत जगिमइ सलहीजइ, सीधइ वंछित कोड़िजी।

सुरनर किन्नर असुर विद्याधर, प्रणमइ वेकर जोड़िजी ॥१॥
(पृ० ११२)

'करम' की गति भी 'अलख' अगोचर है। उसे कोई नहीं जान सकता—

"पूरव कर्म लिखत जो सुख दुख-जीव लहइ निरधार जी।
उद्यम कोडि करइ जे तो पिण, न फलइ अधिक लगार जी"॥२॥

यही कारण है कि—

'एक जनम लगि फिरइ कुआरा, एके रे दोय नारिजी।
एक उदरभर जन्मइ कहीइ, एक सहस आधार जी॥३॥
एक रूप रभा सम दीसइ, दीसे एक कुरूप जो।
एक सहूना दास कहीये, एक सहूना भूप जी ॥४॥ (पृ० ११६)

कवि के कृतित्व मे पार्थिक देह से ऊपर उठाने की अमोघ शक्ति है। वह हमे अपनी कमजोरियाँ वतलाकर हतोत्साहित नही करता वरन् आगे वढने की प्रेरणा देता है। वह अज्ञान का पर्दाफाश कर ऐसी भिल मिलाती हुई अमरज्योति को खीच लाना चाहता है जिसके प्रकाश मे समझा जा सके—

'विणजारा रे वालंभ सुणि इक मोरी बात,
तूं परदेशी पाहुणउ ॥वि०॥
विणजारा रे मकरि तूं गृहवास,
आजकाल भइं चालणउ ॥वि०॥१॥
(पृ० ९३)

कवि का एक एक पद आध्यात्म रस का ऐसा स्निग्ध छींटा है जो प्यासे की प्यास नही जगाता वरन् उसके हृदय को इतना निर्मल और प्रशान्त बना देता है कि वह थोड़ी देर के लिए अपने आपको भूल जाता है, जड-जंगम की सीमाएं टूट जाती हैं।

(ख) कला पक्ष:—

जैन कवि सामान्यतः पहले धर्मोपदेशक और बादमें कवि रहे

हैं। यही बात जिनराजसूरि के बारे भी कही जा सकती है। फिर भी जिनराजसूरि उन सामान्य कवियो मे से नही हैं जो भाषा के अलकरण से एक दम दूर रहते हों। उनमे सादगी के साथ साथ साहित्यिकता भी है भावावेग के साथ साथ अलकरण भी है, पर सर्वत्र कृत्रिमता और कारीगरी को बचाकर।

भाषा सरल राजस्थानी। सरस और सुबोध। इनका विहार-क्षेत्र गुजरात भी रहा अत. गुजराती का पुट भी यत्र-तत्र देखने को मिलता है। भाषा माधुर्यगुण और नाद-सौन्दर्य से सम्पन्न हो उसमे अनुप्रास की छटा भी देखी जा सकती है—यथा

(१) मेरइ नेमिजी इक सयण।
अउर ठउर न दउर करिहुँ, कबहुं मो मन भयण ॥१॥मे०
सुण्यउ निसि भरि जबहि चातक, रटत पिउ पिउ वयन।
पलक बादल वीचि उमडे, सजल जलधर नयन ॥२॥मे०
(पृ० ४७)

(२) आज घडी सुघडी लेखइ पडी, जीवन जनम प्रमाण।
भगति जुगति 'जिनराज' जुहारतां, आज भलइ सुविहाण ।७।
(पृ० ४६)

(३) मारगि हे सखि मारगि सहियर साथि,
चालण हे सखि चालण पगला चलवलइ।
भेटण हे सखि भेटण आदि जिणंद,
मो मनि हे सखि मो मनि निसदिन टलवलइ ॥३॥
(पृ० ३४)

अर्थालकारों मे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा विशेष प्रयुक्त हुए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

उपमा:—

(१) मेरइ मनि तूं ही वसइ रे, ज्युं रयणायर मीन रे (पृ० ३१)
(२) जाणपणउ सरस व समउ, चिहुं माहे हो कहू मेरु समान(पृ०४०)

(३) कुंडल की सोभा कहुं रे लाल, रवि शशि कइ अणुहारि (पृ ५३)
(४) जी हो तृण जिमराज रमणि तजी होजी लीधउ सजमभार(७३
(५) फल किंपाक समान देखतां हो, देखतां सहुजन नइ सुख
सपजइ हो (६२)

(६) पर कर परसेवो चल्यो, मांखण जेम सरीर।
चिहुं दिसि परसेव चल्यो, जिम नीझरणे नीर ॥३॥ (१३३)

रूपक:—

(१) मन मधुकर मोही रहयउ, रिषभ चरण अरविंद रे।
ऊडायउ ऊडइ नही, लीणउ गुण मकरन्द रे ॥१॥ (पृ. १)

(२) सूर ने जिस प्रकार 'अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल' सांग-रूपक बाँधकर विनय-भावना प्रदर्शित की है उसी प्रकार जिनराज सूरि ने साँगरूपक बाँधकर अपनी मोह-दशा का मार्मिक चित्र खींचा है। यथा:

'नायक मोह नचावीयउ, हुं नाच्यउ दिन रातो रे।
चउरासी लख चोलणा, पहिरया नव नव भात रे ॥१॥
काछ कपट मद घूघरा, कठि विषय वर मालो रे।
नेह नवल सिरि सेहरउ, लोभ तिलक दे भालो रे ॥२॥
भरम भुउण मन मादल, कुमति कदाग्रह नालो रे।
क्रोध कणउ कटि तटि वण्यउ, भव मडप चउसालो रे ॥३॥
मदन सबद विधि ऊगटी, ओढी माया चीरो रे।
नव नव चाल दिखावतइ, का न करी तकसीरो रे ॥४॥
(पृ० ८६)

(३) सोभा सायर वीचि मइ रे लाल, झील रहयउ मन मीन।
तइ कछु कीनी मोहनी रे लाल, नयन भए लयलीन ॥५॥
(पृ० ५३)

(४) जोवन तरुणी तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ (६२)
(५) पंचरग काचुरी रे वदरग तीजइ घोइ।

वहुत जतन करि राखीयइ, अत पुराणी होइ ॥१॥
सीवणहारउ डोकरउ रे, पहिरण हार युवान रे।
चउथउ थोव खमइ नही हो, मत कोउ करउ रे गुमान ॥२॥
(पृ० १०३)

(६) मन रे तूं छोरि माया जाल।
भमर उडि वग ग्राइ वइठे, जरा के रखवाल ॥ (पृ० १०७)

उत्प्रेक्षाः—

(१) तिण रंग लागउ माहरइ, जाणे चोल मजीठ (पृ० ४४)
(२) श्रावण मइ प्रीयउ सभरइ, वूंद लगइ तनु तीर (पृ० ४५)

लोक प्रचलित उपमानो के प्रयोग मे कवि वड़ा कुशल है। जहां उसे अपने मत की पुष्टि करनी होती है वहाँ वह या तो कोई न कोई दृष्टान्त देता है या लोक प्रचलित उपमानों का प्रयोग कर विषय को एकदम स्पष्ट कर देता है। यथाः—

(१) घर अंगण सुरतर फल्यउ जी, कवण कनकफल खाइं।
गयवर बांधउ वारणइ जी, खर किम ग्रावइ दाइं ॥(पृ० ९)
(२) वोवइ पेड़ आक के आंगण, अ व किहाँ थइ चाखइ (७४)
(३) पइठउ श्वान काच कइ मंदिर, मूरखि भुसिहि भुसि मरइ (९८)
(४) कहा अग्यानी जीउकुं गुरु ज्ञान वतावइ।
कबहुं विष विषधर तजइ, कहा दूध पिलावइ ॥१॥
ऊषर ईख न नीपजइ, कोऊ बोवन जावइ।
रासभ छार न छारि हइ, कहा गंग नवावइ ॥२॥
काली ऊन कुमाणसां, रग दूजउ नावइ।
श्री 'जिनराज' कोऊ कहा, काकउ सहज मिटावइ ॥३॥

भाषा की शक्तिमता के लिए कही कही लाक्षणिक प्रयोग भी किये गये हैं—

(१) दोउ नयण सावण भादुं भये, ऐसी भाँति रूनउ (८५)
(२) जोवन वसि दिन दसि झूठी सी, हइ *छवि छिन छिन छीजइ* ११२

मुहावरे भी आये है, यथा:

मयणतणो दांते करी, लोह चिणा कुण चावेरे (१४२)

कवि की छन्द-योजना वैविध्य पूर्ण है। उसमे एक अनन्त संगीत की गूंज है जो विभिन्न प्रकार की ढालो और रागिनियो द्वारा हृदय के तार झंकृत कर देती है। प्रत्येक पदके साथ राग-विशेष का उल्लेख कर दिया गया है। यथा प्रसंग तर्ज भी दे दी गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि जिनराजसूरि के ये पद-जो अब तक अधिकांश रूप मे हस्तलिखित प्रतियो में बन्दी पडे छटपटा रहे थे अब प्रकाशित होने से कबीर, सूर और मीरां के पदों की तरह लोक-कंठो मे रमकर दग्ध-हृदय मरुस्थल मे अनन्त आनन्द की वर्षा करेंगे।
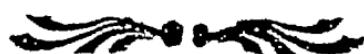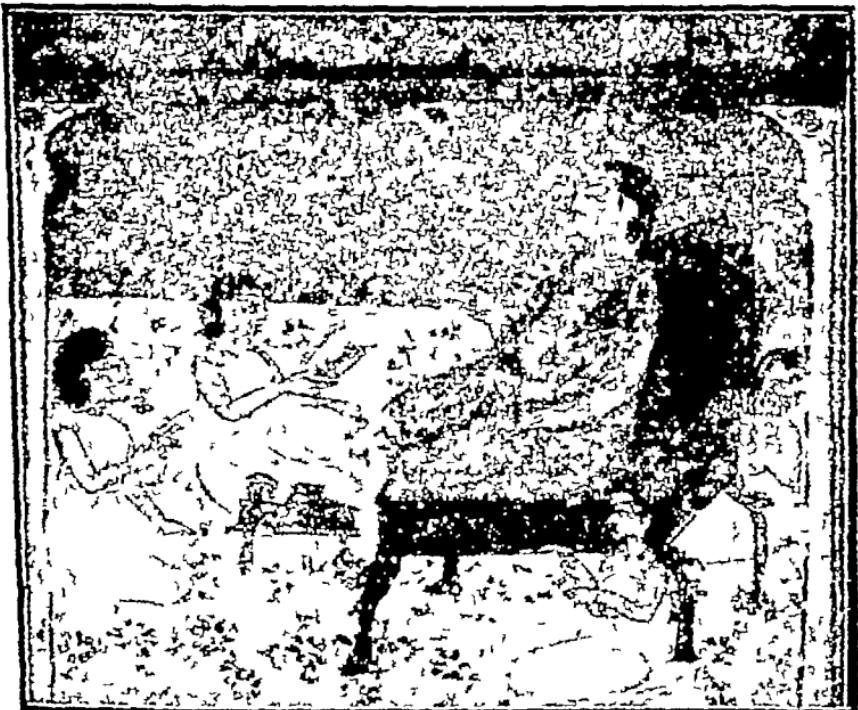
श्री जिनराजसूरि [सं० १६८१ में चित्रित]

वा० राजसमुद्रगणि (जिनराजसूरि) की हस्तलिपि

जिनराजसूरि
कृति-कुसुमाञ्जलि

श्री वर्तमान जिन चतुर्विंशतिका

(१) श्री आदिनाथ गीतम्

देश—बांह समापउ बाहुजी

मन मधुकर मोही रह्यउ, रिषभ चरण अरविंद रे।
ऊडायउ ऊडइ नही, लीणउ गुण मकरंद रे ॥१॥म०॥
रूपइ रूडे फूलडे, अलविन ऊडी जाइ रे ।
तीखा ही केतकि तणा, कटक आवइ दाइ रे ॥२॥म०॥
जेहनउ रंग न पालटइ, तिणसुं मिलियइ धाइ रे।
संग न कीजइ तेहनउ, जे काम पड्यां कुमिलाइ रे॥३॥म०॥
जे परबस बंधन पड्यां, लोकां हाथ विकाइ रे।
जे घर घर ना पाहुणा, तिण सुं मिलइ बलाइ रे॥४॥म०॥
चउविह सुर मधुकर सदा, अणहूतइ इक कोडि रे।
चरण कमल 'जिनराज' ना, सेवइ बे कर जोड़ि रे॥५॥म०॥

(२) श्री अजितनाथ गीतम्

राग—गुंड मल्हार जाति कड़खो

तार करतार ससार सागर थकी,
भगत जन वीनवइ राति दीसइ ।
अवर द्वारातरइ जाइ ऊभा रह्यां,
ताहरउ पिण भलउ नही दीसइ ॥ता०॥१॥
आपणइ कोडि कर जोडि जे ओलगइ,
दास अरदास ते करण पावइ ।
पिण घणी जो हुवइ जाण सेवा तणउ,
तो किसु भगत पासइ कहावइ ॥ता०॥२॥
माहरउ कथन मन मांहि जो आणस्यउ,
पूरस्यउ तउ सही एह आसा ।
केड लागा तिके केड़ किम मूकिस्यइ,
नेट का एक करिस्यउ दिलासा ॥ता०॥३॥
स्यूं वलि तारवा के नवा आविस्यइ,
अजित जिन एतलउ जे विमास्यइ ।
अकल 'जिनराज' नउ माजनउ कुण लहइ,
सही ते तरइ जे रहइ पासइ ॥ता०॥ ४

(३) श्री संभवनाथ गीतम्

राग—सोरठ, गौडी

विणजारा रे नायक सभवनाथ,
साथ खजीनउ सीतरउ विणजारा रे ।

वि०सहु को विणजण जाइ, थे घर वइठा स्यु करउ वि०॥१
वि० साटउ जोडइ आप, वीचि दलाल न को फिरइ वि० ।
वि० लाखीणा लख कोडि, रतन भविक ले ले घिरइ वि०॥२
वि० लाहइ रा दिन च्यार, वालभ वार म लाविस्यउ वि० ।
वि० थासी लाभ अनत, जउ किम हाथ हलाविस्यउ वि०॥३
वि० वाहि छछोहा हाथ साथ चलाऊ सऊ अछइ वि० ।
वि० सुण लोकोनी वात, पचतावइ पडिस्यउ पछइ वि० ॥४
वि० पहुची साहिव सीम, विणज करउ मन मोकलइ वि० ।
वि० पूठ रखइ 'जिनराज' अरिअण मूल न को कलइ वि०॥५

(४) श्री अभिनन्दन गीतम्

राग—परजीयउ ढाल-चादलियो ऊगो हरणी आथमी ए०

बे कर जोडी वीनवु रे, अभिनदन अवधार रे । दयालराय ।
अन्तरजामी माहरउ रे, आवागमन निवारि रे ।द०॥१॥बे०
आगम वचने आकळ रे, साभलि करम विपाक रे ।द०।
हु सरणागत ताहरइ रे, सरणइ आयउ ताक रे ।द०॥२॥बे०
मीटि अमीणी जउ करइ रे, तउ भाजइ भव भीड रे ।द०।
परमेसर पीहर पखइ रे, कुण जाणेइ पर पीड रे ।द०॥३॥बे०॥
उपगारी सिर सेहरउ रे, भयभंजण भगवंत रे ।द०।
अरिअण तउहिज अउहटइ रे, जउ पखउ करइ वलवंत रे।द०
हु अपराधी सउ परे रे, महिर करउ महाराज रे द० ॥
मेघ न जोवइ वरसता रे, सम विषमी 'जिनराज' रे द०॥५॥बे०

(५) श्री सुमतिनाथ गीतम्

राग-मल्हार

करता सुं तउ प्रीति, सहु हीसी करइ रे सहु हीसी करइ
परमेसर सुं प्रीति, करुं हुं सी परइ रे क० ।
आपणपइ नीराग, न रागी सुं अडइ रे न० ।
ताली एकण हाथ, कहउ किण विध पडइ रे क०॥१॥कर०॥
सेवी जोयउ सामि, आगलि ऊभा रही रे आ० ।
पडि पडि मरइ पतंग, दीवाचइ मन नही रे दी० ॥
भगति करुं सउ भांति, न सोम नजरि करइ रे सो० ।
नांणइ मन असवार, घोडउ दउडी मरइ रे घो० ॥२॥क०॥
सुमतिनाथ जगनाथ, पखइ मन माहरइ रे प० ।
देव अवर नी सेव न आवइ काइरइ रे न० ॥
बाबीहउ जिम चूंच, न वोडिइ जल नवइ रे न० ।
जलधर सुं इकतार, करी प्रीउ प्रीउ लवइ रे क० ॥३॥क०॥
नीरंजन चउ नेह, लखी नवि को सकइ रे ल० ।
कईयइ वीजां हि जेम, चिहुं मांहि वकइ रे चि० ॥
आपइ अविचल, राज, लागी जउ को रहइ रे ला० ।
भगतिवच्छल 'जिनराज', विरुद साचउ वहइ रे वि०॥४॥क०

(६) श्री पद्मप्रभ जिन गीतम्

राग-धन्यासी जाति भवन री

कागलियउकरतार भणी सी परि लिखूं रे कवि.पूछुं कर जोड़ि ।
जिम तिम लिखतां हाथ वहइ नही रे,
लिखिवा नो पिण कोडि ॥१॥क०॥

सइंगू माणस सिवपुर चालतउ, न मिलइ इण कलिकाल।
प्रभु लगि सपगउ पहुँचि सकइ नही रे,
निपगइ नउ जंजाल ॥का० २॥
हाथ न झालइ कागल केहनउ रे, तउ वाचइ किम तेह।
अलविन पाछउ पिण* ऊत्तर लिखइ रे,
साहबीयउ निसनेह ॥का० ॥३॥
नीरंजन तो किमहि न रंजीयइ रे,जउ लिखउ वीनती लाख।
दूर थका पिण भगति हुइ रहउ रे,
ले सहुकोनी साख ॥का० ॥४॥
एक पखी जउ जाणउ पालस्यां रे, पदमप्रभु सुं प्रीत।
तउ कागल 'जिनराज' म मूकेज्यो रे,
इणि घरि छइ आ रीत ॥का० ॥५॥

(७) श्री सुपार्श्व जिन गीतम्

राग—मारू

आज हो परमारथ पायउ, ज्ञानी गुरु अरिहंत वतायउ।
राग नइ द्वेष तणइ वसि नायउ,
परम पुरुष मइ सोइज ध्यायउ ॥आ०॥१॥
कर जोडी जउ को गुण गावइ, कडुए वचने कोइ मल्हावइ।
तूं अधिकउ ओछउ न जणावइ,
समता सागर नाथ कहावइ ॥आ० ॥२॥
साचउ सेवक जाणि न मिलीयउ,दुरजन देखिन अलगउ टलीयउ।

---

* किम

अकल पुरुष जिणविध* अटकलीयउ,
सहज सरूपी तिण विध फलीयउ ।।आ० ।।३।।
झाली हाथ न को तु तारइ, फेरइ न कोइ न तूं संसारइ ।
तू किम भाव कुभाव विचारइ,
फलइ मसाकति सारा सारइ ।।आ०।।४।।
एक नजरि 'सहु को परि राखइ, कुण बीजउ परमेसर पाखइ ।
श्री 'जिनराज' जिनागम साखइ,
सुजस सुपास तणउ इम आखइ ।।५।। आ०।।

(८) श्री चंद्रप्रभ गीतम्

रमउ रे सुरंगी गेहरी—ए जाति

श्री चद्रप्रभु पांहुणउ रे, किम आवइ घरवार रे ।
जेहनइ प्रभु छीपइ नही रे, पाखलि ते परवार रे ।।श्री०।।१।।
पाणी वल पिण वेगलउ रे, न रहइ काम अछेप रे ।
माया माछणि काढिवा रे, मइ न कीयउ आखेप रे ।।श्री०।।२
लोभ अनीतउ वागरी रे, नांखइ पगि पगि जाल रे ।
आठ पहर ऊभउ करइ रे, चउकी क्रोध चडाल रे ।।श्री०।।३
विसन वनेचर बारणइ रे, ऊभा करइ पुकार रे ।
माछीगर अभिमान चउ रे, न टलइ पग पइसार रे ।।श्री०।।४
सुमिरण श्री 'जिनराज' नउ रे, आवइ आगेवाण रे ।
तउ पापी पासउ लीयइ रे, वछित चढइ प्रमाण रे ।।श्री०।।५।।

---

* सोइज

(९) श्री सुविधिनाथ गीतम्

राग - सोरठ कडखानी जाति

सेवा बाहिरउ कइयइ को सेवक, तारयउ हुवइ तउ तवीयइ।
कीधइ काम मसाकति दीधां, ते दातार न चवीयइ ।।१।। से० ।।
वेडी जिम तारइ बूडता, ते तारक सरदहीयइ।
आंपणपइ तरता नइ तारइ, ते सु तारक कहीयइ ।।२।।से०।
आठ पहर ऊभा ओलगतां, मउज कदे कइ दीजइ।
विरुद गरीब निवाज तणउ प्रभु, तिण ऊपरिन वहीजइ ३।।से०।।
ते किम पात्र कुपात्र विचारइ, जे उपगारी होवइ ।
सम विसमी धारा वरसतउ, जलधर कदे न जोवइ ।।से० ।।४।।
पडियउ सुजस लिये परमेसर, पूरयउ छतउ पवाडइ ।
श्री 'जिनराज' सुविधि साहिव सुं, किम पहुँचीजइ आडइ।।से.५

(१०) श्री शीतल जिन गीतम्

राग—मल्हार सारग

आज लगइ धरि अधिक जगीस, सेव्यउ सीतल विसवा वीस।
जउ का कीधी हुयइ वगसीस, तउ संभारे ज्यउ जगदीस।।१।।
अवसरि करिअ हुस्यइ अरदास, तइ तउ काइ न पूरी आस ।।
तउ पिण तुझ ऊपरि वेसास, सेवक नई आपउ सावास ।।२।।
जउ को तइ काढयउ हुवइ काम, तउ ते दाखउ लेइ नाम ।
हुं तेसेवक तूं ते' सामि, कितला इक दिन चलस्यइ आम ।।३।।
जनम लगइ नव नव अवदात, गातां वउलइ मुझ दिन रात
तूं किम नेह धरइ तिलमात, तत वेला वातारी वात ।।४।।

वोल भलाई पिण 'जिनराज', तइ मोसुं न करी महाराज
जउ जाणउ पोतानी लाज, **राखिसि तउ** द्यउ अविचल राज ।५

(११) श्री श्रेयांस जिन गीतम्

राग—मल्हार

एक कनक नई वीजी कामिनी रे, दूभर घाटी देखि ।
मारग मारग चलतां चीत न अउहटइ रे,
भेटइ भविक अलेख ॥१॥
ओलगडी ओलगडी सुहेली श्री श्रेयांसनी, जउ करि जाणइ कोइ ।
ओलगतां ओलगता ओलगाणउ पहुँचइ चाकरी रे,
आप समोवडि होइ ॥२॥ ओ०॥
आठ पहुर हाजर ऊभउ रहइ रे, न गणइ साझ सवार ।
सइंमुख सइंमुख नइ परपूठइ सांमची रे,
कोई न लोपइ कार ॥३॥ ओ०॥
आठ अछइ अरियण अरिहंत नारे, न करइ तास प्रसग ।
साजणीया साजणीया साहिव नइ वालहा रे,
तिणसुं राखइ रग ॥४॥ ओ०॥
नाथ अवर मायइं करता हुस्यइ रे, [१]विहुं मामेमाणेज ।
श्री जिन श्री 'जिनराज' विहुं घोड़े चढइ रे,
साचउ प्रभु सुं हेज ॥५॥ ओ०॥

(१२) श्री वासुपूज्य जिन गीतम्

ढाल-१ चरणाली चामड रण चढइं

२ कडुआरे फल छे क्रोधना

नायक मोह नचावीयउ, हुं नाच्यउ दिन रातो रे ।

चउरासी लख चोलणा, पहिरया नव नव भातो रे ॥१॥ना०॥
कोछ कपट मद घूघरा, कठि विषय वर मालो रे।
नेह नवल सिरि सेहरउ, लोभ तिलक दे भालो रे ॥२॥ना०॥
भरम भुउण मन * मादल, कुमति कदाग्रह तालो × रे।
क्रोध कणउ + कटि तटि वण्यउ, भव मंडप चउसालोरे ॥३॥ना०॥
मदन सवद विधि ÷ ऊगटी, ओढी माया चीरो रे।
नव नव चाल दिखावतइ, का न करी तक्सीरो रे ॥४॥ना०॥
थाकउ हु हिव नाचतउ, महिर करउ महाराजो रे।
बारम जिनवर आगलइ, इम जंपइ 'जिनराजो' रे ॥५॥ना०॥

(१३) श्री विमलनाथ जिन गीतम्

राग— धन्यासी, ढाल-रहउ चतुर चउमास,

घर अगण सुरतर फल्यउ जी, कवण कनकफल खाइं।
गयवर बाधउ बारणइ जी, खर किम आवइ दाइं ॥१॥
विमल जिन माहरइ तुम्ह सुं प्रेम।
सुर सकलकित सु मिल्या जी, हीयडउ होसइं केम॥२॥वि०॥
मन गमता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाइ।
आदर साहिब नउ लही जी, कुण ल्यइ रांक मनाइं ॥३॥वि०॥
पाच छतइ कुण काचनइ जी, अलवि पसारइ हाथ।
कुण सुरतरु थी ऊठिनइ जी, बावल घालइ बाथ ॥४॥वि०॥
देव अवर जउ हुं करुं जी, तउ प्रभु तुमची आण
श्री 'जिनराज' भवो भवे जी, तूं हिज देव प्रमाण ॥५॥वि०॥

---

* धुवन मद. × टालो. + तणउ. ÷ विधि

(१४) श्री अनन्तनाथ गीतम्

राग—सिन्धु

पूजा नउ तूं वे परवाही, तइ समता गाढी कर साही ।
राही जिम तुझ आण आराही, पूरइ तउ पूरी पतिसाही ॥१॥
मइ साची सेवा विधि जाणी, भूखा भमइ अवर सवि प्राणी ।
मन सुध आराधइं तुझ वाणी, तउ संतोषीजइ आफाणी ॥२॥
हेलइ हेक वचन ऊथापइं, ते तउ पंड भरीजइं पापइं ।
नाम जपइं परमेसर जापडं, तूं किम तेहनउ पातक कापइ॥३
भगति जुगति नउ पइंलउ पार,मइं लाधउं जिणवर आधार ।
जिण तुझ काइं न लोपी कार, तिण तउ भगति करी सउवार॥४
नाथ अनंत तणउ 'जिनराज' लाधउ माझ सही मइ आज ।
आगम ने वचने मुनि 'राज' चालइ तउ द्यउ सिवपुर राज ॥५॥

(१५) श्री धर्मनाथ जिन गीतम्

राग--गोडी ढाल— १ नमणी खमणी.
२ सोई सोई सारी रैन गुमाई.

भवसायर हुती जउ हेलइ, तार सहु पोता नइ मेलइ ।
आगलि पाछलि इम जाणउ छउ,
तउ इवड़उ स्या नइ ताणउ छउ ॥१॥
करम विवर देस्यइ जिण दीस्यइं,संजम पलिस्यइ विसवा वीसइ
तइयइ फलस्यै वछित मोरउ,
तउ सउ तुम्हचउ नाह नहोरउ ॥२॥

तारउ मुझ सरिखउ मेवासी, तारक विरुद खरउ तउ थासी ।
जे जाया छइं जसनी रातइ,
ते तउ जस लइ जिण तिण वातै ।।३।।
पहिली तउ सउ वीनति कीजइ, मोटां सुं हठ पिण मांडीजइ ।
गिरुआ किम ही छेह न दाखइं,
जिम तिम सहु को ना मन राखइं ।।४।।
भव भव देवल देवल भमीयउ, सिवसु,खदायक कोइ न मिलीयउ ।
धर्मनाथ 'जिनराज' सखाई,
करतां चढती दउलति पाई ।।५।।

(१६) श्री शांतिनाथ जिन गीतम्

राग—धन्यासी मिश्र-हाजरनी जाति

काल अनतानंत भव माहे भमतां हो जे वेदन सही ।
सुं कहीयइ ले नाम बांभणपिण, गत हो तिथि वाचइ नही।।१।
पारेवइ सु प्रीति तइ जिम कीधी हो तिम तू हिज करइ ।
सांभलि ए अवदात, सहु को सेवक हो मन आसा धरइ ।।२।
हुं आयउ तुम्ह तीर, हरि करि मुझ पर हो सोम नजर करउ।
न लहइं अंतर पीड़, अंतरजामी हो तुं किम माहरउ ।।३।।
यानउ दीनदयाल, दुखीया देखी हो जउ नावइ दया ।
कुण करस्यइ तुझ सेव, वहतइ वारइ हो जउ न करउ मया ।।४
लाधउ त्रिभुवन राज, जउ साची सी हो तुझ सेवा सधइ ।
हुवइ समवड़ि 'जिनराज'रूख प्रमाणइ हो जिम वेलउ वधइ।।५

(१७) श्री कुन्थु जिन गीतम्

राग—मल्हार, वेलाल,

जिम तिम हुं आवी चढ्यउ जिनजी, मीटि तुम्हारी माहि ।
मत करज्यो वीजा वसु जिनजी, ल्यउ पोतइ निरवाहि ॥१॥
हिव रे जगतगुरु सुध समकित नीवी आपीयइ ।
करुणागर हो करुणा करि कुंथु कि,
सेवक थिर करि थापीयइ ॥आं०॥
पड्यउ घणउ छइ पांतरउ जिनजी, जउ जोसउ करतूत ।
पिण प्रभु नइ पूंठी हुयइ जिन जी,
सकल रहइ घर सूत ॥२॥ हि०॥
मइ खातउ मांड्यउ नवउ जिन जी, तिण छइ पग पग धीज ।
दीठउ अणदीठउ करउ जिन जी,
लाज रहइ तउ हीज ॥३॥ हि० ॥
ऊंची नीची वात मइ जिनजी, हु स्युं घालु जीव ।
मोटा वगस्यइ सउ गुनह जिन जी,
साचइ कहइ सदीव ॥४॥ हि० ॥
चरण न छोडुं ताहरा जिनजी, इण भव ए इकतार ।
'राज' अछइ विवहारीयउ जिन जी,
करि चलतउ ववहार ॥५॥ हि०॥

(१८) श्री अरनाथ जिन गीतम्

राग—प्रभावती—वेलाउल

आरावउ अरनाथ अहोनिसि,मन माहि राखउ लाख उमेद ।

मांगी कविजन जीभ म हारउ,

जउ लावउ हुवइ गुरुमुखि भेद ॥१॥अ०॥

आणइ नेह न जे गुण गाता, कडुए वचने नाणे रोष ।

तारउ तारउ कहिआ न तारइ,

मांग्यउ दीयइ नही ते मोख ॥२॥आ०

किणही विधि करतार न तूसइ, तउ ते केम करइ बगसीस ।

सेवक ही नइ जो वसि नावइ,

साचउ तउ ते हिज जगदीस ॥३॥आ०॥

प्रीति न पालइ ते किण ही सु, सउ अपरावे नाणइ द्वेष ।

आप समान करइ ओलगता,

पुरुपोत्तम नउ एह विसेप ॥४॥आ०॥

कहि कहि नइ जे भगति करावइ, ते 'जिनराज' म जाणउ देव ।

देवां माहि अछइ देवाचउ,

कोडे गाने करिस्यइ सेव ॥५॥अ०॥

(१९) श्री मल्लि जिन गीतम्

राग-मोरीयानी देसी

दास अरदास सी परि करइ जी, सूल दीसइ नही कोइ ।

कान दे वात न सांभलइ जी, तउ निवाजस किसी होइ ॥१॥दा०

मल्लि मन माहि राखइ नही जी, भगतजन वीनवइ जेह ।

कोड़ि परि राग जउ को करइ जी, तू किम करइ सनेह॥२॥दा०

आदर मान न को दीयइ जी, गुनह बगस्यइ नही एक ।

आपणउ जाणि न करे पखउ जी, देह धर आवड़ी टेक ॥३॥दा०

भोलडो भगति करिवा भणी जी, आविस्यइ एकण वार ।
वार बीजी सहि नाविस्यइ जी, ताहरो भगत तुझ दुवार ।४।दा०
तउ पिण दुवार 'जिनराज' नइ जी, ओलगइ वड वडा भूप ।
अलख अगोचर तुं सदा जी, सकल तू अकल सरूप ।।५।।द०

(२०) मुनिसुव्रत जिन गीतम्

राग—सोरठ कडखानी

अधिका ताहरा हु ता अपराधी, ते पिण तइ हिज तारया ।
अम्ह सरिखा सेवक अलवेसर, वेगुनही वीसारया ।।१।।अ०।।
आथ दीयइ बाथां भरि एका, अमरा पुर द्यइ एका ।
मुझ वेला मुहंडउ मचकोड़ी, वइठउ तारक ते का ।।२।।अ०
सहु कोनइ जउ राखइ सरिखा, पडइ न को पचतावइ ।
जगगुरु ही जोवइ बिहु नजरे, तउ बलियउ दुख आवइ ।।३।।अ०
तारया किता किता तूं तारिस, तारइ छइ पिण तू ही ।
इण वेला जउ तूं अलसाणउ, बइसि रहु लउ हूं ही ।।४।।अ०।।
भोल भगत दीयइ ओलभा, साहिव सहिता आया ।
मुनिसुव्रत 'जिनराज' मनाई, राखि लीयइ छत्र छाया ।५।अ०

(२१) श्री नमिनाथ जिन गीतम्

राग—

सइं मुख हुं तुम्हनइ न मिलो सक्यउ, तउ सी सेवा थाइ ।
दूर थकां कीधी न वरइ पडइ, खबरि न द्यइ को जाई ।१।स०
प्रवचन वचन सुधारस वरसतउ, आगलि परषद बार ।
समवसरण नयणे निरख्यउ नही, सजल जलद अणुहार ।२।स०

जिम जिम गुरुमुखि प्रभु गुण सांभलु, तिम तिम तनु उलसंति
परमेसर पीहर प्रापति पखइ, परतिख केम मिलंति ॥३॥स०
सुख दुखनी पिण वात न का कही, बि घडी बइसी पास।
घाट कमाई पोता तणी, तउ किम पूजइ आस ॥४॥स०॥
समरि समरि रसना रस वस करइ, नमि गुण गान रसाल ॥
श्री 'जिनराज' जनम सफलउ करइ,
इण परि इण कलिकाल ॥५॥स०॥

(२२) श्री नेमिनाथ जिन गीतम्

राग – रामगिरी

सांभलि रे सांमलीआ सामी, साच कहु सिरनामी रे।
बात न पूछइ तु अवसर पामी,
तउ स्यानउ अ तरजामी रे ॥१॥सा०॥
आगलि ऊभा सेवा कीजइ, पिण तु किमही ईन रीझ रे।
निसदिन तुझ गायउ गाइजइ,
पिण तिलमात्र न भीजइ रे ॥१॥सा०॥
जउ अह्मनइ भवसायर तारउ, तउ स्यु जाइ तुम्हारउ रे।
जउ पोतानउ बिरुद संभारउ,
तउ कांइ न विचारउ रे ॥३॥सां०॥
हु स्यु तारु हु तारक स्यउ, ईम छूटी पडी न सकस्यउ रे।
जउ अह्मनइ सेवक त्रेवडिस्यउ,
तउ वात इयां मांहि पड़स्यउ रे॥४॥सां०॥
ओछी अधिकी वात वणाइ, कहतां खोडि न काइरे।
भगतवछल 'जिनराज' सदाई,
किम विरचइ वरदाई रे॥५॥सां०॥

(२३)श्रीपार्श्वनाथ जिन गीतम्

राग-हासलानो जाति, मल्हार धन्याश्री

मन गमतउ साहिब मिल्यउ, पुरिसादाणी पासन रे।
परतिख परता पूरवइ, सफल करइ अरदासन रे ॥१॥
भविअण भावइ भेटीयइ, ले साथइ परिवारन रे।
आज विपम पंचम अरइ, सुरतरु नउ अवतारन रे ॥२॥भ०
जे मुझ सरिखा मानवी, आणइ मन संदेहन रे।
तेहनइ सेवक मू किनइ, समझावइ सुसनेहन रे ॥३॥भ०॥
जे समरण साचइ मनइ, करिस्यइ वार विचारन रे।
तेहनइ प्रभु पुठी रखउ, थास्यइ सानिध कारन रे ॥४॥भ०॥
कीजइ चोल तणी परइ, परमेसर सु प्रीतन रे।
श्री 'जिनराज' मिल्या पछी, चढइन वीजउ चीतन रे ॥५॥भ०

(२४) श्री वीर जिन गीतम्

राग-गउड़ी मल्हार

भविक कमल प्रतिवोधतउ, साधु तणइ परिवार।
गामागर प्रभु विचरतउ, मिलि न सक्यउ तिण वारो रे ॥१॥
चरम जिनेसरु, लीनउ सिवपुर वास।
सबल विमासण, केम करु अरदास रे ॥च०॥२॥
हिव अलगउ जाई रह्यउ, तिहां किण किम अवराय।
चलतउ साथ न को मिलइ, किम कागल दिवराइ रे ॥३॥च०॥
वात कहु ते सांभलइ, दूर थकउ पिण वीर रे।
पिण पाछउ उत्तर न दयइ, तिणमो मन दिलगोर ॥४॥च०॥

इम 'जिनराज' विचारतां, आव्यउ भाव प्रधान।
तिण तू परतिख मेलव्यउ, हिव करि आप समान रे ।।५।।च०

(२८) कलश—

राग—धन्याश्री सुभ वहिनी पिउडो परदेशी

इण परि भाव भगति मन आणी, सुध समकित सहिनाणी जी।
वर्त्तमान चउवीसी जाणी, श्री 'जिनराज' वखाणी जी।।१।।इ०
जउ मूरति नयणे निरखीजइ, जउ हाथे पूजीजइ जी।
जउ रसनाइ गुण गाइजइ, नर भव लाहउ लीजइ जी ।।२।।इ०
युगवर 'जिनसिंहसूरि' सवाई, 'खरतर' गुरु वरदाई जी।
पामइ जिनवर ना गुण गाई, अविचल राज सदाई जी ।।३।।इ०
पहिली परति लिखाई साची, वारू गुरुमुखि वाची जी।
समझी अरथ विशेषइ राची, ढाल कहेज्यो जाची जी।।४।।इ०।।
केई गुरु मुख ढाल कहावउ, केई भावना भावउ जी।
के 'जिनराज' तणा गुण गावउ,
चढती दउलति पावउजी ।।५।।इ०।।

।। इति श्री चउवीस जिन गीतम् ।।

श्री विहरमान विंशति जिन गीतम्

(१) श्री सीमंधर जिन गीतम्

राग—कलहरो देशी-पोपट चाल्यउरे

मुझ हियड़उ हेजालुयउ, भाखर गिरणइ न भीति ।
आवइ जावइ रे एकलउ, करिवा तुम्ह सु प्रीति ॥१॥
सीमंधर करिज्यो मया, धरिज्यो अविहड नेह ।
अम्हचा अवगुण जोइ नइ, रखे दिखाडउ छेह ॥२॥सी०॥
तुम्हचइ भगत घणु घणा, अणहूंतइ इक कोडि ।
अम्हची मीटि न को चढयउ, साहिव तुम्हची जोड़ि ॥३॥सी०
दक्षिण भरत अम्हे रहूं, पुखलावति जिनराज ।
कोइक दिन मिलिवा तणउ, दीसइ अछय अन्तराय ॥४॥सी०
दीधी दैव न पखड़ी, आवु केम हजूर ।
पिण जाणेज्यो रे वंदना, प्रह ऊगमतइ सूर ॥५॥सी०॥
कागलीयइ लिख कारिमी, कीजइ सी मनुहारि ।
अम्हची एहीज वीनति, आवागमन निवारि ॥६॥सी०॥
परम दयाल कृपाल छउ, करिज्यो अवसर सार ।
श्री 'जिनराज' इसु कहइ, मत मूंकउ वीसारि ॥७॥सी०॥

(२) श्री युगमन्धर जिन गीतम्

ढाल- १ सुण सुण वाल्हहा. २ अवला केम उवेखीये. नी देसी

सई मुख हुं न सकूं कही, आडी आवइ लाज ।
रहि पिण न सकुं वांपजी, इम किम सीझइ काज रे ॥१॥

वीरा चांदला ! तुं जाइस तिण देस रे ।
जुगमंधर भणी, कहिजे मुझ संदेस रे ।।२।।वी०।।
तू अंतरजामी अछइ, जाणइ मन नी वात ।
तउ पिण आस न पूरवइ, ए सी तुम्हची धात रे ।।३।।वी०।।
मइं तउ करिवउ मो दिसा, तुम्ह सु निवड़ सनेह ।
फल प्रापति सारू हुस्यइ, पिण मत दाखउ छेह रे ।।४।।वी०।।
तेहनइ कहि समझाइयइ, जे हुवइ आप अयाण ।
पिण 'जिनराज' समउ अछइ, अवर न एवड़ जाण रे ।५।वी०

(३) श्री बाहु जिन गीतम्

ढाल– करहइनी मन मधुकर मोही म्हचउ०

बांह समापउ बाहु जी, जिम मो मन थिर थाइ रे ।
जिण तिण बांह विलंवतां, मान महातम जाइ रे ।।१।।बां०।।
सबला नइ सरणइ थियइ, गंजी न सकइ कोइ रे ।
पाधरसी पाछल पडयां, कारिज सिद्धि न होइ रे ।।२।।बा०।।
तुम सरिखउ थायइ वलू, करइ पखउ जगनाह रे ।
तउ नाणु सुपनंतरइ, हुं केहनी परवाह रे ।। ३ ।। बा० ।।
सरणागत वच्छल तुम्हे, हुं सरणागत सामिरे ।
जे मन मानइ ते करउ, स्युं कहीयइ ले नाम रे ।।३।। बा० ।।
जउ सेवक करि जाणस्यउ, तउ इतलइ ही मुझ राज रे ।
मीटइ ही मोटां तणी, जीवीजइ 'जिनराज' रे ।।५।।बा०।।

(४) श्री सुबाहु जिन गीतम्

ढाल—कर जोडो आगल रही ए जाति

सामि सुबाहु जिणंद नउ, जइयइ मुख निरखेसन रे ।

सकल मनोरथ मालिका, तइयइ सफल करेसन रे ॥१॥
धरम जागरीया जागतां, समरंता गुण ग्रामन रे।
पाणी वलि एहवु रहथ उ, माहरउ मन परिणामन रे ॥२॥ध०
अमीय समाणा बोलड़ा, बारह परषद साथन रे।
साभलि भव थी ऊभगी, व्रत लेइमु प्रभु हाथन रे ॥३॥ध०॥
जनम लगइ पासइ रही, भगति करिसु निसदीसन रे।
तप जप सजम पालिसु, मन सुध विसवा वीसन रे ॥४॥ध०
आपण पइ जइ गोचरी, आणिसु सुद्ध आहारन रे।
साधु सहु नइ साचवो, देइसु देह आधारन रे ॥५॥ध०॥
च्यारि करम चकचूरि नइं, पामिसु केवल नाणन रे।
श्री 'जिनराज' पसाउलइ, चढिस्यइ बोल प्रमाणन रे ॥६॥ध०

(९) श्री सुजात जिन गीतम्

ढाल—महिमागर नी जाति, आज निहेजो रे दीसइ नाहलो

तूं गति तू मति तूं साचउ धणी, तूं बधव तू तात।
तुझ सम अवर न को मुझ वालहउ, समरूं सामि सुजात ।१।तू०
हरि हर ब्रह्मादिक आराधता, न टलइ गरभावास।
तिण इण भव कीधी मइ आखड़ी, सीस नमावण तास॥२॥तू०
जे पोते परनी आसा करइ, ते स्यू पूरइ आस।
संतोष्यउ पिण रांक न दे सकइ, अवचल लील विलास।३।तू०
अ तरगत मन सु आलोचता, ए कीधउ निरधार।
तुझ विण देव न को बीजउ अछइ, शिवसुखनउ दातार ।४।तू०
करउ महिर भव जलधि लहिर थकी, प्रवहण सम 'जिनराज'।
जउ कर ग्रहि सेवक नइ तारिस्यउ, तउ हिज रहिस्यइ लाज५तू

(६) श्री स्वयंप्रभ जिन गीतम्

देशी–नणदलनी जाति

सामि स्वयप्रभू सांभलउ, करिहु निवाज सकाइ। जगजीवन।
विरुद गरीब निवाजनउ, जिम जग जस थिर थाइ।ज०।१सा०
पोताना अरिअण हण्या, तिण अरिहंत कहंत।ज०।
जउ मुझ अरिदल निरदलउ, तउ साचउ अरिहत।।ज०।।२सा०
तू स्यु तारइ तेह नइ, जे सूधा अणगार।ज०।
तारक विरुद खरउक रउ, तउ मुउ सरिखउ तार।।ज०।३सा०
अ तरजामी माहरउ, तू किण कारण होइ।ज०
अ तरगति लेवा भणी, न दियइ कागल कोइ।ज०।।४।।सा०।।
नेह गहेला मानवी, भावइ तिम भासंति।ज०।
भारी खम 'जिनराज' जी, केहनइ छेह न दिति।ज०।५।सा०

(७) श्री ऋषभानन जिन गीतम्

देशी–आज घुरा हुँ घुंघलउ, ए जाति

मइं तउ ते जाण्यउ नही साहिब, जेसु तुम्हचइ रंग।
तउ ही छाडी न को सकइ, साहिब पाणीवल तुझ सग।।१।।
कोडि गाने हेजालूये, हेले मुझ गुण गेह।
फेरि हेलउ न को तइं दीयउ,
साहिब तूं साचउ निसनेह।।२।।को०
आदर मान न को दीयइ, साहिब करइ न का वगसीस।
तउ पिण ऊभा ओलगइ साहिब,
इन्द्रादिक निसदीस ।। ३ ।। को० ।।

ए माहरउ ए पारकउ, साहिब न करइ कोइ विचार।
तउ पिण आवी नइ जुडइ, साहिब आगलि परषद वार।४।को०
सुख दुख पिण पूछइ नही, साहिब तउ पिण तुम्ह सुं प्रीति।
ऋषभानन सहु को करइ, साहिब ए तुझ नवली रीति।५।को०
नयणे नयण निहालता, साहिब मोहइ सहुअ समाज।
आपणपइ अलगउ रहइ, साहिब मोह थकी 'जिनराज'।६।को०

(८) श्री अनन्तवीर्य जिन गीतम्

देशी—सदगुरु माहरइ नादइ भेहीयो. २ नारी अब हमकुं मोकलो.

अनंतवीरिज मइ ताहरउ, नाम सुण्यउ जिनराज।
हिव जिम तिम वल फोरवी, आपउ सिवपुर राज॥१॥अ०॥
जउ हूं जोऊ मो दिसा, तउ न मिलइ तिल मात।
निण तो चीतवतां सहू, वरइ पडेसी वात॥२॥अ०॥
जे मइ कीधी नव नवी, करणी कोडि प्रकार।
तिण हु तो प्रभु छोडवइ, तउ हुवइ छूटकवार॥२॥अ०॥
भवसायर वीहामणउ, जिहा किण वाट न घाट।
तूं तारइ तउ हिज तरूं, सवला ऊझड़ वाट॥४॥अ०॥
छोरू सहिज उछाछला, कोडि विणासइ काम।
पिण मावीत न मिट सकइ, जिम तिम पूरइ हाम॥५॥अ०॥

(९) श्री विशाल जिन गीतम्

देशी—आदरि जीव क्षमा गुण आंदरि

आपणपइ हूं आवी न सकूं, मूंक्यउ छइ परधान जो।
जउ साची सेवा सारइ, तउ राखेज्यो वान जी॥१॥

मुझ मन तुझ चरणे लयलीनउ, जिम मधुकर अरविंद जी ।
पाणी वल पिण पास न छंडइ,लीणउ गुण मकरंद जी ।।२।।मु०।।
चपल पणइ चूकस्यइ तउ पिण, मत छोडावउ तीर जी ।
तू तर उत्तर आपइ ऋटकी, गरुआ हुवइ गभीर जी ।।३।।मु०।।
बीजा नइ बगसीस करंता, मत मूकउ वीसारिजी ।
पति वंचउ परहरउ पातक, अवर न छइ ससारि जी ।।४।।मु०।
वात सहू नउ ए परमारथ, सांभलि सामि विशाल जी ।
श्री 'जिनराज' निरास म करिज्यो,
करिजो का संभाल जी ।।५।।मु०।।

(१०) श्री सूरप्रभ जिन गीतम्

देशी–मेघमुनि काइ डम डोलइ रे

कीजइ छइ जेहना सहू जी, वचने वचन प्रमाण ।
ते जो आपणपइ मिलइ जी, तउ हुवइ कोड़ि कल्याण ।।१।।
सूरप्रभु अवधारउ अरदास, जिम तिम पूरउ मुझ आस ।।सू०।।
देई तीन प्रदक्षिणा जी, आणी अधिक जगीस ।
प्रभु आगलि ऊभउ रही, प्रश्न करूं दस वीस ।।२।।सू०।।
वलि पूछूं हिव केतलउ जी, भमिवउ छइ ससार ।
आंधी ना सटइ पड्या जी, भमतां नावइ पार ।।३।।सू०।।
पोतानी करणी पखइ जी, तारी न सकइ सामि ।
पिण वाटइ वहता सहू जी, पूछै कितलै गांम ।।४।।सू०।।
जिण दिन प्रभु दरसण हुस्यइ जी, लेखइ पड़स्यइ तेह ।
ते धन दिन 'जिनराज' ना जी, इण परि वउलइ जेह ।।५।।सू०।

(११) श्री वज्रधर जिन गीतम्

ढाल—मर्यादानी

एक सबल मन नउ धोखउ टल्यउ,
लाधउ साहिब चतुर सुजाण रे।
जेहु भगति करिसु ते जाणिस्यइ,
वज्रधर केवलनाण प्रमाण रे ॥ए०॥१॥
दूर थकउ पिण जउ साचइ मनइ रे,
सुमरण करिस्युं वार विचार रे।
तउ पिण ते अहल्यउ जास्यइ नही रे,
फलस्यइ भव भव कोड़ि प्रकार रे ॥ए०॥२॥
अंतरगति अंतरजामी लहै रे,
ते प्रभु साचउ मुख नउ बीज रे।
जे गुण नइ अवगुण जाणइ नही रे,
तेसु निसदिन करिवउ धीज रे ॥ए०॥३॥
चूक पड़इ जउ किण ही वात नउ रे,
तउ पिण न धरइ तिलभर रीस रे।
तूसइ पिण कईयइ रूसइ नही रे,
ए मुझ प्रभुनी अधिक जगीस रे ॥ ए०॥४॥
ते तउ कहीयइ नाह न कीजीयइ रे,
जेहनइ आठे पहर अंधेर रे।
श्री 'जिनराज' अवर सुं मीढता रे,
मेरु अनइ सरसव नउ फेर रे ॥ए०॥५॥

(१२) श्री चन्द्रानन जिन गीतम्

ढाल-धरम हीयइ धरो.

समाचारी जूजूई रे, आवइ मन संदेह ।
सो साची करि सरदहुं रे, सबल विमासण एहो रे ॥१॥
चंद्रानन जिन, कीजइ कवण प्रकार रे।
इण दूसम अरइ, मइ लाधउ अवतार रे ॥२॥च०॥
आगम बल तेहवुं नही रे, संसय पड़ें सदीव ।
सूधी समझि न का पड़ें रे, भारी करमा जीव रे ॥३॥च०॥
दृष्टिराग राता अछइ रे, केहनइ पूछूं जाइ रे ।
आंपणपउ थापइ सहु रे, तिण मो मन डोलाई रे ॥४॥चं०॥
विहरमान जिन संभली रे खरिय मिलण मन खंत ।
हुवइ दरसण 'जिनराज' नउ रे, तउ भांजइ मन भ्रंत रे।५।चं०

(१३) श्री चंद्रबाहु जिन गीतम्

देशी—आवउ म्हारी सहिया गच्छपति वादिवा.

जोवउ म्हारी आई इण दिसि चालतउ हे,
कागलीयउ लिख दीजइ हे ।
अंतरजामी थी अलगा रहथा हे, कागल वाही कीजइ हे ।१जो०।
साहिबीयउ तउ छइ वइरागीयउ हे, फेर जबाब देस्यइ हे ।
पिण प्रभुनी सेवा मांहे रहथा हे,
सहजइ काज सरेस्यइ हे ॥२॥जो०॥
साहिब नइ अम्हसी खप का नथी हे, पिण गरज अम्हारइ हे ।
जउ साचा सा भगति कहावीयइ हे,
तउ भव जलनिधि तारइ हे ॥३॥जो०॥

साजणिया पिण दुरगति जे दीयइ हे, तिण थी दूर रहीजइ हे ।
छोडावइ जे गरभावास थी हे,
तिण सुं सकति मलीजइ हे ॥४॥जो०॥
नामजपीजइ श्री चंद्रवाहु नउ हे, निसिदिन ध्यान धरीजइ हे ।
ते सलहीयइ जइ कर 'जिनराज' नउ हे,
जिण करि लेख लिखीजइ हे ॥५॥जो०॥

(१४) श्री भुजंगम जिन गीतम्

ढाल– १ श्री विमलाचल सिर तिलउ, २ दीवाली दिन आवियउ
सामि भुजंगम ताहरउ, नाम जपइ सहु कोइ ।
पिण तेहनी परि तइं तजी, तिण मुझ अचरिज होइ ।१।सा०।
तूं सपगउ पग रोपिनइ, चाढइ वोलि प्रमाण ।
आगम वचनइ तूं चलइ, न चलइ हीया त्राण ॥२॥सा०॥
तूं गयवर गति चालतउ, न धरइ तिल भर वांक ।
मोर गरुड़ सेवा करइ, नाणइ केहनो सांक ॥३॥सा०॥
दो जीहउ पिण तूं नही, न धरइ विष लवलेस ।
अमीय समाणे बोलड़े, दयइ सहु नइ उपदेस ॥४॥सा०॥
अथवा नाम भुजंगम मइ, साच कहइ कविराज ।
अवर सहू सपलोटीया, तू मणिधर 'जिनराज' ॥५॥सा०॥

(१५) श्री नेमि जिन गीतम्

ढाल—१ पास जिणंद जुहारीयइ जी, २ वीर वखाणी राणी चेलणा जी
नेमि प्रभु माहरी वीनती जी, सांभलउ धरम धुरीण ।
फेरवुं तुझ विचइ तेहवउ जी, को नही जाण प्रवीण ॥१॥
हुं तुझ दास तूं मुझ धणी जी, आपणइं सगपण एह ।

ते भणी स्युं कही दाखवुं जी, जुगत जाणउ करउ तेह ॥२॥
भगत तुझ अवर द्वारांतरइजी, आस पिण पूजतां जाइ ।
आप विमासी नइ जोइज्यो जी, लाज ए केहनइ थाइ ।३।ने०
पारथिया पहड़इ नही जी, उत्तम एह आचार ।
निपट उवेख मूकइ नही जी, नेट कांइ करइ सार ॥४॥ने०॥
आपण ऊपरि जे रहइ जी, अवर करइ नही सामि ।
ते 'जिनराज' निवाजीयइ जी, आपणउ अवसर पामि ॥५॥ने०

(१६) श्री ईश्वर जिन गीतम्

ढाल—पास जिणंद जुहारिइय

ईसर जिन वइरागियउ, रागी थी अधिक दिवाजइ रे ।
जिण परि प्रभु वखाणियइ, ते परि सगली तुझ छाजइ रे ।१।ई०
तूं क्रोधी क्रोधइ चढयउ, अरियणना कंद नकंदइ रे ।
अभिमानी सिर सेहरउ, तूं चालइ आपणइ छंदइ रे ॥२॥ई०
मायावी माया रची, सहु को ना तू मन वंचइ रे ।
तू लोभी गुण मेलवी, लाख गाने ले संचइ रे ॥३॥ई०॥
सेवक पिण पोतइ तणा, तु जोवइ नजरि न देई रे ।
देई कान न साभलइ, किणहीनइ वात कदेई रे ॥४॥ई०॥
अलख अगोचर तूं जयउ, किणही तुझ अंत न पायउ रे ।
भगतवछल जगराजीयउ,
जीतउ पिण 'जिनराज' कहायउ रे ॥५॥ई०॥

(१७) श्री वीरसेन जिन गीतम्

ढाल—वहिली हो वलए करेज्यो इण दिसइ.

मुझ नइ हो दरसण न्याय न तूं दीयइ हो, नवलो छइ मुझ रीति ।

जेसु हो तुम्हचइ निसदिन रूसणउ हो,
माहरइ तिण सु प्रीति ॥१॥
जेहनइ हो तइ वनवास दीयउ हुतउ हो,घरतउ नवि वेसास ।
तेहनइ हो आदर सु तेडाविनइ हो, मइ राख्यउ छइ पास ॥२॥
जिण सु हो कईयइ मीटि न मेलणउ हो,करतउ कुरुख सदीव ।
मइ तिण सु हो एकारउ माडियउ, लागउ माहरउ जीव ।३।
वयण न लोपइ तू पिण जेहनउ हो, काम काढू पिण जेह ।
नाक नमिण पिण न करू तेहनइ हो,परठि अछइ मुझ एह ॥४
मुझ करणी साम्हउ न जोइयइ हो, वीरसेन 'जिनराज' ।
पर दुख कातर विरुद विचारनइ हो, दरसण दे महाराज ।५।

(१८) श्री देवजस जिन गीतम्

देशी—वेग पधारउ महलां थी

सइंमुख साहिबनइं मिल्या, फेर पडइ कुजकोइ ।
ओलगडी अलगां रह्यां, सदेसडे न होइ ॥१॥
देवजसा दरसण दीयउ, ए मुख खरी रुहाड़ि ।
अतुली बल जिम तिम करी, एह प्रमाणइ चाडि ॥२॥दे०॥
जउ छोरु करि जाणस्यउ, तउ पूरवस्यइ लाडि ।
अलवेसर इण वातनउ, मत को जाणउ पाड ॥३॥दे०॥
मन नी वात सहु कहु, जउ भेटु जगनाथ ।
कहिवउ तउ छइ मुझ वसू, करिवउ छइ तुम्ह हाथ ॥४॥दे०
कहती वात सहू करइ, पर पूठइ 'जिनराज' ।
पिण मुरड़इ न मिटी सकइ, दीवानी हुवइ लाज ॥५॥दे०॥

(१९) श्री महाभद्र जिन गीतम्

ढाल—मन मोहनीयइ नी देसी

लहि मानव अवतार, गुरु मुख त्रिविध त्रिविध व्रत ऊचरुं ।
न पलइ निरतिचारि, परभव नउ डर तिल भर नवि धरूं ॥१॥
ए प्रभु आगलि जे वीतग ते भाखीइ,
मनका सल्ल कूड़ कपट स्यउं राखियइ ।
पर अवगुण चिहुं मांहि, आणी सांक न कामइ भाषतइ ।
दीधा कूड़ कलंक, पोतानइ स्वारथ अण पूजतइ ।२।प्र०॥
दयूं पर नइ उपदेस, आगमने वचने अति आकरूं ।
जाणइ लोक महंत, पिण पोतइ ते मूल न आचरूं ॥३॥प्र०॥
विनडइ च्यार कषाय, ते परि हुं कहि न सकूं लाजतउ ।
सदगति करणी सार, दीसइ छइ अलगी प्रभु आजतउ ॥४॥प्र०
एक अछइ आधार, सरदहणा साची प्रभु ऊपरइ ।
महाभद्र 'जिनराज' ते प्रभु जे सेवक नइ ऊधरइ ॥५॥प्र०॥

(२०) श्री अजितवीर्य जिन गीतम्

ढाल –सुखदाई रे सुखदाइ रे—ए देशी

मिलि आवउ रे मिलि आवउ रे,
श्रीअजितवीरज गुण गावउ रे ॥मि०
अति सुस्वर सधव सहेली रे, मन मेलू भगति गहेली रे ।
मिथ्यामत दूर रहेली रे, बइसउ दस पांच महेली रे ॥१॥मि०
परतिख प्रभु नयण न दीसइ रे, मेलउ न दीयउ जगदीसइ रे ।
पर पूठइ ध्यान धरीसइ रे, तउ पिण भव जलधि तिरीसइ रे।२मि.
रावण वीणा धरि खंधइ रे, गुण गातउ विविध प्रबंधइ रे ।

टूटी तातइ नस सघइ रे, तिण गोत्र तीर्थंकर वधइ रे ॥३मि०
चित्त भगति वसइ पूरीजइ रे, तउ असुभ करम चूरीजइ रे।
शिवपुर नइ हाथउ दीजइ रे,मानव भव लाहउ लीजइ रे॥४मि.
ते हिज जीहा सलहीजइ रे, जिण प्रभु नउ सुजस कहीजइ रे।
'जिनराज' सखाई कीजइ रे,मनवंछित सुखपामीजइरे ॥५मि

(२१) श्री वीस विहरमाण जिन गीतम्

ढाल— लोक सरूप विचारो ए देशी

वीस जिणेसर जगि जयवंता जाणियइ रे, अढीदीप मझार।
धन ते गामागर पुर प्रभु विचरइ जिहां रे,
साधु तणइ परिवार ॥१॥वी०॥
वासुदेव बलदेव भगति नित साचवइ रे, लहिवा भवजल तीर।
चउरासी लख पूरव सहुनउ आउखउ रे,
गुण गरुआ गभीर ॥२॥वी०॥
वृष लाछन सोभित तनुनी अवगाहना रे,पणसय धनुष प्रमाणि।
समवसरण बारह परषद प्रतिवोधता रे,
जगगुरु अमृत वाणि ॥३॥वी०॥
धन धन ते जीहा जिण प्रभु गुण गाइयइ रे,आणी मन आणंद।
धन धन ते दिन जिण दिन भेटीयइ रे,
विहरमाण जिणचंद ॥४॥वी०॥
'खरतर' गच्छ युगवर 'जिनसिंह सूरिंद' नउ रे,
सीसइ धरीयइ जगीस।
श्री 'जिनराज' वचन अनुसरइ सथुण्या रे,
विहरमाण जिन वीस ॥५॥वी०॥

इति श्रीजिनराजसूरि कृत वीस विहरमान जिन गीतम्-

श्री ऋषभादि तीर्थंकर गीत

श्री ऋषभदेव बाललीला स्तवन

मन मोहन महिमानिलउ रे, जीवन प्राण आधार रे नान्हडीया।
जोवत नयन थकित भए रे, सुंदर 'रिषभकुमार' रे ना०॥१॥
तेरी पूतम लेउ वलईया, जीवउ तेरे बहिनरु भईआ।
जंपइ मरुदेवा मईआ, मेरे अंगणि रे खेलण आवि रे ना०॥
मेरउ दूध न तूं पीयै रे, अमृत रस लयलीन रे ना०
मेरइ मनि तू ही वसइ रे, ज्युं रयणायर मीन रे ना०॥२॥
रोम रोम तनु हुलसइ रे, सूरति पर वलि जाउ रे ना०
कबही मोपइ आईयइ रे, हूं भी मात कहाऊ रे ना०॥३॥
पगि घूघरड़ी घमघमइ रे, ठमकि ठमकि धरइ पाउ रे ना०
बाँह पकरि माता कहइ रे, गोदी खेलण आउ रे ना०॥४॥
चिवुकारइ चिपटी दीयइ रे, हुलरावइ उर लाय रे ना०
बोलइ बोल जु मनमनारे, दंतिआ दोइ दिखाइ रे ना०॥५॥
तिलक वणावइ अपछरा रे, नयणा अंजन जोइ रे ना०
काजल की विंदी दियइ रे, दुरजन चाख न होइ रे ना०॥६॥
सोहइ चउ सिर सेहरउ रे, चंपक लाल गुलाल रे ना०
सीस मुगट रतनें जड़यउ रे, भाल[1] तिलक सुविसाल रे ना०॥७

---

१ कुंडल झाक झमाल

घाट घड़ी रतने जड़ी रे, कनक दडी ले उट रे ना०
चोट करइ नीकइ तकी रे घोटांकइ सिर दोट रे ना०॥८॥
चटकइ चटपट चालवइ रे, वगू लट्टू फेरि रे ना०
रंग रगीली चक्रड़ी रे, फेरइ नीकइ घेर रे ना०॥९॥
बहिनी लूण उतारती रे,अइसइ द्यइ आसीस रे ना०
चिरजीवे तूं नानड़ा रे, कोड़ाकोड़ि वरीस रे ना०॥१०॥
वाललीला जिनवर तणी रे, सवही कइ मन भाइ रे ना०
'राजसमुद्र' गुण गावतां रे, आणंद अंग न माइ रे ना०॥११॥

श्री ऋषभ जिन कर संवाद

राग—सामेरी

रिषभ जिन निरसन रान विहारो
पाणि परस्पर वाद मंडाणउ, तिण भोजन विधि वारी ॥१रि०
कनक दान मइं वंछित दीनउ, जगमइ सोह वधारी।
अंत पंत ऊन मागत लज्जा, क्युं करि रहइ हमारी ॥२॥रि०
जिनवर पूजा लगन थापना, भोजन परणण नारी।
तिलक करण भूपति अभिषेकइ, इहां तउ हूं अधिकारी ॥३रि०
इम उत्तम कारिज बहु कीने, तिण ए विधि न पियारी।
दक्षिण कर वामइ प्रतइ यु कहइ, तुं होइ भिक्षाचारी ॥४॥रि०
वाम कर तव अइसइ बोलत, तुं झूठउ अहकारी।
जोतिप मूल गणत अभ्यासइ, मुझ अधिकाई सारी ॥५॥रि०
जग जीवन कारण कण वावरा, लणिवा हुं उपगारी।
जव संग्राम मुखइ भागइ तुं, तब हुं रक्षाकारी ॥६॥रि०॥

वच्छर लगि वादइ जिन जंपइ, तुम्ह झगरउ मुझभारी ।
आदिदेव कीने दोऊ राजी, बहु विधि जुगति दिखारी ।७।रि०
गिरवर धीर समीर ज्यु विहरत, प्रभु आए पदचारी ।
श्री श्रेयांसकुमर पडिलाभे, पूरब जा(ति संभारी) ॥८॥रि०

श्री विमलाचल आदीश्वर स्तवन

श्री 'विमलाचज' सिर तिलउ, आदीसर अरिहंत ।
युगला धरम निवारण, भय भंजण भगवंत ॥१॥श्री०॥
मुझ मन ऊलट अति घणउ, सो दिन सफलगिणेस ।
सामी श्री रिसहेसरू, जव नयणे निरखेस ॥श्री०॥२॥
जंगम तीरथ विहरता, साधु तणइ परिवार ।
आदि जिणंद समोसरथा, पूरब निवाणु वार ॥श्री०॥३॥
अचिरा विजयानंदन, जग बंधव जग तात ।
इण गिरि चउमास रह्या, थिवर कहइं ए वात ॥श्री०॥४॥
पामइ शिवसुख सासता, गणधर श्री पुंडरीक ।
पुंडरगिरि तिण कारणइ, भगति करउ निरभीक ॥श्री०॥५॥
नमिनइ विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ।
शत्रुंजय शिखर समोसरथा, जे गिरुआ गुणवंत ॥श्री०॥६॥
थावच्चो मुनिवर शुक, सहस सहस परिवार ।
'पंथक' वचने जाजियउ, सो सेलग अणगार ॥श्री०॥७॥
'पांडव' पांच महाबली, सुणि यादव निरवाण ।
ते सीधा सिद्धाचलइ, सुरवर करइ वाखण ॥श्री०॥८॥

इम सीधा इण डूंगरइ, मुनिवर कोडाकोडि ।
पाजइ चढतां सांभरइ, ते प्रणमूं कर जोड़ि ।।श्री०।।९।।
जे बाघणि प्रतिबूझवी, ते दरवाजइ जोइ ।
गोमुख यक्ष कवड़ मिली सानिधकारी होइ ।।श्री०।।१०।।
विधि स्युं जे यात्रा करइ, सुरनर सेवक तास ।
'राजसमुद्र' गुण गावतां, अविचल लील विलास ।।श्री०।।११।।

शत्रुंजय (विमलगिरि) तीर्थ स्तवन

सांभलि हे सखि सांभलि मोरी बात चालउ हे,
सखि चालउ तीरथ परसरइ ।
साचा हे सखि साचा साजण तेह साथइ हे,
सखि साथइ जे इण अवसरइ ।।१।।
तीरथ हे सखि तीरथ 'विमलगिरिंद',
देखण हे सखि देखण तरसइ आखड़ी ।
किम करि हे सखि किम करि आयउ जाय,
दीधी हे सखि दीधी देव न पांखड़ी ।।२।।
मारगि हे सखि मारगि सहियर साथि,
चालण हे सखि चालण पगला चलवलइ ।
भेटण हे सखि भेटण आदि जिणंद,
मो मनि हे सखि मो मनि निसदिन टलवलइ ।।३।।
सूती हे सखि सूती पडूं जंजाल,
जागुं हे सखि जागुं भेट हुई सही ।
हेजइ हे सखि हेजइ नयण भरांइ,
जागुं हे सखि जागुं तब दीसइ नही ।।४।।

झीणो हे सखि झीणी ऊडइं खेह,
मइला हे सखि मइला कापड थाइस्यइ ।
निरमल हे सखि निरमल थास्यइ देह,
पातक हे सखि पातक मल सवि जाइस्यइ ।।५।।
सो हिज हे सखि सो हिज सफल विहाण,
जिण दिण हे सखि जिणदिन डुंगर फरसीयइ ।
लीजइ हे सखि लीजइ लखमी लाह,
सोवन हे सखि सोवन दाने वरसियइ ।।६।।
दीसइ हे सखि दीसइ आहीठाण,
तिम तिम हे सखि तिम तिम आदिल संभरइ ।
प्रभणइ हे सखि प्रभणइ 'राजसमुद्र',
अनुपम हे सखि अनुपम ते सिव सुख वरइ ।।७।।

शत्रुंजय (विमलगिरि) तीर्थ स्तवन

मन मोह्यउ हे सखी गरुयइ 'विमल' गिरिंद,
खांति करी धन खरचीयइ। म०।
आदिल आदि जिणिंद, चंदन केशर चरचीयइ ।म०।१।म०।
'पालीताणइ' पाजि, ललितासर लहिरा लियइ ।म०।
माता श्री मरुदेवि, दरिसण सुख संपति दीयइ ।म०।२।
चौमुख चंवरी च्यार, 'खरतर वसही' देखियइ ।म०।
पगला राइण पास, भाव भगति धर भेटियइ ।म०।३।
जिहां सीधा मुनि कोड़ि, चंगी चेलन तलावड़ी ।म०।
अनुपम उलखाडु झोल, सिधवड़ नी साखा वड़ी ।म०।।४।।
जूना अइठांणइ, जुगतइ फिर फिर जोइयइ ।म०।
पभणइ 'राजसमुद्र', मल कसमल सब धोइयइ ।म०।।५।।

बिमलगिरि (श्री ऋषभदेव) वधामणा गीतम्

राग—गुंड मल्हार

भाव धरि धन्य दिन आज सफलउ गिणु,
आज मइं सजनी आणद पायो ।
हरख धरि नजरि भरि 'विमलगिरि' निरख करि,
कनक मणि रजत मोतिन्नि वधायउ ॥१॥
पग पगि उमंग धरि पंथ नितु पूछतां,
धन्न दोउ चलण जिण चलत आयउ ।
आज धन दीह जागी सुकृत की दशा,
आज धन जीह जिण सुजस गायउ ॥२॥
दूर दुरगति टरी यात्र विधि सुंकरी,
पुण्य भंडार पोतइ भरायउ ।
वदत मुनि 'राज' मनरंग सुरगिरि शिखरि,
ऋषभ जिणचंद सुरतरु कहायउ ॥३॥

श्री विमलाचल यात्रा मनोरथ गीत

राग—धन्यासी

बरग बिछोहउ परिहरी, ध्यान धरइ निस दीस रे ।
पिण 'विमलाचल' वेगलउ, किम पूरवु जगदीश रे ॥१॥
सुणु सुणु मो मन करहला, काइं सचीतउ आज रे ।
जउ मुझ वखत लिखित अछइ, तउ भेटिसु जिनराज रे ॥२॥
माम जपे जगगुरु तणउ, हीया म छंडे आस रे ।
अवसरि वंछित पूरिसुं, करिजे लील विलास रे ॥३॥
सायइ संवल दे करी, सइगू मेलि सुसाथ रे ।

जउ चालिस तूं मारगइ, तउ भेटिसु जगनाथ रे ।।४।।सु०।।
सोरठ देश सरस अछइ, चरिजे नागरवेलि रे ।
रिषभ चरण लय लाइनइ, करिजे नव नव केलि रे ।।५।।सु०।।
कडुआ जंगल रूखड़ा, जे फल मेल्ह्या चाखि रे ।
ते तुं मत संभारिज्ये, सुरतरु सुं चित राखि रे ।।६।। सु०।।
रयणि सचेतन तुं रहे, दिन म करे वेसास रे ।
ऊभा दुरजन मूंकिनइ, जास्यइ सही निरास रे ।।७।।सु०।।
देखी नइ पग माडिजे, मूकि मूल सभाव रे ।
अ तर जामी सुं सदा, राखे अविहड़ भाव रे ।।८।।सु०।।
पाच महाजन वसि करी, लाख वधारे लाज रे ।
वइगउ फिरि घरि आविजे, इम जंपइ 'जिनराज' रे ।।६।।सु०।।

श्री विमलाचल विधि यात्रा गीत

राग—श्राशा

सुण सुण वीनतड़ी प्रिउ मोरा रे ललना
तीरथ भेटण विलंब न कीजइ,
इतना करूं निहोरा हो ललना ।।१।।
'विमलाचल' निज नयण निहारउ,
यात्रा करण पाउधारउ हो ल० ।
आदिल आदि जिणंद जुहारउ,
दुरगति दूर निवारउ हो ल०।।२।।
प्राशुक एक भगत आहारी, सकल सचित परिहारी हो ल० ।
मूकी निज मन हूंती नारी, पंथ चलउ पदचारी हो ल० ।।३।।
पूजा करहु त्रिकाल संभारी, सूधा समकित धारी हो ल० ।

काल उभय पड़िकमणउ सारी, रातइ भूमि संथारी हो ल०।।४।।
साथइ सद्‌गुरु पंचाचारी, श्रावक पर उपगारी हो ल० ।
गायन जिनवर ना सुविचारी, गुण गावै विसतारी हो ल०।।५।।
गाम जीयइ जिणहर जाणीजइ, भावइ ते प्रणमीजइ हो ल० ।
प्राशुक दान सुपात्रइं दीजइ, नर भव लाहउ लीजइ हो ल०।६।
यात्र करउ इम अवसर पामी, तउ साचा शिवगामी हो ल० ।
'राजसमुद्र' प्रभु अंतरजामी, श्री रिसहेसर सामी हो ल०।।७।।

श्री शत्रुंजय यात्रा मनोरथ गीत

सखी आगुं हे नालेर रारूंख कै, आगुं सदाफल ऊजलो ।
हूं पूछुं हो सखि जोइस सुजाण कै, आपइ मुहूरत अति भलो।१
सखि मो मन हे ऊमाहो एह कै, जाणूं विमलगिरि जाइयइ
भेटीजइ हो सखि नाभि मल्हार के,……… (अपूर्ण)

आलोयणा गर्भित
श्री शत्रुंजय स्तवनम्

कर जोड़ी इम वीनवुं, मोरा सामी हो साँभलि अरदास ।
वात कहीजइ तेहनइ, जे पूरइ हो प्रभु मन नी आस ।।क०।।१।
'विमलाचल' सिर सेहरउ, मरुदेवा हो नंदन अवधारि ।
मुंकी मननो आमलउ, आलोवुं हो पातक संभारि ।।क०।।२।।
जनम मरण कीधा घणा, ते कहताँ हो किम आवइ पार ।
जे वेदन पामी तिहाँ, ते जाणइ हो तूंहिज करतार ।।क०।।३।।
आरिज देसइ अवतरी, मइ लाधउ हो सद्‌गुरु संजोग ।
छांडया मइ अछता छता, कायायइ हो पिणविहि संजोग ।क०।४।
जाण अजाण पणइ करी, मइ लीधउ हो संयम नो भार ।

ते हिव सूधउ नवि पलइ, किम कीजइ हो ए सबल विचार।क०।५।
लोक अवर जाणइ नही, तू जाणइ हो सहु कोनी घात ।
तुझ अगलि स्युं राखीयइ,
कर जोड़ी हो कहुं वीतक वात ।।क०।।६।।
त्रिविध त्रिविधि व्रत ऊचरी, गुरु साखइ हो दिन मांहि छबार ।
हेलायइं भाज्या वली मुझलागा हो केता अतिचार ।।क०।।७।।
आप सवारथ राचतइ, मन मांहे हो नाणी पर पीड़ ।
जीव विचारउ जाणिस्यइ,
जव थास्यइ हो भमतां भव भीड़ ।।क०।।८।।
पर अवगुण अछता कह्या, गुण लेवा हो ते तउ रहउ दूर ।
अछता गुण पोता तणा, विस्तारी हो कहुं लोक हजूर ।।क०।९।
परधन लीधउ अपहरी, मइ राखी हो थांपणि करि कूड़ ।
दुरजन वचन सह्या नही,
किम थास्यइ हो निज करम नउ सूड ।।क०।।१०।।
जउ हूं काया वसि करूं, चित चूकइ हो तउ पणि ततकाल ।
पाचे इंद्रिय मोकला, मोरा सामी हो ए दूसम काल ।।क०।।११।।
विषयामिष रस नइ वसइ, लपटाणइ हो मन मीन* दयाल ।
विविध नरक तिरजंचनी,
न विमासी हो वेदन विकराल ।।१२।।क०।।
चंचल नयण करइ घणी, चपलाइ हो पर नारि निहालि ।
व्यापक दोष वचन तणा,
जे लागइ हो ते न सकुं टालि ।।क०।।१३।।

---

* दीन

कोधी काम विटंबना, मद मातइ हो जे मइ जिनराज ।
हिवणां साहिब आगलइ,
ते कहितां हो मुझ आवइ लाज ।।क०।।१४।।
वात कहइ जे पाप नी, तिण साथइ हो करूं निवड़ सनेह ।
जउ को सीखामणि दीयइ,
तउ जाणुं हो वाल्हउ वइरी एह ।।क०।।१५।।
माया मंडी कारिमी, पर वंच्या हो मइ अरि अनुकूल ।
परगह मेल्यउ कारिमउ,
न विचारयउ हो ए अनरथ मूल ।।क०।।१६।।
छती सकति मइं गोपवी, तप वेला हो अंगि* आलस आण ।
बालक जिम रस लोभीयइ,
पचखी नइ हो भागा पचखाण ।।क०।।१७।।
चटकइ रीस चड़इ घणी, गुण पाखइ हो कीधउ अभिमान ।
जाणपणउ सरसव समउ,
चिहुं माहे हो कहुं मेरु समान ।।क०।।१८।।
आगम विरुध वचने करी, हठ मांडी हो मइ थाप्या तेह ।
बगसि गुनह ए बापजी,
हिव मोसुं हो धरि निवड़ सनेह ।।१९।।
धर्माचारिज हित भणी, जे आपइ हो सीखामणि सार ।
ए मुझ पापी प्राणियउ,
मन मांहे हो करइ अवर विचार ।।क०।।२०।।
बोल्या विद्यागुरु तणा, अभिमानइ हो जे अवरणवाद ।

---

* मद

सालइ साल तणी परइ,
परनिंदा हो तिम जीभ सवाद ।।क०।।२२।।
पाप करम किम कीजीयइ, इम दीधा हो पर नइ उपदेस ।
आपणपइ ते आचरथा,ते जाणइ हो तू हिज रिसहेस ।क०२३।
तीने रतन अमूलक मइ, पाम्या हो वछित दातार ।।
ते जिम जिम मुझ साभरइ,
किम थास्यइ हो सामीछूटकवार ।।क०।।२४।।
लोकालोक प्रकाशक, प्रभु पासइ हो वर केवलनाण ।
तिरण काररिण जगजीवन,
कहुं केतउ हो तूं आरपइ जारण ।।क०।।२५।।
हिव सरणागत ताहरइ, हूं आयउ हो निज नयरण निहारि ।
भवसागर बीहामरणउ, तिरण हूंती हो मुझ पार उतारि ।क.२६
इम 'विमल' भूधर करणयगिरि सिरि, सामि सुरतरु सारिखउ ।
प्रगटियउ परमाणंद पेखी, पुहवि पूगउ पारिखउ ।।
युगप्रवर श्री 'जिनसिंहसूरि' सीसइ,'राजसमुद्रइ' सुभ मनइ ।
अरदास आदि जिरणंद आगलि, कही मगसिर शुभ दिनइ ।२७।
।। इति श्री आलोयरण गर्भित आदिनाथ स्तवनम् ।।

श्री आबू तीर्थ स्तवनम्

सुकलीरणी प्रिउ नइ कहइ, एक सुरणउ अरदास लाल रे ।
'चालउ तीरथ भेटिवा, पूरउ मुझ मन आस लाल रे ।।१।।
आबू शिखर सुहामरणउ, ऊंचउ गाउ सात लाल रे ।
बारह पाजरची तिहां, रिसियइ एकरण राति लाल रे ।।२।।

'विमलविहार' जुहारियइ, सामी श्री 'रिसहेस' लाल रे।
'भीमगवसही' भाव सुं, कब नयणे निरखेस लाल रे ॥३॥
चउमुख तीन त्रिभूमिया, 'लूणगवसही' जोइ लाल रे।
कोरणियइ मन मोहीयउ, नवलख आला दोइ लाल रे ॥४॥
तीन महिश सर संधियइ, नरवर धार पमार लाल रे।
मंदाकिनी पासइ अछइ, अनुपम राय विहार लाल रे ॥५॥
'अचलेसर गढ ऊपरइ, चउमुख प्रतिमा बार लाल रे।
बीजा बिंब जुहारिवा, हीयडइ हरख अपार लाल रे ॥६॥
पगलो डुंगर फरसीयइ, पातक दूर पुलाइ लाल रे।
'राजसमुद्र' भगतइ भणइ, समकित निरमल थाइ लाल रे ॥७॥

श्री गिरनार तीर्थ यात्रा स्तवन

मोरी बहिनी हे बहिनी म्हारी।
मो मन अधिक उछाह हे, हां चालउ तीरथ भेटिवा म्हा०॥
संवेगी गुरु साथ हे, हां तेडीजइ दुख मेटिवा ॥१ म्हा०॥
चढिसुं गढ गिरनार हे, हां साथइ सहियर झूलरइ ॥म्हा०॥
सजि वसन शृंगार हे, हां गलि झाबउ मकथूल रउ ॥२॥म्हा०
राजल रउ भरतार हे, हां जादव नंदन निरखिसुं ।म्हा०।
पूजा सतर प्रकार हे, हां करिसुं हियडइ हरखिसुं ॥३॥म्हा०
अदबुद आदि जिणिंद हे, हां "खरतरवसही" 'जोइसुं ॥म्हा०
अमियझरइ श्री पास हे, हां मल कसमल सवि धोइसुं ।४।म्हा०
तीन प्रदक्षिण देह हे, हां बीजा बिंब जुहारिसुं ॥म्हा०॥
गरुयउ गजपद कुण्ड हे, हां इद्रागम संभारिसुं ॥५॥म्हा०॥

चढिसुं साते टुंक हे हां, लाखावन सहसावनइ ।म्हा०।
मेघ मंडप जल ठाम हे हां, देखीसु द्धं शुभ भावनइ ।६म्हा०
बूझवियउ रहनेमि हे हा, तेह गुफा राजुल तणी ।म्हा०।
करिसुं सफल जमार हे हां, बोलइ 'राजसमुद्र' गणी।७।म्हा०

श्री बीकानेर मण्डन चौवीसटा आदिनाथ गीतम्

चालउ हिव चउवीसटइ, मुझ मन एह रुहाड़ि ।
पोसह व्रत उजवालियइ, करि जिणहर परवाडि ॥
परवाडि करिसुं चतुर चउविह, संघ साथइ माल्हतो ।
मन मेलि भेली नव सहेली, गीत अभिनव गावती ॥
जिण भवण सुरगिरि सामि सुरतरु सेवतां कसमल कटइ ।
युगवर जिणसिंघसूरि साथइ चालउ हिव चउवीसटइ ॥१॥
तीन निसीही साचवी जिणवर भुवण दुवारि ।
देई तीन प्रदक्षिणा आगम वयण विचारि ॥
सुविचारि तीन प्रणाम त्रिकरण सुद्ध भूमि पमज्जणा ।
तिम त्रिदिश निरखण विरति परिहरि चउरासी आसातना
निज नयण निरखउ नाभि नंदण अवर पड़िमा नव नवी ।
संभारि दश त्रिक पांच अभिगम यथा जोग साचवी ॥२॥
दक्षिण कर जिनवर तणइ नर वाम करि नारि ।
देव जुहारण अवसरइ एह अछइ अधिकार ॥
अधिकार बारह सुपरि पण प्रणिपात दंडक पिण कही ।
श्री संघ सुविहित सुगुरु साथइ देव वंद्या गहगही ।
मन रली हुंति फली ते मुझ सहू 'राजसमुद्र' भणइ ।

पामियइ अविचल परमपद मुख दरसणइ जिणवर तणइ ॥३॥

इति श्री चउवीसटा गीतम्

श्री बीकानेर मंडन सुमतिनाथ (भांडासर) गीतम्

चउमुख तीन त्रिभूमिआ, नलिनी गुल्म समान।
ऊंचउ शिखर सुहामणउ, मेरु शिखर समान ॥१॥म०॥
मरुमण्डल सिर सेहरउ, "बीकमपुर" सिणगार।
'भांडइसाह' करावियउ, सुमति जिणंद विहार ॥२॥म०॥
भुवण सरिस भुवणतरइ, भवणतर नवि दीठ।
तिण रग लागउ माहरइ, जाणे चोल मजीठ ॥३॥म०
भावइ भोली भामिनी, गउख गावइ गीत।
वचन विलास सफल करइ, चउमुख लाउ चीत ॥४॥म०॥
जिनवर नयण निहारतां, प्रगटयउ परमाणंद।
'राजसमुद्र' मुनिवर भणइ, जिणवर सुरतरु कंद ॥५॥म०॥

श्री वासुपूज्य स्तवनम्

वहिनी एक वयण अवधारउ, जिणवर भुवण पधारउ रे।
श्री वासुपूज्य जिणंद जुहारउ, विव अवर संभारउ रे ।१।वा०
जयणा सु मारग चालीजइ, विकथा मूल न कीजइ रे।
दुरमति तिमिर जलजलि दीजइ, नरभव लाहउ लीजइ रे व०।२
जिम जिम मोहन मूरति दीसइ, हीयडउ हेजइ हीसइ रे।
हिव चउगइ जलरासि तरीजइ,
ध्यान धरउ निसि दीसइ रे ॥व०॥३॥
अनुपम समता साकर कूजउ, इण सम कोइ न दूजउ रे।
चाहउ भविअण मुगति वधू जउ, तउ प्रहसम प्रभु पूजउ रे ।४।व०

आइ मिलइ जउ हीरउ जाचउ, काच सकल मत राचउ रे।
'राजसमुद्र' साहिब ए साचउ, नयणे निरखी नाचउ रे।६।ब०

श्री बीकानेर मण्डन नमिनाथ स्तवनम्

श्री 'नमिनाथ' जुहारियइ, मुगति रमणि उर हार लाल रे।
साचउ साहिब सेवीयइ, वंछित फल दातार लाल रे ॥श्री॥१॥
देव अवर सकलंक जे, ते मुझ मन न सुहाइ लाल रे।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ,
कवण कनकफल खाय लाल रे ॥श्री॥२॥
धन मंत्रीसर 'करमसी' अविचल राख्यउ नाम लाल रे।
अवसर लाधइ आपणइ, कीधउ उत्तम काम लाल रे ॥श्री॥३॥
'वीकमपुर' सिर सेहरउ, निरुपम नवल विहार लाल रे।
भवियण नयणे निरखियइ,
ऊजलगिरि अणुहार लाल रे ॥श्री०॥४॥
जिणवर ना गुण गावता, मन धरि भाव विसेस लाल रे
गोत्र तीर्थंकर बांधीयइ, 'राजसमुद्र' उपदेस लाल रे ॥श्री०॥५।

श्री नेमिनाथ चतुर्मासिकम्

राग - मल्हार

श्रावण मइ प्रीयउ संभरइ, बूंद लगइ तनु तीर।
खरीअ दुहेलीघन घटा, कवण लहइ पर पीर ॥
पर पीर जाणत.पापी, पपीहउ प्रीउ प्रीउ करइ।
ऊमई बाहर घटा चिहु दिसि, गुहिर अंबर घर हरइ ॥
दामिनी चमकत यामिनी भर, कामिनी प्रीउ विण डरइ।

घन घोर मोर कि सोर वोले, श्याम इण रितु सभरइ ॥१॥
दूभर निशि भादू तणी, यादू विण क्युं जाइ।
प्रेम पियालउ पीजीयइ, घन वरसइ झरु लाइ।
झरु लाइ वरषइ सवहि हरषइ, अवहि राजुल पर वसइ ॥
तरफरइ नीद न परइ इक छिनु, नाह नयनन तुमइ वसइ।
लोचन उनीदे मिलइ कवही सुपनि प्रीउ संगति वणी।
जब झवकि जागूं तव न दीसइ दूभर निसि भादू तणी ॥२॥
संदेसउ सखि पाठवउ, आयउ मास कुमार
राति दिवस कइ कूकणइ, कबहु लगइ पुकार
पोकार प्रीउ दरबार करिओ, झूठ दोस पसू दियउ
दिल मांझि सुगति वधू वसी, तिण मोहनी मोहन कियउ
निसि कुसुम सेज निहेज सूती, दहइ ससि पावक नवउ
संदेस साचइ नेमि राचइ, सो सखी मिलि पाठवउ ॥३॥
कातिक रीति भई नई, उलटथउ विरह अगाघ
राजुल वलि वलि वीनवइ, कउण कीयउ अपराव।
अपराध विण परिहरइ यादव, कउण वात कहीजियइ
इक पाल मइ सउ वार सालइ, कंत विण क्युं जी जीयइ
इक पखउ क्युं करि नेह निवहइ, वइरागिणी राजुल भई
सिवमहल 'राजसमुद्र' प्रभु सुं, प्रीति तहांजोरी नई ॥४॥

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—सोरठी

तउ तुम्ह तारक यादुराय जहु मोहि तारउ,
धरिहुं निसि दिन ध्यान तिहारउ ॥या०॥१॥

तबहि गरीब निवाज विराजउ,
हम से निज भगत निवाजउ ॥या०॥२॥
तउ अरिगंजरण मो मन रंजउ,
जउ सेवक से अरिअण गंजउ ॥या०॥३॥
जउ अंतरगति न लहउ सामी,
तउ तुम्ह कइसे अंतरजामी ॥या०॥०॥
जउ जाणउ 'जिनराज' हमारउ,
तउ मोहि कूरम निजरि निहारउ ॥या०॥५॥

श्री नेमिराजीमती वियोग सूचक गीतम्

राग—केदारउ

मेरइ नेमिजी इक सयण ।
अउर ठउर न दउर करिहुं, कबहुं मो मन भयण ॥१॥मे०॥
सुण्यउ निसि भरि जबहि चातक, रटत पिउ पिउ वयन ।
पलक बादल वौचि उमड़े, सजल जलधर नयन ॥२॥मे०॥
विणु पीऊ कइसइ प्राण राखुं, पलक भर नही चयन ।
'जिनराज' राजुल कनक कुंदन, जोरि यादु रयन ॥३॥मे०॥

श्री लौद्रवपुर पार्श्वनाथ स्तवनम्

जाति—मोरयानी

'लोद्रपुर' पास प्रभु भेटीयइ जी, मेटीय मन तणी भ्रंति ।
परतखि सुरतरु सारिखउ जी, खलक नी पूरवइ खंति ।१।लो०
निरुपम रूप निहालतां जी, कविजन करइ रे विचार ।

नख सिख ऊपरि वारियइ जी,अवर सुर असुर सउवार ॥२लो०
देव दीठा घणा देवले जी, सीस न नामणउ जाइ ।
मधुकर मालती रइ करइ जो अलवि अरणी न सुहाइ ।।३।लो०
एक पग त्राण ऊभा रही जी, सेवियइ जउ जगदीस ।
लोचन तृपति पामइ नही जी,ए प्रभु अधिक जगीस ।।४।।लो०
पेखीयइ तोरण पइसतां जी, जे करइ स्वर्ग सुं वाद ।
च्यार गति ना दुख छोदिवा जी,
चिहुं दिसइ च्यारि प्रसाद ।।५।।लो०।।
'याहरू' सुकृत नउ वाहरू जी, सलहीयइ मात तसु तात ।
संघवी सघनायक पखइ जी, अगमइ कवण ए वात ।।६लो०
कीजीयइ चोल तणी परइ जी, प्रीति परमेसर साण ।
श्री 'जिनराज' भवो भवे जी,तूं हिज देव प्रमाण ।।७।।लो०।।

श्री लौद्रवपुर पार्श्वनाथ गीतम्

जाति - मोमनडउ हेडाउ हे मिश्री ठाकुर वइदरउ एहनी

आज नइ वधावउ हे सहीअर माहरइ, आणंद अंगन माह ।
सोहग निधि साहिब त्रेवीसमउ,नयणे निरख्यउ आइ ।।१आ०
प्रभु परतख न मिलइ पंचम अरइ वीस करूं वेषास ।
पिण मोहन मूरति जउ पेखीयइ, आवइ मनि वेसास ।२।आ०
दूर थको तीरथ महिमा सुनी, खरी हुती मन खंति ।
लाख कहउ लोचन दीठां पखइ,नेट न हुवइ निरंति ।।३।।आ०
मनहरणी तोरण चो कोरणो चिहुं दिसि जिणहरि च्यारि ।
तिम पगला नवला थिवरां तणा, ऊजलगिरि अवतार ।४।अ०

कमल कमल बिहसइ मन हुलसइ, रौमांचित हुवइ देह ।
मन नी होवीतग वात न कहि सकु ,नवलउ निवड सनेह ॥५॥अ०
मइ भूलइ भमतइ कीधी हुस्यइ, देव अवरनी सेव ।
ते अपराध खमावुं आपणउ, चरण कमल पणमेव ॥६॥आ०॥
आज घडी सुघडी लेखइ पडी, जीवत जनम प्रमाण ।
भगति जुगति 'जिनराज' जुहारतां,आज भलइ सुविहाण ।७।आ०

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

घालेसर मुझ वीनती 'गउड़ेचा' राय, अलवेसर अवधार रे ग०
प्रगट थई पाताल थी ग० सेवक जन साधार रे ग० ॥१॥
आंखि थइ उतावली ग० दरसण देखण काज रे ग०।
पाणी न खमइ पातली ग० दे दरसण महाराज रे ग०॥२॥
तुं साहिब सुपनंतरइ ग० मिलइ अछइ नितमेव रे ग०।
तउ पणि आयउ ऊमही ग० सइ प्रति करिवा सेव रे ग० ॥३।
जउ पोतानउ त्रेवडउ ग० सगली भांति सदीव रे ग० ।
नीची ऊंची वात मइ ग० तउ मत घालउ जीव रे ग०॥४॥
देव घणाइ देवले ग० दीठा ते न सुहाइ रे ग० ।
इक दीठा मन हुलसइ ग० इक दीठा अउल्हाइ रे ग०॥५॥
काल्हे वाल्हे माहरइ ग० कीधी खरीय सवील रे ग० ।
दरसण देवा तइ नकी ग० पाणी वलि पणि ढील रे ग०॥६॥
तइ कीधउ तिम तुं करइ ग० राखी चिहुं मइ लाज रे ग० ।
वलि अवसरि संभारज्यो ग० इम जंपइ 'जिनराज' रे ग०॥७॥

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ गीत

परतखि पास अमीझरइ, भेटीजइ भविअण भावइ रे ।

राति दिवस अमृत झरइ, तिण साचउ नाम कहावइ रे ॥ १॥प०।
सुर सानिधि अंजन समइ, जग जीवन ज्योति जगावइ रे ।
श्रावक नइ सुपनंतरइ, दाखी दरसण परचावइ रे ॥२॥प०॥
भगत वछल निज भगत नइ, अरिगंजण अगम जणावइ रे ।
तो ते सेवइ स्या भणी, जउ परतउ मूल न पावइ रे ॥३॥प०॥
आपण पइ परगट थई, सेवक नउ वान वधावइ रे ।
जे कारिज करिवा करइ, ते पर नइ केम भलावइ रे ॥४॥प०॥
पुरिसादाणी पास जी, जउ इम अतिसय न दिखावइ रे ।
इण कलियुग ना मानवी, तउ यात्र करण किम आवइ रे ॥५॥प०
एकरिग रहणि जे रहइ,नितु चरण कमल चित लावइ रे ।
सकल मनोरथ तेहना, प्रभु अलवि प्रमाण चढावइ रे ॥६॥प०॥
प्रभु विण देव अनेरडा, ते माहरइ मनि न सुहावइ रे ।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ, तउ कवण कनकफल खावइ रे७प०
'भाणवड़इ' थिर थानकइ, अतुली बल अधिक प्रभावइ रे ।
मूकी मन नउ आमलउ, तिण कारणि सहु को ध्यावइ रे ।८।प०
अलिय विघन दूरइ हरइ, अरिअण नइ आण मनावइ रे ।
श्री 'जिनराज' सदा जयउ, दिन दिन चढतइ दावइ रे ॥९।प०।

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ गीतम्

करिवउ तीरथ तउ मूंकी रथ, धीर थई पगले चलउ ।
तिल पाप नथी आगमन थी, मन थी हो मूंकी आमलउ ॥१॥
वहता मारगम करउ कारग, तारग गुरु आगलि कीयइ ।
सवि एक मता वलि मन गमता, समताधर साथइ लीयइ ॥२॥

श्री 'संखेसर' पास जिणेसर, जे सरभर सुर को न छइ।
नयणे निरखउ परतिख परखउ, परखउ लीकहि सउ पछइ ॥३॥
आप वसू रति थयइ सूरति, सूर तिसी परि पूजीयइ।
तिम गुण गावउ भावन भावउ, पावउ सुमति वधू जीयइ ॥४॥
आणइ वेधन खरचइ जे धन, ते धन धन जगि जाणीयइ।
कुमति खीजि न आण इसी जिन, श्री 'जिनराज' वखाणीयइ॥५।

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ गीत

राग—सामेरी

पासजी की मूरति मो मन भाई।
पग पग मग पंथियन कुं पूछत आए तोकुं ध्याई ॥१॥प०॥
आसापूरण निज भगतन की तबही दइति दिखाई।
कउण विचार परे हम वरिया, इतनी वेर लगाई ॥२॥प०॥
मोकुं कहा विरुद अपणइ की, आपहि लाज बड़ाई।
'सखेसर' मंडण दुख खंडण, देहु दरस सुखदाई ॥३॥प०॥
मानव दानव कोइ न मेटत, दुनिया मांहि दुहाई।
'राजसमुद्र' प्रभु 'श्री जिनसिंहसूरि' सेवत संपति पाई॥४॥प०॥

श्री सहसफणा पार्श्वनाथ गीतम्

राग—केदारउ

देखउ माई पूजा मेरे प्रभु की अजब बणी रे,
या छबि वरणी न जाइ।
जोवत जोति नई नई अलख स्वरूप रे,
मो मन अधिक सुहाइ ॥१॥द०॥
कुंकुम की अंगी रची, विचि विचि कुसुम भराउ।

भाल तिलक सिर सेहरउ, कुंडल जरित जराउ ॥२॥दे०॥
मोहन मूरति साउरी, कठ कुसुम की माल ।
हार रच्यउ सिव नारि कुं, पाच रतन कइ थाल ॥३॥दे०॥
अनिमिष नयन थकित भए, देखि सलूणी देह ।
चचल चित अटको रह्यउ, इहु किछु नवल सनेह ॥४॥दे०॥
कलिजुग सुरतरु अवतरयउ, 'सहसफणउ श्री पास' ।
सो साहिब नितु सेवीयइं, अविचल लील विलास ॥५॥दे०॥
दाइम भगति निवाजिकइ, दीनउ काइम राज ।
विरुद गरीबनिवाज कउ, साच भयउ 'जिनराज' ॥६॥दे०॥

श्री वाड़ी पार्श्वनाथ गीतम्

मेलिज जमक सव गावा तरसइ, मुझ रसना गुण गावा तरसइ।
नव नव लीला सरस लहीजइ, तिण प्रभु 'वाड़ीपुर' सलहीजइ।१।
अंग नवे प्रभुना चरचीजइ, आगलि नव नव नाच रचीजइ।
विधि खप करतां वासव रीजइ,
नितु नवलउ जस वास वरीजइ ॥२॥
जिम जोई मूरति मन भावइ, देव अवर न को मनि भावइ ।
सुरतरु अंगणि भविक फलीजइ,
तउ स्युं संवल नउक फलीजइ ॥३॥
जीव तुरंग सिव पुरि वाहीस्यइ, सेव अवर नी करिवा हीसइ।
आपणपइ जउ विस वावीसइ, लुणियइ ईष न विसवा वीसइ।४।
सीझइ कारिज अवगाहीजइ, हेलइ अरिदल अगाहीजइ ।
मनछा अविचल राज भणीजइ,
तउ मुखि इक 'जिनराज' भणीजइ ॥५॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ गीतम्

नील कमल दल सांउली रे लाल,
मूरति सबही सुहाइ मन मान्या रे।
कंचन की अंगी वणी रे लाल, या छबि वरणी न जाइ मन।१।
मेरइ मन तूंही वसइ रे लाल श्री चिंतामणि पास ।।म०।
साचउ विरुद अपनउ करउ रे लाल,
पूरि हमारी आस मन० ।।२।।मे०।।
सीस मुगट रतने जड्यो रे लाल उर मोतिन कउ हार मन०
कुंडल की सोभा कहुं रे लाल,
रवि शशि कइ अणुहारि मन० ।।३।।मे०।।
दसन ज्योति हीरा जड्या रे लाल, अधर कि लाल प्रवाल मन०।
चंपकली सो नासिका रे लाल,
भाल तिलक सुविसाल मन० ।।४।।मे०।।
सोभा सायर वीचि मइ रे लाल, झील रहथउ मन मोन मन०।
तइ कछु कीनी मोहनी रे लाल,
नयन भए लयलीन मन० ।।५।।मे०।।
दो कर जोड़ि वीनवुं रे लाल, देहु दरसन इक वार मन०।
जउ अपणउ करि जाणिहउ रे लाल,
तउ करउ कउण विचार मन० ।।६।।मे०।।
मन सुधि सेवा साचवुं रे लाल, भाव भगति भरपूर मन०।
परतखि परता पूरवइ रे लाल,
आपण होइ हजूर मन० ।।७।।मे०।।
साचउ साहिब सेवतां रे लाल सीझइ वंछित काज मन०।

'राजसमुद्र' गुण गावतां रे लाल,
पायउ अविचल राज मन० ॥८॥मे०॥

गुणस्थान विचार गर्भित पार्श्वनाथ स्तवन

नमिय सिरिपास जिण सुजण पडिबोहगं ।
कणयगिरि अचल जेसलनयर सोहगं ॥
चवद गुणठाण उत्तर पयडि बंध ए ।
हेतु करि सहित हू कहिसु सह संध ए ॥१॥
पढम मिच्छत्त सासाण मीसाजयं ।
देस पमत्त अपमत्त सुह नामय ॥
नियट अनियट तिम सुहम उवसतयं ।
खीण सहजोगि अजोगि गुण ठाणय ॥२॥
पच विह नाण आवरण दुग वेयणी ।
दसनावरण नव वीस अड मोहणी ॥
आउ चउ भेय तिम गेय दुग मनि वसइ ।
अंतरायस्स पण भेय जिण उवइसइ ॥३॥
च्यार गय जाइ पणु वंग तिग पण तणु ।
तेम संघयण सठाण छग छग भणु ॥
च्यारि अणुपुव्वि चउवण गुरु लहु पणउ ।
त सग दस दुग गई दसग थावर तणउ ॥४॥
जिण पण घाइ उवघाइ निम्माण ए ।
आउ वुज्जोय उसास विजांण ए ॥
नाम कमस्स सतसट्ठि पयडी इहा ।
एग सय अनइ बावीस सवि मिलि तिहां ॥५॥

ढाल २ भव्य तणइ परिपाक एहनी.

ओथइ इगसय वीस बध पयडी तणउ सम्म मीस मोहनि विनाए।
जिण परिणाम विशेष पुज रचइ तिग ते पुग्गल मिच्छातना ए ।६।
गुणठाणइ मिच्छत्ति सतर अधिक सत जिण आहारग दुग पखइ ए ।
जे भणी अनुक्रमि एह सुध समकित,
धर अप्रमत्त संजति कषइ ए ।।७।।
सासण इग सय एग अणुपुव्वी गइ आउ नरग तिग ए भण्यउ ए
तिम इग बिति चउरिंदि थावर,
अपजत साधारण सुखम गण्यउ ए ।।८।।
हुंडा तव छेवट्टि मिछ न पुरक ए सोल बंधइ नही ए ।
एह पर्याडि नउ हेतु मिछ नही इहा तिण नवि बंधइ ए सही ए ।६
मीसि चहुत्तरि बंध तिग तिरिया तणउ थीणधी तिग कुख गई ए।
दुभग दुसर ना देय पढमंतिम हुण चउ चउ संघणा गई ए ।१०
नीय गोय उज्जोय इछे वेय तिम च्यार कषाय पढम जुया ए ।
ए पणवीस ना हेतु अण कोहाईय तेषा उवसि मिग हुया ए ।११
न मरइ इछ कयावि तिणि सुरनर आऊरि,
इम सगवीस पयड़ि टलइ ए ।।
ह्मि चउथइ गुण ठाणि सतहित्तरि,
भणी सुरनर आऊ जिण मिलइ ए ।।१२।।

ढाल

सतसट्ठि पयड़ि नंउ देसइ बंध वखाण
नर तिग आइम संघयण उरल दुग जाण
जिण इण गुणठाणइ सुर गइ बंधइ एह

तिण नर तिरि वेयण जोग पयड़ि छग छेह ।
छेह हवइ वलि बीय कसाया जिण ए उदय न जावइ ।।
इम पचमि थानकइ सवे मिलि दस ए वधन आवइ ।
हिव छट्ठइ थानकइ पमत्तइ तेसठि पयडी वध ।।१३।।
अपमत्त गुणसठि अेहवा अडवन थाइ ।
टलइ सोक अकित्ती अथिर अमुभ असाय ।।
तिम अरइ सुराउ तणी भयणा मुविचार ।
आराहर अ गोवंग मिलइ इहां सार ।।
सारठु मगा नियट्ट तणा हिव भाग रचीजे सात ।
तिहा पहिलइ भागइ सवि वधइ अडवन पुव्व विख्यात ।।
बीयादिक पण छपन्न निद्दा पयला दोइ ।
पयड़ि न बंधइ जिणइ तहाविह अज्जवसाण न होइ ।।१४।।
हिव सत्तम भागइ वधइ पयड़ि छवीस ।
सुर गइ अणुपुव्वी इम पभणइ जगदीस ।।
तस नव नेउव्विय अंगों अंग निमाण ।
जिण नाम पणिंदिय जाइ पढम सठाण ।।
गुणठाण भणीजइ तेय कम्म तणु वण गंध रस फास ।
अगुरुलहू उवथाय वली तिम परा थाय उसास ।।
आहारग दुख सुख गइ मिलीयां सव्व पयड़ि ए तीस ।
इह वट्ट तउ जीव न बंधइ तिम बंधइ छगवीस ।।१५।।
कीजइ अभियटना पंच विभाग उदार ।
बावीस पयड़ि तिहां भागइ पहिलइ धार ।।
रति हास दुगंछा भय ए न रचइ च्यार ।

बीय तीय चउथइ तिम पञ्चमि एह विचार ।।
एह विचार करीजइ अनुक्रमि ए चउपयड़ि विनास ।
पुरुष वेय तिम तिग सजलनउ वधतइ ज्ञाण विलास ।।
हिव दसामइ थानकइ भणइ सविस्तर पयडि जिनराज ।
नवि बधइ सजलनउ लोह जे कम्म माहि सिरताज ।।१६।।
एगारमि बारमि तेरमि साय संयोग ।
थायइ इहा निसचय सोलस पयड़ि वियोग ।।
जस नाम वली पण अंतराय शुभ गोय ।
चउ दंसण ना वरणी पण संजोय ।।
जोग रहित तिम कम्म अबधक ए चवदम गुणठाण ।
भासइ इम भगवंत भविक नइ केवलनाण प्रमाण ।।
बध विहाण रहित हुइ जिणवर पाम्यउ शिवपुर वास ।
आप सरीखउ करिज्यो जिणवर ए सेवक अरदास ।।१७।।
तुह दंसण विणु जिण निगम्यउ काल अनंत ।
पहिलइ गुण ठाणइ वट्टतइ भगवत ।।
हिव सुकृत सयोगइ लद्धउ मइ जग भाण ।
हरे हर सेवा करिवा इण भवि पच्चखाण ।।
पचखाण सहित तुह दसण लद्धउ सुरतरु कंद ।
निरतिचार पलइ तिम करिज्यो नत नर सुरपति वृंद ।।
तू तिहुयण नायक तारक तूं सयल जंतु आधार ।
आससेन कुल कमल दिवाकर मुगति रमणि भरतार ।।१८।।

कलश

इय बाण रस ससिकला (१६६५) वच्छर, सह किसण नवमी दिने

गुणठाण चवदे कम्मपयडी,बध विवरयउ सुभ मनइ।
'जिणचंदसूरि' जिर्णसिह' सीसइ, 'राजसमुद्र' इ सथुउ ॥
सिरि पास जिरावर भवण दिणयर, सयल अतिसय सजुउ।१६

इति श्री विचार गर्भित श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्

श्री विक्रमपुर मंडन वीर जिन गीतम्

भाव भगति धरि आवउ सहिअरि, जिणहर बिंब जुहारीयइ
त्रिशलानंदन जगदानदन, चदण नयण निहारियइ ॥१॥
वीर जिरोसर भुवरा दिरोसर सरणागत, साहरइ।
जे सिवगामी अंतरजामी, सामी जे इण भय माहरइ ॥२॥
वंछितदायक शासन नायक, पाय कमल तसु भेटियइ।
देखी दरसण दे परदक्षिण, आपण भव भय मेटियइ ॥३॥
मोहन मूरति अनुपम सूरति, दूर तिमिर भर अपहरइ।
'वीकमपुर' वर मेरु सिहरुवरि, सुरतरु सोभा अरगुसरइ ॥४॥
साथ सहेली गरव गहेली, भेली भवजल निधितरइ।
'राजसमुद्र' गरिग सक्रस्तव भरिग,
इरिग परि जन्म सफल करइ ॥५॥

श्री वीर जिन गीतम्

हम तुम्ह 'वीरजी' क्युं प्रीति चलइगी,सुणु साहिब वरदाई।
जिरा कुं तुम्ह मुह भी न लगाए, जिरासुं हम लय लाई।ह०।१
जाकउ तुम्ह सब वंश प्रजारयउ, उवे हम कीये सखाई।
जिरा कुं तुम्ह वनवास दियउ थउ,
उहा हम आरिग वसाई ॥ह०॥२॥
प्रेम मगन थे तुम्ह जिन सेती, उवा भी हम न मनाई।

तउ भी तुम्ह करिहउ अपणाई, या 'जिनराज' बडाई ।ह०।३।

श्री वीर जिन गीतम्

राग-सारंग

'वीरजी' उत्तम जन की रीति न कीनी,प्रीति तत ज्यु तोरी ।
बेग नही गोतम कहइ,किउ मोहि दूर कीयउ चित चोरी ।।१वी
वीरजी जान्यउ अ चर गहिस्यइ,यातइ शिव पहुते मुझ छोरी ।
अ तर बहूत परथउ जिन सेती, कहा करू अब दउरी ।२।वी०
वीरजी एक पखउ प्रेम रता नत, क्यु करि निवहइ जोरी ।
'राजसमुद्र' प्रभु केवल पायउ, मोह महीपति मोरी ।।३।।वी०

श्री वीर जिन गीतम्

राग—वेलाउल.

साहिब 'वीरजी' हो मेरी तनुकि अरज अवधारउ ।
दीनदयाल अदीन दयानिधि, कूरम नजरि निहारउ ।१।सा०।
करहू महर भव जलधि जहर तइं,करि ग्रह पारि उतारउ ।
तइ ग नही भी तुरत निवाजे,तउ अब कहा विचारउ ।२।सा०
विरुद गरीबनिवाज सुण्यउ मै, वीर जिणंद तिहारउ ।
'राज' वदति निज भगत निवाजउ,परतिख होइ पत्यारउ ।३सा०

श्री जिन प्रतिमा सिद्धि वीर स्तोत्रम्

भविअ जण नयण वणसंड पडिबोहगं ।
राय सिद्धत्थ कुल तरणि सम सोहगं ।।
थुणिसु जिण नायगं भत्ति भर पूरिउ ।
पुव्वकय सुकय घण रासि अंकूरिउ ।।१।।
सामि सग रयणि परिमाण परिमडिअं ।

तहयपलि अंक सठाण करि संठिअ ।
जिण भवण मज्झि जिण विंव जह दीसए ।
हेल दे हियय मह हेज करि हीस ए ॥२॥
आज मह देवमणि कामघट तुट्ठउ ।
अमिय मय मेंह मह उवरि किर वुट्ठउ ॥
आज घर अंगणइ कप्पद्रुम फलियउ ।
कणय तणु वीर जिणराय जउ मिलिअउ ॥३॥
जिण चवण जम्म वय नाण निव्वाण ए ।
गब्भ संकमणइ अनुज्झ कल्लाण ए ॥
जम्मि पुरि जाय ते नयण भर जोइयइ ।
सरिअ तुइह चरिअ निय कम्म मल धोइयइ ॥४॥
थापना रूप अरिहत जे ऊथपइ ।
मुगध मन हरिण वसि करण ते इम जपइ ॥
कज्ज सावज्ज नाऊण किम कीजीयइ ।
तेहनइ मधुर वचने करी पूछीयइ ॥५॥
थापना रूप पिण साच जिणवर कहइ ।
एहनी साख ठाणांग माहे लहइ ॥
चित्त कय कामिणी मोह भर कारगा ।
तेम जिण ठवण पावाण उवसामगा ॥६॥
नार व्रत धार पिण सुद्ध श्रावक करइ ।
दव्व थय कूव दिठ्ठंत सो अणुसरइ ॥
साधु भगवत मन सुद्धि पणवय धरइ ।
सो नदी पाय नावाइ जिम ऊधरइ ॥७॥

सुगुरु ना पयकमल मल थापि मुहणत ए ।
अहवरय हरणि किय कम्म किर दित ए ।।
पडिकमण मज्झि विउसग्ग करतउ छतउ ।
दव्व पूआ तणउ साधु फल वंछतउ ।।८।।
लद्धि विज्जा जुओ साहु नदीसरे ।
चेइ वदण भणी जाइ जिण मदिरे ।।
जाइवा सुर भवण राय असुरा तणउं ।
पचमगे सरण किद्ध पड़िमा तणउ ।।९।।
जिण वयणि सुरभवण मज्झि जिणहर अछइ ।
धूव जिणवर भणी एह अक्खर पछइ ।।
सतर विधि पूज जीवाभिगमाइ कही ।
वाणमतर विजय किद्ध ते सद्दही ।।१०।।
सुहम गणहर नमइ वीर सासन धणी ।
बभ लिवि पंच परमिट्ठि समवडि गिणी ।।
बंभ लिवि वयण नउ अरथ अक्खर सुण्यउ ।
नाम समवाय इम अंग चउथइ भण्यउ ।।११।।
दव्व पिण भावनी बुद्धि सुविशेषता ।
कम्म रय हरण सुसमीर सम देखतां ।।
देखि जिण ठवण तिहा भाव आरोवई ।
भाव जिणवर तणा गुण कहइ दोवई ।।१२।।
चार वर परषदा माहि गोयम दिसइ ।
आपणइ श्री मुखइ वीर जिण उवइसइ ।।
धन्न सुरियाभ सुर दव्व पूआ करइ ।

तासु फल कम्म खय अनुक्रमइ सिव वरइ ॥१३॥
तेण जिण भवण जिणराय अंतर नही।
भविअ समभाव करि जोइयइ ए सही ॥
भव जलहि मज्झि निवडत्त तारण तरी।
भाव वसि दव्व पूयावि सिव सुह करी ॥१४॥
इणि परि जगगुरु 'वीर' जिणिंद,सयुणियउ मइ श्री जिणचंद।
युगवर श्री'जिनसिंहसूरि'सीस,पभणइ'राजसमुद्र'सुजगीस।१५

इति श्री वीर स्तोत्रम्

श्री जिन देव गीतम्

राग—धन्यासी

लीनउ री मो मन जिन सेती लीनउ।
भव मइ डोलत कवहूं न पायउ,
करम विवर अब दीनउ री ॥१॥मो०॥
अवर किछु न पिआरउ लागत, मानुं मोहन कीनउ।
अनिमिषि जोवत तृपति न होवत,रोम रोम तनु भीनउ री।२मो०
दरसण देखत छतिआ उलसत, रेवा ज्युं गज पीनउ।
'राजसमुद्र' साहिब सिव गामी,मो मन कनक नगीनउ रे।३मो०

(२) प्रभु भजन प्रेरणा

राग – धन्यासी

कवहूँ मइ नीकइ नाथ न ध्यायउ।
कलियुग लहि अवतार करम वसि,अघ घन घोर बढायउ।१क०।
वालापण नित इत उत डोलत, धरम कउ मरम न पायउ
जोवन तरुणी तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ ॥२॥क०॥
वूढापणि सब अंग सिथल भए, लोभइ पिंड भरायउ।

'राजसमुद्र' प्रभु तिहारइ भजन विणु,
युंही जनम गमायउ ॥३॥क०॥

नवपद स्तवन

॥ दूहा ॥

दस दृष्टांते दोहिलउ, लहि मानव अवतार।
'सिद्धचक्र' आराहियइ, लहु तरियइ ससार ॥१॥
जिणिपरि जिणवर उइसइ, आगलि परषद बार।
तवन बध तिण परि कहुं, भवियण जन हितकार ॥२॥

॥ ढाल १ ॥

चवदह पूरब सार, मत्र भण्यउ नवकार।
पहिलइ पद अरिहत, समरीजइ मन खति ॥१॥
बीजइ पद्द मन दीजइ, सिव गय सिद्ध लहीजइ।
आचारिज पद त्रीजइ, आदर सु आराहीजइ ॥२॥
चउथइ पदि चरचीजइ, सिरि उवझाय जपीजइ।
सुधा साधु महत, पचम पद विलसत ॥३॥
दसण नाण चरित्त, चउथउ तप सुपवित्त।
नवपद जगि जयवंता, भासइ इम भगवंता ॥४॥

॥ ढाल २ ॥

आसोज धवल सत्तमि दिवसइ, जिणवर पडिमा थापी हरसइ।
आगलि सिधचउक सुथिर माडी,
मन हुंती मद मछर छांडी ॥१॥
गुरु मुख आबिलं तप पचखीजइ, दिन प्रति इक पद आराहीजइ।
पणवक्खर मायो बीज धारइ,
नवपद समरीजइ मधुर सुरइ ॥२॥

जिनराज सहित सिद्धचक्र तणी, पूजा उत्तम श्रावक करणी ।
तिम वांदउ देव त्रिकाल सही,आगलि शक्रस्तव पाठ कही ॥३॥
करतां अट्ठोत्तार सय जेती, वेला लेखइ पड़ियइ तेती ।
काउसग सकति सारइ कीजइ,पूरवला असुभ करम छीजइ ।४।
आराधइ नवपद जे प्राणी, तिण कीधी साची जिन वाणी ।
निद्रा विकथादिक परिहरियइ,हेलइ सिवसुख सपद वरियइ।५।
पंचे इन्द्रिय वसि करियइ, परिहरिय पच प्रमाद ।
समरंता परमिट्ठि पय, सयल टलइ विषवाद ॥१॥
क्रोधादिक चउ चउगुणिय, सोल कषाय निवारि ।
चउगइ दुख छेयण निउण, नाणादिक जगि सार ॥२॥
आज काज सीधा सयल, आज भलइ सुविहाण ।
आज पचेलिम पुण्य भर, जीवित जनम प्रमाण ॥३॥

॥ कलश ॥

जिण सयल जिनवर सिद्धि सुखकर वाणि अमृत उवइसइ ।
नवपद नवे दिन चैत्र ने पिण आराहउ मन नइ रसइ ॥
तिम गुपति निधि ससिकला (१६९३) वरसइ,
आसू सुदिसत्तमी दिनइ ।
जिनराज' सिव सुख काज 'जिनसिंह',
सीस पभणइ सुभ मनइ ॥४॥

इति श्री सिद्धचक्र स्तोत्र सं १६९५ वर्षे जेसलमेरौ
वा० दयाकीर्ति गणि शिष्य पण्डित गोडीदासं लिखितं सा ।
गुणविजया शिष्यणी साध्वी शाहजादी पठनार्थम्

(कान्तिसागर जी संग्रह पत्र १ से)

दादा श्रीजिनकुशलसूरि स्तवन

जीहो धन वेला धन सा घडी, दादा जब भेटूं तुम्ह पाय।
जी हो इम मन मइ धरतउ थकउ,
दादा हूं आयउ मुनिराय ॥१॥
'कुशलसूरि' पूरउ वछित काज।
जी हो हूँ सेवक छू ताहरउ,
दादा मुझ दुखियइ तुझ लाज ॥कु०॥२॥
जी हो जागइ जग माहे तु परगडउ,दादा जाणइ इद नरिंद।
जी हो कस्तूरी केसर करी, दादा नित पूजइ नर वृंद ।कु० ३।
जी हो दुख दोहग दूरइ टलइ, दादा जपतां अहनिश नाम।
जी हो पुत्रअ दियइ पुत्रिया,दादा निरगुण करइगुण धाम ।कु० ४।
जी हो 'अहिपुर' माहइ दीपतउ, दादा देराउर सुविशेष।
जी हो'जेसलगिरि'वरपूजियइ,दादा भाजइ दुख अशेष ।कु० ५।
जी हो 'वीरमपुर' 'सोवनगिरइ', दादा'जोधपुरइ' विलसत।
जी हो 'जइतारणि' वलि 'मेडतइ',
दादा लाछ दियइ बहु भति ॥कु०॥६॥
जी हो 'अहमदाबाद' 'खभाइतइ', दादा पाटणि पूरइ आस।
जी हो श्री 'सूरेत' 'विकमपुरइ', दादा तोडइ आपद पास ।कु० ७
जी हो'लाभपुरइ'तिम 'आगरइ',दादा महिमा'महिम' मझार।
जी हो 'सांगानयरि' 'अमरसरइ',
दादा सेवक जन सुखकारि ॥कु०॥८॥
जी हो इम पुर पुर थुंभ प्रणमीयइ,दादा नासइ सहु विषवाद।
जी हो 'राजसमुद्र' इम वीनवइ,दादा समरथां देजो साद ।कु० ९।

श्री जिनकुशल गुरुणां गीतम्

राग – प्रभाती

जपउ कुशलगुरु' (२) नाम निसि वासरइ,
रिद्धि नइ सिद्धि आपइ सवाई।
आपदा माहि तइ हाथ दे ऊधरइ,
तुरत दरसण दियइ आप आई ॥१॥
अवर सुर ध्यान धरियइ नही,
ध्याइयइ 'जिनकुशल' सूरि साचउ।
आप वसि कनक नी कोडि छोडी करी,
कवण मूरख महइ लोह काचउ ॥२।
वाट घाटइ अइ जाइ अलगा टली, समरता निरमलउ नीर पावइ।
देस परदेस धन राज कुशलइ मिलइ,
पूजता मूल योखम न आवइ ॥३॥
एफ मन एक रहणी सुगुरु जे रहइ, ता मन वंछित काज साधइ।
एक मुनि 'राज' प्रभु चरण युग सेवतां,
दिन दिन अधिक प्रताप वाधइ ॥४॥

राग धन्यासी.

'कुशल' गुरु अब मोहे दरसण दीजइ।
अइसी भांति करउ मेरे साहिब, इहु मन मूढ पतीजइ।१कु०।
जल दातार विरुद अमृत रस, श्रवण अंजुलि भर पीजइ।
सुरतरु सम दरसण विण देख्या, कहउ नयण किम रीझइ।२कु०
परम दयाल कृपाल कृपा करि, इतनो अरज सुणीजइ।
परम भगति 'जिनराज' तिहारउ, अपणउ करि जाणीजइ।३कु०

भणशाली थिरु गीतम्

संघवो तूं कलियुगि सुरतरु अवतरयउ रे,
आठ पहर घरि दइ दइ कार रे ।
तूं तउ राका केरउ मालवउ रे,
दुनिया रउ दुख भंजण हार रे ।।१।।सं०।।
खाटी तउ सलहीजइ ताहरी रे,वाटी जिण सारइ ससारि रे ।
कृपरणा जिम माटी देई करी रे,
तउ तउ दाटी नही लिगारि रे ।।२।।स०।।
लोद्रपुरइ, प्रासाद करावता रे, विधि सुं पारसनाथ प्रतीठ रे ।
करण कनक दातार सुणीजतउ रे,
ते तउ परतिख नयरो दीठ रे ।।३।।सं०।।
जिणवर नइ कुंडल सिरि सेहरउ रे,
भाल तिलक वलि नवसर हार रे ।
श्रीवछ नइ श्रीफल गल वाललउ रे,
रतना जडित सोवन मइ सार रे ।।४।।सं०।।
इम आभरण चढावइ साम्हठा रे,तो विगु कुण खोटइ ससार रे ।
तइ चाढो नवली नव देहरइ रे,
मुखमल नी धज एकणि वार रे ।।५।।सं०।।
सघ चलावउ 'जेसलमेर' थी रे,भेटी नाभि नरिंद मल्हार रे ।
'पुंडरगिरि' निज पगले फरसतइ रे,
तइ तउ परत कीयउ ससार रे ।।६।।स०।।
नगर नगर वरसतइ लाइरो रे, देतइ नव नवारू चीर रे ।

जोता आज विषम पचम अरइ रे,
धन नउ तइ हिज माग्यउ हीर रे ॥७स०॥
मन सुध भगति करइ 'जिनराजनी' रे,
हरि घरिणी घरि थिर थिरपाल रे ।
संघ धुरा निरवाहण सलहीयइ रे,
तू तउ धोरी धवल कधाल रे ॥८॥स०॥
इति भणशाली थिरु गीतम्

साधु व्रती गीत

श्री शालिभद्र गीतम्

मुनिवर विहरण पांगुरथा जी, तब वोलइ जगनाथ ।
मासखमण नउ पारणउ जी, थास्यै माइडी हाथ ॥१॥
महामुनि धन धन तुझ अवतार ।
रमणि बत्रीसे परिहरी जी, लीधउ संयम भार ॥२॥म०॥
तप करि काया सोखवी जी, अरस विरस आहार ।
घरि आव्या नवि ओलख्याजी, ए कुण छइ अणगार ॥३॥म०
महियारी वलता छता जी, दीठा मुणिवर तेह ।
रोम रोम तनु उलस्यउ जी, जाग्यउ नवल[1] सनेह ॥४॥म०॥
विहरो गोरस चीतवइ जी, जिणवर भापित तेह ।
जगगुरु पूरव भव कही जी, टाल्यउ मन संदेह ॥५॥म०॥
कर जोडी जननी[2] कहइ जी, वादो वीर जिणंद ।

१- नवलउ नेह २- भद्रा

नयण न देखूं नान्हडउ[3] जी, नंदण नयणाण द ।।६।।म०।।
वीर कहइ[4] भद्रा भणी जी, बइठी परखद बार ।
रिष जी अणसण आदर्यो जी, 'सालिभद्र' सुकुमार ।।७।।म०
शोकातुर धरणी ढलइ जी, कठिन विरह न खमाइ ।
जाणइ पुत्र विजोगणी जी, जे[5] दुख कवि न कहाइ ।।८।।म०।।
छाती[6] लागी फाटिवा जी, नयणे नीर प्रवाह ।
विणु जीवन जे जीवियइ जी,ते जीव्यउ स्या माहि ।।९।।म०।।
पेखि सिलापट ऊपरइ जी, पउढयउ पुत्र रतन्न ।
अविचल जोडि न वीछडइ जी, पास घनउ धन धन्न ।१०म०
इतला दिन हुं जाणती जी, मिलिस्यइ वार विच्यार ।
हिव मुझ मेलउ दोहिलउ जी, जीवन प्राण आधार ।।११।।
घरि आवी पाछा वल्या जी, जगम सुरतरु जेम ।
ए दुख वीसरस्यइ नही जी, हिव कहु कीजइ केम ।।१२।।म०
हरख न दीधउ हालिरउ जी, वहूअन पाडी पाइ ।
ते वांझणि होइ छूटिस्यइ जी, हुं किम गान गिणाइ ।१३म०
तुझ सम अवर न वालहउ जी, भावइ जाण म जाणि ।
साल तणी परि सालस्यइ जी, ए मुझ आहीठाण ।।१४।।म०।।
वछ ए मेलउ छेहलउ[7] जी, हिव मुझ केही सीख ।
नयण निहालउ नान्हडा जी, जिम पाछी दयुं वीख ।।१५म०।
देखी आमणदूमणी जी मोह वसइ मुनिराज ।
नयणि न निरखी[8] माइडी जी, सारथा आतम काज ।।१६म०।।

३- आत्र लूहण दीसइ नही जी ४- सुभद्रा नइ कहइ ५- ते
६- धीरज जीव खमइ नही जी. ७- दोहिलउ जी ८- निहाली, दीठी

अनुत्तर सुर सुख भोगवी जो, लहि मानव अवतार ।
महाविदेहइ सीझस्यइ जो, 'राजसमुद्र' सुखकार ॥१७॥म०

श्री अरहन्नक साधु गीतम्

नवलउ नवलइ वेस, विहरण वेलायइ रिष पागुरयउ ।
नव वारी नगरीह, सेरी माहे भमतउ पातरयउ ॥१॥
ए माहरउ नान्हडीयउ, कहु किम नयणे निरखीयइ ।
ए माहरउ वालूयडउ, विग दीठा किम परखीयइ ॥
ए माहरउ 'अरहन्नउ', आवि मिलइ तउ हरखीयइ ॥आं०॥
आव्या सगला साध, दूर गया हु ता जे गोचरी ।
नायउ इक अरहन्न, तब जणणी जोइवा सचरी ॥२॥ए०॥
कंचण कोमल काय, तडतड़इ तावड़ि ऊभउ रहइ ।
देखी रूप अनूप, इक नारी तेडावी नइ कहइ ॥३॥ए०॥
भोगवि वंछति भोग, नीच करम भिक्ष्या कुण आचरइ ।
भागा एकवटाह, प्रेम विलूधउ मुनिवर आदरइ ॥४॥ए०॥
माता करइ विलाप, सास तणी परि खिण खिण संभरइ ।
साचउ साजण सोइ, आण मिलावइ जो इण अवसरइ ।५ग०
उयर धरयउ दस मास, जे सुत वीसारयउ नवि वीसरइ ।
ते मुझ झड़फी लीध, जोवउ न्याय नही जगदीस रइ ।।६॥ए०॥
किहा मारउ अरहन्न दीठ, सहु कोनइ घरि घरि पूछइ जइ ।
ए ए मोह विकार, गलीय गली भमती गहिली थई ॥७॥ए०॥
आपण पइ सुरराय, कहिन सकइ भद्रा नउ,दुख गिणी ।
सो मइ किम कहिवाइ,जाणइ माता पुत्र वियोगिणी॥८॥ए०॥
सालइ अधिक सनेह, खिण चालइ खिण वइसी नइ रड़इ ।

भोगी भमर निहालि, महल थकी ऊतर पाए पड़इ ।।६।।ए०।।
खमिज्यो मुझ अपराध, हूँ पापी अपराधी ताहरउ ।
थोड़ी वेला माहि, माइड़ी काज समारउ माहरउ ।।१०।।ए०।।
पउढउ पुत्र रतन्न, ताती लोहसिला इण ऊपरइ ।
तहत करइ सुवचन्न, रिषि अणसण माइड़ी मुख ऊचरइ ।११ए०
पघलइ माखण जेम, नान्हड़ीयइ अधिकी वेदन सही ।
ऊभी माता पास, हुलरावइ च्यारे सरणा कही ।।१२।।ए०।।
चउरासी लख जीव, योनि खमावी कसमल ऊतरइ ।
साची माता एह, दुर्गति जातउ नंदन ऊधरइ ।।१३।।ए०।।
अणसण निरतीचार, आराधी अरहन्त सुर सुख लहइ ।
धन धन साधु महन्त,
इण परि 'राजसमुद्र' मुनिवर कहइ ।।१४।।ए।।

श्री वइर कुमार गीतम्

मइ दस मासि उयरि धरयउ धोटा, हु तेरी मात कहाउं धोटा ।
नइकु नजरि भरि निरखियइ धोटा,
मइ तुझ परि वलि जाउं धोटा ।।१।।
घरि आवउ रे मनमोहन धोटा, मेरइ मनि तू ही वसइ धोटा ।
अउर किछू न सोहाइ धोटा,
दिन इत उत ढांढी रहु धोटा, रयणिदुहेली जाइ धोटा ।२घ०.
तू जीवन तूं आतमा धोटा, तूं मुझ प्राण आधार धोटा ।
तुझ विण पलक न हु रहुं धोटा,
तउ क्युं जाइ जमार धोटा ।।३।।
जउ तइ कबही अवगणी धोटा, करि लोगण की काण धोटा ।

तउ परदेसी मीत ज्यु धोटा, ऊठि चलेसी प्राण धोटा ॥४॥
अउर नेह सो कारिमउ धोटा, जे छिणमइ पलटाइ धोटा।
नाडि न चोरइ नातरउ धोटा, जउ वरिसा सउ जाइ धोटा ॥५॥
अजहु भलहु न हसराउ धोटा, आप विमासी जोइ धोटा।
पहुडइ पेट जउ आपणउ धोटा,
तउ कलिहु थल होइ धोटा ॥६॥
छगन मगन कइसे भए धोटा, अइसे निपट निठोर धोटा।
मुनिजन कीनी मोहनी धोटा, तकत न मेरी ओर धोटा ॥७॥
मन की वात कहा कहुं धोटा, जाणत सिरजणहार धोटा।
करि मीनति इतनउ कहुं धोटा,
आइ मिलउ इक वार धोटा ॥८॥
देखि 'सुनदा' उनमनी धोटा, चितवत 'वइरकुमार' धोटा।
अव जउ मईया सु मिलु धोटा, बहुत वधइ संसार धोटा ॥९॥
कव लगि कठिन विरह सहुं धोट,
तजि अ गज सी आथ धोटा।
पंच महाव्रत आदरे धोटा, 'राजसमुद्र' प्रभु साथ धोटा ॥१॥
इति श्री वइर कुमार गीतम्

श्री अइमत्ता ऋषि गीतम्

दीठा गोयम गोचरी जी, जाग्यउ नवलउ मोह।
पड़िलाभी साथइ थयउ जी, जिण वयणे पड़िबोह रे ॥१॥
मुनिवर वंदियइ, 'अइमत्तउ गुणवंतो रे।
वीर प्रशंसियउ, धन धन साधु महंतो रे ॥२॥मु०॥
नवि जाणु जाणु सही रे, मातामे करि सनेह।

व्रत छट्ठइ वरसइ लियइ रे, मुझ मन अचरिज एह रे ।३।मु०।
ग्रहणा नइ आसेवना रे, सीखइ सिख्या दोइ ।
एक दिवस बाहिर गयउ रे, हरियाली भुइं जोइ रे ।।४।।मु०।।
साधु नजरि टाली करी रे, पूरब रीति संभालि ।
वहतउ पाणी थभियउ रे, बाधी माटी पालो रे ।।५।।मु०
तरती मुकी काचली रे, बालक रामति काज ।
जोवउ माहरी बेडली रे, पार उतारइ आज रे ।।६।।मु०।।
आव्या थिवर इसु कहइ रे, ए कुण तुझ आचार ।
पच महाव्रत आदरथा रे, उत्तम कुल अणगार रे ।।७।।मु०।।
मुनिवर पचतावउ करइ रे, मइ कुण कीधउ काम ।
वात थिवर जेहवइ कहइ रे, भगवन भाखइ तामो रे ।।८।।मु०
मा हीलह मा खिसहइ रे, मा निदह करि रीस ।
चरम देहधर एह अछइ रे, अइमत्तउ मुझ सीसो रे ।।९।।मु०
आठे अरिअण निरदली रे, पाम्यउ शिवपुर वास ।
'राजसमुद्र' गुण गावतां रे,अविचल लील विलासो रे ।१०मु०।

श्री सनत्कुमार मुनि गीतम्

जी हो सोहम इद प्रससियउ जी हो रूपवंत धरि रेख ।
जी हो जोवा आव्या देवता हो जी दीठउ अति सुविशेष ।।१।।
महामुनि धन धन 'सनतकुमार' ।
जी हो तृण जिम राज रमणि तजी हो जी लीधउ संजम भार ।२।
जी हो राजसभा लगि आवतां हो जी प्रगटथउ रुहिर विकार ।
जी हो पाणी वल माहे थइ होजी देही अवर प्रकार ।।३।।
जी हो चउसठिउ सहस अ तेउरी हो जी करती कोड़ि विलाप ।

जी हो ऋद्धि अवर पाछलि थई,

हो जी अलवि न निरखी आप ॥४॥

जी हो छट्ठ छट्ठ नइ पारणइ हो जी आछणची नउ भात।

जी हो लबधि छता साते सहइ हो जी रोग वरस सय सात ॥५॥

जी हो न करइ सार सरीरनी, हो जी सूधउ साधु महंत।

जी हो सुर वचने चूकउ नही, होजी धरि धीरज एकंत ॥६॥

जी हो लाख वरस संजम धरू, हो जी सारी आतम काज।

जी हो मानव भव सफलउ कीयउ,

हो जी इम जंपइ 'जिनराज' ॥७॥

श्री बाहूबली गीतम्

पोतइ जइ प्रति बूझवउ, बधव अमलो माण

वनि आवइ वे बहिनडी, करि प्रभु वचन प्रमाण ॥१॥

वीरा 'बाहुबलि' 'बाहूवलि', वीरा तुम्हो गज थकी ऊतरउ,

गज चढथां केवल न होइ वी० ॥ आकणी ॥

मूठि भरत मारण भणी, ऊगामी धरि रीस।

आव्यउ उपशम रस तिसइ, सहिस्यइ ए मुझ सीस ॥२॥वी०॥

मद मछर माया तजी, पंच मुष्टि करि लोच।

धीर वीर काउसगि रह्यउ, इम मन सु आलोच ॥३॥वी०॥

आगलि लघु बधव अछइ, किम वदिसु तजि माण।

ऊपाडिस पग ऊपनइ, इहां थी केवल नाण ॥४॥वी०॥

वेलड़ीए तनु वीटियउ, डाभ अणी पग पीड।

मुनिवर नइ काने बिहुं, चिडीए घाल्या नीड़ ॥५॥वी०॥

सहतां एक वरस थयउ जी, तिस तावड़ सी भूख।

मउड़उ सउ काने पडयउ, बहिन वचन पीयूष ।।६।।वी०।।
राज रमणि रिद्धि मइ तजी, हय गय नेक अनीक ।
ब्राह्मी सुदरि साधवी, न कहइ वचन अलीक ।।७।।वी०।।
प्रतिबूधउ आलोचतउ, अवर न एवड़ मूढ ।
हु द्रव्यत गज परहरी जो, भावत गज आरूढ ।।८।।वी०।।
लघु बधव पिण केवलो, वदिसु तजि अभिमान ।
पाम्यउ पग ऊपाडतइ, अनुपम केवल नाण ।।९।।वी०।।
केवल न्यान न ऊपनउ, इतला दिन नी वेठि ।
चाप्यउ किम ऊकसि सकइ, बाहूबलि पग हेठि ।।१०।।वी०।।
झूझ्यउ बूझयउ ऊवरयउ, आज लगइ सोभाग ।
साधु तणा गुण गावतां, 'राज'तणउ बड भाग ।।११।।वी०।।

श्री नंदिषेण गीत

साधु जी न जइयइ जी पर घर एकला,नारी नउ कवण वेसास ।
'नदिषेण'गणिका वचने रहयउ,बार वरस गृह वास ।।१।।सा०
सुकुलीणी वर कामिणी पंचसइ, समरथ श्रेणिक तात ।
प्रतिबूधउ बचने जिनराज नइ,व्रत नी काढइ वात ।।२।।सा०।।
भोग करम पोतइ अण भोगव्यां, न हुस्यइ छूटक वार ।
बात करइ छइ सासण देवता, लीधउ संजम भार ।।३।।सा०।।
कचन कोमल काया सोखवी, अरस विरस आहार ।
सवेगी मुनिवर सिर सेहरउ, बहु विधि लबधि भंडार ।४सा०
वेश्या घरि पहुतउ अणजाणतउ, धरमलाभ द्यइ जाम ।
धरमलाभ नउ काम इहा नही,अरथलाभ नउ काम ।।५।।सा०
बोल खमी न सक्यउ गरबइ चडयउ, खांचइ घर नउ नेव ।

दीठउ घर सारउ अरथइ भरयउ, जाणउ परतखि देव ।६सा०
हाव भाव विभ्रम वसि आदरइ, वेश्या सुं घर वास ।
पिण दिन प्रति दस दस प्रतिबूझवी मूकइ प्रभु नइ पास ॥७सा०
इक दिवस नव आवी नइ जुडया, न जुडइ दसमउ कोइ ।
आसगाइत हासइ मसि कहइ, पोतइ दसमउ होइ ॥८॥सा०॥
नदिषेण फेरि सजम लीयउ, विषय थकी मनवालि ।
चूकी नइ पिण जे पाछा वलइ, ते विरला इणि कालि ॥९सा०
व्रत अकलकित जउ राखण करइ, इणि खोटइ ससारि ।
श्री 'जिनराज' कहइ तउ एकलउ,
पर घरि गमण निवार ॥१०॥सा०॥

श्री गजसुकुमाल मुनि गीतम्

सवेग रस माहि झीलतउ, मन सुं करइ आलोच ।
दोषी नउ जउ दहवट गमु,
तउ मइ साधु रे स्युं करि लोच ॥१॥
यादवराय धन धन 'गजकुसुमाल,'
तेहनइ करू रे प्रमाण त्रिकाल
प्रभुपासि सजम आदरयउ, तेहनउ ए प्रमाण ।
मन वच काया वसि करी, जउ हूँ पामू रे केवलज्ञान ॥२॥
मुनि मुगति जाववा अलजयउ, पडखइ न दिन दस वीस ।
जास्यइ तिका जावउ घड़ी जउ दिन जायइ रे तउ छइ दीस ।३।
समसाण जइ काउसग्ग रहयउ, तिण सांझि प्रभु नइ पूछि ।
मुनिवर अवर मन चितवइ,एहनइ साची रे छइ मुंह मूछि।४।
मुझ सुतां विण अवगुण तजी, सोमल अगनि परजालि ।

सिगड़ी रची सिर ऊपरइ,

चिहु दिसि बांधी रे माटी नी पालि ।।५।।

वेदना जिम अधिकी वधइ, तिम वधइ मन परिणाम ।

चवदमइ गुणठाणइ चड़ी, मुनि पामइ रे अवचल ठाम ।।६।।

देवकी जामणि नइ थई, ते रयणी वरस हजार ।

वंदिवा आवी प्रहसमइ, पणि नवि दीठउ रे प्राण आधार ।७।

पूछता प्रभु माडो कहइ, राति नी वीतग वात ।

हरि देखी हियडउ फूटिस्यइ,

तिण कीधउ रे रिषीजी नउ घात ।।८।।या०।।

उपसम सुधारस सेवीयइ, पामीयइ अविचल राज ।

मन रंगे साधु महतना,इम गुण गावइ श्री 'जिनराज' ।९या०

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

राग—कानडो

थूलिभद्र न्यारी भाति तिहारी, हु तेरी बलिहारी ।।थू०।।

भोजन सरस युवति सगति तजि, होत अवर ब्रह्मचारी ।१थू०

वा चित्रसाली वा सुख सैय्या, पूरव परिचित नारी ।।थू०।।

भर यौवन अरु भर पावस रितु, षट रस कउ आहारी ।२थू०

राखी अपणी टेक अखडित, गणिका भी निस्तारी ।।थू०।।

श्री 'जिनराज' कहालूं वरणइ, तेरउ तूं अनुहारी ।।३।।थू०।।

श्री विजयसेठ विजया सेठानी गीतम्

राग—नट

आली धन वो प्रिय धन वा प्यारी ।

भरि योवन इक सेज कउ सोवन,
किसन सुकल पखि ब्रह्मचारी ॥१॥ध०॥
आठुं जाम रमे मन माने, दाव परइ न मरइ सारी।
काजल वीचि रहास[1] रयण दिन,
लागइ रेख न का कारी ॥२॥ध०॥
प्रिया तरती अपणउ प्रीउ तार्यो, तरतइ पीउ प्यारी तारी।
'राज' वदति कलिके जोगीसर,
[2]तापरि सिरि वारु डारी ॥३॥ध०॥

श्री दमयन्ती सती गीतम्

छोड़ि चल्यउ 'नलराइ', निसि भरि सूती 'दमयन्ती' सती।
नवल सनेही नाह, नयण न देखइ ते जागी छती ॥१॥
ए मन मोहन नाह, नगीनउ किहां गयउ।
ए मन मोहन माहरउ, प्रीतम मिलिवा अलिजयउ ॥आं०॥
साद कीयां दस वीस, पाछउ दीधउ साद न को कीयइ।
प्रीउ प्रीउ करइ पुकार, प्रेम विलूधी उलंभा दीयइ ॥२॥ए०॥
कामिणगारइ कंत, मुझनइ सीख न का चालतइ कही।
दरसण आइ दिखाइ, हासइ री वेला हिवणा नही ॥३॥ए०॥
मइ विरहउ न खमाइ, सास तणी परि खिण खिण संभरइ।
जेहसु निवड़ सनेह, ते तउ वीसार्या नवि वीसरइ ॥४॥ए०।
नेहा नेह अपार, जे जड़ि घालि चल्यउ उर अंतरइ।
लाख मिलइ लोहार, तउ पिण ते जड़ किम ही न वीसरइ ॥५ए०
अवसर वोल्या बोल, सालइ साल तणी परि माहरइ।

---

१ रहत, २ (वाके) नख शिख परि डारुं वारी—

हिव मुझ करिज्यो सार,वइगी जउ मन मानइ ताहरइ ।।६ए०
कवण कीयउ अपराध, प्रगट थइ मुझ नइ समझावियइ ।
अवला करइ विलाप, नाह निहेजउ किम परिचावियइ ।।७ए०
कठिन विरह निसि दीस, प्राणी तुझ नइ सहिवउ छइ ।
सइगू साथ म मूकि,
एहवउ साथ न को मिलस्यइ पछइ ।।८।।ए०।।
आगलि मारगि दोइ, इक जास्यइ पीहर इक सासरइ ।
चीर लिखित सपेखि, पहु चइ भीम सुता निज पीहरइ ।।९ए०
कीधा कोडि जतन, अनुपम शील रतन राखण भणी ।
आइ मिलै नल राय,
आस फली सफली हिव आपणी ।।१०।।ए०।।
आज भलइ सुविहाण आज घड़ी सुघडी लेखइ पड़ी ।
इम बोलइ मुनि'राज' सोहइ शील सुरगी चूनड़ी ।।११।।ए०।।

सती कलावती गीतम्

बाहे पहिरथा बहरखा बांधव मूक्या जेह ।मन मोहन।
राणी सहियर आगलइ, एम कहे सुसनेह ।।मन०।।१।।
धन धन सती 'कलावतो,' समरोजइ तसु नाम ।।म०।।
जग मइ साकउ राखियउ,
सुर नर करइ प्रणाम ।।मन०।।२।।ध०।।
मुझ मन मिलिवा अलजयउ, साचउ साजण सोइ ।।म०।।
जिण ए मुक्या बहिरखा,
तिण सम अवर न कोइ ।।मन०।।३।।ध०।।
घनवेला धन सा घड़ी, धन दिवस धन मास ।।म०।।

छडी नइ जाई मिलु, पूरुं मन नी आस ॥४॥मन०॥घ०॥
एम वचन राजा सुणी, मन मांहि पडयउ सदेह ॥म०॥
कुसती रइ मन कुण वसइ, जे सुं निवड़ सनेह ॥मन॥५॥घ०
गरभवती एकाकिनी, मूकी अटवी मांहि ॥म०॥
कापी आण्या वहरखा, साथइ लागी वांहि ॥मन०॥६॥घ०॥
सील प्रभावि सती तणा, नव पल्लव कर होइ ॥म०॥
सील वड़उ भूषण कहयउ,
सील समउ नहि कोइ ॥मन०॥७॥घ०॥
ते नामांकित वहरखा देखी सख नरिंद ।म०।
पुत्र सहित निज कामिनी, आणी परमाणंद ॥मन०॥८॥घ०॥
सुजस थयउ महि मंडलइ, साचउ सील रतन्न ॥मन०॥
'राजसमुद्र' गुण 'गावतां',
लोक कहइ धन धन्न ॥मन०॥९॥घ०॥

श्री मयणरेहा सती गीतम्

लघु बांधव जुगबाहु नइ रे हा,
जीवनप्राण आधार ॥मयणरेहा सती ॥
मणिरथ रूपइ रजियइ रे हा,विरूआ विषय विकार॥म०॥१॥
मयणरेहा राख्यउ सील रतन्न,
कीधा कौड़ि जतन्न, तिण कारण धन धन्न ॥प्रा०॥
पापी मणिरथ निसि भरइ रे हां,मूक्यउ खडग प्रहार ॥म०॥
पिउ पासइ ऊभी रही रे हा, 'देही शरण' च्यारि रे ॥म०॥२॥
सील रतन राखण भणी रे हा, ते पहुंती वन मांहि ॥म०॥
पुत्र रतन जायउ तिहां रे हां, जल गज नाखी साहि ॥म०॥३॥

विद्याधर पडती ग्रही रे हा, चूकउ देखि सरूप ।।म०।।
ते मुनिवर प्रतिबूझव्यउ रे हा, दाखी विषम विरूप ।।म०४।।
प्रीतम सुर आवइ तिहां रे हां,पाय प्रणमइ करजोडि ।म०।
सुर सानिधि व्रत आदरइ रे हा, माया ममता छोडि ।।म०।।५।।
नंदन नमिराजा थयउ रे हां, पूरब करम विसेष ।।म०।।
शिव सुख पामइ सासता रे हां, जग माहि राखी रेख ।।म०६
जे अवसर चूकइ नही रे हा, पालइ सील रसाल ।।म०।।
'राजसमुद्र' कहइ तेहनइ रे हा, करूं प्रणाम त्रिकाल ।।म०७।।

श्री सीता सती गीतम्

राग—सोरठी.

जब कहइ तुझ वनवास रे, सारथी भरि नीसास रे ।
सासन रे तास न को लोपी सकइ रे।।
ऊलटथउ विरह अगाह रे, तब नयण नीर प्रवाह रे ।
वाहन रे नाह नगरि पाछउ तकइ रे ।।१।।
प्रीतम कीयउ कुण काम रे, अबला तजी वनि आम रे ।
आमन रे राम निठुर कीजीयइ रे ।
परिहरिनइ करि द्रोह रे, राखीवा निज कुल सोह रे ।
सोहन रे मोहन विणु क्यु जीजयइ रे ।।२।।
कीधी न का खल खच रे, साभली पिशुन प्रपंच रे
पचन रे रचन न प्रीउ पूछ्या वली ।।
पूरवी सउकि उमेद रे, हराविस्यइ ते द्रूवेद रे ।
वेदन रे खेद न वचन साभली रे ।।३।।
आवियउ लंक सहेज रे, सूतउ न मुख भरि सेज रे ।

सेजन रे ए जनकेश सुता अछइ ॥
पूगउ न आलोच रे तइ कीयउ करम आसोच रे ।
सोचन रे लोचन भरि करिस्यइ पछइ रे ॥४॥
तिण कीया कोड़ि जतन्न रे, राखिवा सील रतन्न रे ।
रतन्न रे मन्न-न चूकउ जेहनउ रे ॥
आदरयउ श्री 'जिनराज' रे, धीजनउ सीता साज रे ।
साजन रे आज नवल जस तेहनउ रे ॥५॥

श्री सती सीता गीतम्

लखमणजी रा वीर जोहो जीवन जो हो जी,
दशरथजी रा नदन कांइ मुझ परिहरो जी ।
सास तणी परि खिण खिण पीउ पीउ सभरइ रे,
तुझ विरहो न खमाई जी ॥१॥
तूं मुझ प्राणआधार जी०,
चतुर सनेही लाल राचि न विरचियइ रे ।
झटक न दीजइ छेह जी,
आगलि पाछलि वात विमासियइ रे ॥२॥
बहिनी घालइ घात जी०,
लहि अवसर अणहूंता अवगुण पिण कहइ रे ।
पर घर भंजा लोक जी०,
नित नित नवलउ नेह तिके किम सांसहइ रे ॥३॥
वीसरिया दिनतेह जी०, हुं वनवासइ आवी हुती एकली ।
अवरि सहू ए नारि जी०,
प्रीतम दउलति री माखी आवी मिलि रे ॥४॥

हुं अबला निरधार जी०,

कीड़ी ऊपरि कंता कटक न कीजीयइ रे।

जउ तइं जाण्यउ दोष जी०,

लोक हजूरइ धीजइ साच करीजीयइ रे ॥५॥

एकलडी वन माहि जी०,

इण वेला मुझनइ तुझ विण कुण साहरइ रे।

कहीयइ केहनइ साथ जी०,

मन की बात रही मन माहि माहरइ रे ॥६॥

आपण आदरीयाह जी०,

नवि ऊभगियइ तउ ते नेह सराहियइ रे।

उत्तम एह आचार जी०,

जिण मीटइ मिलियइ तिण अंत नीवाहीयइ रे ॥७॥

बार वरस नइ अंत जी०,

धीज करण 'सीता' वहि आवी मनरली रे।

राखी जगमइ रेख जी०,

नारि जाति सुविशेषइ कीधी ऊजली रे ॥८॥

सोनइ सामन होइ जी०,

सील प्रभावइ ते साची सोभा लहइ रे।

धन धन सीता नारि जी०,

इण परि मन रंगइ मुनि 'राजसमुद्र' कहइ रे ॥९॥

इति सती सीता गीतम्

रामायण सम्बन्धी पद
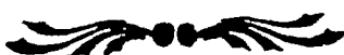
(१) मंदोदरी वाक्यम्

राग—सामेरी

मंदोदरी बार बार इम भाखइ ।
दस[1] सिरि अरु गढ लका चाहइ,
तउ परस्त्री जन राखइ ।।१।।मं०।।
पलटयउ दिवस विभीषण पलटयउ, पाज जलधि परि झाखइ ।
बोवइ पेड़ आक के आगण, अंब किहां थइ चाखइ ।।२मं०।।
जीती जाइ सकइ नही कोउ, वाणि एहि जगि आखइ ।
'राज' वदत रावण क्युं समझइ, होणहार लकाखइ ।।३मं०।।

(२) मंदोदरी वाक्यम्

राग - सामेरी

आज पीउ सुपनइ खरी डराई ।
जलधि उलंघि कटक लंका गढ, घेरयउ परी लराई ।।१आ०।।
लूटि त्रिकूट हरम सब लूटी, त्रूटी गढ की खाई ।
लपक लंगूर कगूर बइठे, फेरइ राम दुहाई ।।२।।आ०।।
जउ दस सीस वीस भुज चाहइ, तउ तजि नारि पराई ।
'राज' वदत हुणहार न टरिहइ,
कोरि करउ चतुराई ।।३।।आ०।।

१- जो दस सीस वीस भुज चाहइ.

(३) मंदोदरी वाक्यम्

राग—गुण्ड मल्हार

सीय की भीर रघुवीर धायउ ।
बधी जब पाज तब नाव हाजति टरी,
अंगि अति अधिक उच्छाह आयउ ॥१॥
नीर निधि तीर गजराज सिरि गिरि शिखर,
झलहलइ सूर जिम दैवरायउ ।
घूक दसकध तब अंध सउ होइ रहयउ,
किरण लंगूर गढ लंक छायउ ॥२॥सी०॥
हाक हनुमान की जानकी पदमिनी,
प्रेमरस परम आनंद पायउ ।
वदत 'जिनराज' मदोदरी कुमुदिनी,
सोच वसि बहुत सकोच खायउ[२] ॥३॥सी०॥

(४) सीता विरह

राग—मारुणी.

सीय सीय करत पीय सीय विण सब सूनउ ।
दोउ नयण सावण भादुं भये, ऐसी भांति रूनउ ॥१॥सी०॥
समरि समरि सीय के गुण, ऊमड़त दुख दूनउ ।
रयणि नीद न दिउस भूख, रहत ऊणउ झूणउ ॥२॥सी०॥
आठूं याम रटत जात, विगरि सीय अलूणउ ।
'राज' धार होत मन मिलइ ··· ··· अमूणउ ॥३॥सी०॥

२- पायउ

(५) राम वाक्यम् सुभटानाम्

असुरपति आपणि कमाई तइं न डरिहै।
कोण जलनिधि जल तरिहै ॥अ०॥१॥
वाकउ गढ वांकी खाई, वांके हइ जाके सहाई।
काहू कु नजर मांहि न धरहइ ॥अ०॥२॥
जीते च्यारे दृगपाल, इन्द्र हुं कइ उरिसाल।
माता भी विधाता पाउ परिहइ ॥अ०॥३॥
लंका कउ कमार ठउर ठउर हूं को जयत वार।
गह भी भराए पाउ भरिहइ ॥आ०॥४॥
सीस दस वीस भुजईश की कृपा थैं पाए।
मारयो भी काहू को न न मरिहइ ॥अ०॥५॥
वडे वडे वीरन कइ आगइ कहइ रघुवीर।
सीय की खवर कउन करिहइ ॥अ०॥६॥

(६) हनुमंत वाक्यम्

जु कछु रघु राम कहइ सोऊ[1] करिहुं,
दशमुख थइं न न डरिहुं।
सीय की खवर सुतो वातन की वातहइ,
सीय भी कहउ तउ आण धरिहु ॥१॥ज०॥
जलधि उलंघ गढ लंक भी उलधि कइ,
कहउ तउ पलक मइ पकरिहुं।
पावक की पोट दे दे कंचन कउ कोट गारूं,
कहउ तउ निशाचर सुं लरिहुं ॥२॥ज०॥

१–सोइं

पाप कउ पहार परतीय कउ हरणहार,
कहउ तउ पलक मइ पकरिहु ।
पवन कउ पूत कहउतउ तउ हूँ तिहारो दूत,
'राज' को भराए पाउं भरिहुं ।।३।।ज०।

(७) पुनः हनुमंत वाक्यं रामचंद्र प्रति

जउ पइ होवत राम रजारी ।
तउ तूं भी देखत मेरी मइया, दयत दयत कू सजारी ।१।ज०।
दसउ सीस बल दयत दिसो दिसि, छीन लियत पचरंग धजारी ।
कन कन करूं कंगुरे गढ के,
करज बुरज पुरजा पुरु जारी ।।२।।ज०।।
फेरत आन दान मेरे प्रभु की, आपण वस कर सकल प्रजारी।
'राज' रजा विणु इया हुइ आई,
लका लाइ हुडाग प्रजारी ।।३।।ज०।।

(८) मंदोदरी वाक्यम्

राग – धन्यासी (जयतश्री)

आज पिउ सोवत रयण गई
नायक निपुण दूध मइं काहे, कांजो आण ठई ।।१।।आ०।।
मेरउ कहयउ विलग जिन मानउ, हइ विषुवेल वई ।
विगरे काम कहउगे मोकुं, किण ही न खबर दई ।।२।।आ०
सुणियत हइ गढ लक लयण कुं, होवत राम तई ।
डरत न कहत 'राज' सुं कोऊ, कन कन बात भई ।।३।।आ०

(९) रावण प्रति सीता वाक्यम्

राग – सोरठ

हरि कउ नाम लइ दसकध, काहे तजइ कुल कउ माग ।
राम विणु परपुरुष मेरे, भाय कारउ नाग ॥ह०॥१॥
अति चतुर तू मति होइ आतुर, इहां न तेरउ लाग ।
पतिव्रता कइ प्रेम पति सुं, अउर सुं वइराग ॥ह०॥२॥
तजि नीच गति भजि ऊंच संगति[1], वढइ[2] दिन दिन आग ।
रघुवीर रूडइ 'राज' रावण, किम रहइ सिर पाग ॥ह०॥३॥

(१०) हनुमंत प्रति सीता वाक्यम्

राग – सोरठ

आगइ आइ ठाढउ रहयउ वनचर, कर चरण प्रणिपात ।
आन तजि जानकी पूछी, राम की कुसराति ॥१॥आ०॥
सहल सी हु टहल करती, साग मूरी पात ।
चरण चेरी आण घेरी, मोहि कछु न वसात[1] ॥२॥आ०॥
रहत हइ किस भांति पीउ कइ, कउण हइ संघात ।
कहि देव दाणव 'राज' आगइ, कहो मेरी वात ॥३॥आ०॥

(११) विभीषण वाक्यम्

राग–सारग

कहत अइसी भाति विभीषण भ्रात ।
तूं दसकंध अंध भयो जा परि, उवा दुहिला तूं तात ॥१क०
कहा गई तेरी चतुराई, जाण वूझ विष खात ।
जई हइ राज लाज भी जई हइ, परभव दुरगत पात ॥क०२॥

१- पदवी. २- चढइ १- सुहात.

अयसउ हुयो न हुइ कुबुधी, थिर रहइगो इया बात ।
'राज' न जोर चलइ भावी सुं, काहू कउ तिलमात ॥क० ३॥

(१२) पुनः विभीषण वाक्यम्

राग—सारंग

निपट हठ झालि रहथउ बेकाम ।
जानत हूँ मेरइ भायइ तू, खोयइ गउ सब माम ॥नि०॥१॥
कीनउ पात पात सब उपवन, रहथउ राम कउ नाम ।
अइसी आग व्रजागि लगाई, जरे कनक के धाम ॥नि०॥२॥
जा कइ दूत करी या करणी, सो कहा करहइ राम ।
समझउ 'राज' भेज दथउ सीता,
जनि कोउ करहु सग्राम ॥नि०॥३॥

मोह बलवंत गीतम्

राग-मल्हार

मोह महा बलवत, कवण जीपी सकइ रे क० ।
इण आगलि पग मांहि, रहइ दस वीस कइ रे ०द०॥
सहुनइ आण मनावइ, चउपट चउहटइ रे च०।
किण ही आगलि एह न, तिल भरि अउहटइ रे ति०॥१॥
'रिषभदेव'नी पूत, खबरि नवि को लीयइ रे व०।
'भरत' भणी 'मरुदेवा', उलभा दियइ रे उ०॥
भूख तृपा तप सीत, सहतउ साभली रे सा०।
झूरता निसि दीस, नयन छाया वली रे ॥न०॥२॥
जामिणि नी अनुकपा, मन माहे वसी रे म०।
लीन रहथउ पाणी वलि, प्रभु एकरिग दीसो रे प्र०॥

'महावीर' ल्यइ आम, अभिग्रह आकरू रे ।
माता पिता जीवता, हु व्रत नादरु रे ॥कि०॥३॥
चउनाणी 'गोयम', गणधर धरणी ढलइ रे कि धर०।
बालकनी परि वीर विओगइ विल विलइ रे वी०॥
'सज्जभव सरिखा पिण, इण मोहइ नडया रे इ०।
'मनक' तणइ विउग, नयन आंसू पडया रे ॥न०॥४॥
शिवगामी पिण 'राम', छमास विकल रह्यउ रे छ०।
'लखमण' तणउ करक, लेई खाधइ वह्यउ रे ले०॥
मात वचन जजोरे, सुत सूतउ कस्यउ रे मु०।
बार वरस गृहवास, फिरी 'आद्रन वस्यउ रे ॥फि०॥५॥
'अरहन्नक' नइ नेह, जणणि परवसि पडी रे ज०।
घरि घरि पूछइ जाइ, घणु इक आरडी रे घ०॥
किहां माहरउ अरहन्नउ, दीठ कहउ ल्याउं जई रे क०।
भमती गलिया माहि, खरी गहिली थई रे ॥६॥
इद नरिंद फणिंद, विद्याधर मानवी रे वि०।
विनडइ सहु नइ मोह, करी परि नव नवी रे क०।
पोतइ वीतग वात कि, मन माहे धरी रे कि म० ।
इम जंपइ 'जिनराज' प्रगट वचने करी रे ॥प्र०॥७॥

वैराग्य गीत

राग—गउडी

सुख लोभी प्राणी साभलउ जी, सीख सगुरु की सार ।
वरजउ विषय विकार, लेजो संजम सार ॥१॥सु०॥
लाधउ आरिजदेस मणूअ भव, लाधउ गुरु संजोग ।
छारित नाही काहइ मूरिख, मधुबिन्दु सम ए भोग ॥२॥सु०

चउरासी लख भेष बणाए, जीव अणंती वार ।
करम वसइ भव माहे भमता, लाजत नही गुमार ।।३।।सु०।।
तन धन योवन हइ सब चंचल, जइसइ पीपल पान ।
विणसत वार न लागत इण कुं, ज्यु सध्या कउ वान ।।४।सु०
जे सिर ऊपरि छत्र धराते, त्रिभुवन माहि प्रधान ।
ते भी काल कवल से कीने, तू क्या करइ गुमान ।।५।।सु०।।
अवरहि द्यइ उपदेश विविध पर, आप न तजत लिगार ।
मासाहस पंखी परि करतउ, किम पामिस भव पार ।।७।।सु०।।
ग्यान समुद्र मइं मगन होइ करि, लेजे अरथ विचार ।
'जिनसिंहसूरि' सीस इम बोलइ, 'राजसमुद्र' सुखकार ।।७सु०

पंचेन्द्रिय गीत

सुर नर किन्नर राय आज्ञा हो,
आज्ञा हो जैहनी मन रगइ वहइ हो ।
बारह परषद माहि सामी हो,
सामी हो वीर जिणेसर इम कहइ हो ।।१।।
फरस तणइ विकार रावण हो,
रावण हो राजा दुखियउ रड़वडइ हो ।
रसनायइ कंडरीक सातमी हो,
सामी नरकइ ततखिण जे पडइ हो ।।२।।
मंत्री जेम सुबंधत घ्राणइ हो,
घ्राणइ इण भव ना सुख सउ गमइ हो ।
दृष्टि तणइ विकार रूपी हो,
रूपि तिम वली लखमण भव भमइ हो ।।३।।

सज्यापालक जेम तरुयउ हो,
तरुयउ अति तातउ श्रवणे सहइ हो
इणि परि इण जगि मांहि प्राणी हो,
प्राणी वहुला इण वसि दुख लहइ हो ॥४॥
रमणी रंग पतंग तिण सुं, हो तिणसुं राग रिती कवइ मत धरइ हो।
इणि रंग राता जेह मुगधा हो,
मुगधा पाप तणउ अपणउ भरइ हो ॥५॥
फल किंपाक समान देखतां हो,
देखता सहु जन नइ सुख संपजइ हो ।
कडूआ एह विपाक जाणइ हो,
जाणइ जब नाना विध दुख भजइ हो ॥६॥
ताथइ विषय विकार मूकउ हो,
मूकउ जेम मुगति रमणी वरइ हो ।
इम मुनि 'राजसमुद्र' मन मइ हो,
मन मइ एह भाव नित नित करइ हो ॥७॥

निन्दा वारक गीत

राग—धन्यासी

सुणहु हमारी सीख सयाणे, जणि कहु दोष विराणे रे ।
निंदक नर चण्डाल समाणे,
आगम माझि कहाणे रे ॥सु०॥१॥
निंदक सोह न पावइ जगमे, काच सकल ज्युं नगमइं रे ।
निंदक ठावउ गिणीयइ ठगमइ,
जइसइ काग विहग मइं रे॥सु०॥२॥

तात विराणी करइ गहेलउ, जाणइ नांहि महेलउ रे।
सालइ कुवचन खरउ दुहेलउ,
ज्यु आगुरी इत्त हेलउ रे ॥सु०॥३॥
रजक विचारउ पर मल धोवइ, सो भी लाहउ जोवइ रे।
विण स्वारथ निंदक मल धोवइ,
आपहि आप विगोवइ रे ॥सु०॥४॥
जिण विण निरदूषण नहि कोइ, तउ भी कहणा जोई रे।
झूठ गुमान कीयइ क्या होई, पछतावइगा सोई रे ॥सु०॥५॥
पर के वयण सुणी न पतीजइ, सो नर चतुर कहीजइ रे।
जउ अपणे नयणे देखीजइ,
तउहु विचार करीजइ रे ॥सु०॥६॥
अपणी करणी पार उतरणी, पर की तात न करणी रे।
'राजसमुद्र' पभणइ मन हरणी,
ज्यु पावउ शिव घरणी रे ॥सु०॥७॥

आत्म शिक्षा (विणजारा) गीत

विणजारा रे वालभ सुणि इक मोरी बात,
तूं परदेशी पाहुणउ वि० ।
विणजारा रे मकरि तू गृहवास,
आज काल मइं चालणउ वि० ॥१॥
वि० रसिक न कीजइ मीत, वात न पूछइ विरह री वि० ।
वि० चउरासी लख नारि, तइ परणी तइ परिहरी वि०॥२॥
वि० जण जण सेती प्रीति, करि पीछइ पचताईयइ वि० ।
वि० जाकउ अविहड़ नेह, ताहीस्यु चित लाईयइ वि० ॥३॥

वि० आइ जुडइ जब साथ, तब तउ तू न सकइ रही वि० ।
वि० अइसउ मत न तंत, राखु हू अछर गही वि० ॥४॥
वि० भरि भरि नयण म रोय,करि कायर काठउ हीयउ वि० ।
वि० मो गल नवसर हार,सो साथइ संबल लीयउ वि० ॥५॥
वि० जे वउलाऊ साथि, तासु म करे रूसणउ वि० ।
वि० दूजण न हसइ कोइ, काज न विणसइ आपणउ वि०॥६॥
वि० लाखीणउ दिन जाइ, चेतन तूं चेतइ नही वि० ।
वि० 'राजसमुद्र' इम सीख, अपणइ आतम कुं कही वि०।८।

आत्म शिक्षा गीत

राग—गउड़ी

इक काया अरु कामिनी परदेसी रे,
अंत न अपणी होइ मीत परदेसी रे ।
संग न काहू कइ चलइ परदेसी रे,आप विमासी जोइ मी० ॥१
तास भरोसउ क्या करइ प० ने विछुरइ उखार[1] मी० ।
अइसउ साजण ढूंढिलइ प० जे पहुंचावइ पार मी० ॥२॥
आगइ सेज न पाथरी प० ले किछु सबल साथि मी० ।
पीछइ पछतावइ कीयइ प० आथि न आवइ हाथि मी० ॥३॥
घर बइठां दिन वहि गए प० केस भए सब सेत मी० ।
अजहु कछु विगरयउ नहीं प० चेत सकइ तउ चेत मी० ॥४॥
अपणउ अपणउ क्या करइ प० अंतर करहु विचार मी० ।
'राजसमुद्र' कहइ देखि लइ प० स्वारथ कउ संसार मी०।५।

१- जे हुवइ जावणहार

आत्म शिक्षा गीत

राग—सारग

जीवन मेरे यहु तेरउ कउण विसेस ।
साधु कहात करत धन आशा,
ता तइ हो फिरत विदेस ।।१।।ज०।।
पेम कइ फंद परत जण जण सु, ता विण धरत अंदेस ।
देखि पर रमणि नयनो नचावत, अरु पठवत सदेस ।।२जी०
कूप परत कर दीप लई जो, तिण सुं का उपदेस ।
'राजसमुद्र' भणि लहि परमारथ,सफल करउ इहु भेस ।।३जी०

सीखामण गीत

राग—केदारा गउडी.

घर छोडि परदेस भमइ, मेलिवा बहु परि आथ ।
परलोक जातां जीवनइ काई, नावइ रे ते पिण साथ ।।१।।
जीवन लाल सुणु इक मेरे सीख ।
जेहवी मीठी रे सरस रस ईख ।।जी०।।आंकणी।।
करि कूड परिजन पोषीयइ, ते सहु रंग पतंग ।
वोलाइ मरहट थी वलइ, कोइ नावइ रे ताहरइ संग ।।२जी०
गोरडी प्रमुख मिली रडइ, स्वारथ पुकारइ ताम ।
पुण एम मनहि न चीतवइ,
पियुडइ पामइ रे किण गति ठाम ।।३।।जी०।।
वड वड़ा नरवर इम चाल्या, तू करइ कवण आलोच ।
जिण वाय ऊडइ हाथिया, तिहा केही रे पूणी नी सोच ।।४जी०

इक चलइ आवइ एकलउ, भव रुलइ एक अनेक ।
आपणे कीधे करमडे, जीव पावइ रे सुख दुख एक ॥५जी०॥
ससार सहु ए कारिमउ, कारिमउ ए परिवार ।
राय कुमर कोरव सउ पडया,
ते गिणिया रे गान गधार ॥६॥जी०॥
इम जाणि जिन ध्रम कीजियइ, जिम पामियइ भव पार ।
'राजसमुद्र' सीखामण दीयइ,
जीव चेतउ हीयड़ा मझारि ॥७॥जी०॥

जकड़ी गीत

राग—वेलाउल.

मेरउ नाह निहेजउ, अब मइ जाण्यउ री सहेली ।
अ तरगति न कही काहू सु ,आप विदेस चले जउ ॥१॥मे०॥
विछुरत पीर न होत विरह की, निस दिन रहत सतेजउ ।
मग जोवत कवहु न पठायउ, काम दहू कउरेजउ ॥२मे०॥
अलख सरूपी कु सदेसउ, तुम भी हिलि मिलि भेजउ ।
'राज' वदति फिरि जाब न पाउ,
करिहु कठिन करेजउ ॥३॥मे०॥

आत्म-प्रबोध जकड़ी गीत

राग—सारंग मल्हार

हमारइ माई कत दिसावर कीनउ ।
आयइ जोर हुकम साई कइ,
पल भरि रहण न दीनउ ॥हम०॥१॥
जाब कहा दरगाह करइगउ, चलिहइ खाइ खजीनउ ।

छिरणु छिरणु घटत अवधि बूझी नही,
प्रेम सुधारस भीनउ ॥हमा०॥२॥
दुनिया देखि चिहुरवाजी सी, तउ भी प्रिउ न पतीनउ।
श्री 'जिनराज' वदन अउ चित मइ,
संबल साथ न लीनउ ॥हमा०॥३॥

आत्म प्रीतम गीत

यब तुम्ह ल्यावउ माई री तुम्ह ल्याउ,
मेरो नाह मनाइ कइ ल्याउ।
दउरि दउरि तुम्ह पाइ परत हु,
मई हठ छारथउ री प्रेम बणाइ ॥१॥
देखउ तउ उण की चतुराई, छार चलत हइ नेह लगाई।
कहा करू पीहर मइ बइठी, अइसइ री मो दिन जाइ ॥२॥
जउ नायउ तउ मौन पकरि करि, सगि चलू गी गीत गवाई।
'राजसूरि' भणि अलख सरूपी,
आवइ जावइ री आप सभाई ॥३॥

आत्मा-देह सम्बन्ध

राग—गउडी—केदारउ, विहागडो

विदेशी मेरे आइ रहे घर[1] माहि। -
ना जाणु कब गवण करइंगे[2],
मोहि भरोसउ नांहि ॥वि०॥१॥
मोपइ मोहन मंत्र नही किछु, राखु पकरि करि[3] बाहि।

१- गृह २- करेसी ३- गहि

दिन दोउ रहत वचन के अटके, अंत विराणे जांहि ॥वि० १॥
विणजारइ ज्युं छोरि चलइगे, जरती छारि[1] क भाहि ।
'राजसमुद्र' भणि रसिक शिरोमणि,
इक थानक[2] न खटांहि ॥वि०॥३॥

परमारथ पिछानो

राग—जइतसिरी

तूं भ्रम भूलउ रे आतम हित न करइ,
आपणपउ नायउ नजरइ ॥१॥
पइठउ श्वान काच कइ मंदिर,
मूरखि भुसिहि भुसि मरइ ॥२॥तू०॥
अतुलो बल केहरि जल पूरित,
कूया भीतरि कूद परइ ॥३॥तू०॥
दर्प्पण कइ परसरि आयइ थइ,
तुमचर कइसी भांति लरइ ॥४॥तू०॥
भीति फटिक की देखि दूरि थइ,
परिणत मइगल आइ अरइ ॥५॥तू०॥
परमारथ तउलु न पछानइ तउलु 'राज' न काज सरइ ॥६

'जागउ' प्रेरणा

राग—धन्याश्री

सोवन की वरीया नाही बे, जागउ आपणइ घर मांहि बे ॥१॥
हेरू न विछाणा साही बे, आयउ अव[3] धवलउ धाही बे ॥२॥

१- भाहि जगाहि, पिछाहि २- ठौर - ३धुरी

छोरउ धणकइ गल बांही बे,
योवन धन धन लूटयउ काही बे ॥३॥
वाहर चाढउ शुभ लाही, बे, न घिरइ धन जाही ताही बे ।४।
जागउ 'जिनराज' मसांही बे, आयउ सिरि सूर सव्वांही बे ॥५॥

जीव शिक्षा

राग—गूजरी

मेरउ जीव परभव थइ न डरइ ।
विथा करम बांधति बटूआ[1] जिम,
मुह मइ किछु न परइ ॥१॥मे०॥
दउरी दउरी अउरन की अउरति, देखण चाह धरइ ।
नवला नेह करि फिरि पचतावत,
जब लालन विछुरइ ॥२॥मे०॥
मइ क्या सीख दिउ नयनन कुं, जउ मन मउज करइ ।
वखत लिखि 'जिनराज'[2] तखत तइ,
टारत ही न टरइ ॥३॥मे०॥

परदेसी गीत

राग—धन्यासी

परदेसी मीत न करीयइ री,
करीयइ तउ विरह न डरीयइ री ॥१॥प०॥

१- बटुआ २- मुनिराज

उवे उठि चलइ भर दरीयइ री,
कइसइ करि वांह पकरीयइ री ॥२॥प०॥
जउ पइ अ चुर गहि लरीयइ री,
तउ चिहुं मइ लाजुं मरीयइ री ॥३॥प०॥
काहू कउ चीत न हरीयइ री,
तउ काहइ परवसि परीयइ री ॥४॥प०॥
'जिनराज' वचन चित धरीयइ री,
तउ प्रेम कइ पथ न खरीयइ री ॥५॥प०॥

आत्म शिक्षा

भ्रम भूलउ ता वहुतेरउ रे,
न कीयउ जां मेरउ मेरउ रे ॥भ्र०॥१॥
ज्ञानी गुरु ज्ञान बतावइ रे,मेरउ मेरउ मोहि भावइ रे ॥२भ्र०
करि प्राणी दूध नवरेउ रे, मेरउ होइ हइ क्यु तेरउ रे ॥भ्र०३
मेरउ मेरउ जउ कहिहु रे,हेलइ भवसायर तरिहु रे॥भ्र०४
मेरउ छइ धरम सखाई रे,सो करि 'जिनराज' सदाई रे ॥भ्र०५

परमार्थ-साधन जकड़ी गीत

राग—गोड़ी

रे जीउ आपणपउ अव सोच ।
क्या खायउ अरु क्या जु कमायउ,
करि किछु इहु आलोच ॥१॥मे०॥
योवन मद मातइ तइ कीने, कुण कुण करम असोच ।
कपटी सुकृत करण की वरीया, आण्यउ मन संकोच ॥मे०२॥

वारउ विषय वरग परि दउरत, मन बलवत वलोच ।
परमारथ 'जिनराज' पिछाण्यउ[1],
क्या साध्यउ करि लोच ॥मे०॥३॥

किणहू पीर न जाणी

पिउ कइ गवणि खरी अकुलाणी ।
मिलण सहल पुनि मिलि करि विछुरण,
अयन जहर नीसाणी ॥१॥
सुधि बुधि सकल गई प्यारी की, धरणि ढरत मुरझाणी ।
सबही सइ चउ लइत छूट्टइ थइ, अइसी भईय विराणी ॥२॥
अउरहि सांग वणाइ विदा दी, जल बल छारि कहाणी ।
श्री 'जिनराज' वदत विरहणि की,
किणहू पीर न जाणी ॥३॥पि०॥

पिउ-पाहुणो

राग—धन्यासी (वेलाउल)

जब जाण्यउ पीउ पाहुणउ, तब तइसइ रहीयइ ।
विण चित्त सु चित लायकइ, कब लग दुख सहीयइ ॥१॥
समझायउ समझइ नही, कहा फइटउ गहीयउ ।
आपणउ राख्यउ ना रहइ, हल देवल,[2] कहीयइ ॥२॥ज०॥
प्रेम वणाइ पतग सउ, उवा कइ संग न वहीयइ[3]।
नयन नीर डारउ कहा, रोयां 'राज' ना लहीयइ ॥३॥ज०॥

१- न जाण्यउ २- दे वल ३- चाहियइ

आत्म प्रबोध तेरा कौन ?

राग – केदारउ

जीउ रे चाल्यउ जात जहान ।
घोख मारग परयो निवहइ, बाल विरध युवान ॥१॥
कउण परि भंडार भरि हइ,अंत वासउ रान ।
छूटि इक अपणी कमाई, संग न आवइ आन ॥२॥
ग्रन्थ पढि पढि जनम वउरयउ, मिटयउ तउ न अज्ञान ।
तू न का कउ न 'कउन तेरउ', समझि 'जिनराजान' ॥३॥

स्पर्धा

कहा कोउ होर करउ काहू की ।
पीतर कनक होवत कबहू, देख्यउ निसि दिन फूंकी ॥१॥
केकेइ दसरथ कइ आगइ, वहुत भाति करि कूकी ।
राजा 'राम' भयउ उन आपणइ,
कुल की कार न मूकी ॥२॥क०॥
न टरत वखत लिखत जु छठीकउ, याही मइ सब छूकी ।
इण वचने 'जिनराज' पलक मइ, सारी खलक रजू की ॥३क

जकड़ी गीत देह चेतन-वृत्ति

राग—जइतसिरी, धन्याश्री मिश्र

सालण मोरा हो, जीवन मोरा हो अब कित मौन गही,
मइ तेरइ पग की पनही ॥१॥
कोडि विलास किए तइ हिल मिलि,
क्या चित तइ उतरी अबही ॥२॥ला०॥

जउ तुम्ह अउर ठउर चित दीनउ,

तउ मोकु तजि करि गुनही ॥३॥ला०॥

छारि चलत हमरे विललाते,

किणहू अतरि गति न लही ॥४॥ला०॥

श्री 'जिनराज' वदत मुकुलीणी,

सग चली पीहर न रही ॥५॥ला०॥

पंचरंग कांचुरी देह, आत्मा संयोग, पंच तत्व की देह

राग—सारग

पंचरंग काचुरी रे बदरग तीजइ धोइ।

बहुत जतन करि राखीयइ, अंत पुराणी होइ ॥पं०॥१॥

सीवणहारउ डोकरउ रे, पहिरण हार युवान।

चउथउ धोब खमइ नही हो,

मत कोउ करउ रे गुमान ॥पं०॥२॥

कारी का लागइ नही रे, खांचि न पहिरी जाइ।

बुगचइ बाधी ना रहइ रे इण कउ एह सभाइ ॥प०॥४॥

जब लगि इहु सयोग हइ हो, तब लगि हरि गुण गाइ।

लघु दामी सद्गुरु कहइ हो, वेर वेर समझाइ ॥प०॥४॥

जाति-स्वभाव अज्ञानी शिक्षा

कहा अग्यानी जीउ कु गुरु ज्ञान वतावइ।

कबहुं विष विषधर तजइ, कहा दूध पिलावइ ॥क०॥१॥

ऊषर ईख न नीपजइ, कोऊ बोवन जावइ।

रासभ छार न छारि हइ, कहा गग न्हवावइ ॥२॥क०॥

कालो ऊन कुमाणसा, रंग दूजउ नावइ।

श्री 'जिनराज' कोऊ कहा, काकउ सहज मिटावइ ॥३॥क०॥

परमार्थ अक्षर

राग – धन्यासी

तुम्ह पइ हइ ग्यानी कउ दावउ ।
पढि पढि ग्रन्थ कहा तत पायउ, सो मोकुं समझावउ॥तु०२॥
अच्छर बहुत सुण्या होइ झगरउ, सो जन मोइ सुणावउ ।
एक अच्छर मइ हइ परमारथ, अपढथउ सोइ पढावउ ॥तु०२
साथ रहत हइ नाथ निरजण, करि अंजण दिखलावउ ।
श्री 'जिनराज' तिहारउ चेरउ, आपो आप मिलावउ ॥तु०३

जकड़ी गीत, वहां की खवर

राग – सामेरी

मेरे मोहन अव कुण पुरी वसाई ।
निसि दिन मग जोवत सु सनेही,
पतिआं क्यु न पठाई ॥१॥म०॥
विछुरण की वरीया चितवत हो, आवत नयण भराई ।
हइ कोऊ अइसइ हितू हमारउ, जो ल्यावइ बहुराई ॥२॥मे०
किण ही खवर न दइ उहा की, अब हइ कउण सखाई ।
श्री 'जिनराज' वदत इक अपणी, आवत साथ कमाई ॥३मे०

परदेशी प्रीति

राग—आसा

कबहुं न करि री माई मीत विदेसी ।
जउ पइ कोरि जतन करि राखुं, तउ भी अंत चलेसी ॥१॥
भमत भमत आयउ अव या घरि, दिन दस वीस रहेसी ।

या मइ हुकम भयउ साहिब कउ, तउ पलभर रहण न देसी ।२।
प्राणनाथ विछुरण की वेदन, निसि दिन कउण सहेसी ।
श्री 'जिनराज' नवल नवरंगो, बहुरि न खबरि गहेसी ।।३।।

पश्चाताप

राग—नटनारायण

आली प्रीउ की पतया हम न वची ।
कागद पर आखर हइ मसि के,
नीर झरत दोउ दृग हमची ।।आ०।।१।।
फेरि जबाब न कोऊ लिखाउ, पाछी दे घालउ खरची ।
ऊपरि अउधि जाण लागे दिन,
मग जोवत जोवत विरची ।।आ०।।२।।
होवत प्राण तई निकसन कुं, अब लगि क्यु ही क्यु हि वची ।
'राज' वदत विरहणि विरहातुर,
प्रीतम मिलिवा कु ललची ।।आ०।।१।।

सांइ नाम संभारो 'भव-भ्रमण'

राग—नट

आली मत आपउ परवसि पारइ ।
का कउ प्रिउ अर का की कामिणि,
हइ सब स्वारथ कइ सारइ ।।१।।आ०।।
पीउ पीउ करत कहा पीउ पईयइ, काहइ कु धीरज हारइ ।
टरत न वखत लिखत इक रचक,
झुरि झुरि दृग जल जण डारइ ।।२आ०।।

भव मइ भमत किते पीउ कीने,सो पीउ जो दुरगति टारइ ।
'राज' चतुर वनिता सांइ कउ,
नाम अहोनिसि संभारइ ॥३॥आ०॥

आत्म प्रबोध

हिलि मिलि साहिब कउ जस वाचउ ।
हइ कछु पइ मज हथ इजाजित,
जाणि बूझि जिन राचउ ॥हि०॥१॥
देखउ आइ वूढापइ दोनउ, सिरि परि सेत सराचउ ।
अब इत उत भटकत मन मरकट ,
बहुत करत हइ काचउ ॥हि०॥२॥
आखरि आइ लगइ गउ इक दिन, जम कउ जोर तमाचउ ।
उण वरीयां तुम्ह याद करउ के,
'राज' रहत सोउ साचउ ॥हि०॥३॥

झूठी दिलासा

वउरे मास वरस हुं वउरे, मग जोवत दिन रइणि विहाई ।
विरहणि कब लगि धीरज धरिहइ,
पीउ की खबर न कोइ च्यइ आई ॥१॥व०॥
खरची की तउ बात सहल हइ,कागद तभी लिखि कइ न पठाई ।
झूठइ ही मन नइकु दिलासा, कबहू काहू सुं न कहाई ॥२व०
ठउरि ठउरि अइसी ही करिहइ,दिन दस वीस रही उठि जाइ॥
श्री 'जिनराज' नवल नागर सुं,
आली मेरउ किछु न वसाइ ॥३॥व०॥

आत्म प्रबोध, सुख-दुख

राग—कान्हरउ

रे जीउ काहइ कुं पचतावइ।
हइ किछु घाट कमाई तेरी, तउ अइसे फल पावइ ॥रे०॥१॥
छारि गुमान कही काहू कइ, आगइ दांत दिखावइ ।
वखत लिखित आवत हइ सुख दुख, रहि नइ अपणइ दावइ।२रे०
बोवइ पेड आक कइ आगणि, आंब कहां सुं खावइ।
परम पुरुष संपद अरु आपद, 'राज' रहत सम भावइ ॥रे० ३

मन शिक्षा, माया जाल, घड़ी में घड़ियाल

राग—केदारउ

मन रे तूं छारि माया जाल ।
भमर उडि बग आइ बइठे, जरा के रखवाल ॥१॥म०॥
बाल बांधि सिला सिर परि वचइ कित इकु काल ।
चेत चेतन वाजि जइहइ, घरी मइ घरिआल ॥२॥म०॥
मात तातरु भ्रात भामणि, लाख के लेवाल ।
'राज' संग न चलइ वह भी, सामि नाम संभाल ॥३॥म०॥

अस्थिर जग, श्वास का विश्वास ?

राग—केदारउ

कइसउ सास कउ वेसास।
कुस अणी परि ओस कण की, होत कितक रहास ॥क०॥१॥
जाजरी सी घरी वाकइ, वीचि छिद्र पंचास।
तिहा जीवन राखिवइ की, कउण करिहइ आस ॥क०॥२॥
रयण दिन ऊसास कइ मिसि, करत गवरण अभ्यास ।

जग अथिर 'जिनराज' तामइ, लेहु थिर जस वास ।।क०।।३।।

कोई जामिन नहीं, दस दिन पहिले पीछे

राग–गौडी

रे जीव काहइ करत गुमान ।

कुण कुण काल कवल से करिहइ, तूं मूरिख किसि गान ।।रे०१

इकु पल भर राखण कु विचमइ, होत न कोउ जमान ।

को दिन दस आगइ कोउ पीछइ, अंत सबइ समसान ।।रे०२।।

देखत पलक[1] नीर नव नेजा, जाइ चढत असमान ।

श्री 'जिनराज' सखाइ मिलिहइ, होत सबइ आसान ।।रे०।।३।।

कामिन गीतम् मदन का तीर

राग – धन्यासी

अब हइ मदन नृपति कउ जोरो ।

आपणे आयुध सजि करि रहीयउ,

जणि कोउ करउ नीहोरउ ।।१।।

जाइ मिले सो भी पचताणे, तउ काहे पग छोरउ ।

जो पग मंडि रहित तिण आगइ, भागउ जाइ भगोरउ ।।२अ०

झूठउ साचउ देखि दिवाजउ, भूल रहत मन भोरउ ।

इण आगइ 'जिनराज' अखंडित, राख्यउ अपणउ तोरउ ।।२अ०

भ्रम-भ्रमण, भ्रम में भूला

राग–तोडी

अपनउ रूप न आप लहइ री ।

मोहि मिलिन कलि न सकइ केवल,

एक अनेक सभाउ वहइ री ।।१।।

१- खरक

फइल रह्यउ घट मइ न छुहइ घट,
को काहू कउ गुन न गहइ री
हु अब भारो हु अब दुबलउ,भ्रम भूलउ सब कोइ कहइ री ॥२
ज्ञानी ज्ञान दोइ करि जानइ, क्यू चेतन लक्षन निवहइ री।
परम भाव 'जिनराज' पिछानइ,
तउ काहू की हाजति न रहइ री ॥३॥

धर्म मर्म परम पुरुष कुण पावत ?

राग तोडी.

कउरग धरम कउ मरम लहइ री ।
मीन कमठ गगाजल झीलत,
खर नितु अ ग बभूति वहइ री ॥१॥कउ०॥
मृग बनवास वसत निसि वासर,भूख तृषा तप सीत सहइ री ।
मौन लीयइ बग इत उत डोलत,
राम नाम मुख कीर कहइ री ॥२॥कउ०॥
मु ड मु डावत सबही गर्डारिया,पवन अभ्यासी भुयग रहइ री ।
'राजसमुद्र' भणि भाव भगति विरगु,
परम पुरुष कुण पावत हइ री ॥३॥कउ०॥

काल का हेरा तेरा क्यों कर होगा ? कितने ही आगये ?

ममता निवारण

राग–कनडउ

रे मन मूढ म कहि गृह मेरउ ।
आए किते किते आवइगे, क्यु करि हवइ गउ तेरउ ॥रे०॥१
हइ तेरइ पीछइ छाया छल, काल पिशुन कउ हेरउ ।

आगेवाण जरा आए थइ, चिहुं दिसि होइ गउ घेरउ ।।रे०।।२।।
उण वरीयां निकस चेतन तूं सोचइ गउ वहु तेरउ ।
साचउ इक 'जिनराज' पिछान्यउ,
काल[1] पिशुन कउ हेरउ रे ।।३।।

संबल साथ में ले नहीं सका, परदेसी किसके वश ?

जकड़ी गीत

उण मीत परदेसी विना मोहि, अउर किछु न सुहाइ ।
विरहन की वेदना भई, सा मइ कहीय न जाउ ।।१।।
मेरी बहिनी प्रीतम लेहु मनाइ, प्रीति की रीति बणाइ ।
बांह पकरि समझाइ ।।आंकणी।।
चिहुं साखि मात पिता दई, ऊण की न पूछी जाति ।
दिन आठ दस घर मइ रहयउ, चलत न वूझी वात ।।२।।मे०।।
प्रेम विलूधउ प्राणियउ, कोऊ नेह न धरइ जोइ ।
पीछइ पछतावइ परइ, विछुरण अइसउ होइ ।।३।।मे०।।
मोहनी मोपइ किछु नहीं, लालन रहइ लपटाइ ।
अइसउ सुगुरु को नां मिल्यउ, जो ल्यावइ वहुराइ ।।४।।मे०।।
वे गुनही अवला तजी, प्रीउ चले काहि रिसाइ ।
अपराध जउ को मइ कीयउ, दीजइ सोउ वताइ ।।५।।मे०।।
इक पल संगन छोरतउ, अव बीचि दीए पहार ।
जा विणु घड़ी न जावती, ता विणु जाइ जमार ।।६।।मे०।।
वेखता मुझ इतनी परी, संबल न लीधउ साथ ।
मनरंग 'राजसमुद्र' कहइ, परदेसी किण हाथ ।।७।।मे०।।

---

१ वाट बीचिकउ डेरउ

आतम काया गीत

राग—धन्यासिरी.

सुणि बहिनी प्रिउडउ परदेसी, आज कि कालि चलेसी रे।
काहि कुण माहरी सार करेसी,
छिन छिन विरह दहेसी रे ॥सु०॥१॥
प्रेम विलूधउ अरु मद मातउ, काल न जाण्यउ जातउ रे।
अच चित आंणउ आय उतालउ,
रहि न सकइ रस रातउ रे ॥२॥सु०॥
वाट विषम कोउ संगि न आवइ, प्रीउ एकेलउ जावइ रे।
विणु स्वारथ कहि कुण पहुचावइ,
आप कीए फल पावइ रे ॥३॥सु०॥
भमिसइ पुरि पुरि मांहि एकेलउ, जिम गलीयां मइ गहलउ रे
ना जाणु कित जाइ रहेलउ,
बिछुरयां मिलण दुहेलउ रे ॥४॥सु॥
पोतइ सबल साथि न लीधउ, बीजइ किणही न दीधउ रे।
मूल गमाइ चल्यउ अब सीधउ,
एको काम न कीधउ रे ॥सु०॥५॥
प्रीतम विण हूं भइ रे विराणी, किण ही मनि न सुहाणी रे।
पीहर को मइं प्रीति पिछाणी,
जल बेल छारि कहाणी रे ॥सु०॥६॥
बहिरागी अंतर वइरागी, प्रीति सुणति नवि जागी रे।
'राजसमुद्र' भणि सो बड़भागी, नारी विणु सोभागी रे ॥सु०७॥

देह गर्व परिहार, आखिर छार है

राग—धन्यासी.

इया देही कउ गरव न कीजइ ।
देखत खलक पलक मइ पलटै, इया परि चतुर न धीजइ ॥१॥
जोवन वसि दिन दसि झूठी सी, हड छबि छिन छिन छीजइ ।
इया मइ शुचि लव लेश न पइयइ, ज्ञान दृष्टि जव दीजइ ।२।
दाही किण हु जलाई किण हु, आखर छारि चलीजइ ।
हुइ आवइ 'जिनराज' भलाई, तउ करि जउलूं जीजइ ॥३॥

आत्म प्रबोध, कौन तेरा?

राग – केदारा

तूं तउ धरउ आज अयान ।
ग्रन्थ पढि पढि जन्नम वउरयउ, मिटयउ तउ न अज्ञान ॥१॥
छूटि इक अपणी कमाई, सग न चलइ आन ।
तउ कहा भंडार भरहइ, अयन कुगति निदान ॥२॥
वांट लइत न कोउ वेदन, मिल्यो कूं यन जहान ।
कउन काकउ कउन तेरउ, समझि 'जिनराजान' ॥३॥

शील बत्तीसी

सील रतन जतने करि राखउ, वरजउ विषय विकार जी ।
सीलवंत अविचल पद पामइ, विषई रुलइ संसार जी ॥१॥
सीलवंत जगि मइ सलहीजइ, सीधइ वंछित कोडि जी ।
सुर नर किन्नर असुर विद्यावर,
प्रणमइ वेकर जोड़ि जी ॥२॥सी०॥
कडुवा विषय विषम विष सरिखा, जे सेवइ नर नारि जी ।

ते भव भव दुरगति दुख पामइ,

न लहइ सोभ लिगार जी ॥३॥सी०॥

एक वार नर नारी सगइ, जीव मरइ नव लाख जी।

एकइ भागइ पांचइ भागा, द्यइ सज्जंभव साख जी ॥४सी०॥

करम वसइ रमणी देखी नइ, जे चूकइ गुणवंत जी।

तनु मन वचन वली वसि आणइ,

ते पिण साधु महंत जी ॥५॥सी०॥

आठ रमणि रूपइ रभा सम, कनक निनाणु कोड़ि जी।

छोडी जंबू चरण करण धर,

कवण करइ तसु होडि जी ॥६॥सी०॥

कुलवालूयउ तप जप करतउ, रहतउ ते वनवास जी।

कोणिक गणिका संग विलूवउ, पामइ नरकावास जी ॥७सी०॥

चेलणा वचन सभाली निसभर, श्रेणिक पड़यउ संदेह जी।

सतिय सिरोमणि वीर वखाणी,

सिव सुख पामइ तेह जी ॥८॥सी०॥

सुकमालिका नदी माहि नांख्यउ, भूपति निज भरतार जी।

कुबज पुरष साथइ हतीयारी, दुखणी रुलइ संसार जी ॥९सी०

श्री रहिनेमि नेमि जिन बंधव, राजमती तसु देखि जी।

चूकउ पिण व्रत भग न कीधउ, राखी राजुल रेख जी ॥१०सी०

अभया राणी दूपण दाख्यउ, क्षेत्रइ न खल्यउ जेह जी।

सूली फीटी थयउ सिहासण सेठ सुदरसण तेह जी ॥११सी०॥

लकापति विद्या अतुली वल सुरपत्ति पदवी सार जी।

तसु मस्तक रडवड़िया धरती,

विरुया विषय विकार जी ॥१२॥सी०॥

चालणीइ जल काढि सुभद्रा चंपा बार उघाड़ि जी ।
सील प्रभावे महिमा वाधी,
नाख्यउ आल उपाडि जी ॥१३॥सी०॥
हसी वायस जोड़ि दिखावइ, जाणी इण मुझ वात जी ।
मयण वसइ चुलणी मातायइ,
चिंतीयओ सुत घात जी ॥१४॥सी०॥
भरतहरी काउसग्ग वन माहे, जपइ पिंगला नाम जी ।
डीवी मिसि गोरख समझावइ,
जोवउ विषय विराम जी ॥१५॥सी०॥
कलि कारग सहु कोई जाणइ, विरति नही पचखाण जी ।
तिण भवि शिव गामी ते नारद,
जोवउ सील प्रमाण जी ॥सी०॥१६॥
जिनरक्षित सायर विचि वहतउ, रयणा रूपइ भूल जी ।
खंडो खड करी वलि दीधु, पडतां माडि त्रिशूल जी ॥१७सी०
जनक सुता वन मांहि इकेली, मूकावइ श्री राम जी ।
पावक गंगाजल सम कीधउ,
राख्यउ अविचल नाम जी ॥सी०॥१८॥
सील सनाह मंत्रीसर रूपइ, भूली रूपणि नारि जी ।
चक्षु कुसील पणइ दुख लाधा,नरय निगोद मझारि जी ॥१९सी
नल राजा देखी दमयंती पूरव भोग संभारि जी ।
जिम मन डोल्यउ तिम वलि वाली,
पामइ सुख अपार जी ॥सी०॥२०॥
पूरव परिचित वेश्या नइ घरि, थूलभद्र रह्या चउमासि जी ।

ब्रह्मचारि चूडामणि मुनिवर,
न पडयउ नारि पासि जी ।।सी०।।२१।।
वलकलचीरि वसइ वन माहे, फल फूले आहार जी ।
ते पिण गणिका केड़इ धावइ,
आवइ नयरि मझारि जी ।।२२।।सी०।।
सीलवती भूपति मंत्रीसर, नगर सेठ कोटवाल जी ।
च्यारे पेटी माहे राख्या, पाल्यउ सील रसाल जी ।।२३सी०।।
बार हजार वरस छट्ठ कीधा, वेयावच्च प्रधान जी ।
नदिषेण संजम फल हारयउ,कीधउ नारि निदान जी।।२४सी
भिडतउ भीम असुर सु भूखउ, आवइ माता पास जी ।
सील प्रभावइ कुता वचने, कादम अमृत ग्रास जी।।२५सी०
केस फरसि नीयाणउ कीधउ, पाली व्रत चिर काल जी ।
ते सभूति बारमउ चक्रवर्ति,जाइ सत्तम पाताल जी ।।२६सी०
वेश्या संग तजी व्रत आदरि, नाचत चतुर सुजाण जी ।
ते आषाढभूति सवेगी, पामइ केवल ज्ञान जी ।।२७।।सी०।।
अरध मडित निज नारी छडी, साधु भगति परिणाम जी ।
ते भवदेव नागिला वचने,आवइ ठामो ठाम जी ।।२८सी०।।
पटराणी वचने नवि खलियउ, राजा नयन निहाल जी ।
ततखिण वकचूल नइ आपइ,
राज काज सभालि जी ।।२९।।सी०।।
आर्द्रकुमार रहयउ गृहवासइ, छंडी व्रत नउ भार जी ।
जीरण तृण जिम तेहिज परिहरि,
लाधउ भवनउ पार जी ।।३०।।सी०।।

इम जाणी नइ साधु साधवी, श्रावक श्राविका जेह जी ।
निर्मल व्रत पालइ मन सूधइ,
सिव सुख पामइ तेह जी ॥३१॥सी०॥
युगप्रधान जिनचंद्र यतीसर, तासु पाट गणधार जी ।
'जिनसिंहसूरि' सीस इम पभणइ,
'राजसमुद्र' सुविचार जी ॥३२॥सी०॥

कर्म बत्तीसी

करम तणी गति अलख अगोचर, कहइ कुण जाणे सार जी ।
नाण वशे योगीसर जाणे, के जाणइ करतार जी ॥क०॥१॥
पूरव कर्म लिखत जे सुख दुख, जीव लहइ निरधार जी ।
उद्यम कोडि करइजे तो पिण,
न फलइ अधिक लगार जी ॥क०॥२॥
एक जनम लगि फिरइ कुआरा, एके रे दोय नारि जी ।
एक उदरभर जन्मइ न्होइ,एक सहस आधार जी ॥क०॥३॥
एक रूप रंभा सम दीसइ, दोसे एक कुरूप जी ।
एक सहू ना दास कहीये, एक सहू ना भूप जी॥क०॥४॥
सायर लघवि गयो लंकाये, पवनपूत हनुमान जी ।
सीता खबर करी ने आव्यो, राम कछोटी दान जी ॥क०॥५॥
वेश्या घर अवतारे आवी, तनु दुर्गंध अपार जी ।
दुर्गंधा श्रेणिक पटराणी, थाइ करम प्रकार जी ॥क०॥६॥
चौसठ सुरपति सेवा सारइ, महावीर भगवंत जी ।
नीच कुले आवी अवतरीओ, करम सबल वलवंत जी ॥क०७
रसकुंपी भरिवा नइ काजे, पइठउ जोगी ताम जी ।

करम वसि आकाशे वाणी,
भरि राका नइ नामि जी ॥क०॥८॥
कीधो द्वारिका दाह दीपायन, बइठउ कृष्ण नरेश जी ।
अर्ध भरत सामी विचितइं, आइं पांडव परदेश जी ॥क०६॥
सीता सती शिरोमणि कहीइ, जाणइ सहु संसार जी ।
तेहनइ राम तजी वनवासि, मूकि वचन सभारि जी ॥क१०
नीर वहइ चडाल तणइ घरि, रही मसाणि नरिंद जी ।
जिझ सुत खापण निजगडी लीधउ,
ते राजा हरिचद जी ॥क०॥११॥
जात मात्र आकाश उपाडी, सुर नाखे वन माहि जी ।
कुमर प्रजुन्न पानडा माहि, राखिउ करमइ साहि जी ॥क०१२
साधु वचन साभलि सागरदत्त, दामन्नइ इकवार जी ।
मारण माडिउ पणि नवि मुउ,
हुयउ ग्रहपति सार जी ॥क०॥१३॥
विविध रतन मणि माणिक देवी, बांभण एक अनाथ जी ।
रतनागर नी सेवा कीधी, दादुर लागु हाथि जी ॥क०॥१४॥
सोमदेव निज भगिनी परणी, पिण छडी ततकाल जी ।
निज माता गणिका सु लुबधउ,
करम तणउ जजालि जी ॥क०॥१५॥
यात्रा करण बारह व्रत धारक, श्रावक वीरउ नामजी ।
मारग वाघणि सीगें वीध्यौ, करम तणै परिणाम जी ॥क०१६
अल्प काल व्रत पाली पामइ, पुंडरीक भव पार जी ।
व्रत पाली चिरकाले जाइ, कंडरीक नगर मझारि जी ॥क०१७

एकणि वार गमाया गयवर, चउद सइ चिउंआल जी ।
कर्म वसें ते भिक्षा मागइ,जूओ मुंज भूपाल जी ॥क०॥१८॥
मुनि वचने वाँभण रधावी, माजरि मिश्रित खीर जी ।
सेठि तनय तेहिज जीमीनइ, राजा थायै सुधीर जी ॥क०१६
नापित घरि दासी नो बेटउ, जाति हीन कुल मंद जी ।
ते पाडलि नयर नो सामी, नवमुं नंद नरिंद जी ॥२०॥क०॥
सुर पचवीस सहस निसि वासर, रहिता जेहने पास जी ।
ते सभूम लवण सायर विचि,
वहतौ गयौ निरास जी ॥क०॥२१॥
दोभागी पूरब भव हुंतौ, नदिषेण इणे नाम जी ।
स्त्री वल्लभ वसुदेव कहांणउ,करम तणा ए काम जी ॥२२क
रिषभदेव त्रिभुवन नो नायक, लीधी निरुपम दीख जी ।
वरस लगइ आहार न पाम्या,
करम दीयइ इम सीख जी ॥क०॥२३॥
प्रसन्नचंद रिषि काउसग मांहि, नरक तणा दल मेलि जी ।
ततखिण निर्मल केवल पामी,करम करइ इम केलि जी ॥२४क
मृगापुत्र पल पिंड उपल सम पूरब करम विशेष जी ।
कडुआ कर्म विपाक कहीजइ,चितै गौतम देख जी ॥क०२५॥
चारुदत्त योगी उपदेसै, पइठउ विवर मझारि जी ।
तउ पिण धन लवलेस न लीधउ,कीधा कोडि प्रकार जी॥२६क
हरिहर ब्रह्मादिक योगीसर राजा ने वलि रांक जी ।
विविध प्रकारे कर्म विटंबी, न करइ केहनी सांक जी ॥२७क
करम लिखत सुख सपति लहीइ, अधिक न कीजइ सोस जी ।

आप कमाया फल पामीजइ,अवर न दीजइ दोस जी ।।२८क
इणि परि करम विपाक विचारी, छेदउ करम कलेस जी ।
जिम अविचल सुख संपद पामइ, प्रणमइ पाय नरेश जी ।।२९क
नव षट सोल(१६६९) प्रमाणे वरसे,भादव वदि गुरुवार जी ।
'करम बत्तीसी' निसि भरि कीधी,धरि सवेग अपार जी ।।३०क
'खरतर' गच्छ नायक जयवंता, युगप्रधान जिनचद जी ।
तसु पाटे दिन दिन दीपता,श्री 'जिनसिंहसूरिंद' जी ।।३१क
तास सीस पभणइ मनरगे, 'राजसमुद्र' सुविचार जी ।
भणतां गुणतां वलि साभलतां,थाये हर्ष अपार जी ।।३२क०।।

शालिभद्र धन्ना चौपई

सासरण नायक समरीयें, वर्द्धमान जिणचंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमाणंद ॥१॥
सहु को जिनवर सारिखो, पणि तीरथ घणीय विशेषि ।
परणीजे ते गाइये, लोकनीत संपेखि ॥२॥
दान शील तप भावना, शिवपुर मारग च्यार ।
सरिखा छे तो पण इहाँ, दान तणो अधिकार ॥३॥
'सालिभद्र' सुख सपदा, पामै दान पसाइ ।
तास चरित वखाणतां, पातिग दूर पुलाइ ॥४॥
तास प्रसंगे जे थई, 'धन्ना' नी पणि वात ।
सावधान थई सांभलो, मत करज्यो व्याघात ॥५॥

ढाल १ चौपाई नी.

मगध देश श्रेणिक भूपाल, पते न्योाय करे चोसाल ।
भाव भेद सूघा सरदहे, जिणवर आण अखडित वहे ॥१॥
नित नवला करती खेलणा, मानीती राणी चेलणा ।
कोइ न लोपे तेहनी कार, मंत्रीसर छइ अभयकुमार ॥२॥
वारे पाड़े नगरी वसै, राजगृही अलका नै हसै ।
सुखिया लोक वसै सहुकोइ, तो पण पग मांडै छे जोइ ॥३॥
रसना गुण लेवा चलवलै, अवगुण वेला मूल न वलै ।
परगुण देखण नयण हजार, सयम दूषण देखण वार ॥४॥
परघन लेवा जे पाँगला, पर उपकारी जे आगला ।
कर उपर करवा नै हठी, न्यायै लाछ करै एकठी ॥५॥
सालानी जे दथे को गालि, तो हरखित हुवै अरथ निहालि ।
विढतां कहै अकरमी कोई, कहियै विर होस्यइ दिन सोइ ॥६॥

शालिभद्र चौपई का एक सचित्र पृष्ठ

शालिभद्र का पूर्वभव में मुनिदान

परधन लेवा जे पागला, पर उपगारी जे आगला ।
कर उपर करवा नैं हठी, न्यायैं लाछि करैं एकठी ॥५॥
सालानी जे द्यें को गालि, तो हरखित हुवे अरथ निहालि ।
विढता कहै अकरमी कोई, कहियं विर होस्यइ दिन सोह ॥६॥
माता खोज गयो जो कहै, तो आसीस रखौ सरदहै ।
रमता पिण जे पासा सार, अलिवि न आखें सारी मार ॥७॥
सूधौ विणज तिसी परि करैं, परदेसी धन धन उचरैं ।
सकज पूत पीता अनुसरैं, हिवकुण सीसे गोडा भरे ॥८॥
परब दिवस पोषध अनुसरैं, अवसर बारह व्रत पणि धरैं ।
परभव हुती जे थरहरैं, वारू लोक वसैं इण परैं ॥९॥
धना नाम नारि अनाथ, सगम बेटो लेई साथ ।
घर नी आथि अगाउ चली, सालि गाम थी ते ऊचली ॥१०॥
जाजगृह आवी नैं रहै, पर घर काम करी निरवहै ।
सुख दुख वात न पूछै कोइ, आथि पखैं किम आदर होइ ॥११॥
सगम बाहिर सारो दोस, वाछरुया चारैं निसदीस ।
चाराही आवं घर दीठ, पेट भराई थायैं नीठ ॥१२॥
सगम किण ही परब विशेषि, खीर जीमता बालक देखि ।
पायस भोजन मनसा थई, मागे माता पासैं जई ॥१३॥
घरनी परठ न छोरू लहै, दुख भर सजल नयन इम कहै ।
पूत न पहुचे कूकस भात, तो सी खीर खाडनी वात ॥१४॥
च्यार चतुर पाडोसण नार, आवी नैं पूछै इण वार ।
स्यूं दीसैं भामण दूमणी, माडी वात कही सुत तणी ॥१५॥
एकण दूध अमामो दीयो, घृत नो वीडो बीजी लीयो ।
तीजी आपै बूरा खाड, चौथी आपै सालि अखड ॥१६॥

॥ दूहा ॥

हिव नीपजता खीर नैं, वारन लागी काय ।
कारण सकल मिल्या पछै, कारिज सिद्ध ज थाय ॥१॥

वोलावी वालक भरणी, वैसारणी ससनेह ।
माता अति हरखित थई, खोर परीसै तेह ॥२॥
अति ऊन्ही जाणी करी, ठारै देई फूंक ।
थयो एक अचरिज तिसै, सुणज्यो आलस मूंक ॥३॥

ढाल-२ आद्या। मेघ मुनि कांइ डमडोलैरे, ए जाति

जामण कारिज ऊपनै जी, जाइ जिसै घर माहि ।
अतिथि एक आयो तिसै जी, आण्यो करमैं साहि ॥१॥
साधु जी भले पधारथा आज, मुझ सारी वांछित काज ॥सा०
मास खमण नै पारणै जी, जगम सुरतरु जेह ।
शिव मारग अवगाहतोजी, खीण देह गुण गेह ॥-॥ सा०॥
वालक मन हरिखित थयौ जी, दीठो मुनिवर तेह ।
रोम रोम तनु ऊलस्यो जी, जाग्यो धरम सनेह ॥३॥ सा०॥
घर आगण सुरतरु फल्यौ जी, आज भले सुविहाण ।
आज भली जागी दसा जी, प्रगट्यौ आज निहाण ॥४॥ सा०॥
जे भव भमता दोहिला जी, चित्त वित्त नै पात्र ।
कुण तीने लही एकठा जी, ढील करै खिण मात्र ॥५॥ सा०॥
जे सामग्री दोहिली जी, ते मैं लाधी आज ।
जो हु हिव सफली करु जी, तो पामु सिवराज ॥६॥ सा०॥
कीधी का न विचारणा जी, भाव भगति भरपूर ।
पायस थाल उपाडि नइ जो, आयो साव हजूर ॥ ॥सा०॥
मांडै पडघो जाणि नै जी, निरदूषण आहार ।
पडलाभै भावै चढथो जी, खीर अखडित धार ॥८॥ सा०॥
पात्र दान फल ए लहो जी, अतराय मत होय ।
नाकारो न कह्यो तिणै जी, लालच न हूंतो कोय ॥९॥ सा०॥
पुण्य जोग आवो मिल्यो जी, उत्तम पात्र विशेषि ।
दीधो दान तिसी परै जी, थाल रह्यो अवशेष ॥१०॥ सा०॥

सात आठ पग साधु नै जी, पहुचावो सिरनामि ।
करी प्रणाम पाछो वल्यो जी, बैठो ठामो ठाम ॥११॥सा०॥
बोध सुलभ जनमतरै जी, लहिस्यै भोग प्रधान ।
इम सुपात्र आवी मिल्यो जी, दीजै अढलक दान ॥१२॥सा०॥
माता पिण आवी तिसै जी, खाली दीठौ थाल ।
खीर परीसै थाकती जी, त्रिपतो थयो न बाल ॥१३॥सा०॥

॥ दूहा ॥

सगम वात न का कही, पाछलि बीती जेह ।
देई दान प्रकासस्यें, फल निगमस्यै तेह ॥१॥
देइ दान पमावस्य, वरय न पडस्यै ताह ।
फल तो तेहिज ले रह्या, जीभ न वूही जाह ॥२॥
वछ नै देखी जीमतो, जामण करै विचार ।
इतली भूख सदा खमै, धिग माहरो जमवार ॥३॥
निस भर थई विसूचिका, काल मास करी काल ।
साधु ध्यान धरतो थको, पामै भोग रसाल ॥४॥

ढाल-३ राग.गुंड, इक दिन दासी दोड़ती, ए जति

लाखे गाने लाखेसरी, सहू जेहनै हेठ रे ।
लाछिनो जे अछै धणी, तिहाँ गोभद्र सेठरे ॥१॥
दान उलट धरै दीजीयै, फलयतो सुविशेष रे ।
संगमै भव तणै अतरै, लाधा भोग सपेख रे ॥२॥दा०॥
नारि भद्रा उरु कदरा, मृगराज अणुहार रे ।
काल करी बाल ते अवतरयो, फल्यो दान सहकार रे ॥३॥दा०॥
रयणि सुपनन्तर सालिनउ, दीठउ खेत्र निप्पन्न रे ।
फल कहइ सेठ, हरखित हुयउ, हुस्यइ पुत्र रतन्न रे ॥४॥दा०॥
गर्भ नी करै प्रतिपालणा, लेई ग्रथ नी साख रे ।
धंनउ नो मुख जोइवा, धरै मन अभिलाष रे ॥५॥दा०॥

जीवदया प्रतिपालियें कीजीयें पर उपगार रे।
साहमी सुगुरु सतोषीये, दीजीयें दान अपार रे ॥६॥दा०॥
इम मन राज मोजा दिये, ते तो गर्भ प्रभाव रे।
तिल तणो तेल जे महमहै, तेतो कुसम सभाव रे ॥७॥दा०॥
सेठ गोभद्र भद्रा तणो, विलखो मुख देख रे।
जे मन दोहला ऊपजें, पूरवें ते सुविशेष रे ॥८॥द०॥
इक दिन आवि दासी कहै, फल्या वछित काज रे।
दाजीयें सेठ वधामणी, जायो पुत्र सिरताज रे ॥९॥दा०॥
दूरी कीयो दासी-पणो, जलस्यु सिर धोय रे।
अगना आभरण आपी नै, राखी चौगुणी सोय रे ॥१०॥दा०॥
घरि घरि रग वधामणा, थयो जय जय कार रे।
सालिभद्र नाम दीयो इसो, करिय सुपन विचार रे ॥११॥दा०॥
मात भद्रा हुलरावती, दीयें एम आसीस रे।
चिरजीवे तु नान्हडा, कोडाकोड वरीस रे ॥१२॥दा०॥

॥ दूहा ॥

तुझ इडा पीडा पडो, खारे समुद्रे जाय।
तुझ हुंती अलगी रहो, पूत अलाय वलाय ॥१३॥
हु वड जेम साखे-करी, वाल्हा वीस्तरी जेह रे।
पूत सकल परिवार नै, लीधा निरवह जेह रे ॥१४॥दा०॥
हु तुझ ऊपर वारणें, कीधी वार हजार रे।
साहिव जेम दिखावज्यो, एहनी वूरी वार रे ॥१५॥दा०॥

॥ दूहा ॥

हिव सुकलीणी सामठी, नारी बतीस नीहारि।
परणावी एकण समें, भोग समत्थ विचारि ॥१॥
हिव हुं सयम आदरुं, भव जल निधि वोहित्थ।
सकज सुत जे घर रहै, तासुं जनम अकथ ॥२॥

वीर पास व्रत आदरी, उद्यत करे विहार ।
व्रत लीधो तेहनो खरो, जे पाले निरतीचार ॥३॥
करि अणसण आराधना, त्रिविध खमावै पाप ।
वैमानिक सुर सुख लहै, सालिभद्र नो बाप ॥४॥

ढाल ४ राग–मल्हार, कुशल गुरु पूरो वंछित आज, ए जाति

जीहो जाण्यो अवधि प्रजूंजनै जीहो पूरव भव विरतत ।
जीहो सुत सनेह परवसि थयो जीहो सेठ जीव एकत ॥१॥
चतुर नर पोखो पात्र विशेषि ।
जीहो सुर सानिधिते फ़लडा, जीहो सिव सुख फलै सपेखि ॥२॥च ॥
जी हो निसिदिन सुरपासे रहै, जीहो पूरे मन नी आस ।
जीहो करै कपूरे कउगला, जीहो विलसै लील विलास ॥३॥च०॥
जीहो परियागति पहिली हुंती, आथि अनेक प्रकार ।
जीहो सुर सानिधि तेहनो थयो, लाख गुणो विस्तार ॥४॥च०॥
जीहो स्नान करी उठ जिसै, जीहो नाह रमणी बत्रीस ।
जीहो गयण थकी पेटी तिसै, हाजरि होई तेत्रीस ॥५॥च०॥
जीहो नव नव भूषण नीसरै, भामणी नै परि भोग ।
जीहो रतन जडित सिर सेहरो, सालि कुमर ने जोग ॥६॥च०॥
जीहो जे को न लहै खरचतो, जीहो धननी कोडा कोडि ।
जीहो ते माणिक ऊपरि जडया, झलकै होड़ा होड़ि ॥७॥च०॥
जीहो पहिरीजे पहिलै दिनै, जीहो आभरण अमूल ।
जीहो बीजै दिन ते ऊतरै, जिम कुमिलाणी फूल ॥८॥च०॥
जीहो ले कूत्रा मैं नांखीयै, जीहो ते आभरण असेस ।
जीहो वलती गध्र न को लियै, जीहो ऐ ऐ पुण्य विसेस ॥९॥च०॥
जीहो न हुउ न हुस्यै जेहनै, जी हो चक्रवर्ति आवास ।
जीहो ते निरमाइल सालि नै, जीहो होवै सोवन नी रासि ॥१०॥च०

जीहो अउले खाले वहै, जीहो कस्तूरी घनसार।
जीहो आठ पहुर लगि सामठा, जीहो नाटिक ना दौंकार ॥११॥च.
जीहो सालिकुमर सुख भोगवै, दोगटुक सुर जेम।
जीहो भामरिण स्यु भी भीनो रहै,जीहो दिन दिन दिन वधतै प्रेम।१२

॥ दूहा ॥

इण अवसर केइक भला, परदेसी मिल चार।
रतन कंवल वेचरण भरणी, फिरय नगर मभार ॥१॥
ताप सीत भेदै नही, अति सु दर सुकुमाल।
अग्नि भाल मे धोवता, मल छाडै ततकाल ॥२॥
जे पहिरस्यं सो जारणस्ये, अवर न जाणं भेव।
परदेसी ऊभा कहै, रतन कवल को लेव ॥३॥
छयल पूरष लेवा भरणी, फिरै वीच दलाल।
पिरण साटौ वाजै नही, कहै अमामों मोल ॥४॥
राजगृही नगरी भम्या, ऊंच नीच आवास।
कवल कोई न सग्रहै, ते सहु थया उदास ॥५॥

ढाल—५ सिन्धुनी जाति

इण पुर कंवल कोइ न लेसी, फिर चाल्या पाछा परदेसी।
साल महल पासै ते आवै, दासी मुखि भद्रा तेडावै ॥१॥
व्यापारी दीसौ छौ वीरा, तो किरण कारण थया अधीरा।
परदेसी आवै व्यापारै, लाभ पखै अरण वेच्या सारै ॥२॥
वस्तु अम्हारी लेवा सारू, मिल्यो महाजन वारू वारू।
मोल सुरणीने मु ह मचकोड़ै, वलतौ साटौ कोइ न जोडै ॥३॥
फिर पाछा वीरा मत जावौ, मोल कही ने वस्तु दिखावो।
सवा लाख धन खोलै घालै, एह सोल कंवल सो भालै ॥४॥
वहुवर एक निजर मे दीठी, सी दिस खारी सी दिस मीठी।
कंवल सोल किम परचावुं, तिरण ए अरधो अरध करावुं ॥५॥

जिम जाणो तिम एह अवधारी, खड करो बत्तीस विचारी
पहिली अम्ह नै दाम दिरावौ, पाछल मन मानै सो करावो ॥६॥
तेडि कहै साभलि भडारी, ए परदेशी छइ व्यापारी ।
वीस लाख सोनइया लेखै, कनक रजत आपौ सुविशेषै ॥७॥
कथन अपर तो मूल न आणो, नाणो गाठइ बाँध्यो जाणौ ।
मुझ साथै मू को एकण नै, तिण नै दाम समापु गिणनै ॥८॥
कोठारी कोठार खुलावै, गिणवा त्रीजो जण बोलावै ।
जातो कुण जोवै रुपईया, पगसू ठेलीजै सोनईया ॥९॥
हीरा ऊपर पग दे चलै, माणिक कवण मजूसे घालै ।
पार न को दीसै परवाले, काच तणी परि पाच निहाले ॥१०॥
लाखे गाने अछै लसणीया, मोती मूल न जाइ गिणीया ।
इण परि रिद्धि देखी थभाणो, पाछो फिर न सकै ले नाणों ॥११॥
अबर दूझै भूत कमावै, आकासे हल वहै सभावै ।
तिण घरि ए पिण रिद्ध न दीसै, स्यु सपनौ देखु छु दीसै ॥१२॥

॥ दूहा ॥

माल हमालै वसि करी, डेरइ आव्या जाम ।
व्यापारी बोलावि नै, श्रेणिक भासै आम ॥१॥
राणी हठ मूकै नही, मैं पूरेबी हाम ।
कबल द्यो इक मोलवी, जिम तिम देइसु दाम ॥२॥
रोक दिराव्या दोकडा, कोधी न का उधार ।
सोलह कबल सामठा, तिण ते लीधा सार ॥३॥
किण सोनईया सामठा वीस लाख गिण दीध ।
कुण धनवत इसौ अछे, जिण ते कबल लीध ॥४॥
सालिभद्र भोगी भमर नवि जाणे गृह काज ।
लेवो देवो मा वसु, तीण लीधा महाराज ॥५॥

ढाल-६ राग-परजीयो, पूरव भव तुम्ह सांभलो. ए जाति

श्रेणिक मन अचरिज थयो, हु वड भागो राजा रे ।
माहरी छत्र छाया वसै, सहु को दामे ताजा रे ॥१॥श्रे०॥

राज हुकम मगावता, मत भद्रा दुख पावै रे ।
रोके दामी राजवी, कंवल एक मंगावै रे ॥२॥ श्रे०॥
अतरजामी ऊपरा, जो तन धन वारीजै रे ।
तो कवल नी स्यु अछै, पिरण मुझ वात सुणीजै रे ॥३॥श्रे०॥
नारी कुजर नो घसु, पहिरयाँ साथल घासै रे ।
ते तो मारू धावला, पहिरै केम तमासै रे ॥४॥श्रे०
देव वसत पहिरै वहु, नजरि न आवै तेई रे।
मे दे मूक्या मो दिसा, पासै मूक्या लेई रे ॥५॥श्रे०॥
स्नान करी ऊठी जिसै, ते नांख्या पग लूही रे।
आपणपे जोवौ जई, निरमाइल खूही रे ॥६॥ श्रे०॥
निरमाइल किम दीजीयै, कूवा माथी काढी रे ।
अवर हुकम फुरमावस्यै, ते लेस्यु माथै चाढी रे ॥७ ।श्रे०॥
सेवक जे मूंक्यो हतो, ते फिर पाछो आवै रे ।
राजा नै राणी मिली, सगली परीठ सुणावै रे ॥८॥श्रे० ।
राजा नै राणी मिली, पूरव सुकृत सलीसै रे ।
इण ऋद्धि उण ऋद्धि आतरो, सर सायर सो दीसैरे ॥९॥श्रे०॥
जे को पहिर सकै नही, ते पग लूही नाखीजै रे।
परतख देखि पटंतरो, गरथ गरव किम कीजै रे ॥१०॥श्रे०॥
राजा अभयकुमार नै, मूकै भद्रा पासि रे ।
करि प्रणाम आवी तिसै, विनयवत इम भासै रे॥११॥श्रे० ।
भोग पुरदर सालि नै, ए करसो नृप तेडै रे ।
दरसण देखण अलजयो, मूंको माहरै केडै रे ॥१२॥श्रे०॥

॥ दूहा ॥

भद्रा अभयकुमार स्यु, आवै श्रेणिक पास ।
वस्तु अमोलिक भेटणै, देई करै अरदास ॥१॥
रवि ससि देन किरणवर, लागो न धरणी पाउ ।
दरसण को पावै नही, लख आवो लख जाइ ॥२॥

किण दिस ऊगे आथमे, जाणे राति न दीह।
जउ तिल कूड इहाँ अछे, तो हु काढू लीह ॥३॥
किम तेड़ावो नान्हडो, लाछि लील भरतार।
राज भवण लग आवता, थास्यै कोस हजार ॥४॥
राज पधारो आगणे, मत को जाणो पाड।
जो छोरू करि जाणस्यो, तो पूरवस्यो लाड ॥५॥

ढाल ७ राग-सिंधुड़ों, चीत्रोडी राजा रे मेवाडी राजा रे, एजाति

मुझ लाज वधारो रे, तो राज पधारो रे,
मत वात विचारो डावी जीमणी रे।
आसगा पाखै रे, सहु कोनी साखै रे,
इम कोइ न भाखै राखै कडि घणी रे ॥१॥
मगधेश विमासै रे, मत्रीसर भासै रे,
तुझ आस अवासै, तू चली आगले रे।
साहिव मतवाला रे, हुइ तो रढाला रे,
प्रधान वडाला, वालइ तिम वसै रे ॥२॥
हुता जे नेडै रे, ते साथै तेडै रे,
बीजा नै कड केहै वेगा आ पडो रे।
देस्यै ओलभो रे, पाणि वलि थभो रे,
सहु को नै अचभो, देखण नो वडो रे ॥३॥
मानी मछराला रे, वारू वीगताला रे,
ठकुराला छउगाला सहु आवें वह्या रे।
वागे तन लागे रे, केसरीये पागे रे,
वलि लीधे वागे आवि ऊभा रह्या रे ॥४॥
वधि चल्यो वधाऊ रे, उलगाणो साउ रे,
द्यइ खबरि अगाउ, आव्यो अम्ह धणी रे।
पोषी पकवाने रे, दीजे अनुमाने रे,
कोई गिणै न ग्यानै रे, तास वधामणी रे ॥५॥

राजा घरि आयो रे, मन थयो सवायो रे,
भरी थाल वधायो मोती माणके रे,
सोवन वारीजै रे, पाटवर दीजै रे,
तिम अघा तेडीजै, साथि हुता जिके रे ॥६॥
पहिली भूमि जोइ रे, हरख्या सहु कोइ रे,
नर भवण न होइ स्युं सुहिणो अछे रे।
बीजी भूमि आवै रे, अचरिज संव पावै रे,
मनभावे, सुर लोक थयो इण थी पछे रे ॥७॥
घन माल आलेखै रे, चिहुं पासै पेखै रे,
सुर भवन विशेषै हुं स्यौ अवतरयौ रे।
किणही भोलायो रे, मैं भेद न पायो रे,
अलिकापुरी आयो, इम संसय धरयो रे ॥८॥
हू श्रेणिक नामइ रे, आयो किणि ठामइ रे,
इम अचरिज पामै समझि न का पडे रे।
सिर धूणी सोचइ रे, मनस्युं आलोचै रे,
पगभरी सकोचै, चलतो लड़थड़ै रे ॥९॥

॥ दूहा ॥

भद्रा आवी नें कहइ, स्युं जोवो छो एह ।
दासी दास इहां रहै, उपर जोवो गेह ॥१॥
तीजी भोमी चढया जिसै, नयण न सकै जोड़ि ।
घर अंगण जिम झलहले, जाणे ऊगा सूर्य कोडि ॥२॥
चढता चउथी भूमिका, थभाणा सवि तेह ।
मानवगति दीसै नही, छे देवगति एह ॥३॥
सिंहासन आसन ठवी, भद्रा भासै आम ।
तेड़ी ल्यावु नान्हडो, राज करो विश्राम ॥४॥

ढाल ८ मीजवासे उपवासै गलै पहनी जाति

वेग पधारो हो महल थी, वार म लावो आज ।
घर आगण आव्यो अछै, श्री श्रेणिक महाराज ॥१॥वे०

रमणि बत्रीसे परिहरो, सेझ तजो इणि वारि ।
श्रेणिक घर आव्यो अछे, करिवो कवण विचारि ॥२॥वे०॥
पहला कदेय न पूछता, स्यो पूछो इण वार।
जिम जाणो तिम मोलवी, ले नाखो भडार ॥३॥वे०॥
नाखण जोगो ए नही, त्रिभुवन माहि अमोल ।
तो हिव जिम तिम सग्रहो, मु ह माग्यो दयो मोल ॥४॥वे०॥
किरियाणो श्रेणिक नही, बोलो बोल विचार।
देस मगध नो छे धणी, इद्र तणे अणुहार ॥५॥वे०॥
जेहनी छत्र छाया वसां, जासु अखंडित आण।
ते घरि आयो आपणे, जीवत जन्म प्रमाण ॥६॥वे०॥
प्रेम मगन रमणी रसे, रमतो नव नव रग ।
सेझ थकी तिण ऊठतो, आलस आणे अग ॥७॥वे०॥
आपण सरिखा जेहने, लखमीधर लख कोडि।
आगलि ऊभा ओलगे, राततिदिवस कर जोडि ॥८॥वे०॥
ए मदिर ए मालिया, ए सुख सेज विलास ।
ता लगि आपणि वसि अछे, जाँ लगि सुनिजर तास ॥९॥वे०॥
जो आपण पर तेहनी, कहियें कुनिजर होइ।
तो खिण माहे आथ नो, न थ हुयें कुज कोइ ॥१० ।वे०॥
तुरत करे अधराजियो, तुरत लगावे लीक ।
हियडो कोइ न लखि सके, पाणी माँहि मधीक ॥११॥वे०॥
आस ईयारी की जीयइ, पिण केहवो आंसंग।
दुबल काना राजवी, ते हुवे किम इकरंग ॥ १२। वे० ।
हास विनोद विलास जे, संपजस्ये सो वार ।
पिण रीझवता राजवी, खरो कठिन विवहार ॥१३॥वे०

॥ दूहा ॥

पहला कदे न सांभल्यो, सुपनातरि पणि जेह।
वयण विषम विष सारिखो, मात सुणाव्या तेह ॥१॥

कली कचरता नीगमी, मैं माहरी जमवार ।
आज लगं जाण्यो नही, सेवक नो विवहार ।।२।।
परम पुरुष विण अवरनी, सीस न धारू आण ।
केहर कदेन सांसहैं, तुरीया जेम पलाण ।।३
जे परवस वधण पडथा, ते सुख माणे केम ।
गहनो गाडो लील नो, लाडो चिंतै एम ।।४।।

ढाल ६ आप सवारथ जग सहु रे एहनी जाति

पूरब सुकृत न मैं कीयो, पालि न जिनवर आण ।
तिण आण अवर नरिंदनी, पालेवी हो मुझ ने सुप्रमाण ।।१।।
कुमर इसौ मन चीतवै, भरम भूलो रे इतला दिन सीम ।
परमारथ प्रीछ्या पछै रे, गृहवासै हो रहिवा हिव नीम ।।२।।कु०
मन वचन काया वसि करी, सेव्या नही गुरु देव ।
तिण हेत अवर नरिंदनी, करजोडी हो करवी हुइ सेव ।।३।कु०
एतला दिन लग जाणतो, हु छु सहुनो नाथ ।
माहरै पिण जो नाथ छै, तोछोडिस हो तृण जिम ए आथ ।४।।कु०
जाणतो जे सुख सासता, लाधा अछै असमान ।
ते सहु आज असासता, मैं जाण्या हो जिम सध्या वान ।।५।।कु०
ससार सहु ए कारिमो, कारिमो एह परिवार ।
कारमी इण रिद्धि कारणै, कुण हारै हो मानव अवतार ।।६।।कु०
वेसास सास तणो किसो, जे घडि मे घटि जाय ।
करणी तिका हिव आदरूं, जिम जामण हो तिम मरण न थाय ।७।
ए विषय विष फल सारिखा, जाण नही जाचद ।
त्रेवडं अमृत फल जिस, तिण साथै हो मांडै प्रतिबंध ।।८।।कु०
जे करै वे आगुल खरी, रोपी रहै दृढ पाउ ।
जे आंप आपो अगमै, तिण आगै हो कुण राणो राउ ।।९।कु०
वावू तणो भय रालि नै, बैठो करी इकतार ।
जे आप निरलोभी हुवै, तिण आगै हो तृण जिम स सार ।।१०कु०

घर आथि आप वसु करी, रूठो थको नर नाह ।
ते सहु मैं पहिली तजो, हिव मुझ नै हो स्यानी परवाह ॥११॥कु०
पण वचन हु माता तणो, लोपुं नही निरधार ।
तिण सेझ हुती उठि ने, पाउधारइ हो साथे ले नारि ॥१२॥कु०॥

॥ दूहा ॥

श्रेणिक मन हरखित थयो, सूरति नयण निहार ।
देव कुमर स्युं अवतरयो, मानव लोक मझार ॥१॥
करि प्रणाम आगलि जिसै, ऊभो सालिकुमार ।
वैसारयो उछरग ले, राजायै तिण वार ॥२॥
पर कर परसेवो चल्यो, माखण जेम सरीर ।
चिहु दिसि परसेव चल्यो, जिम नीझरणे नीर ॥३॥
इण इण भवि कीधी नही, सुपनान्तरि पणि सेव ।
पर कर फरस न खमि सकै, ए पातलीयो देव ॥४॥
स्वेच्छाचारी पर वसै, रहि न सकै तिल मात ।
सीख समपी करि मया, मात कहै ए वात ।
उठयो आमणदूमणो, महल चढयो मन रंग ।
फिरि पाछो जोवै नही, जिम कचली भुयग ॥६॥

ढाल–१० राग गोडी, भव तणौं परिपाक पहनी जाति

वे कर जोडी ताम भद्रा वीनवै, भोजन आज इहाँ करो ए ।
भगति जुगति सी थाय तोपणि साचवउ दास भाव हु आपणो ए ॥१
सहस पाक सतपाक तैलादिक करी मरदनीया मरदन दीयै ।
जव चूरण घनसार मृगमद वासित ऊपरि उगटणो कीयो ए ॥२॥
अछे गृह नइ पासैं जल खडोखलि सनान करण आवै तिहा ए ।
करता जलनी केलि, पडती मुद्रडी जाणी पण न लहै किहाँ ए ॥३॥
ते मुझ माणिक आज दीसै छै गयो, सारभूत घर मे हतो ए ।
ऊ चउ लेइं हाथ जोवै श्रेणिक पणि न कहै मुख लाजतो ए ॥४॥

देखी अडोली तांम श्रेणिक आगुली जाण्यो पाडी मुद्रडी ए ।
दासी ने कर सैन जल कल चालवी कढावे भद्रा ग्वडी ए ॥५॥
अधारे उद्योत करता नव नव भूषण मणि रयणे जडया ए ।
देई श्रेणिक आदि ज्योति भिगामिग देखि सवि अचरिज पडया ए ।६
चिंतामणि ने पासि जिम सेवतरो मूक्यो सोभ जिसी लहे ए ।
तिम ते भूषण पास श्रेणिक मुद्रडी ततखिण ओलखी ने ग्रहे ए ॥७
चीतै मगधाधीश पुण्य पटंतर स्यो सेवक ने स्यो धणी ए ।
स्यो करिवो विषवाद देखी परधन घाटि कमाई आपणी ए ॥८॥
पप हिरेहिलं दीस भूषण भामिण वीजइ दिनते ऊतरे ए ।
जिम निरमाइल फूल तिम ए नाखोए वलती सारन को करे ए ॥९॥
मेवा नैं पकवान प्रीसै व्यजन जाति भाति कर जूजूआ ए ।
द्यै ताजा तवोल ऊपरि नव नव सहु को मन हरखित थया ए ॥१०॥
मणि माणकनी कोडि लेई भेटणो राजा फिरि पाछउ गयो ए ।
हिव पाछलि जिनराज धरम करण भणी सालिकुमर उच्छक थयोए॥११

॥ दूहा ॥

तेजी सहे न ताजणो खेत सहै खग धार ।
सूर मरण ही साँसहैं, पणि न सहै तूकार ॥१॥
सै वसि राकपणउ भलो, स्यो परवसि रग रोल ।
वर पोता नी पातली, नाउ परायो घोल ॥२॥
बीजो नाथ न साँसहु, तो आण धरू सिर केम ।
मानी सरभ न साँसहै, घन गजरिव जेम ।३॥
सजम लेता दोइ गुण, पर भव अविचल राज ।
इण भवि नाथ न को हुवै, एक पथ दोइ काज ॥४॥
करता एम विचारणा, वोली घडी विच्यार ।
मिलि बत्रीसे भामिनी, इणि परि करै विचार ॥५॥

ढाल ११ नींवयारी जाति

आज नहेजो रे दीसै नाहलो, कीजै कवण प्रकार ।
प्रेम विलुत्री सुकुलिणी मिली, इणि परि करै विचार ॥१॥आ०

आऊ कार न मंदिर आवतां, जाता न कहै जाउ ।
जोगीसर जिम लय लायि रह्यो, मूकी मूल सुभाउ ॥२आ०॥
कर जोडि आगलि ऊभा छता च्यार पहुर वहि जाइ ।
तो पिण किम ऊभा जास्यो किहां, वात न पूछे काइ ॥३॥आ०॥
मयण नयण पोता ना वसि कीया, कीधौ मन सकोच ।
रग तणा रटका मत जाणेज्यो, आछे अवर आलोच ॥४॥आ०
आपण भोगी भमर न दूहव्यो, केम पडी मन राई ।
बोलायो प्रीतम बोलै नही, अंतरगति न लखाई ॥५॥आ०॥
देखी नै मुंह मचकोडै नही, रीस नही तिल मात ।
आपणपै पिण बोलै नही, एह अनेरी घात ॥६॥आ०॥
आज सही भंभेरयो वालहो, न कहै मन नी वात ।
जे नितु नवलो नेह न सांसहै ते तो घालै घात ॥७॥आ०॥
कहियै नाह न दीठो रूसणै, दिन दिन वधतै प्रेम ।
पांणी वलि मांहे मन खांचीयो, हिव कहो कीजे केम ॥८॥आ०॥
अतरजामी आज अवाणगू, दीसै कवण विशेष ।
अलवि मोह मीट न मेलतो, जे जोतो अनिमेष ॥९॥आ०॥
मीठा बोल म बोलो वालहा, मूल म पूरो खत ।
जोवो सहज सलूणे लोयणे, तो भाजै मन भ्रत ॥१०॥आ०॥

॥ दूहा ॥

आसण पूरी साधु जिम, बैठो ताली लाइ ।
आज अजब गति वालहो, किणहिं न लख्यो जाइ ॥१॥
जो मन का सल राखियै, तो वाधै विखवाद ।
छतै साल किम नीपजे, प्रेम रूप प्रासाद ॥२॥
अणबोल्यां सरिस्ये नही, वाधौ विरह अगाध ।
कीजै पूछ खरी खबर, कवण कीयौ अपराध ॥३॥
वेकर जोडी पूछियै, कामण गारो कत ।
किण कारण ए रूसणौ, ते दाखो विरतत ॥४॥

ढोल १२ राग-गोडी मल्हार मिश्र

अबला केम उवेखीयै, विरण अवगुरण गुरणवत ।
कहीयै कीडी उपरा रे, कटक न कीजै कतो रे ॥१॥
इम जोवो ससनेहो रे, कामरण वीनवै ।
झटक न दीजै छेहो रे, सुरिण मुरिण वालहा ॥२॥
तू तेहिज तेहिज अम्हेरे, ते मदिर ते सेज ।
इरिण अरिणयाले लोयरणे रे, तेह न दीसे हेजोरे ॥३॥सु ॥
जो तै अम्हनै अवगरणी रे, करिय कठिन निज चित्त ।
प्राण हुस्यै तो प्राहुरणा रे, जिम परदेसी मीतो रे ॥४॥सु०॥
नाह न कीजै रूसरणो रे, जोवौ हियै विमासि ।
इक पखो इम तारणतॉ रे, किम चलस्यै घर वासो रे ॥५॥मु ॥
हॉसै री वेला नही रे, इरण हासे घर जाय ।
पारणी न खमइ पातली रे, हिव ए दुख न सुहायो रे ॥६मु०
जिरण तुम्ह नै प्रीयु दूहव्यो रे, जिरण तुझ लोपी कार ।
सीखामरिण द्यो तेहनै रे, एकरिण घाउ म मारो रे ॥७॥सु०॥
सुगुरण सनेही वालहा रे, करता कोडि विलास ।
ते दिन आज न सभरै रे, तिरण तुम्ह नै स्यावासो रे ॥८॥सु०॥
दिवस दिवस वधतो हतो रे, इतला दिन इकलास ।
सुख दुख वात न का कहो रे, आज टल्यो वेसास रे ॥९॥सु.॥
चित न का व्यापार नी रे, कोइ न विरणठो काज ।
केवल कामरिण ऊपरा रे, सही खीवै छै आजो रे ॥१०॥सु०॥
जो को अवगुरण दाखवो रे, तो आधो दुक्ख थाय ।
कुरुख करो ठाकुर छता रे, किम कह्यो न जायो रे । ११॥सु०
गुनहो पॉचे हि दिनै रे, जो को जारणो नाह ।
मूल थकी तो छाँडिज्यो रे, तुम्ह नै सी परवाहो रे ॥१२। सु० ।
एह उदास परणो तजो रे, तू अम्ह प्रारण अधार ।
हिलि मिलि वोलावी मिलों रे, पूरव प्रीत सभारो रे ॥१३सु०
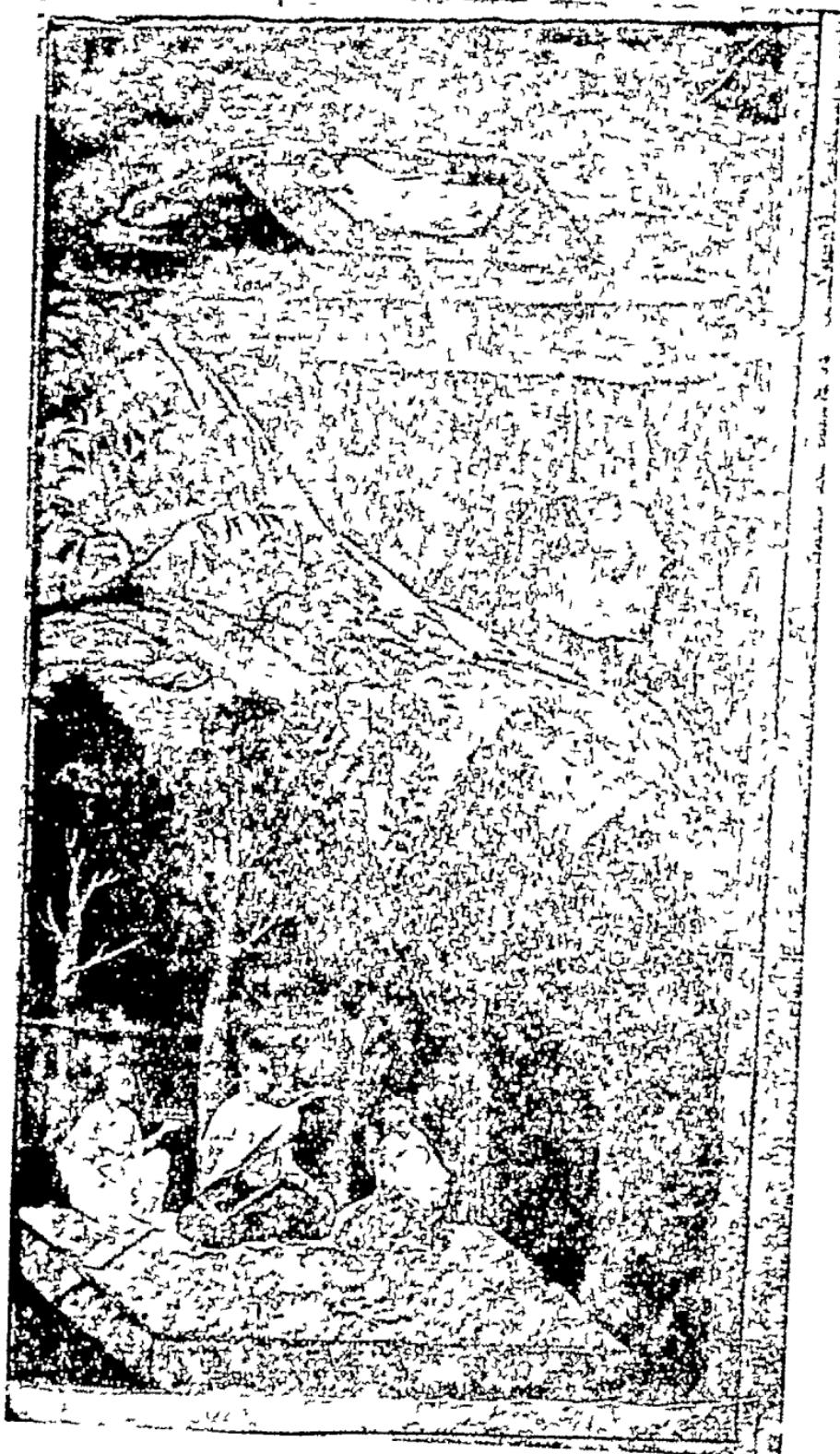
वेभारगिरि पर धन्ना शालिभद्र का सथारा

शालिभद्र अपनी ३२ स्त्रियों के साथ

॥ दूहा ॥

इम सहजइ घर विध कही, दीन हीन वयरोह।
पिरा तन मन डोल्यो नही, रखे दिखावै छेह ॥१॥
जो निरदूपरा परिहरे, तो हिव केही लाज।
गाडो उललियै पछै किसौ विनायक काज ॥२॥
हिव वहिलो वाहर करो, वहिनी म लावो वार।
भद्रा सासु नै कहो, प्रीतम तरगी प्रकार ॥३॥
बात भेद लाधां पछै, देखी कुमर उदास।
भाखै सीख रुखा वचन, ऊंची चढि आवास ॥४॥

ढाल-१३ राग जैतसिरी

सुगणसनेही मेरे लाला, वीनती सुणौ मेरे कंत रसाला, एहनीजाति

नमरगी खमरगी नइ मन गमरगो, रमरिग बत्तीसे सोवन वरगी।
सुकुलीरगी नइ सहज सलूरगी, किरग काररग ए ऊरगी भूरगी ॥१॥
ए सवि नारि चलै तुझ केडै, थूक पडै तिहां लोही रेडै।
कथन तुहारौ काय न खडै, उडै सिस जिहा पग मंडै ॥२॥
जी जी करता जीहा सूकै, मुह थी नाम न काई मूकै।
तुझ सासेही काई न धापै, तौ इवडो दुख स्याने आपै ॥३॥
तुझ गायौ गावै सहु कोई, हुवै सुप्रसन्न सनमुख जोई।
इम वैठो तन मन सकोची, तूं तो मूल नही आलोची ॥४॥
जो परतखि अवगुरग देखीजे, तो परिग मन मे जारिग रहीजे।
दीठउ परिग अरगदीठउ कीजै, नारि जाति नो अत न लीजै ॥५॥
अटक भटकि किम छेह न दीजे, जो को दिन घरि रहिवा कीजे।
नीत वचन चौथो संभारो, कामरिग ऊपरि कोप निवारो ॥६॥
जाण्यो हुवै तो दोष दिखाडो, परिग घर बाहिर बात म पाडो।
माहे तेडी नै समझावौ, दोखी जन ने काइ हसावो ॥७॥
तू तो आज अजब गति दीसै, हियडौ हेजे मूल न हीसइ।
एहवी पूत पराई जाई, इम किम नांखउ छउ धसकाई ॥८॥

तू देवर तू जेठ सगीनो, तूं मन मोहन नाह नगीनो ।
तू पीहर तूं सासर वासो, तुझ विण सूनो आसो पासो ॥९॥
इण परि विविध वचन कही थाकी, न रह्यो कहिवा जोगो बाकी ।
सालिकुमर मन माहि विचारें, सहु को मोह महीपति सारे ॥१०॥
जे भामण सुं संग करावें, ते लेई दुरगति पहुचावें ।
हित वंछक मावीत कहावें, पिण अतर गति कोइ न पावें ॥११॥

॥ दूहा ॥

आवी दीध वधामणी, वनपालक तिणवार ।
धर्मघोप आव्या इहा चौनाणी अणगार ॥१॥
सालिकुमर मन चिंतवे, भले पधारचा तेह ।
मुंह मागया पासा ढल्या, दूधे वूठा मेह ॥२॥
पहली पिण व्रत आदरण, मो मन हु तो हेज ।
हिव जाणे निंदालुयें, लही विछाई सेज ॥३॥
कुमर साध वदण चल्यो, रिद्धि तणो विस्तार ।
पाचे अभिगम साचवी, बैठो सभा मझार ॥४॥
सवेगी सिर सेहरो, सूरि सकल गुण खाणि ।
भव सरूप इम उपदिसे, मुनिवर अमृत वाणि ॥५॥

ढाल—१४ राग गोड़ी विणजारा नी जाति

प्रतिबूझोरे लहि मानव अवतार, तप जप संजम खप करो प्रतिबूझो रे।
प्रति० जिम हुवै छूटक वार, गर्भावास न अवतरो प्रति० ॥१॥
प्र० स्वारथीयो जग माहि, मत को जाणो आपणो प्रति० ।
प्र० हाथ छछोहा वाहि, आज काल्हि मे चालणो प्रति० ॥२॥
प्र० रहिता जिम तिम प्राण, जिण गामातरि चालियै प्र० ।
प्र० ओलीजें समसाण, घर आभोषो घालियै प्र० ॥३॥
प्र० काल न देखे कोई, ऊपरवाड़े रांचतो प्र० ।
प्र० जे सर अवसर होइ, वार न लावै खाचतो प्र० ॥४॥

प्रतिबूझोरे संग न आवै आथि, नावै परणी हाथरी प्रतिबूझोरे ।
प्र० सबल घालो साथि, आगलि सेझ न पाथरी प्र० ॥५॥
प्र० अटवी विषम अपार, साथे मन मेलू न छै प्र० ।
प्र० करज्यो एह विचार, पछतावै पडस्यौ पछै प्र० ॥६॥
प्र० रमणी रंग पतग, फल किंपाक विष सारिखो प्र० ।
प्र० म करो तास प्रसग, जो मन पूजै पारखो प्र० ॥७॥
प्र० सध्या राग समान. आठे मद छै कारिमा प्र० ।
प्र० दिन दस देही वान, आभरणे वहु भारिमा प्र० ॥८॥
प्र० म करो गरब गुमान, आथि अथिर जिनवर कही प्र० ।
प्र० जात न लागै वार, राखी पिण रहिस्यै नही प्र० ॥९॥
प्र० गिणता त्रिण ससार, जे सिर छत्र धरावता प्र० ।
प्र० ते अरियण घर वार, दीसै दास कहावता प्र० ॥१०॥
प्र० दे न सकै जगदीश, अधिकी एक घडी सही प्र० ।
प्र० ते दिन माहि वत्रीस, जाती पणि जाणी नही प्र० ॥११॥
प्र० परहरि निदानी वात, म करेज्यो दुरगति दीयइ प्र० ।
प्र० जोए न मिटै धात, तो आपणपो निदीयै प्र० ॥१२॥
प्र० परतखि आप निहालि, मन आवै ए वात जो प्र० ।
प्र० लोभ थकी मन वालि, क्रोध मान माया तजो प्र० ॥१३॥
प्र० तो ल्यो सजम भार, जो भव भमतां ओलजो प्र० ।
प्र० मूको विषय विकार, वाछो छाका छोल ज्यो प्र० ॥१०॥

॥ दूहा ॥

धरम देसना साभलो, हरख्यो सालिकुमार ।
कर जोडी आगलि रही, पूछै एक विचार ॥१॥
माथै नाथ न सपजै, किण करमै मुनिराय ।
परम कृपाल कृपाकरी, ते मुझ कहो उपाय ॥२॥
कहै साधु व्रत जे ग्रहै, तृण जिम छोडै आथि ।
नाथ न माथै तेहनै, होवै ते सहुनो नाथ ॥३॥

साधु वचन सवि सरदही, इहा किए मीन न मेप ।
आवी माता ने कहै, इण परि वचन विशेष ॥४॥

ढाल-१५ राग-खंभाइची

मानव भव लहि दोहिलो रे, तो पाछलि अलवि गमायो रे ।
सफल करूं हिव मात जी रे, तो हु ताहरो जायो रे ॥१॥
मोरी मात जी अनुमति द्यो सजम आदरूं रे ।
व्रत पालि ने भव जलनिधि हु तरूं रे ॥२॥ मो०॥
जे मारग जाणै नही रे, ते तो भूलै न्यायइ रे ।
मारग जाण्या ही पछै रे, कहि कुण उवटि जायइ रे ॥३॥मो०
जग मे को केहनउ नही रे, जोवो हियैं विमासी रे ।
परभव जाता जीव नैं रे, साथ न कोई आसी रे ॥४॥मो०
मुह मीठा आवी मिल्या रे, मुझ नै पाच सखाई रे ।
ते धन लूटै माहरो रे, आज खबरि मैं पाई रे ॥५॥मो०
जेहनो गायो गावतो रे, जेह सुं रहतो भीनो रे ।
ते प्रधान माहे थई रे, करै खराव खजीनो रे ॥६॥मो०
पग भरि साथ खिसै नही रे, फोकट मिलि मिलि पोसै रे ।
बाल सखाई नो टल्यो रे, मुझनइ आज भरोसौ रे ॥७॥मो०
हिव हु देखो तेहनै रे, कवण कुलीक लगावुं रे ।
खरच न देउ गाठ को रे, विमणो काम करावुं रे ॥८॥मो०
मिलण न देस्यु मत्रवी रे, सो घर भेद प्रकाशै रे ।
सयण अछै त्रेवीस जे रे, ते नावण द्युं पासै रे ॥९॥मो०
पूरो लेखो मागिस्यु रे, पहिलै दिन थी लेई रे ।
खाधो विमणो काढिस्युं रे, मुहडै माटी देइ रे ॥१०॥मो०
च्यार अछै जे चोगुणा रे, इण घरना रखवाला रे ।
खाधो माल नही दीयै रे, होइ रह्या मतवाला रे ॥११॥मो०
ए सीखामणि तेहनै रे, नाणु इण घर माहे रे ।
जोतइं पैसै छेवकै रे, तो काढुं गल साहे रे ॥१२॥मो०

जाण तिके नर जाणिये रे, जे आपो न ठगावै रे ।
जीवतडा न कलकीयै रे, मूयां कुगति न जावै रे ॥१३॥मो०

॥ दूहा ॥

सालि वचन श्रवणे सुणी, भद्रा करे विचार ।
वचन जिसा उडथा कहथा, तजै सही संसार ॥१॥
पणि अनुमति देस्यु नही, हु राखिसु समझाय ।
जो मुझ नै उवेखसै, तो क्यु कहथो न जाय ॥२॥
धरम भणी जे गोठिसे, ते गिणस्यै मावीत ।
मुझने कदे न लोपसे, ए नान्हडीयो सुविनीत ॥३॥

ढाल–१६ राग-मल्हार

बाता म काढो व्रत तणी, अनुमति कोइ न देसी रे ।
सुख भोगवि ससार ना, पाडोसी व्रत लेसी रे ॥१॥बा०
तू तो इण परि बोलतो, लोका माहि लजावै रे ।
मुह बाहिर ते काढीयै, ते फिर पाछो नावै रे ॥२॥बा०
जे जगदीस बडा किया, ते ऊंडौ आलोचै रे ।
न्यायै जिम तिम बोलता, छोकरवाद न सोचै रे ॥३॥बा०
जे साभलस्यै सासरा, तो करस्यै दुख गाढो रे ।
हासं कारण नान्हडा, एवडी वात म काढो रे ॥४॥बा०
तूं जाणै व्रत आदरूं, सूल किसौ छै पाछै रे ।
जो अम्हनें निरवाहस्यै, वीर अवर को आछै रे ॥५॥बा०
जे मैं तूं जायो हुतो, कहिनें कुण दिन काजै रे ।
वडपणि जामण छोडतो, स्युं मन माँहे न लाजै रे ॥६॥बा०
हु जाणुं मावीत नी, छोरू पीड न आणै रे ।
पण सजम छै दोहिलौ, ते तु भेद न जाणै रे ॥७॥बा०
विषम परीसा जे सहै, ते तो काय अनेरी रे ।
इ परि जाणुं ताहरी, तिण राखुं छुं घेरी रे ॥८॥बा०

माखण जिम तनु ताहरो, परसेवै परघलियो रे ।
ते वेला स्यु वीसर्यो, व्रत लेवा हलफलीयो रे ।९॥वा०
कुण अतुली बल सचरै, सनमुख गग प्रवाहै रे ।
तिम सुरगिरि नै तोलिवा, कवरण पुरुष उमाहै रे ।१०वा०
मयरण तरणै दाते करी, लोह चिरणा कुण चावै रे ।
सिला अलूणी चाटता, स्वाद कहो कुण पावै रे ॥११॥वा०
मन वछित सुर पूरवै, तिरण देणो छै पूरो रे ।
स्यु सजम ले साधिस्यौ, स्यु छै इहा अधूरो रे ॥१२॥वा०
दुखिया तो दुख भाजिवा, सजम सु मन लावइ रे ।
पिण सुखिया सुख छोडिस्यइ, ते पडिस्यइ पछतावइ रे ॥१३वा०
परभवनी आस्या धरी, जे आया सुख छोडै रे ।
ते तो कडनौं मूकि नै, आस्या ऊपरि दौडै रे ॥१४॥वा०
ते रामति किम कीजीयै जियै रामति घर जावै रे ।
महल पधारो नान्हडा, उठि वहुअर दुख पावै रे ॥ १५॥वा०
दुख ल्यै कवरण उदीरनै, कुण घर माडी ढावै रे ।
स्यो पोताना पग भरणी, कोई कुहाडी वावै रे ॥१६॥वा०
मोह विलूधा मानवी, ओछो अधिको भासै रे ।
ए ए दुरजय मोहनी, श्री जिनराज प्रकासै रे ॥१७॥वा०

॥ दूहा ॥

कह्यो कुमर मानै नही, कही विविध परि वात ।
मीठे वचने तेडि नै, मात कहै ए वात ॥१॥
सातौं ही जो नवि रहै, तो पहिली करि अभ्यास ।
पावडीए चढता थका, पहुचीजै आवास ॥२॥
काज विचारी जे करै, रहै तियारी लाज ।
अति उच्छक उतावला, ते विणसाडै काज ॥३॥
इम अनुमति उतावली, देता न वहै जीह ।
जो माता करि लेखवो, तो पडखो दस दीह ॥४॥

ढाळ–१७ राग-सोरठ,

व्रत नी मनसा जे आणी, तिण माहि न पैसे पाणी ।
तिण दिन दस आगै पाछै, मैं सजम लेवो आछै ॥१॥
रहता वैराग न छीजे, माता पिण सतोषीजे ।
हठ झालिनै बैसि रहीजै, जिम तिम निज कारिज कीजै ॥२॥
अवसर लहि चतुर न चूकै, लीधो पिण बोल न मूकै ।
हठ छोडि चढ्यौ चोवारै, माता हरखी तिण वारै ॥३॥

॥ दूहा ॥

भलो थयो दिन दस रह्यो लाज रखी चिहु साखि ।
गूगो बेटो बाप नै, बाप कहै ते लाख ॥४॥

यति—

जेहनी मीजी भेदाणी, पलटै किम तेहनी वाणी ।
लागो जी रग मजीठो, दीठो ते किणही न फीटो ॥५॥

॥ दूहा ॥

जिम जिम मैं परणी हती, तिम तिम छोडु एह ।
परठि तिका माडी तिणै, पहली लाधौ छेह ॥६॥
गुनहो जिको सो मै कियो, फल पिण लाधो तास ।
सड्यै पान जिम हु तजी, अवर रही प्रीउ पास ॥७॥
स्यौ पहिली परणी हुँती, पहली छोडण काज ।
ऐ ऐ मो मोभण तणी, वारु राखी लाज ॥८॥

ढाल यतनी–

बीजै दिन बीजी छोडी, पहली चितै थई जोडी ।
मुझनै आधो दुख थास्यै, बिहु नै तो बाट्यो आस्यै ॥९॥
रहिवो चित्रसाली माहे, भामणि बैसै बिहु वाहे ।
किणही सु नेह न लावै, बाते सहुने परचावै ॥१०॥
मुनिवर ना पिण मन-चूकै, कामण जो पासै ढूकै ।
पण सालिकुमर ए जाणी, माची दुरगति सहिनाणी ॥११॥

तीजै दिन तीजी आई, ताली देई तास बोलाई ।
छौडी दीसै छै कतै, आवी वैसौ इण पतै ॥१२॥
बोल कहती अम्ह माहे, तुझ नै पिण काढी साहे ।
स्यो फेर जवाब न कीधो, त्रिहु पाने बीड़ो दीधो ॥ ३॥
परठ दीठी आजूअउ नी, गति थास्यै एक सहूनी ।
जे पाचे साही आवै, आघो दुख तास जणावै ॥१४॥

॥ दूहा ॥

स्यानै को केहनै हसौ, मत को करो गुमान ।
वारु वासो जिम हुतो, तिम थास्यै अपमान ॥१५॥

ढाल यतनी—

हुतौ आसगा माथै, झगडौ करतौ प्रियु साथै ।
पिण मुझ नै छेह न देतो, अवगुण पिण गुणकरि लेतो ॥१६॥
तेही जो हुवइ निसनेही, तो वात कहीजै केही ।
त्रीजी वैठी बिहु पासै, इण परि सिर धूणी विमासै ॥१७॥
देखो छो वात जि काई, मन माहे ईयारै आई ।
निरदोष पराई जाई, ले नाखउ छउ धसकाई ॥१८॥
प्रहसम थास्यै मुझ वारी, इम चितवै चउथी नारी ।
आडी तव कोई न आसै, मन जाइ लागौ आकासै ॥१९॥

॥ दूहा ॥

हुं जोई परणी हती, खरी आणि मन खति ।
स्युं मुझ नै वैसाणिस्यै, प्रीतम तेहनी पति ॥२०॥
घडीयाले वाजे घड़ी, धूजण लागी देह ।
मुझ नै पिण प्रीयु छोडसी, पहुरै चिहुंरै छेह ॥२१॥
वात न का पूछी सकी, आडी आई लाज ।
पहर चिहुं रे आतरै, वीछडिवो छै आज ॥२२॥

॥ यति ॥

अति आतुर नेह गहली, घर ऊपर चढी इकेली ।
हरिणांकी वहि ए जासै, मृगराज लिख्यो चिहुं पासै ॥२३॥

दिन प्रति कामण छोडंतां, दल मथण तणा मोडंता ।
हिव जिण परि धन्नो आवै, ते पिण जिनराज सुणावै ॥२४॥

॥ दूहा ॥

बहिन सुभद्रा तिण नगर, धन्ने घरि सुविदीत ।
सनान करावण अवसरे, बधव आव्यो चित ॥१॥
रोम रोम साले अधिक, विरह विथा तिण वार ।
होयडो लागो फाटिवा, नयण न खडे धार ॥२॥
दीसै घणु दयामणी, आज खरी दिलगीर ।
कहि केणइ दूजण दूहवी, नयण झरै तिण नीर ॥३॥
सालिभद्र सरिखो अछै, बधव अमलीमाण ।
आठ रमणि मे माहरै, तू हिज जीवन प्राण ॥४॥

ढाल–१८ राग गोडी. चेतन्न चेत करी, एहनी जाति

श्रेणिक घर आया पछे रे, काय पडी मन भ्रंति ।
दिन दिन एक कामणि तजै रे, व्रत लेवानी खतोरे रे ॥१॥
वयरागी थयो, जामण जायो वीरो रे ।
ते मुझ सांभरघो, नयण झरै तिण नीरो रे ॥२॥ वै०॥
सांत भलो जो सासरो रे, तो पीहर आवै चीति ।
विण बधव पीहर किसो रे, नेह रहित जिम भीतो रे ॥३॥वै०
वीर विहूणी बहिनडी रे, निस दिन रहै उदास ।
प्रीउ हटकी किण आगलै रे, काढै मन नीसासो रे ॥४॥वै०
उभारै पीहर तणै रे, गज न सकै कोय ।
सकज वीर नी बहिनडो रे, दिन दिन नवली होयो रे ॥५॥वै०
कुण कहिस्यै मुझ बहिनडी रे, केहनै कहस्यु वीर ।
वार पर्व कुण मूकस्यै रे, मुझ नै नव नव चीरो रे ॥६॥वै०
कलि अजरामर तूं हुजेरे, मुझ पूरवे जगीस ।
किण आगलि ऊभी रही रे, देइसुं इम आसीसो रे ॥७॥वै०

हिव किण नै जीमाडि नै रे, सफल करिस भाई बीज ।
कास पयोहर वीछीली रे, हु देखसु भाग्रीजो रे ।।८।।वे०
केहने बांधिस राखडी रे, गाइस केहने गीत ।
कुण मोसालो मूकसी रे, तिण विशेष संचितो रे ।।९।।वे०
एक घडी पिण जेहनो रे, कठिन विरह खग धार ।
तो जामण जाया पखै रे, किम जास्यै जमवारो रे ।।१०।।वे०

॥ दूहा ॥

मुह मचकोडी तिण समै, बोलै बोल रसाल ।
साहसीक सिर मुगट मणी, धन्नो धिगडमाल ।।१।।
वलि वलि वीरो दोहिलो, न्याय तिणे दिलगीर ।
पिण कायर सिर सेहरो, सालिभद्र तूझ वीर ।।२।।
आरम्भ्यो तेहनो सफल, जे कर घालै पार ।
पाणि वलि मांहे पेखता, थायै अवर प्रकार ।। ।।
प्रेम मगन ते किम रहै, मन उपाड्या जाह ।
आगलि पाछलि छोडवो, तो किसी विमासण ताह ।।४।।

ढाल–१६ फूलडा गुजराति

वहिनि रहि न सकी तिसै जी.साभलि प्रीतम बोल ।
स्यु अवहेलो माहरोजी, इणि परि वीर निटोल ।।१।।
मोरा प्रीतम ते किम कायर होई ।
कथन न मानै माहरो जी, तो आप विमासी जोइ ।।२।।मो०
काची कोडी छोडता जी, वीस करै बेखास ।
आथि छती जे अवगिणै जी, तेह नै द्यो सावास ।।३।।मो०
रतन जडित घर आगणा जी, सोवन मय घर बार ।
इण अनुसारै जाणज्यो जी, रिद्ध तणो विस्तार ।।४।।मो०
वयातीत पोतै थयो जी, गलित पलित घर नार ।
ते पणि व्रत लेतो छतो जी, पडखे वरस बि चार ।।५।। मो०

आप तरुण तरुणी घरे जी, कचन कोमल गात ।
भोग थकी जे ऊभगे जी, ते राखे अखियात ॥६॥मो०
घर वरताऊ छोडता जी, करे विमासरण वीस ।
रूपे रभा सारिखी जी, धन्न जे तजे बत्रीस ॥७॥मो०
साहसीक पाखे कहो जी, नारि तजे कुण आम ।
लोही तो हिज नीसरे जी, तोरी चीरीजे चाम ॥८॥मो०
जे करिस्ये ते जारिणस्ये जी, त्याग दुहेलो काम ।
मूल न जाणे बाभडी जी, व्यावर तणो वरियांम ॥९॥मो०
कथनी करणी सारिखी जी, जो इण कलियुग होय ।
तो सिव सुख हुती सही जी, उरे न रहतो कोय ॥१०॥मो०
बाते बडा न नीपजे जी, मोठे लागे दाम ।
कहै तिसो पोते करे जी, ते विरला वरियाम ॥११॥मो०
साधु पथ पोते कहे जी, तिण दिस न भरे वीख ।
आप न जावे सासरे जी, लोगाँ ने दे सीख ॥१२॥मो०
दिवस वतीसे छोडसी जी, वीर बत्तीसे नारि ।
पोते आठ अछे तिके जी, छोडो एकरण वार ॥१३॥मो०

॥ दूहा ॥

कुलवती पाखे कवरण, दये इण परि उपदेश ।
अतर गति आलोचतां, कूड नही लवलेश ॥१॥
मन राजा तनु मत्रवी, उपसम आगेवाण ।
तीने एक मते थयाँ, चढस्ये काज प्रमाण ॥२॥
काम चुगल पासे कीयो, चितवि विषय विपाक ।
अतर जोति प्रगट थई, घटो आठ मद छाक ॥३॥
पाँचे मिली जोडयो हतो, तूटो सगपण तेह ।
हिव हु भाई तू बहिनडी, अविचल सगपण एह ॥४॥
अलगी रह तु मुझ थकी, म करिस ताणो ताण ।
मैं मन सूधे ताहरो, कीधो वचन प्रमाण ॥५॥

घन्नो एक मन्नो थई, ऊठण लागो जाम ।
पालव झालि इसौ कहै, नारि सुभद्रा नाम ॥६॥

ढाल—२• राग सोरठ

जो माणस करि लेखवो, तो मति जावो छाडि लाल रे ।
जास्यौ तो ही राखस्युं वालक जिम रढ माडि लाल रे ॥१॥
रहु रहु रहु रहु वालहा, त्रटकि म तोडो नेह लाल रे ।
सहज सलूणां माणसा, इम किम दीजै छेह लाल रे ॥२॥रहु•
आसगाइत जे हुसी, ते कहिस्यै सो वार लाल रे ।
पिण विरचण देस्यै नही, करस्यै कोडि प्रकार लाल रे ॥३॥रहु•
ओछौ अधिको सांभली, हसीय गुदारै तेह लाल रे ।
अवगुण गुण करि लेखवै, साचा साजन तेह लाल रे ॥४॥रहु•
दाँताँ विच दे आँगुली, लुलि लुलि लागे पाय लाल रे ।
हांच विछाई नै कहु, हिवणां तजि मत जाय लाल रे ॥५॥रहु•
घरणी वचने घर तजै, सोभ न लहीयै एम लाल रे ।
माखी तो मारै नही, मुलको मारै तेम लाल रे ॥६॥रहु•
एवड़ो गुनहो न को कीयो, कार न लोपी काय लाल रे ।
जो छीकता दंडिस्यो, तो क्युं कहथो न जाय लाल रे ॥७॥रहु•
विरचण हारा विरचस्यै, कूडो ही देह दोस लाल रे ।
पिण पापी मन नवि रहै, सास हुवै तां सोस लाल रे ॥८॥रहु•
पोणे सासरीयाँ तणौ, पीहरडं न खमाय लाल रे ।
पीहरीयां रो सासरै, मूलि न खमाणो जाय लाल रे ॥९॥रहु•
वधव दुख दाधी हुती, ऊपरि प्रीतम गउण लाल रे ।
जाणे दाधा ऊपरै, देवा मांडयो लवण लालरे ॥१०॥रहु०॥
देखो दुख वांटण समै, अलिवी पडी मन राय लाल रे ।
लेणै थी देणै पड़ी, इम ऊभी पछिताय लाल रे ॥११॥रहु०

॥ सोरठा ॥

प्रीतम नो लवलेश, मन पिण डलाणो नही ।
फेरि दियै उपदेश, भामणि नै प्रतिबोधवा ॥१॥

जिम कीधो उपगार, तै तिम अवर न को करै ।
ते विरला ससार, जे जिम तिम प्रतिबूझवै ॥२॥
छोडि अधूरा काम, उठि चलेसी प्राहुणो ।
कोई न लेसी नाम, जगल जाइ वसाइसी ॥३॥
किणस्यु करै सनेह, परदेसी परदेस मे ।
आंधी गिणै न मेह, आए कागद उठि चलै ॥४॥

ढाल-२१ राग-धन्यासी, मुणि बहिनी श्रोउडो परदेसी पहनी

इम धन्नो धण नै परचावे, नर भव अथिर दिखावै रे ।
ते हिज साचा सयण कहावै, जे जिन धरम सुणावै रे ॥१॥इ०
मेरो मेरो करै गहेलो, सब स्वारथ को मेलो रे ।
ऊठि चलेगो हंस इकेलो, विछडीया मिलण दुहेलो रे ॥२॥इ०
है दिन दस गोवल में चरणा, आखर इक दिन मरणा रे ।
राखणहार न कोई शरणा, तो एता क्या करणा रे ॥३॥इ०
को काहू के संग न जावे, फेर पाछे घर आवे रे ।
तिण सेती जे नेह लगावै, सो ऊखर मे वावै रे ॥४॥इ०
छोरि चलैसी माथी पोथी, करि काया सब थोथी रे ।
आगलि जाणं ल्युं यह पोथी, है माया सवि थोथी रे ॥५॥इ०
इत उत डोलत दिवस गमावे, सूता रयणि विहावै रे ।
दिन दिन चलणो नेडो आवै, मूरख भेद न पावै रे ॥६॥इ०
को दुख वांटि न ल्यै इक राइ, पापे पिंड भराई रे ।
निसदिन चिंता करै पराई, या देखो चतुराई रे ॥७॥इ०
चालण वरियां होत सखाई, आपणी साथ कमाई रे ।
फिर आवै पाछि लुयाइ, त्रूटि जाण सगाई रे ॥८॥इ०
सब मिली आपणो स्वारथ रोवे, प्रीय की गति कुण जोवे रे ।
स्वारथ जास न पूगो होवै, सो परि पूठ बिगोवै रे ॥९॥इ०
तब लगि सब ही के मन भावै, जब लग गायो गावै रे ।
काज सारया मुह यी न लगावै, छिन में छेह दिखावै रे ॥१०॥

हुंती भामणि प्रेम विलूधी, ते पिण सुणि प्रतिबोधी रे।
वाली वलै सदा पडसूधी, पिण नवलै सिल सूधी रे ॥११॥इ०
पूरवली पणि प्रीति न तोडुं, नेह नवल हिव जोडुं रे।
हूं साहिब को सग न छोडुं, तिम आपो नवि छोडुं रे ॥१२॥इ०
एक मतो कीधो मन रगे, व्रत लीधो प्रभु सगे रे।
श्री जिनराज वचन आसगे, पाले प्रीति अभगे रे ॥१३इ०

॥ दूहा ॥

घण थिर करी आव्यो वही, सालिकुमर नै पासि।
हर जिम आङ्की कहै, इण परि वचन विलास ॥१॥
हिव लालच करता थकां, सवल पडै छै चूक।
करै सूर पौरस चढयं, इकणि घाव वि टूक ॥२॥
प्रेम मीत दल मोड़िवा, कायर म करि संकाण।
हुं पाछलि पूठी रखो, तूं हुइ आगेवाण ॥३॥
वोलाव्यो न रहै कदे, केहर आवै धाय।
वापूकारथा जे रहै, ते किम सूर कहाय ॥४॥
वयणे मन विमणो थयो, वाध्यो मन उछरंग।
वार न लागे वेसता, पासै ऊपरि रंग ॥५॥
पहिली पण अधिको हुंतो, संजम ऊपरि प्रेम।
वहनेवी वचने थयो, हरि पाखरियो जेम ॥६॥
खरी खबरि आवी तिसै, समवसरथा जिनराज।
सालि कहै हिव आपणी, आस फलेसी आज ॥६॥

ढाल-२२ नथ गई मेरी नथ गई ए जाति

आस फली मेरी आस फली आस फली पाउधारथा वीर।
आगलि गौतम स्वाम वजीर ॥१॥मे०॥
सजम लेतां वांधी भीर, हिव पामिस भव जल निधि तीर ॥२॥मे०
व्रत लेवा नै जिनवर हाथ, इक घेवर नै बूरा साथि ॥३॥मे०

मन मेलू करि नै जगनाथ, घातिसु मुगति रमणि नै बाथि ॥४॥मे०
प्रभु महथि लें संजम भार, खप कार पालिस निरतीचार ॥५॥मे०
करिसु अप्रतिवद्ध विहार, लेइसु निरदूषण आहार ॥६॥मे०
पहिरसु सील सुदृढ सन्नाह, भाजिसु मयण तणो भडवाह ॥७॥मे०
तो सरिखो साथी गज गाह, तो मुझ नै स्यानो परवाह ॥८॥मे०
वहिला हो मत लावो वार, आपण बे थास्या अणगार ॥९॥मे०
अनुमति लेवा नो आचार, तिण ए पूछेवो परिवार ॥१०॥मे०
धन्नो आवी निज आवास, सामहणि संजम नउ उल्लास ॥११॥मे०
मूल थकी मोडण भव पास, पहुतो वीर जिणेसर पास ॥१२॥मे०

॥ दूहा ॥

वचन न लोप्यो ताहरो, मैं कीधो अभ्यास ।
हिव अनुमति द्यो मात जी, सही तजिस घर वास ॥१॥
जे दिन जावै व्रत पखै, पडै न लेखै तेह ।
हुं परदेसी हुइ रहस्यो, हिव स्यो करो सनेह ॥२॥
आजूणो दीसै तिको, कहै तिसी परि बात ।
तृण जिम माया परिहरी, छोडि चलेसी मात ॥३॥
मरता नइ जाता थका, राखि न सकै कोय ।
पिण जो भास न काढियै, तो मन डी भोहेय ॥४॥

ढाल–२३ समय गोयम म करिस प्रमाद, ए जाति

धीरज जीव धरै नही जी, उलट्यो विरह अथाह ।
छाती लागो फाटिवाजी, नयणे नीर प्रवाह रे जाया ॥१॥
तो विण घडी रे छमास,
सास वरस किम वोलस्यइ जी, जोवो हीयइ विमासि रे जाया ॥२॥
कुण कहस्यै मुझ माइडी जी, घडी घडी नै छेह ।
केहनै कहस्यु नान्हडो जी, सबल विमासण एह रे जाया ॥३॥तो०
हरखि न दीधो हालरो जी, बहू न पाडी पाइ ।
रे वाँझणि हुइ छूटिस्यइ जी, हूं किण ग्यान गिणाय ॥४॥जा०

गह पूरीत गिणती नही जी, हूँ किण ही ने ग्यान।
सिहरिण लाखीणो जणे जी, एको लोख समान रे ॥५॥जा०॥
धीरप देती जीव नें जी, तुझ नें देखि सधीर।
जिम तिम में वीसारयो हतो जी, मैं नणदल रो वीर रे ॥६॥जा०
भ्रात लूहण तूं माहरो जी, कालेजा नी कोर।
तूं वछ आधा लाकडी जी, किम हुवं कठन कठोर रे ॥७ जा०
चढती तुझ मुख जोइवा जी, दिहाडा मैं सोवार।
ते पिण भूंय भारण हुस्यें जी, कुण चढस्यें चोवार रे ॥८॥जा०
जो बालापण संभरे जी, सीयाला नी रात।
तो जामणि नें छोडिवा जो, सही न काढे वात रे ॥९॥जा०
बूढापणि सुखिणो हुस्युं जी, मोटि हुती भ्रास।
घर सूनो करि जाइ छे जो, माता मूंकि निराश रे ॥१०॥जा०
दीसें आज दयामणो जी, ए ताहरो परिवार।
सेवक नें सामी पखें जी, अवर कवण आधार रे ॥११॥जा०
महल क्वण रखवालस्ये जी, कवण करेसी सार।
एकणि जाया बाहिरो जी, सहु सूनो ससार रे ॥१२॥जा०
वछ तूं भोजन ने समें जी, हियडं बेसिस आय।
जो माता करि लेखवो जी, तो तुं छोडि मत जाय रे ॥१३॥जा०
साल तणी परि सालस्यें जी, ए तुझ आहीठाण।
प्राण हुस्ये ते प्राहुणा जी, भावें जाणि म जाणि रे ॥१४जा०
सुत विरह दुख मात नो जी, कहि न सकें कविराज।
नाणे पुत्र वियोगिणी जी, इम जंपे जिनराज रे ॥१५॥१५जा०

॥ दूहा ॥

सासू जी थाकी कही, हिव आपण नी वात।
कहिवो छै आपण वसु, करिवो छै पिउ हाथ ॥१॥
कहिवो ऊवरस्ये जिक्यु, जाणा छा निरधार।
पिण इण भवसर नारि नो, कहवानो विवहार ॥२॥

नेह गहेला मानवी, मूकी कुल आचार।
ते स्यु छै जे नवि कहै, वीछडवा नी वार ॥३॥
कवि जन जन मुख सांभली, जोडै वयण विचार।
पणि ए जो माहे वहै, जाणे तेहिज सार ॥४॥

ढाल- २४ राग- आस्या धाहडी गोडो वाघारी भावन री जाति
पालव झालि इसु कहै रे, लोक चिहुं री साखि।
ए पिण छोरू छैमा बापना रे, छोडो अवगुण दाखि ॥१॥
नाहलीयै विलूधी ओलभा दियै रे, भामणि भरि भरि आखि।
नेहलीयैं गहेली संक न का करै रे, कहै माथा वडि नाखि ॥२नां
दूर न करतो निजर थी रे, तूं अह्म नै खिण मात।
आज चलै छे ऊभी मूकि नै रे, चूकै छे इण वात ॥३॥ना०॥
सीख करै वाटै मिल्या रे, वीछडवानी वार।
ते तो अह्म सुं सीख न का करी रे, अनवड जेम विचार ।४नां।
तै छान्या राख्या हुंता रे, पिण जाण्या लक्षण तेह।
मुह ऊपरली करतो तू सहु रे, पिण नवि धरतो नेह ॥५॥नां॥०
आप सवारथ चीतवी रे, छोड चल्यो निरधार।
देव न दीधो एक कूणु कडो रे, जे हुवै अह्म आधार ॥६॥ना०
आसा लूधां माणसां रे, वाधा वरस विहाइ।
आस किसी जमवारो गालस्यां रे ते द्यो कत बताइ ॥ ॥नां०॥
पहली संग न छोडतो रे, हिव दीठी न सुहाय।
तै दोषी जिम मेर चढाविने रे, धर नांखी धसकाय ॥८॥ना०॥
जीवदया मन मे वसी रे, तिण ल्यो सजम भार।
आरड़ती छोडो छो गोरडी रे, ए तुझ कवण आचार ।६॥ना०॥
पुरुष कठोर हृदय हुवै रे, लोक कहै ते न्याय।
तिल भरि भीजै पिण छीजै नही रे, लाख लोक कहजाइ ॥१०ना
घड़ै नवा भाजइ घडचा रे, रतने लावे खोड़ि।

दोषी देव न देखि सके रे, ए आपण नी जोड़ि ॥११॥नां०॥
वीज पडो जोसी तणी रे, पतड़ै उपरी काय।
जोडा वेडो करतो पातरथो रे, लोभे चित्त लगाय ॥१२॥ना०॥
घाट कमाई आपणी रे, अवर न दीजइ दोस।
पणि पडतो आलवन ले सहु रे, करै अवर सु रोस ॥१३ना०॥
वाणी श्री जिनराजनी रे, वसी जिहा रे चीत।
ते तो भोलाव्यो भूले नही रे, राखै अविहड़ प्रीति ॥१४॥ना०॥

॥ दूहा ॥

भामण विविध वचन सुणी, डोल्यो नही लगार।
कानकाचल डोलै नही, जो वाजै पवन हजार ॥१॥
एक मनो सपेखि नै, दीनी अनुमति मात।
सदा नीहोरो निबल नो, नै सवला नी लात ॥२॥
जेम जमाली सचरै, व्रत लेवानी खत।
तिण परि रिद्धि विस्तारि नै, सालिकुमर पिण जत ॥३॥
सालिभद्र घनै भणी, आपण पै जिनराज।
सै हथि व्रत देइ कहै, सारो आतम काज ॥४॥
ताम सुभद्रा पणि गहैं, पच्च महाव्रत भार।
धरम करम हिलि मिलि करै, ते विरला ससार ॥५॥

ढाल– २५ राग सोरठा. हंसला री जाति.

कर जोडी आगलि रही, लेइ परजन पासै रे।
दुख भरि छाती फाटती, भद्रा इण परि भासै रे ॥१॥क०॥
मै वछ थापण नी परै, आप्यो छै तुम्ह सारू रे।
कोडि जतन करि राखज्यो, मत घालो वीसारूं रे ॥२॥क०॥
तू कारो दीघो नथी, सहु को करतो जी जी रे।
तिण कारण जगजीवनै, हटक म देज्यो खीजी रे ॥३॥क०॥

तप करतो ए नान्हडो, मुझ पीहर वारेज्यो रे।
उन्हाले आतापना, नीरती करिवा देज्यो रे ॥४॥क०॥
मैं कालेजो माहरो, दीधो छै तुम्ह सारू रे।
जिम जाणो तिम राखिज्यो, कहिवानो आचारू रे ॥५॥क०॥
सीख किसी सपरीछता, कहतां हुवै अवहेला रे।
पणि मावीत सदा कहै, व्रत लेवानी वेला रे ॥६॥क०॥
तुं व्रत ले छै पालतां, पणि साचै मन पाली रे।
नान्हा मोटा व्रत तणा, दूषण सगला टाली रे ॥७॥क०॥
पूत पनोता सु थया, सजम लीधा माटे रे।
जे तप करि काया कसै, फलतो ते हिज खाटै रे ॥८॥क०॥
निस भरि त्रीजी पोरसी, सूतो तृण संथारै रे।
सेज सकोमल ते तजी, ते तूं मत्त संभारै रे ॥९॥क०॥
चोथो व्रत रखवालिजे, वाडि म भंजण देज्यो रे।
चवद सहस अणगार मे अधिकी सोभा लेज्यो रे ॥१०॥क०॥
पर घर जाता गोचरी, मत अभिमान धरेज्यो रे।
आप मुरादी मत रहै, गुरु नी सीख चलेज्यो रे ॥११॥क०॥
वच्छ काछलीयें जीमता, मन मै सूग न आणे रे।
मत तूं ओछो ऊतरै, साधु तणै सहिनाणै रे ॥१२॥क०॥
सीह पणै व्रत आदरी, सीहपणै आराधे रे।
सो बोलै इक बोल छै, आप सवारथ साधे रे ॥१३॥क०॥
इम सीखामण दे करी, भद्रा फिरि घरि आवै रे।
एक घडी पिण मात नै, वरसा सौ सम जावै रे ॥१४॥क०॥

॥ दूहा ॥

पर उपगारी परमगुरु, साधु तणै परिवार।
स जम समपी सालिनै, करै अनेथि विहार ॥१॥
सालि साधु चित चिंतवै, धन्य दीह मुझ आज।
निरदूषण व्रत पालि नै, सारूं आतम काज ॥२॥

श्रीजिनवर साथै करै, अप्रतिबंध विहार।
ग्रहणा नै आसेवना, सीखै शिक्षा च्यार ॥३॥
तप जप करि काया कसै, अरस विरस आहार।
सुमति गुप्ती नित साचवै,चरण करण आचार ॥४॥
गाम नगर पुर विहरता, राजगृही उद्यान।
भवसायर तारण तरण, समवसरया वर्धमान ॥५॥
पुत्र रतन आगम सुणी, हरखी भद्रा मात।
दीधी लाख वधामणी, कहि जिणै ए वात ॥६॥

ढाल- २६ राग-मल्हार प्रोहितीयानी जाति.

वे वे मुनिवर विहरण पांगुरया रे,लई श्री वीर कन्हा आदेश रे।
ए तन दुरजन विण भाडो दियइ रे, न खिसै पग भरि सदेस रे ।१वे.
मासखमण नो तुम्ह नै पारणो रे, वच्छ थासै माइडी केरै हाथि रे
इण परि चवद सहस अणगार मे,सै मुख भाखै श्री जिनराज रे ॥२
तप जप खप करि काया सोखवी रे,तिम वलि अरस विरस आहार रे।
वर आव्या पिण किणही नवि ओलख्या रे,
ए कुण छै वे अणगार रे ॥३॥वे०॥
जिणवर आगम सामहणी सजै रे, भद्रा नंदन वंदन काज रे।
किण कारण भिक्षुक ऊभा तुम्हे रे,
भिक्षा नो अवसर नही आज रे ॥४॥वे०॥
साच वचन करिवा जिनराज नो रे,फिरि आव्या वलि बीजी वार रे।
तो पिण पैसण न दिया पोलियै रे,रोकी राख्या घर नै बार रे ।५वे०
इण घरि पैसण नवि को दियै रे, तो स्यो विहरण नो वेसास रे।
जिण घरि आउकार न आवताँ रे,
तिण घरि सी भोजन नी आस रे ॥६॥वे०॥
वचन अलीक न थाइ वीर नो रे,पैसणि पणि न लहाँ घर माँझि रे।
ए स्यु उखाणो साचउ थयो रे, इक माँहरी माँनै वाँझ रे ॥७॥वे०॥

तिण कुल साधु न पैसें पातरे रे, जिण घरि जातां हुवै अप्रीत रे ।
एम विमासी नें पाछा वल्या रे, एहिज सुविहित मुनिनी रीत रे ॥८वे.
हुंतो मासखमण नो पारणो रे, पिण मन डोलाव्यो न लिगार रे ।
अधिकेरो तप अणलाधाँ हुवै रे लाधें देही नें आधार रे ॥९॥वे०॥
वलतां मारग महीयारी मिली रे, माथा ऊपरि गोरस माट रे ।
थभाणी पग भर न सकें खिसी रे,
देखि सालिकुमर नो घाट रे ॥१०॥वे०॥
लोचन विकस्या तन मन उलस्यारे, रोमांचित थई देह रे ।
झरवा लागो खीर पयोहरे रे, जाग्यो पूरब भवनो नेह रे ॥११वे०॥
बहिरावै गोरस भावे चढी रे, वहिरी ने चिंते सुविनीत रे ।
कनकाचल चाले चालव्यो रे, न चले वीर वचन सुविदीत रे ॥१२वे
जगगुरु भासें स सो टालिवा रे, ए पिण पूरव भवनी मात रे ।
विरहण जातां आज कही हुँती रे,
मै पिण तुम्ह नें नीरती बात रे ॥१३॥वे०।
स गम नै भव हुँती माँडि नै रे, सगली बात कही जिनराज रे ।
सहु को मन अचरिज ऊपनो रे, करम तणा ए काज रे ॥१४॥वे०॥

॥ दूहा ॥

श्री जिनवर मुख साँभली, पूरब भव विरतत ।
सालि विचारै करम गति, इण परि साधु महत ॥१॥
वाछरुवा चारावतो, हु पाछलि दस वीस ।
इणि भवि किरीयाणो कीयो, श्रेणिक मगधाधीश ॥२॥
पाछलि मनसा खीर नी, पूरी, हुंती नीठ ।
निरमाइल घाल्यो कनक, इणि भवि सगले दीठ ॥३॥
भव पहिलकै पाहरतो, माँगी पर नी खोल ।
इण भव बहू ए पग लूही, नाख्या कबल सोल ॥४॥

ढाल-२७ राग-चौपाई नी.

कीधो मासखमरण पारणो, तनु आथाम जाणि आपणों।
आगलि करी श्री गौतम साम, ते पूछइ प्रभु अवसर पाम ॥१॥
जिण कारण भाडो दीजतो, हिव ते लाभ नथी दीसतो।
असनादिक चौविह आहार, तेह तणो करिवो परिहार ॥२॥
प्रभु भासै सुख थायै जेम, देवाणुपिय करिवो तेम।
तहत वचन करि वेऊ चल्या, गौतम सामि सखाइ मिल्या ॥३॥
मन वच काथाइं वसी करी, जे दूषण संजम आसरी।
लागा हुता ते सभार, आलोवै निंदे तिणवार ॥४॥
चौरासी लख जोनि खमावि, सबहू स्यु करि मैत्री भाव।
मन सुधि प्रणमी सयल जिनेश, धर्माचारिज वीर विशेष ॥५॥
अणसण ले पादपनी परै, इष्ट कंत काया परिहरै।
च्यार चतुर शरणा उचरै, आपणपै आपो ऊधरै ॥६॥
हिव धरती मन अधिकी जगीस, आगलि करि वहुयर वत्रीस।
भद्रा रिद्धि तणै विस्तार, समवशरण पहुती जिणवार ॥७॥
दे परदक्षण वीर जिणंद, वादथा अवर मुनीसर वृंद।
नयण न देखै साल महत, कर जोडी पूछै भगवंत ॥८॥
चढि वैभार गिखर मुनिराय, आदरि अणसण छोडी काय।
प्रभु मुख एह वचन साभली, भद्रा माता धरणी ढली ॥९॥
विविध विलाप तिसी परि कीया, जिण फाटे विरहातुर हीया।
साथे वहुले गिरिवर चढी, पोढथो, सुत देखी आरडी ॥१०॥
साथि श्रेणिक अभयकुमार, ते समझावै वारोवार।
गणियै तासु जन्म सुकयत्थ, जे व्रत धर साधे परमत्थ ॥११॥

॥ दूहा ॥

पेखि सिलापट ऊपरै, पोढयौ पुत्र रतन्न।
हीयड़ा जो तूं फाटतो, तो जाणति धन धन्न ॥१॥

रे हीयडा तु अति निठुर, अवर न ताहरी जोड।
इवडे विरह न विहसतो, जतन करे लख कोड ॥२॥
हीयडा तू इरण अवसरे जो होवत सत खंड।
तो जारणत हेजालूयो, बीजउ सहु पाखड ॥३॥
मुझ हीयडो गिरि सिल थकी, कठन कीयो करतार।
घरण घाए विरहा तरणे, भेदथो नही लिगार ॥४॥

ढाल २८- राग केदारो काची कली अनार की रे हां ए जाति

इतला दिन हु जारणती रे हाँ, मिलस्यै बार बे च्यार मेरे नदन।
हिव वच्छ मेलो दोहिलो रे हा, जीवन प्राण आधार मेरे० ॥१॥
माइडी नयरण निहारिने रे हाँ, बोलो बोल बि च्यार मेरे०।
अरणबोल्याँ इरणवार मे रे हाँ, थाये केम करार मेरे० ॥२॥
इरण अवसर ना बोलडा रे हाँ, जे बोलिस दस वीस मेरे०।
ते मुझ आलबन हुस्यै रे हा, स भारिस निस दीस मेरे० ॥३॥
तप करतो गिरणतो नही रे हाँ, काया नो लवलेश मेरे०।
सैगू मारणस आविने रे हा, इम कहिताँ स देश मेरे० ॥४॥
परण हू साच न मानती रे हाँ, बैठोते हिज देह मेरे०।
पजररूप निहारिने रे हाँ, साच मानु हिव तेह मेरे नं० ॥५॥
भूख खमी सकतो नही रे हाँ, तिरस न सहतो तेम मेरे न०।
मासखमरण पारणी पखे रे हाँ, तें कीधा छे केम मेरे न० ॥६॥
सुरतरु फल आस्वादतो रे हाँ, अन्ना तरणउ आचार मेरे०।
तेइ किम कीधा पाररणइ रे हाँ, अरस विरस आहार मेरे० ॥७॥
हाथे उछेरथो हतो रे हाँ, लहती ताहरी ढाल मेरे०।
कहिने स्यु छानो हतो रे हा, मा हु तो मोसाल मेरे० ॥८॥
व्रत लेतें छाडी हुती, रे हा, तें जामरण निरधार मेरे०।
हिवरणाँ वलि अरणबोलवे रे हाँ, खत ऊपर द्यै खार मेरे० ॥९॥
चलतो इरण गामतरे रे हा, लावो द्यै छै छेह मेरे०।

थास्यौ जन्मान्तर हिवै रे हां, हम तुम नवल सनेह मेरे० ॥१०॥
पाछलि वीतिक वीचस्यै रे हाँ, जाँणइलो करतार मेरे०
जिम तिम रोवता वउलस्यै रे हा, ए सारी जमवार मेरे० ॥११॥
इण डुंगर चढवा तणी रे हाँ, आज पडै छै सीम मेरे० ।
हाड़ी ल्यावै पखीया रे हाँ, तो मत भाजो नीम मेरे० ॥१२॥
घर आवी पाछा वाल्या रे हाँ, जगम सुरतरु जेम मेरे०
ए दुख विसरस्यइ नही रे हाँ, हिव कहो कीजै केम मेरे० ॥१३॥
एकरस्यो घर आँगणै रे हाँ, सैहथ प्रतिलाभत मेरे० ।
लाधो नरभव आपणो रे हाँ, तो हु सफल गिणत मेरे० ॥१४॥
आजूणै अणवोलणै रे हाँ, भलो न कहस्यै कोइ मेरे० ।
पहिड़ै पेट जो आपणो रे हाँ, नो कलि उथलो होय मेरे० ॥१५॥
ए साजण मेलावडो रे हाँ, ते जाण्यु सहु कूड मेरे० ।
हिव लालच कीजइ किसो रे हाँ, आप मूआँ जग वूड मेरे० ॥१६॥
ते विरहीजन जाणस्ये रे हाँ, वीतक दुखनी वात मेरे० ।
नेहे भेदाणी हुस्यै रे हाँ, जेहनी साते धात मेरे० ॥१७॥
आसा लूधाँ माणसा रे हाँ, जमवारो किम जाय मेरे० ।
दैव निरास कियाँ पछै रे हां, पापी मरण न थाय मेरे० ॥१८॥
हुं पापण सिरजी अछुं रे हाँ, दुख सहिवा ने काज मेरे० ।
दुखिया नै ऊतावलो रे हा, मरण न द्यै महाराज मेरे० ॥१९॥
मीठा वोल म बोलज्यो रे हाँ, मत करज्यो का सीख मेरे० ।
नयण नीहालो नान्हडा रे हाँ, जिम पाछी द्यु वीख मेरे० ॥२०॥

॥ दूहा ॥

माता विविध वचन कहथा, धरती निवड़ सनेह ।
पिण समतारस झीलतै, नाणी मन मे तेह ॥१॥
भामिणी वत्तीसे मिली, कीधा कोडि विलाप ।
पण नायो मन ढूकडो, तसु विरहानल ताप ॥२॥

सं० १६८१ में शालिवाहन चित्रित शालिभद्र चौपई
के आदिपत्र में श्री जिनराजसूरि जी

पं० लावण्यकीर्ति गणि व सा० भारमल्ल राजपाल

ढाल- २६- राग-धन्यासी

इण अवसर श्रेणिक परचावै, भद्रा फिरि घर आवै जी।
पडलाभी न सकी प्रस्तावै, तिण गाढी पछतावै जी ॥१॥
सालिभद्र धन्नउ रिषिरोया, तासु नमु नित पाया जी।
जे तप जप खप कसि करि काया, सूवा साधु कहाया जी ॥२॥सा०॥
नान्हा मोटा दूषण टाली, कलमल पक पखाली जी।
चरम समय जिणवर सभाली, सूधो अणसण पाली जी ॥३॥सा०॥
बार वरस सजम आराधी, आप सवारथ साधी जी।
सुरगति करम निकाचित बाधी, सरवारथ सिद्धि लाधी जी ॥४॥सा०
सुर सारै सुर भवन विचालै, पिण नवि नाथ निहालै जी।
पोता नो वोल्यो संभालै, हरखित हुवै तिण काले जी ॥५॥सा०॥
सरवारथ सिद्ध हूती चविस्यै, मुनिवर नर भव लहिस्यै जी।
महाविदेहे व्रत आदरिस्यै, अविचल शिवसुख लहिस्यै जी ।६।सा०।
परतखि दान तणा फल जाणी, भाव अधिक मन आणी जी।
अढलक दान समापो प्राणी, ए श्री जिनवर वाणी जी ॥७॥सा०॥
साधु चरित कहिवा मन तरसै, तिण ए भास्यौ हरसै जी।
सोलह सइ अठहत्तरि (१६७८) वरसै, आसू बदि छठि दिवसै जी ।८सा०
श्री 'जिनसिंहसूरि' सीस मतिसारै, भवियण नै उपगारै जी।
श्री 'जिनराज' बचन अनुसारै, चरित कह्यौ सुविचारै जी ।६ सा०॥
इणि परि साधु तणा गुण गावै, जे भवियण मन भावै जी।
अलिय विघन सवि दूर पुलावै, मन वछित फल पावै जी ।१०।सा०
एह सबध भविक जे भणस्यै, एक मना साँभलिस्यै जी।
दुख दोहग ते दूरइ गमस्यै, मन वंछित फल लहिस्यै जी ॥११॥सा०॥

इति श्री दान विषये शालिभद्र धन्ना चोपई संपूर्णम्

॥ श्री गजसुकमाल महामुनि चौपई ॥

॥ दूहा ॥

नेमीसर जिनवर तरणा, चरण कमल पणमेवि ।
साधु साधु गुण गावतां, सांनिधि करि श्रुतदेवि ॥१॥
सूधउ मारग उपदिसइ, पालइ विसवा वीस ।
दूसम कालइ तउ मिलइ, जउ मेलइ जगदीश ॥२॥
हुआ अपूरव पूरवइ, चारितधर चउसाल ।
गातां जिम तिम गुण हुवइ, जातां जिम सउ* साल ॥३॥
कहइ केवली केवली, स्युं न कहइ ए सार ।
साधु धरम दस विधि तहा, क्षमा तणइ अधिकार ॥४॥
सोहम वचन हियइ धरी, गजसुकमाल चरित्र ।
कहिवा मुझ मन अलजयउ, करिवा जनम पवित्र ॥५॥
तास प्रसग अनीक जस, प्रमुख चरित हितकार ।
चतुर चतुर ×संगइ मिलो, सुणउ+ भणउ मतिसार ॥६॥
सरस वचन तेहवा न छइ, पिण सरस चरित्र छइ तास ।
साकर मेलवणी÷ पखइ, स्युं न धरइ मिठास ॥७॥

ढाल १ राग–रामगिरी चौपई, मगध देश श्रेणिक भूपाल एहनी

भरतक्षेत्र नयरी द्वारिका । धनद आप थापी छइ जिका ।
गढ मढ मदिर पोल प्राकार । जोतां अलकापुरि अवतार ॥१॥
नवमउ वासुदेव वसुदेव । नदन कृष्ण करइ जग सेव
सलहीजइ जामणि देवकी । जासु भली जग माहेवकी ॥२॥
कोट माहे छप्पन कुल कोडि । यादव बाहिर बहुत्तर कोडि‡ ।

---

* मुहसाल ×विधि सग +भणउ गुणउ ÷केलवणी परे पखे ‡जोडि

राजनीति पालइ राजवी । कुविसन पिण टालइ लाजवी ॥३॥
एक एक हुँती आगला । साहसीक नर रण वावला ।
यादव कुमर खरा मछरसल । तृणइ पडथइ पिण ऊठइ झाल ॥४॥
जासु चिहुँ मइ सोभा घणी । साडी सुहड़ विरुदना घणी ।
परत वह इण* मुख भाजणी । अवर नारि जाणइ माजणी ॥५॥
रहइ राति दिन मद भीमला । जाणइ कोक भरतनी कला ।
पिण परनारि सहोदर जेह । काछ वाच निकलंक निरेह ॥६॥
भोग पुरदर लील विलास । घरणी सूं राखइ इकलास ।
विषय जलधि हेलइ जे तरइ । छयल पुरुष को नवि छेतरइ ॥७॥
भोगी भमर कुमर दुरदंत । ते सोभइ मन सूं एकंत ।
हरि हुरमती राखइ विघटती । कीजइ छइ गाढी *अघटती ॥८॥
वात सहु पोतानी करइ । न करइ पर निंदा पातरइ ।
सीखामणि द्यइ एकण वार । वलती को न करई ×नाकार ॥९॥
लाजवंत अलविन को लड़इ । कुवण चढइ चावइ +चउतरइ ।
न हुवइ केहनइ माथइ दंड । प्रसादा सिर दीसइ दंड ॥१०॥
करइ अनीति न बध न पडइ । बंधन केस पास नइ जुडइ ।
दीसइ बाजीगर माडीयउ । राजभुवन नवि को चाडीयउ ॥११॥
वधतउ माहोमाहि सनेह । दीवइ दीसइ घटतउ नेह ।
गुण ना चोर न धनना चोर । मन ना चोर वसइ छइ जोर ॥१२॥
थोडइ थोडइ धन एकठउ । मेली नइ खरचइ सामठउ ।
आठ पहुर घरि दय-दय कार । अलवइ को न करइ नाकार ॥१३॥
सतवादी नर सारइ दीस । गिण्या बोल बोलइ दसवीस ।
पडथइ कसइन बोलइ भूठ । पडइ साख जेहनी पर पूठ ॥१४॥
पर दूषण न कहइ गुण ग्रहइ । तीन तत्व सूधा सरदहइ ।
कोइ न लोपइ हरिनी कार । उत्तम यादव नउ परिवार ॥१५॥

[सर्व गाथा २२]

*रण *विघघति ×कणवार +चउतड़इ

॥ दूहा ॥

गामागर पुर विचरता, निरमम निरहंकार।
नेमि जिणंद समोसर्या, साधु तणइ परिवार ॥१॥
साथे गणधर केवलि, चौदह पूर्व धार।
चौनाणी तप आगला, लब्धि तणा भण्डार ॥२॥
छट्ठ *छट्ठनइ पारणइ, आँबिल उज्झित आहार।
रसना वसि करि जनम लगि, विगइ तणउ परिहार ॥३॥
ऊच नीच कुल गोचरी, केवल सीतल अन्न।
मोन व्रत कारणइ पखइ, कै प्रतिमा प्रतिपन्न ॥४॥
पहर सात लगि काउसगि, चारित निरतीचार।
पहर एक मइ साचवइ, नीआवि आहार× ॥५॥
नव दीक्षित साथइ हुता, कचण कोमल गात्र।
छए अनीक जसा प्रमुख, मुनिवर चारित पात्र ॥६॥
विविध+ अभिग्रहना धणी, सूधा साधु महंत।
एक एक हुती अधिक, जे गछआ गुणवंत ॥७॥

सर्व गाथा २६

ढाल २ राग-केदारा गउडी, नमणी खमणी नइ मन गमणी एहनी

पहिली पोरसि सूत्र सभारी। बीजी पोरसि अरथ विचारी।
जाणी त्रीजी पोरसि लागी। वसि वेदनी क्षुधा पिण जागी ॥१॥
सलहीजइ संजम जग सारइ। तेतउ देह तणइ आधारइ।
ते पिण न चलइ विण आहारइ। भाडउ देवउ ते आचारइ ॥२॥
इण परि सुध भावन भावी। साधु छए प्रभु पासइ आवी।
करि आवसही त्रिहु संघाडे। विरहण पहुचइ ते त्रिहु पाड़े ॥३॥

---

* अट्ठंनइ ×ना आगम व्यवहार +त्रिविध

दूषण भूषण* बइतालीसे। जे ×सवि जाणइ विसवावीसे।
ते आहार भमर जिम ग्रहता। श्री वासुदेव तणइ घरि पहुता ॥४॥
देखि सरूप कीया देवकीयइ। दीठा बे मुनिवर देवकीयइ।
सात आठ पग साम्ही जाई। करि प्रणाम देवकनी जाई ॥५॥
मुझ घर आगण पावन कीधउ। जगम +सुरतरु जो पग दीधउ।
पेखी पात्र चढी सुभ भावइ। थाल भरी मादक विहरावइ ॥६॥
पडिलाभो मुख साम्हउ जोवइ। सारउ तनु रोम चित होवइ।
जोताँ तिम लोचन थभाणा। पाछा ले न सकइ लोभाणा ॥७॥
चचल चित ते पिण अटकाणउ। नेह—नवल तिण क्यु न कहाणउ
लाग गई इणि परिका ताली। जॉणे चित्र लिखित पचाली ॥८॥
वलि बीजउ सघाडउ आवइ। पिण अंतर तिल तुस न जणावइ।
आगलि भोजन घरि पाउधारउ। महिर करी मुझनइ निस्तारउ ।९
इण घरि‡ देवानी मति जागइ। तउ किणही बातइ दोष न लगाइ।
घरि बिमणो उलट निज अंगइ। पडिलाभइ मोदक मन रगइ ॥१०॥
पाणी §खलि पिण न पडथउ आडउ। आव्य त्रीजउ पिण सघाडउ।
दीठा तिणी एकणि अनुहारइ। स्यु फिरि आव्या त्रीजी वारइ ॥११॥
आजूणउ दिन पडिस्यइ लेखइ। पडिलाभइ मोदक सुविसेषइ।
परभव नइ जे स बल संचइ। तेतउ देतउ हाथ न खंचइ ॥१२॥

सर्व गाथा ४१

॥ दूहा ॥

करइ तिसो खप विहरता, गिण गिण टालइ दोष।
पडइ न चलता पॉतरउ, लाधउ मारग घोख ॥१॥

---

*दूषित ×नवि +तीरथ —न चलि ‡परि देवीनी
§बलि

सावधान दीसइ तिमा, पगनउ तिसउ उपाड़ ।
सिवपुर ए पहुँचइ सुखइ, पडइ न वा विचि धाड ॥२॥
त्रिकरण सुद्धइ तेहवा, दीसइ उपसमवंत ।
गिण्यां दिनां माहे करइ, आठ करम नउ अंत ॥३॥
लालच किणही वातनउ, धरइ नहीं तिलभार ।
बार-वार नावइ फिरी, विण कारणि अणगार ॥४॥
[सर्व गाथा ४५]

ढाल-३ राग सोरठी* जाति मोरिय्यानी वीर वखांणि × ऐ देशी

देवकी मधुर वचने करीजी, वीनवइ वे कर जोडि ।
उत्तम पात्र पडिलाभीवाजी, कृपण पिण मन धरइ कोड़ि ॥१॥
साधु जी भलइ पधारियाजी, जीवित जनम प्रमाण ।
सुकृतनी आज जागी दसाजी, आज ऊगउ भलइ भाण ॥२॥ स०
अयन अलिकापुरी द्वारिकाजी, कनकमइ नवल प्राकार ।
पार दीसइ न को रिद्धि नउजी, लोक मुदि मुदित दातार ॥३॥स०
अतिथि आवी चढइ वारणइजी, जेतला राति दिन सीम ।
पोषीयइ नव नवे भोजने जी, केवहइ एहवउ नीम ॥४॥स०
पारकउ दुक्ख देखि केतला जी, आप न खमी सकइ जेह ।
वातनी वात माहे सहुजी, आथि ऊपाडि द्यइ तेह ॥५॥स०॥
हुंति अणहुंति न मिटइ लिखीजी, पिण न कोकरइ नाकार ।
केइ धरणी भणी घर विवइ जी, एहवी सीख द्यइ सार ॥६॥स०॥
पात्र घरि आवि पाछउ वलइजी, के कहइ ए वड़ी खोड़ि ।
दान देन को त्रोटइ पड़थउजी, कृपण जोडइ न को कोड़ि ॥७॥स०॥
विरूद केह वहइ एहवउ जी, दीजियइ जा लगइ होइ ।
आथि साथइ न को ले गयउजी, ले न जासी वली कोइ ॥८॥

---

*धन्याश्री ×वीर वांदि चलतां थका जी

आज चउथउ अरउ द्वारिका जी, माहि सत पीढिया साह।
साहरइ जे दुनी डोलती जी, सहस लगि पउलि प्रवाह ॥६॥स०॥
परवदिन पौषध अनुसरइजी, साधुनउ जउ जुडइ योग।
बारमउ व्रत पिण पारणइजी, साचवइ श्रावक लोक ॥१०॥स०॥
वात छइ अचरिज सारिखीजी, माहरइ मन न समाइ।
स्वाद कहताँ न को ऊपजइजी, विण कहयाँ पिण न रहाइ ॥११स०
ऊंच कुल नीच कुल गोचरी जी, अरसनइ विरस आहार।
स्युं न मिलइ आया* फिरीजी, एकणि घरि त्रिह वार ॥१२॥स०॥

[सर्व गाथा ५७]

॥ दूहा ॥

माया काया कारिमी, स्वारथ नउ परिवार।
प्रतिबूधा बंधव छए, जिनवर बचन विचार ॥१॥
छठ× छठनइ पारणइ, लेई प्रभु आदेस।
जावाँ पाडे जू जूए, कीधउ नगर प्रवेस ॥२॥
जाणां छाँ आव्या हुस्यइ, पहिली मुनिवर च्यार।
थोडइ थोडइ आंतरइ, तो पिण इण अणुहार ॥३॥
जिण अम्ह न दीठा हुस्यइ, हरि करि वार हजार।
प्रायइ ते पिण पांतरइ, बोलाचण री वार ॥४॥
आज इहाँ भिक्षा सुलभ, सहु को लोक समृद्ध।
अरस विरस आहार ल्यइ, साधु न को रसगृद्ध ॥५॥

[सर्व गाथा ६२]

*पधारथा वलीजी ×छए

ढाल–४ मोमल* 'रउ' हेड़ाऊहो मिश्री ठाकुर मांहिंदरी
पहनी जाति

नयण निहालइ हो हरि करि, देवकी ते वेवे अणगार।
रूप रूप ×महो हो आनोपम संपदा,कहतां नावइ पार ॥१त० आ०
निरख खमइ जे हो अनमिख जोवतां, लोचन तृपति न थाइ।
कमल कमल विकसइ होतन-मन उलसइ,अ तरगति न+लखाइ ।२
खोडि न का जोता हो मीटइ (नवि) चढइ,नख सिख सीम सरीर।
आपण पइ करतइ हो करणीगरइ, कान करो तकसीर ॥३॥
तप तपिवउ हो विच-विच आतापना, ल्यइ नीरस आहार।
पिण तिल भरि न घटइ हो तनु लवणिमा,देव कुमर अवतार ॥४न.
इण अनहारइ हो सारइ जगत्र मइ, नयण न दीठउ कोइ।
भाति पडी न वली हो वीवइ÷ पखइ, तिण मुझ अचरिज होइ ॥५
सोभागी पिण यादव हो भलभला, कंचण वरणी देह।
आख तलइ ते पिण आवइ नही, जउ दीठा हुवइ खेह‡ ॥६॥न०॥
रूप अवर अवसर मिटयौ पडयौ, जोवो पडिस्यै माइ।
आविल।ए पूरी न हुवै किमइ, आंवा तणी रुहाड़ि ॥७॥न०॥
समपण कोई हो नही पिण उलसइ, हियड़उ सगपण जेम।
मुझ नइ सूधी हो समझि$ न कां पडइ, इम किम प्रगटइ प्रेम ॥८न०
श्रावक नउ हो चारित्रिया ऊपरइ, हुवइ छइ धरमसनेह।
आम न कईयइ को परवस §पड़इ, आवइ मन सदेह ॥९॥न०॥
मोहन मूरति हो जाइन मेल्हणी, नयण थया लयलीन।
चोल तणी परिजे हो रातउ अछइ,किम करिस्यइ मन मीन ॥१०न०
आपणपइ मन सूं आलोचतां, लागी खिण इकवार।
काम सरथइ स्यानइ हो ऊभा रहइ, नारि पास अणगार ॥११॥न०
सर्व गाथा ७२

---

*मोमन हेडाऊ, आज न वमाओ-ऐ जाति ×तणी हो निरुपम
+कहाइ ÷बीवै, वीजा, ‡तेह, ऐह $खबर §कहियइ

॥ दूहा ॥

करइ विमाणसण देवकी, हूँ बलिहारी ताह ।
भर जोवन माया तजी, सयम लीधउ जाह ॥१॥
एकणि नालइ जनमिया, जिण ए पुत्र रतन्न ।
रतन जनेता सलहीयइ, ते जामिण धन धन्न ॥२॥
अनुमति देता व्रत समय, किम वूही छइ जीह ।
जामिणी ए जायाँ पखइ, किम नीगमस्यइ दीह ॥३॥
इण गति इण मति इण उगति, इण छवि इण अणुहार ।
जउ क्युं छइ तउ हरि अछइ, बलि जाणइ करतार ॥४॥

सर्व गाथा ७६

ढाल–५ हंसलानी*

साधु बचन विघटइ नही, वेसास सहूनइ पूगइ रे ।
पूरव सूरज ऊगतउ, ते पिण पछिम ऊगइ रे ॥१॥सा०॥
अमृत हालाहल हुवइ, ससिधर वरसइ अगारो रे ।
सुरतरु वछित आपतउ, विरचइ केहनइ वारो रे ॥२॥सा०॥
कवण गुहिर सायर समउ, तो× पिण मरयादा मूकइ रे ।
कामगवी घरि दूझनी, ते करम विसेषइ सूकइ रे ॥३॥सा०॥
सुरगिरी थिरि सिर सेहरउ, ते पिण डोलायउ डोलइ रे ।
पिण धरतो न 'पडिइ' किमइ, अलवइ जे मुनिवर बोलइ रे ॥४सा०
अइमत्तउ अतिसय निलउ, सहुना सदेह हरतउ रे ।
पुर पोलास समोसरथउ, जगम तीरथ जयवंतउ रे ॥५॥सा०॥
मुनिवर नइ मीटइ पडी, बालापणि वाली भोली रे ।
घरि आगणि, रमती छती, साथइ ले सहोयर टोली रे ॥६॥सा०॥
नील कमल दल सामला, आठे एकणि अकारइ रे ।
कुलदीपक सुत थाइसी, नल कूब्बर अणुहारी रे ॥७॥सा०
क्षेत्र भरत मइ तेहवा, जणस्यइ का अवर न नारी रे ।

*हासला री, कर जोडि आगलि रही—ऐ देशी × ते

विरण पूछ्यां मुनिवर कहयउ, पोतइ मन सु निरधारी रे ॥८॥ स०
एक कान्ह मइ जनमीयउ रिपिजी भाखयउ॰ अहिनाणो रे।
जोता ताम पटंतरउ, को नवि दीसइ राउ राणो रे ॥६॥सा०॥
पुत्र छए जिण जनमिया, तेनउ छइ नारि अनेरी रे।
साधु वचन × हुयइ वृथा, मुझनइ परतीति घणेरी रे ॥१०॥सा०॥
नेइ नवल तिम ऊलमइ, तिण परि नेदाणा मीजो रे।
ए हरि वचन हू कहुँ,न हुवइ जउ जामिणि वाजी रे ॥११॥सा०॥
सर्व गाथा ८७

॥ दूहा ॥

करता एम विचारणा, वउली घडी त्रि च्यारि।
समवसरयउ प्रभु सभरयउ, संसय भजणहार ॥१॥
ससय तिमिर +करणइर, केवल किरण पहाणु।
भविक कमल प्रतिबोधिवा, ऊगउ अभिनव भाणु ॥२॥
चाली सइ मुखि पूछिवा, खरी आणि मन खति।
श्री जिनराज मिल्या पखइ, किम भाजइ मन भ्रति ॥३॥
च्यारे अभिगम साचवी, वधतइ मन परिणाम।
परदक्षिण देती करइ, इण परि प्रभु गुण ग्राम ॥४॥
सर्व गाथा ६१

ढाल ६ जीगानी जाति

वाल्हेसर सिवादेवी केरउ नद,
दीठउ हे दीठउ सजल जलद समउ— सामलियो नेमि --ध्रां०
सोभागी राजुल भरतार,
मोहन हे मोहन मूरति नितु॰ नमउ ॥सा०॥
तुम्हे गावउ हे गावउ मन धरि प्रेम,
जेम न हे जेम न भव सायर भमउ ॥१॥सा०

---

*भाषित ×न हुवै मृषा +निकर हरण —भरयो

चिरजीवउ गिरधरजी नउ वीर भेटया हे भेटया आस सहु फली ।
अतुली बल साचउ अरिहंत,जीतउ हे जीतउ मोह महाबली ॥२ सा०
वूठउ आज अमीमय मेह,अम्ह घरि रे अम्ह घरि आज वधामणा ।
भावइ भोली नयण निहालि, भामिणि लेती भामणा ॥३॥सा०॥
जय जय जग जीवन जिनचंद, जादव हे जादव कुल सिर सेहरउ ।
मुगति रमणि उर नवसरहार जगम हे जगम सोहग देहरउ ॥४ सा०
बलिहारी वार हजार, अनूपम हे अनूपम नख सिख ऊपरइ ॥सा०॥
जिनवर चरण कमल लयलीण,
मोमन हे मोमन मधुकरनी परइ ।५॥सा०॥
मन घरि भाव भगति भरपूर, गावइ हे गावइ तुझ गुण अपछरा ।
आपइ वलि विचि विचि आसीस,
जीवउ हे जीवउ कोडि संवच्छरा ॥६॥सा०॥
लागउ चोल तणी परि रंग,बीजउ हे बीजउ चित न को चडइ ॥सा.
करि सुरतरु संगति परिहार,
कावलि हे कावलि आंबलि सूं अडइ ।७॥सा०॥
कावलि सू खनि खावा जाइ, मेवा हे मेवा मन गमता लही ।.सा०॥
मद वहतउ गइ घर वार, वेसर हे वेसर मन मानइ नही ॥८सा०
सिर घरि परम पुरुषनी आण,
जमची हेजमची आण न को वहइ ।.सा०।
करगत कोडि कनकची छोडि,
काचउ हे काचउ लोह न को ग्रहइ ।९॥सा०॥
हे लवीयउ हीयडउ हो रेह तेतउ हे तेतउ फिटक नरइ करइ ॥सा०।
काच सकल किम आवइ दाइ,
जोता हे जोता पाच पटतरइ ॥१०॥सा०॥
देव कुमर घरती धसकाइ *सूकड हे सूकड ×हेंक चढावीयइ ॥सा.

---

*स्पृ कढि ×रोंक

सफलकरण मानव अवतार,
इणपरि हे इण परि भावन भावीयइ ॥११॥सा०॥
सर्व गाथा १०२

॥ दूहा ॥

आगलि आवी साचवी, त्रिकरण मुद्र प्रणाम।
वे कर जोडि पूछिवा, जगगुरु भासइ ताम ॥१॥
आव्या हुँता विहरवा, मुनिवर निरखी तेह।
रोम रोम तनु उलसइ, जाग्यउ नवल सनेह ॥२॥
नारि अवर सावति थई, जिण जाया सुत एह।
साधु वचन पिण (न) हुवइ मृषा,मन मइ* थयउ मदेह ॥३॥
ते तू आवी पूछिवा, एस× अत्थ समरत्थ।
हंता भासइ देवकी, कहउ हिरइ परमत्थ ॥४॥
वइठी वारह परखदा, भासइ इम भगवंत।
अलवि अलीक न उचरइ, अतिसय वत महंत ॥५॥
सर्व गाथा १०७

ढाल-७ यतिनी

भद्दिलपुर रिद्धि समृद्ध। तिहा नाग घरणि सुप्रसिद्ध।
कोसीसा कलस विचालइ। सुलसा निरदूषण पालइ ॥१॥
भावी सुभ असुभ विचारइ। जे सामुद्रकअणु सारइ।
देखी तनु लक्षण वीथी। वहतइ इम वात कही थी ॥२॥
संतान सही सूं थासी। पिण माछि+ छता मरि जासी।
भावी सूं जोर न चालइ। ते वोल अहोनिसि सालइ ॥३॥
सतान पखइ ससारी। दिलगीर हुवइ नर नारी।

---

*इम ×एम, ए सह्व +मांहि

सुलसा सिर धूणी सोचइ । इण परि मन सू आलोचइ ॥४॥
बालक घरि माहि* न दीसइ । रिद्धि देखी न हयउ' हीसइ ।
नाची पग साम्हउ जोवइ । जिम मोर नयण भरि रोवइ ॥५॥
पाछलि जउ एक नमूनउ । न हुवइ तउ सहु जग सूनउ ।
जायइ पाखइ कुण राखइ । मुलकति सहुकोनी साखइ ॥६॥
आगलि अ गज जउ हालइ । सहु दुख विसारी घालइ ।
वसती जिण जायइ थायइ । जामिणो वसती कहइ न्यायइ ॥७॥

॥ दूहा ॥

जिनवर वचन विचारता, निश्चय नइ व्यवहार ।
ओछउ (नइ) अधिकउ नही, नय बिहुँ माहि लिगार ॥८॥
भावी मेटि न को सकइ, ए निश्चय नय सार ।
जे उद्यम मूकइ नही, ते राखइ व्यवहार ॥९॥
एकण भावी ऊपरइ, वइसी न रहइ कोइ ।
पहिली उद्यम आदरइ, तउ भावी फल होइ ॥१॥
पडथउ अछइ निश्चय घणो, वाते विसवावीस ।
तउ पिण उद्यम पडिवजइ, आपण पइ जगदीस ॥११॥

॥ यति ॥

सोहमपति सेवक धूनउ । पायक दल माहि न मूनउ ।
गुण ग्राहक परउपगारी । सुरवर सुध समकित धारी ॥१२॥
मद मच्छर माया छाडी । पहिरी जल भीनी साडी ।
मन सुध तसु सेवा सारइ । सुलसा निज कुल अणुसारइ ॥१३॥
ऊभा सहु कारिज मूकइ । ते वेला किमही न चूकइ ।
दिन प्रति नव नेवज चाढइ । तउ घर बाहिर पग काढइ ॥१४॥
सेवा करतां अंटकाणी । मुह माहि न घालइ पाणी ।
साची सेवा विधि जाणी । कारिज सिद्धनी सहिनाणी ॥१५॥

---

*माझि

तिल भरि नवि माहे वाक, दूषण न लगावइ टाक ।
इण परि सुर सतोपाणउ, पिण एकण वोल लजाणउ ॥१६॥
फलती दीसइ नही आसा । भूठी किम थाइ दिलासा ।
घेड़इ लागो ते केडउ । किम मूकइ एह कुहेडउ ॥१७॥
छूटई कुण भावी आगइ । उद्यम पिण करिवउ लागइ ।
सोहम सुरलोक निवासी । आपणपइ आप विमासी ॥१८॥

सर्व गाथा १२५

॥ दूहा ॥

तूं नइ सुलसा करमगति, सुर सान्निवि आवान ।
अवसर एकणि जिम धरउ, तिम प्रसवउ सतान ॥१॥
करइ कस जे कल-विकल, फलइ न तिल भर तेह ।
मारथा ते न मरइ किमइ चरम देहधर जेह ॥२॥
जउ साहिव राखण करइ, तउ मारी न सकइ कोइ ।
वाल न वाकउ करि सकइ, जउ जग वयरी होइ ॥३॥
नल कूबर सम सलहीयइ, रूपवत धरि लीह ।
जात मात्र सुर स ग्रही, अनुक्रमो थए अवीह ॥४॥
अ गज तुझ आगलि धरी, पूरइ जासु उमेद ।
तास धरइ तुझ आगलइ, पिण को न लहइ भेद ॥५॥

सर्व गाथा १३०

ढाल ८ अेवे मुनिवर विहरण पांगुरया रे—एहनी

स तोषी इण परि सुलसा भणी रे । निज थानक सुरवर ते जाय रे ।
करम निकाचित को टालइ नही रे ।
तउ पिण सीझइ दाय उपाय रे ॥१॥स ०॥
गरभ समइ छतइ पूरइ हुयइ रे । सुलसा जनमइ मूआ बाल रे ।

सुर निज वाणी साच करण भणी रे।
तिण ठाँमइ आवइ ततकाल रे।२॥सा०
इम अनुक्रम बालक निरजीवते रे। आँणी आँणी मूकइ पास रे।
पिण तू भेद न जाणइ देवकी रे।
देव सगति तिहाँ किसी विमासि रे ॥३॥स०
तुझ अ गज रस मित हरि सारिखा रे।
सुलसा पासइ मूकइ तेह रे।
निज सुर* तरूनी परि पालइ सदा रे।
तिल भरि ओछउ नही सनेह ॥४॥सं०
तिण ए सवि × अ गज सुलसा तणा रे। नदन तुझ जाणे निरधार रे।
नयण जणावइ नेह तिणइ घणउ रे।
अधिकउ मोह करम अधिकार रे ॥५॥स०
श्री नेमीसर वचन इसा सुणी रे।
उलसइ (तिण) निज अ ग अपार रे।
पान्हा हु ती प्रगटइ पयतणी रे।
तिण अवसरि बत्रीसे धार रे ॥६॥स०
लोचन विकसइ कचुक उकसइ रे। बलियाँ माँहि न मावइ बाँह रे।
हरखइ रोमचित काया थई रे।
दूरि टल्यउ सगलउ दुख दाह रे॥७॥स०
जाँण्याँ पाखइ पिणजउ अति घणउ रे।
तिण अवसरि तसु हु तउ नेह रे।
अचरिज स्यउ थायइ जाण्या पछइ+ रे।
अधिकउ दूर टल्यउ सदेह रे ॥८॥स०
अनमिष लोचन ते सुत— देखिवइ रे।
जाण्यउ सफल जनम मुझ आज रे।

---

*सुतनी ×नवि अ गज +पाखइ —तसु

सांमल वरण छए हरि सारिखा रे।
धन-वन सारथा आतम काज रे ॥९म०
श्रीनेमीसर चरण कमल नमी रे। भाव सहित वलि वदी तेह रे।
मन न वलइ पाछउ वलतां छता* रे ।
सुत दीठां तिण अधिक सनेह रे ॥१०॥स०
चित चितइ मारग धिरती थकी रे।
प्रभु जपी अचरिजनी वात रे।
लोकालोक प्रकासन नउ कहयउ रे।
नवि विघटइ किण (विधि) तिल मातरे ॥११॥स०
हरि आवइ भावइ मन भावना रे गुण गावई प्रभुना सभारि रे।
मन अ दोह घणउ सुत विरहनउ रे।
अ तर लागइ जिम असि धारि रे ॥१२॥स०

सर्व गाथा १४२

॥ दूहा ॥

इतला दिन जाण्या नही, तिण न हुतउ मुझ राग।
प्रेम जलधि दुत्तर हिवइ अधिकउ एह अथाग ॥१॥
हिव ए दुख किण नइ कहुँ, लोक माहि मुझ लाज।
कहतां वात वणइ नही, मुण्टि भली वछराज ॥२॥
राखी न सकी आंपणीx अ गज सरिखी आथ।
मइ हिव माखो नी परइ, घस्यां सू होवइ हाथ ॥३॥

सर्व गाथा १४५

*थकां xपापिणी

ढाल-६ आप सवारथ जग सहु रे—एहनी

चिंतवइ गल हत्थइ दियइ, घूणिति विचि विचि सीस।
अवतार ए पिण माहरउ, मत पाडइ हो लेखइ जगदीस ॥१॥
ते जामणि जग सलहियइ रे, निज अ गज पोतानइ हाथि।
उछेरइ छाती कनइ रे, राखइ जिम हो दुरबल नी आथि ॥२॥ते०
खेलतउ खिणमइ विलकतउ*, मुरकतउ× मुक्ख लडेह।
जामणि अमीणे लोयणे, जोति होवइ हो रोमाञ्चित देह ॥३॥ते०
हुलरावती द्यइ हालरा, नव नवइ सरलइ साद।
माथइ ग्गिरी तेहनइ दलुं, जे देखी हो आणइ विषवाद।४॥ते०
रोतउ किमइ न रहइ तिसइ, कारिमी सी करि रीस।
हेल दे उलसतइ हियइ, धवरावइ हो जे धाइ बत्रीस ॥५॥ते०
दक्षिण पयोधर धावतउ, वामइ ठवइ निज पाणि।
अति हेजे खीर झरइ तरइ, अ गरखी हो बांधइ कस ताणि ॥६॥
सीखवउ+ बचने बोलवउ, लेले सहुना नाम।
दिन राति लाड करावति, हटकइ पिण हो हटकण री ठाम ॥७॥ते
मामणे वचने बोलतउ, हठ माडि साडी साहि।
हर काइ मागइ सूखडी, ते आपइ हो आणी घर माहि ॥८॥ते०
पद्मिनी ले पासइ सूयइ, भीनी दीसइ निज पूठि।
कोमल करि कमले करी, न्हवरावइ होजे प्रहसमऊठि ॥६॥ते०
न रहइ नजरि लागि पखइ, केहनी माहे छेह।
काठलि काली राखडि, जे बांधइ हो निगरण सु सनेह ॥१०॥ते०
उछाँछलउ ऊछहामणउ, वय देह करमी एह।
नाकनी टीसी ऊपरइ, काजलनी हो टीबी द्यइ जेह ॥११॥ते०

[सर्व गाथा १५६]

---

*खिलकतउ ×मुलकतउ +सीखवइ जामिण

॥ दूहा ॥

वइठी आंमण दूमणी, नयणे नीर झरंति ।
दुखणी देखो देवकी, हरि पूछइ एकंति ॥१॥
मइ माहरउ जाण्यउ न छइ, आज लगइ को चूक ।
लोही रेडुं हूं जिहा, पडइ तुहारउ थूक ॥२॥
जउ जाण्यउ हुवइ माहरउ, किणही वातइ वांक ।
सीख समापउ दाखवी, सी छोरू नो सांक ॥३॥
अलवि वचन लोपइ जिको, ते हू काढूं साहि ।
तुम्ह उपरांति* कह उस्युं अछइ, इण खोटइ जग माहि ॥४॥
दरसण करिवा आवतउ, हे× हे जइयइ इयइ तुझ तीर ।
हियडउ हेजइ विहसतउ,+ मो÷ हिवणइ दिलगीर ॥५॥
हूं इण भव इण देह धर, काइ‡ न लोपूं कार ।
तुम्हची आण वहूं सदा, ए मुझ अंगीकार ॥६॥

[सर्व गाथा १६२]

ढाल—१० घाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा एहनी

हूं तुझ आगलि सी कहुं कान्हइया,
वीतग दुखनी वात रे कान्हइया लाल ।
दुखणी तउ काका अछइ कान्हईया,
ते ऊमति हूं भाति रे कान्हईया लाल ॥१॥
कीधउ कोइ न संभरइ कान्हईया,
इण भवि करम कठोर रे कान्हईया लाल ।
जनमतर कीधा हुस्यइ कान्हइया,
मइ के पाप अघोर रे कान्हइया लाल ॥२॥
आज लगइ हूं जाणती कान्हइया,
पूरव करम विसेष रे कान्हइया लाल ।

*ऊपर होउस्युं ×हूं +हींसतउ ÷स्यइ ‡कोइ

प्रासुक जाया मइ छए कान्हइया,
इहा *कण मीन न मेख रे कान्हइया लाल ॥३॥हुं॰
ते वाध्या सुलसा घरइ कान्हइया,
परतखि दीठा आज रे कान्हइया लाल।
वात सहु माडी कही कान्हइया,
आपण पइ जिनराज रे कान्हइया लाल ॥४॥हुं॰
सोल वरस छानउ वध्यउ कान्हइया,
तू पिण यमुना तीर रे कान्हइया लाल।
नद यसोदा नइ घरि कान्हइया,
कहवाणउ आहीर रे कान्हइया ॥५॥हुं॰
वाल्हेसर वारीजी ती कान्हइया,
तउ पिण माहे छेह रे कान्हइया लाल।
परव दिवस हू आवति कान्हइया,
मुख जोवा सुसनेह रे कान्हइया लाल ॥६॥हुं॰
जाया मइ तुझ सारिखा कान्हइया,
एकणि नालइ सात रे कान्हइया लाल।
एको धवराव्यउ नही कान्हइया,
गोदी ले खिण मात रे कान्हइया लाल ॥६॥हुं॰
हाथे उछेरयउ नही कान्हइया,
एको पुत्र रतन्न रे कान्हइया ला।
नारि जाति माहे जोवता कान्हइया,
इवडी काइ अधन्न रे कान्हइया लाल ॥८॥हुं॰
बालापण रे बोलडे कान्हइया,
पूरी कउनी आसरे कान्हइया लाल।
आसा चूधी हू जिक्यु कान्हइया,

*दण किण

भार मूई दसमास रे कान्हइया लाल ॥९॥हुँ०
रोतउ मइ राख्यउ नही कान्हइया,
पालणडइ पोढाडि रे कान्हइयालाल।
हालरीयइ देवा तणी कान्हइया,
मो मन रहिय रुहाडि रे कान्हइया लाल ॥१०॥हुँ०
देखी आमण दूमणा कान्हइया,
हियड़ा आगलि चाँपिरे कान्हइया लाल।
काल्हे वाल्हे नांन्हडउ कान्हइया,
मइ न मनायउ आंप रे कान्हइया लाल ॥११॥हुँ०
छाड़उ माडि न दूहवी कान्हइया,
मुझ नइ माहरइ पेंट रे कान्हइया लाल।
ऊगांमो हासइ मिसइ कान्हइया,
मइ कईयइ न थपेट रे कान्हइया लाल ॥१२॥हुँ०
आगण न करावी थड़ी कान्हइया,
आँगुलियइ वलगाइ रे कान्हइया लाल।
पैग मांडया लाहया नही कान्हइया,
ते जामिणं न कहाइ रे कान्हइया लाल ॥१३॥हुँ०
साही साही साँभली कान्हइया,
वेऊ बाँह पसारि रे कान्हइयालाल।
लायउ दोडि मिल्यउ नही कान्हइया,
ते दोभागिणि नारि रे कान्हइया लाल ॥१४॥हुँ०
हाऊ बइठउ बारणइ* कान्हइया,
आगलि मा मत जाइ रे कान्हइया लाल।
न कहथउ कोनइ× कीकीयउ,
हूंस रही मन मांहि रे कान्हइया लाल ॥१५॥हुँ०
रोवाडथउ किणही किमइ कान्हइया,
मइ सतोषण काज रे कान्हइया लाल।

*तिहा ×को नहीं किये, के नही को कियो

न कह्यउ एह नउ सासरउ कान्हइया,
करिसाँ तावड आज रे कान्हइया लाल ॥१६॥हुँ०
मोटी जगि मइ मोहनी कान्हइया,
उदय थई मुझ आज रे कान्हइया लाल।
बीजउ कोइ नवि लखइ कान्हइया,
जाणइ ते जिनराज रे कान्हइया लाल ॥१७॥हुँ०
[सर्व गाथा १८०]

॥ दूहा ॥

एम सुणि मन चिंतवइ, हरि इवडो अ दोह ।
मातानउ मोटु नही, तउ न रहइ मुझ सोह ॥१॥
स्यउ मुझ नउ* समरथ पणउ, नवि फेडु दुख एह।
माता तणउ जउ× माहरइ, मुखि जन देस्यइ खेह ॥२॥
करि न दिखावु जा लगइ, ताँ न मिटइ ए सोक।
भूख न जायइ भामणइ, जाणइ सिगला लोक ॥३॥
[सर्व गाथा १८३]

ढाल-११ कोइलउ परबत धूंधलउलो रे+—एहनी

माता ना— आस्वासना रे लाल, आपी चिंतवइ एम रे वाल्हेसर।
मात मनोरथ विण फल्याँ रे लाल,
सोभ रहइ मुझ केमरे वाल्हेसर ॥°॥
विनयवत नर सलहियइ रे लाल, साचा ते ससारि रे वा०।
मात पिता गुरु ऊपरइ रे लाल,
भगति धरइ निरधारि रे वा०॥२॥वि०॥
सकज (इ) पूत भावीतना रे लाल, पूरइ वछित कोडि रे वा०।

---

*म्हारो ×तो +कहिनै किहां थी आवियो रे लाल—एहनी —नइ

सगपण बीजा पिण अछइ रे लाल,
मात तणी कुण होडि रे वा०॥३॥वि०॥
दुखनो वेला‡ सभरइ रे लाल, माता अधिकी तेण रे वा० ।
मात तणा गुण तेहवा रे लाल,
खीर जलधि जिम फेण रे वा०॥४॥वि०॥
मुझ लघु बधव जाँ लगइ रे लाल, न हुवइ ताँ लगि मात रे वा० ।
काल एह किम नीगमइ रे लाल,
दुख सहती दिन राति रे वा०॥५॥वि०॥
चितातुर मन चिंतवइ रे लाल, हरि हर करि मन माहि रे वा० ।
सुर सा निधि कारी छताँ रे लाल,
मुझ नइ सी परवाह रे वा०॥६॥वि०॥
पोसहसाला आविनइ रे लाल, निश्चल मन धरि आपरे वा०।
अट्ठम भत्त नियम धरइ रे लाल, करतउ सुरनउ जाप रे वा॥७वि०
दूर दोहिलउ साधतांरे लाला, कारिज जे छइ क्रूर रे वा० ।
तप करताँ सुर सानिधइ रे लाल,पूजइ वछित पूर रे ॥८॥वि०॥
सुर परतिखि हुई इम कहइ रे लाल, लघु बंधवनी आसरे वा० ।
तुझ सफली थास्यइ सही रे लाल,
आणौ मुझ वेसास रे वा०॥९॥वि०॥
हरिणे गमेषी इम कहइ रे लाल,साँभलि वलि मुझ वात रे वा० ।
देवलोक थी चवि करी रे लाल,
कोइक सुर विख्यात रे वा०॥१०॥वि०॥
तुझ जननी कुखि अवतरी रे लाल, सकल मनोरथ पूरि रे वा० ।
तरुण पणइ व्रत आदरी रे लाल,
तरिस्यइ नेमि हजूरि रे वा०॥११॥वि०॥
देव तणी वाणी सुणी रे लाल, हरि मन हरखित थाय रे वा० ।

---

‡ वरिया ।

वचन कही सुर एहवउ रे लाल,
निज सुर भवणइ जाय रे वा०॥१२॥वि०॥
देव वचन सुणि देवकी रे लाल, हरि मुख थकी सहेज रे वा०।
सीह सुपन एकणि निसइ रे लाल,देखइ पउढी सेज रे वा०॥१३वि०
हरखी मन सतोष सू रे लाल, स्वपन तणइ अनुसार रे वा०।
पुत्र रतन मुझ थाइस्यइ रे लाल,
देव कुमर अनुहार रे वा०॥१४॥वि०॥
सुखइ गरभ वहती थकी रे लाल धरती चित्त उमेद रे वा०।
पूराईजइ डोहला रे लाल,
तिण नवि मन को खेद रे वा०॥१५॥वि०॥
सर्व गाथा १९८

॥ दूहा ॥

नवे मासे पूरे थए, कोमल कमल समान।
पुत्र रतन तिणि जनमियउ, गुण गण करि असमान ॥१॥
जासू बंधक लाख रस, पारिजात नव जेम।
तरुण दिवाकर सारिखउ, ओपम* वरणइ एम ॥२॥
नयन कत गज तालूआ, सरिखउ कोमल गात।
रूपइ तृपति न पामीयइ, जोवंता दिन राति ॥३॥
[सर्व गाथा २०१]

ढाल१२ वालु रे सवायु वयर हूं माहरउ रे—"पहली
लगन महूरत वेला सु दरू रे उच्च ग्रह अधिकार।
बारवली तिथि योग विचारतां रे, उत्तम रयणि उदार ॥१॥
शुभ लक्षण सुत जनमइ देवकी रे, पामइ हरख पडूर ॥२॥शु०॥
सुप्रसन सगलां दिसी तिण समइ रे, वायु वायइ अनुकूल।
कोइन हुवइ इण परि सूचवइ रे, पुण्य उदय प्रतिकूल ॥३शु॥०॥

*उपसम

घरि घरि उछव रग वधामणा रे, बांध्या तोरण वारि ।
राजभुवन मंगलघट माडिया रे,अधिक अधिक अधिकार ॥४ ।शु०॥
केसर कु कम मृग मद छांटणा रे, करता यादव लोक ।
माहो माहि वधाई आपता रे, वछित सगला थोक ॥५॥शु०॥
चोर चरड जे हरि रोक्या हुता रे, अपराधी अति घोर ।
कारागार थकी ते काढिया रे धन आपी हरि रोर ॥६॥शु०॥
किण पासइ को रण मागइ नही रे, नवि को राखइ तेम ।
हाम पूरवें हरि सिगला भणी रे, तुरत देवतरू जेम ॥७॥शु०॥
गावइ गीत गुणीजन अति घणा रे, नाटक ना वहु भेद ।
करता केलि कतूहल बहु परइ रे, धरता चित्त उमेद ॥८॥शु०॥
हरख भरइ सहुजन विमणा थका रे, लोक कहइ ते न्याय ।
पहिली* लांबी नगरि द्वारिका रे,पिण नर-नारि न माय ॥९शु०॥
कवि जन मन कलिपित कलपना रे, मत को जाणउ एम ।
पाधरसी पिण राजा आचरइ रे, यथा सगति विधि जेम ॥१०शु०
माता सुख पामइ सुत दरसणइ रे, अचरिज स्यउ इण वात ।
नगर लोक नी सांभलतां सुखइ× रे भेदी साते धात ॥११॥शु०॥
दस दिन माहे जे करणी हुवइ रे ते ते सगली कीध ।
दय दत्र कार थयउ याचक भणी रे,मन वछित धन दीध ॥१२शु०
दिवस वारमइ सुभपकवान सू रे, पोषी परजन न्यात ।
मात पिता कर जोडी इम कहइ रे आगलि मन नी वात ॥१३शु०
हाथी नउ जिम होवइ तालूअउ रे तिम ए सुत सुकमाल ।
नाम एह तिण तुम्ह साखइ करां रे, गठअउ गज सुकमाल ॥१४शु०
[सर्व गाथा २१५]

॥ दूहा ॥

वाधइ कनकाचल विषइ, जिम सुरतरू अकूर ।
धवल बीज नउ चांदलउ, दिन दिन तेज पडूर ॥१॥

---

*पिहुली ×यक ।

तिण* गुण लक्षण सोहतउ, जिम जिम वाधइ तेह।
मात पिता परिजन तणउ, दिन दिन अधिक सनेह ॥२॥
गुण अवगुण ससार मइ, सहु मांहि सजोडि।
पिण तिण मांहि विचारता, नवि का दीसइ खोड़ि ॥३॥
सोम पणइ ससि सारिखउ, तेज करी जिम सूर।
दस दिसि मांहे महमहइ, सुजस जेम कपूर ॥४॥

[सर्व गाथा २१६]

ढाल १३ चूनडीनी

अति तेजइ सूरिजनी परइ, सोहइ जसु भाल विसाल हो।
सारीखउ राति दिबस सदा, करतउ जे झाक झमाल हो ॥१॥
सोभागी सुदर कुमरजी, देखी हरखइ नर नारि हो।
जसु रूप सरूप विचारतां, नल कूबर नइ अणुहार हो ॥२॥सो०॥
पूरित सोहग मकरद सूं, जसु नयण कमल सम जाणि हो।
भुहारे दोऊ भमर से, कविजन नित करत वखाण हो ॥३॥सो०॥
जसु दीपसिखा सम नासिका, सरली सोहइ गुण गेह हो।
अचरिज अति तेजइ दीपती, वधारइ तरतर नेह हो ॥४॥सो०॥
मुख पूनिमचद तणी परइ, दसनावलि किरण समान हो।
अकलकित ग्रह दूषित नही, दिन रयण वधइ सुभ वान हो ॥५सो०
रसना अमृत रस वेलडी, सुभ वयण अमृत रस पूर हो।
जिण हुंती प्रगट होवइ सदा, सुणतां दुख जावइ दूरि हो ॥६सो०
कांने कुंडल सोहइ सदा, जाणे ऊगा दोई सूर हो।
आनन सुर गिरि पाखती*, दीपइ अति तेज पडूर हो ॥७॥सो०॥
दोइ कांधा सुर घट सारिखा, गल सोहइ सख समान हो।
वक्षस्थल थाल तणी परइ, नाभी पकज उपमान हो ॥८॥सो०॥

---

*तिम ×दुइपांखणी

भुज लाँबी यूप तणी परइ, साथल कदली सम सोह हो।
जंघा गज सूंढि तणी परइ, जोवता वाधइ मोह हो ॥६॥सो०॥
जसु चरण कमल कच्छप समा, नख सोहइ जिण विध सीप हो।
उद्योत करइ दिन राति जे, दीपइ जाणे बहु दीप हो ॥१०॥सो०॥
नख सिख इम रूप विचारताँ, कहताँ न जुडइ उपमान हो।
तउ पिण कविजन मन कलपना,
आणइ निज मति अनुमान हो ॥११॥सो०॥
[सर्व गाथा २३•

॥ दूहा ॥

चउदह विद्या चउंपसूं, सीखइ ओझा पासि।
सगली आई सामठी, थोड़इ ही अभ्यास ॥१॥
कला बहुत्तरि पुरुषनी, जाणइ चतुर सुजाण।
तउ पिण तिल भर मद नही, ए उत्तम अहिनाण ॥२॥
विद्या गुरु हुँती वध्यउ, विनय तणइ परसाद।
सुर गुरु पिण जीपइ नही, करतउ जिण सूं वाद ॥३॥
भाव भेद जाणइ भला, अलकार उपमान।
वडा कवीसर वरणवइ, जिणनइ मूकी मान ॥४॥
[सर्व गाथा २३४]

ढाल—१४ मुझनइ हो दरसण न्यायन सू दीयइ* ए जाति

सोमिल माहण तिण नगरी वसइ हो, रिद्धिमत मतिमंत।
च्यार वेद जाणइ कुल थिति ×रहइ हो,
सुचि थापइ एकत ॥१॥सो०॥
सोमसिरी जसु नामइ सुंदरी सोभागिणि सुकमाल।
जाणइ रमणी नी चउसठि कला, नवि को मर्न जजाल ॥२॥सो०॥

---

*कागलिउ करतार भणि सी परि लिखूं—एहनी ×तिथि घरे हो

तेह तणी सोमा नामइ सुता हो, रूपइ साची रभ।
अनमिष नयण नही त्रिण लोक मइ हो,
अधिकउ करइ अचभ ॥३॥सो०॥
जिण मुख कतइ जीतउ चद्रमा हो, विलखउ थयउ विच्छाय।
अधिकउ ओछउ एक रूखउ नही हो, माहि कलक कहाय ॥४॥सो०
हरिणी जीती नयण गुणे करी हो, ते सेवइ वनवास।
आपणानी अधिकाइ वाछती हो, सहइ भूख सी प्यास ॥५॥सो०॥
वाणी आगइ साकर हारि नइ हो, तृण सग्रहइ सदीव।
कंठ सोभ करि संख पराभव्यउ हो, अह निसि पाडइ रीव ॥६॥सो०
अ ग उपग तणी सोभा घणी हो, कहताँ नावइ पार।
सुभ निरमाण करम स्यु नवि करइ हो,
पुण्य तणइ विसतार ॥७॥सो०॥
ते कन्या किणहीक अवसर करइ हो, मज्जन सुचि जल सग।
पहिरि वस्त्र अमोलिक अतिभला हो, ओपइ जे निज अंग ॥८॥सो०
तिलक हार कु डल वलि बहिरखा हो, ककण वाजूबंध।
अति सोहइ-अ गुलियइ मुद्रिका हो सोवन मणि सबध ॥९॥सो०॥
कटि तट लटकती कटि मेखला हो, चरणे नेउर नाद।
अ ग अनइ आभरण विचरता हो, सोभा वादोवाद ॥१०॥सो०॥
इम सिणगार करी दासी तणइ हो, परवारइ मन मेलि।
राज मागि आवइ गति माल्हती हो, करिवा उत्तम केलि ॥११॥सो०॥
विच मइ मू की सोवन नउ दडउ हो, रमति निज मन रंगि।
जन जाणई रूपइ रति ए सही हो, सुकृतइ लहीयइ सग ॥१२॥सो०
सर्व गाथा २४६

॥ दूहा ॥

इण विधि कन्या क्रीडती, जे जे देखइ तेह।
जाणइ रूप नवउ नवउ, खिण खिण वधतइ नेह ॥१॥
हिव सुणिज्यो मन भाव सू, हरि बधव संबध।

मति करिज्यो परमाद नी, वात तरणउ प्रतिवंध ॥२॥
[सर्व गाथा २४६]

ढाल-१५ मृगावती राजा मनि मानी* — एहनी
राग— केदारा गोडी

तीन वरग× साधतउ भली परि,सुखम+ गमावइ कालो रे।
मात पिता भाई नै वल्लभ, गुणवत गजसुकमालो रे ॥१॥
इण अवसरि श्री नेमी जिणेसर, समवसरया सुखकारो रे।
चउनाणी पणनाणी श्रुतधर, साथइ बहु परिवारो रे ॥२॥इ०
चउविह सुर मिलि समवसरण थिति विरचइ विविह प्रकारो रे।
रजत हेम वर रयण तणा वलि मडै तीन प्रकार रे ॥३॥इ०॥
जानु प्रमाण कुसुम ऊंधइ÷ मुख, वरषइ सुर धरि भावो रे।
ऊपरि फिरतां घिरतां नवि दुख, पामइ जिनवर परभावो रे ॥४इ०
गगा नीर तणी परि निरमल, चामर वीजइ देवो रे।
तीन छत्र सिर ऊपरि सोहइ, सुरवर सारइ सेवो रे ॥५॥इ०॥
भामलड प्रभु पूठइ सोहइ, वूठइ घन जिम सूरो रे।
प्रभुनी कति ठवइ तिण माहे, अधिकउ तेज पडूरो रे ॥६॥इ०॥
हेम तणउ सिहासन सोहइ, पादपीठ सजोडी रे।
अण हूंतइ पिण पासइ भासइ, वइठी सुरनी कोडि रे ॥७॥इ०॥
मधुर‡ ध्वनि (सुर) दु दुभि तिहा वाजइ,लहकइ वृक्ष असोको रे।
अतिसय अधिका देखी प्रभुना, अचरिज पामइ लोको रे ॥८॥इ०॥
वनपाल दीधी आइ वधाई, समवसरया जिनराजो रे।
कृष्ण विचारइ निज मन माहे, सफल दीह मुझ आजो रे ॥९॥इ०
प्रीतिदान आपी तिणनइ वह, सुभ वचने संतोषी रे।
नगर लोक नइ भेला करिवा, इसी करइ उदघोषी रे ॥१०॥इ०
पातकहर आया नेमीसर, तिण हरि वदण जायो रे।

*इम धन्नो धण नै परचावै -एहनी ×वरग +सुखे ÷ऊचे ‡मधुकर

इण अवसरि को ढील म करिस्यउ,
कुण निबलउ कुण रायो रे ।।११।।इ०।।
हरि आदेस अनइ सुकृत हरि, तिण सहु हरखित थायो रे ।
मेह तणइ आगम जिम मोरा, आणद अगि न मायो रे ।।१२इ०।।
जग उद्योत करण जगदीसर, भेटथाँ जागइ भागो रे ।
सहु कोनइ मन माहे वधतउ, अधिक धरम नउ रागो रे ।।१३।।इ०
एक एकथी चलता आगइ, भाव अधिक मन* मानो रे ।
देव तणी परि नरवर सोहइ, चढिया यान विमानो रे ।।१४।।इ०।।
वरस सरस ए मास आस सुख, पूरण वासर खासो रे ।
पहर घडी× पल अमृत सरिखउ,
क्षण+ ए क्षण सु प्रकासो रे ।।१५।।इ०।।
इम विचार करता मन माहे, लाखे गाने लोको रे ।
मारग माहे याचक जन नइ, देता वछित थोको रे ।।१६।।इ०।।
कृष्ण नरेसर वदन चालइ, चउविह सेना साथो रे ।
मेघाड वर छत्र विराजइ, चामर युगल सनाथो रे ।।१७।।इ०।।
हरि नगरी माहे निकलता, सोमा रूप निहालि रे ।
चितव्यउ इण सारिखी कन्या, अवर न इण ससारी रे ।।१८।।इ०।।
रूप अनइ जोवन लावन गुण, तीने अचरिज हेतो रे ।
जउ सारीखउ वर न मिलइ तउ, विधि नउ खोटउ वेतो रे ।।१९इ०
[सर्व गाथा २६७]

।। दूहा ।।

कोटबिक पुरुषा भणी, तेडावी हरि एम ।
भाखइ देवानुप्रिया, वचन सुणउ धरि प्रेम ।।१।।
जावउ सोमिल नइ घरे, कन्या मांगी एह ।
मुझ प्र तेंउर मइ ठवउ, तुरत आपिसी तेह ।।२।।
बधव गजसुकमाल नइ, रमणी जीव समान ।

---

*नवि ×दुख जहर +लक्षप क्षण, क्षण ए पिण

वास्यइ ए तिण मुझ भणी, हरख एह अममान ॥३॥
सेवक मुख हु ती सुणी, सोमिल ए हरि आंण।
हाथ जोडि मन कोड सू तुरत करइ परमाण ॥४॥
कन्या अ तेउर ठवी, सामी तुझ आदेस।
सेवक वोलइ सामिनी, आण सदा जिम सेस ॥५॥
सहस्रावन आविनइ, साचवि अभिगम पच।
हरि सेवइ श्री नेमिनइ, छोडी मन परिपंच ॥६॥
तिहा वारह परषद मिली, सामी द्यइ उपदेस।
सुणता वचन सुहामणा, न हुवइ कोइ कलेस ॥७॥

[सर्व गाथा २६४]

ढाल—१६ राग गोडी विणजारानी

जीव जागउ रे माथा ढलीयउ* सूरि। ऊडी ऊ घ न आखथी जी०।
वाजण लागा तूर। कटक पडचउ चिहुँ पाखती।
जोवउ हियइ विमासि। सूता कुण वेला थई जी०
जुडिस्यइ किम धन रासि। सारी मुहसम वहि गई ॥२॥जी०॥
नाणउ नीद्र नजीक। आया अवगुण हुइ जिणइ जी०
वचन अछइ लोकीक। सू ता री पाडा जिणइ ॥३॥जी०॥
द्यइ जिणवर प्रतिवोध। वात नही विगडी अजी जी०।
परिहर विषय-विरोध। मोह मिथ्यात निद्रा तजी ॥४॥जी०॥
मलगउ अरियण साथ। काया गढ भेल्यउ न छइ जी। जी०
हाथ वसु करि आथ। न कहथउ जे कहिस्यउ पछइ ॥५॥जी०॥
वारू तउ जउ पालि। पाणी पहिली वाधीयइ। जी०
सूटउ धनुष निहालि। स्यु थायइ सर सांधीयइ ॥६॥जी०॥
लाखीणउ दिन जाइ। चेतन को चेतउ नही। जी०

---

*चढियो

बगला बइठा आइ। भमरउ को न सक्यउ रही ॥७॥जी०॥
घडीय घडी नइ छेह। दड पडथऊ धन किम रहइ। जी०
सोरठ ऊपरि जेह। पड़तउ इम सहु नइ कहइ ॥८॥जी०
निसि दिन गमन अभ्यास। आस उसासइ मिस धरइ। जी०
तेहनउ स्यउ वेसास। जो जाऊं जाऊ करइ ॥६॥जी०॥
पगि पगि दोसो* जाल। किमही न रहइ नाखतउ। जी०
तरुणउ गिणइ न बाल। काल रहइ नितु झाखतउ ॥१०॥जी०॥
ते को मंत नइ तंत। यत्र न को वलि ते जड़ी। जी०
अतुली बल अरिहंत। टाली न सकइ ते घड़ी ॥११॥जी०॥
करबी ते करतूत। धाडिन का विचि मइ पडइ। जी०
पाड़ोसणि रा पूत। ताती किम वाहर चडइ ॥१२॥जी०॥
परजन लोका लाज। दसड गला पहुचावासी। जी०
जपइ इम जिनराज। साथि कमाई आवसी ॥१३॥जी०॥

[सर्व गाथा २८७]

॥ दूहा ॥

वाणि सुणी जिनराज नी, आवइ अवर न दाइ।
मोहयउ मधुकर मालती, अलबि अरणि न सुहाइ ॥१॥
कलिमल पंक पखालिवा, निरमल गंग तरंग।
चोल तणी परि माहरउ, लागउ अविहड रंग ॥२॥
लागइ भूख न का त्रिखा, ऊभा रहइ छम्मास।
कईयइ कोनइ उभगइ, सुणतां वचन विलास ॥३॥
सांभलता सुख सपजइ, ते किणही न कहाइ।
गूंगउ गुल खाधउ कहइ, कांख बजाइ बजाइ ॥४॥
सूधि वाणी न सरदही, लहि मानव अवतार।
मा धुंरति* मारी पछइ, धरती मारइ भार ॥५॥
टालइ जनम मरण जरा, वाणि सुधारस रेलि।
मोहइ बारह परषदा, साची मोहणवेलि ॥६॥

*देसी ×धरांत, धुर्गिध

इम मन मांहे चिंतवी, पभणइ गजसुकमाल।
मात पिता पूछि करी, व्रत लेस्यु ततकाल ॥७॥
प्रभु वांदी पाछउ वली, आवी माता पास।
वइरागी इण विधि करइ, वचन तणउ परकास ॥८॥

[सर्व गाथा १८३]

ढाल-१७ करतां सूंतउ प्रीति सहु हीसी करइ रे एहनी जाति

हास विलास विनोद, विविध सुखमाणतउ रे। वि०
दुरगति भय लवलेस अलवि नवि आणतउ रे। अ०
खातां पीता सरग हुस्यइ इम जाणतउ रे। हु०
पोतानी मति सीख, समापी ताणतउ रे ॥१॥स०॥
वाणी श्री जिनराज, तणी काने पडी रे। त०
जांमिणि वेत्रे आंखि, आज मुझ ऊघडी रे॥ आ०
फल किंपाक समान, विषय सुख त्रेवडो रे। वि०
वाल्यउ मन वइराग, सफल* मुझ ए घड़ी रे ॥२॥ए०
पाडोसणि रा पूत, मरइ छइ तउ मरउ रे। म०
मुझ हुंती ए काल, सही रहिस्यइ परउ रे॥ स०॥
यादव चउ परिवार, अछइ मुझस्यु खरउ रे। अ०
आज लगइ इण भाति, हतउ मन माहरउ रे ॥३॥ह०॥
जमची× आंण अखड, जगत ऊपरि जकइ रे। ज०
आगलि पाछलि आवि, चढइ सहु को धकइ रे॥ च०
इंद नरिंद जिणंद, न को छूटि सकइ रे।
सार मरइ निरधार, पडो आवी कंछइ रे ॥४॥प०॥
तीन लाख छत्रीस, सहस सुरपति तणी रे। सुं०
आतम रक्षक देव, रहइ रक्षा भणी रे। र०

*सफल सफल ×जामनी नाण

अतुलो बल अरिहंत, अकल त्रिभुवन धणी रे ।। अ०
सेवइ चउसठि इद, जास महिमा घणी रे ।।५।।जा०।।
चक्रवर्त्ति सुर सोले, सहस सेवा करइ रे । स०
जासु आण षटखड, वहइ सिर ऊपरइ रे ।। व०
वासुदेव वलदेव, भुजाबल आपरइ रे । भु०
युद्ध तीनसइ साठि करइ जयश्री वरइ रे ।।६।।क०।।
ते पिण पुरुष प्रधान, विधाता स हरथा रे । वि०
परभव दीन अनाथ, तणो परि सचरथा रे ।। त०
सूधा साधू महत, सु सिद्धि वधू वरथा रे ।
काल करम चडाल, थकी ते ऊवरीय रे ।।७।।थ०।।
मिलइ न्याति दिन राति, मुखइ हाहा कहइ रे । मु०
पाणी वल पिण काल, न को थोभी रहइ रे ।। न०
जिम मृगलउ मृगराज, उपाडी नइ वहइ रे । ऊ०
खाँडी हाडी साथि, आथि के संग्रहइ रे ।।८।।आ।।
लहि मानव अवतार, सुकृत करिस्यइ नही रे । सु०
पछतावइ परलोक, जई पड़िस्यइ सही रे । प०
कही बात भगवत, सहु मइ सरदही रे ।
लागी मीठी जेम दूध साकर दही रे ।।६।।दू०।।

[सर्व गाथा ३०४]

॥ दूहा ।।सोरठी।।

काल्हा काल्ही वात, करतउ स्युं लाजइ न छइ ।
जउ सांभलिसी तात, चलता* भु इ भारणि हुस्यइ ।।१।।
काने पडिसी ज्यार, हरि रूडा समझाविस्यइ ।
तू तउ जाणिसि त्यार, इतली वोसी सउ हुवइ ।।२।।
ते हासउ ही बालि, जिण हासइ घर ऊपड़इ ।
ते किम कीजइ आलि, आगलि जिण अनरथ हुवइ× ।।३।।

[सर्व गाथा ३०७]

---

* वलतां × वर्वं

ढाल १८—प्रियु चले परदेस, सबै गुण ले चले*—एहनी
राग—केदारा गउडी

त्रिविधि त्रिविधि करि च्यार महाव्रत पालिवा,
नान्हा मोटा दोष अहोनिसि टालिवा।
नीर मात्र पिण राति पडी किम चाखिवउ,
कंठ प्राण गत सीम नीम ए राखिवउ ॥१॥

नेमिनाथ प्रभु हाथ महाव्रत आदरो,
आणिसु मात× न बात कदी+ परमादरी।
पालिसु निरा तिचार करीसु खप आकरी,
मूल थकां जड काढिसु करम विपाकरी ॥२॥

धीर वीर बावीस परीसह धाड़िसी,
चलता सिवपुर वाट विचालइ पाडिसी।
मेल्यउ माल कमाइ, गमाइ किता वह्या,
बू बन बाहिर काढ, आखि मसली (वेसि) रह्या ॥३॥

करिवी पडिस्यइ राडि, धाडि आवी पडयाँ,
रहिसु सेस सिरि रोप, भरिस पगनीवडयां।
जिहाँ साहस तिहा सिद्धि, करिसुबलि जावतउ,
देखे राखु जेम, तयोधन सापोतउ ॥४॥

सयम लीधा पूत, पनउता स्यु थया,
मन सुध विसवावीस, न पालइ जउ दया।
रहिवउ गुरु-कुल वास, प्रमाद न सेवणउ,
करिवउ पग-२ धीज, कठिन आछइ वणउ ॥५॥

पीहर जे षट जीव, निकाय तणा हसी,
दूहविस्यइ किम जंतु,— मात ते साहसी।
अप्रमत्त गुरु तत्व, वचन आराधसी,

---

*नदी जमुना की तीर उडे दोड पंखियां-एहनी ×तात +कही ~जीव

गिणसी दुख सुख रासि, मुगति तउ साधिसी ॥६॥
मोह कटक भट निपट, छछोहा छूटिसी,
चरण करण धन माल, अमामउ लूटिसी।
कात्यउ पीज्यउ सूत, कपासज थाइसी,
नरवर रा नीसाण, घडाया वाजसी ॥७॥
माल क्षमा गढ माहि, द्वारि रहसा *चढी,
बार भेद तप योध, तणी चउकी खडी।
वार भावना नालि, चढाई कागुरे,
मोह कटक बल छोडि, पइसिसी भागुरे ॥८॥
दूषण बइतालीस, रहित नित गोचरी,
करवी मधुकर जेम, सोच तिम लोचरी।
कनक कचोला छोडि, लीयइ वछ काछलि,
सभारइ मनि वीतग वात न पाछली ॥९॥
देसइ जे आधार, महामुनि देहनइ,
खप करता किम दोष, लागिस्यइ तेहनइ।
आजूणउ धन दोह, गिणता जीइस्यइ×,
काछलीए चिरकाल, लेई व्रत जीविस्यइ ॥१०॥
सहस बहुत्तरि मात, तात वसुदेव नइ,
जोवन प्राण समान, कान्ह बलदेव नइ।
भावज सहस बत्रीस, तणउ रामेकडउ
तुझ अनुमति देवा कुण, करिस्यइ एकडउ ॥११॥
सवि स्वारथ परिवार, मिलइ आवी भलइ,
परभव जाताँ जीव, न को साथे चलइ।
पलटइ+ जेहनउ रग, पतग तणउ जिसउ,

---

*सुजडी, वडी ×जास्यइ +एटलइ

तिण* ऊपरि वेसास,×करूं जामिणि किसउ ॥१२॥
कंचण कोडि म छोडि, पुत्र गज-गामिनी,
परणावि सु दस वीस, सकोमल कामिनी।
संयमनउ ए काल, न बालक वय अछइ,
सुख भोगवि स जम्म, वेवइ लेस्याँ पछइ ॥१३॥
जाण्यउ अनरथ मूल, अरथ तिण परिहरू,
चलती हुइ जो साथ, आथि तउ आथरू+।
अनिवड़ थाताँ वार, न लागइ÷ जे सगा,
त्रोडइ जूनी प्रीति, पलक मइ ए पगा‡ ॥१४॥
महिला दुरगति खाणि, तिके किम आदरइ,
भव सागर तरिवा, नो जे मनसा धरइ।
काम भोग मधु बिंदु, जिसा मन माहरइ,
विद्याधर जिनराज, मिलइ तउ साहरइ ॥१५॥
पोतानइ मन माहि, मनोरथ उपजइ,
कीजइ ते जाण्यउ, हुवइ काल सरूप जइ।
जे पडख्या ते हाथ, बिन्हे घसता गया,
माखी नी परि पछतावइ, सोथा थया ॥१६॥
ए संसार असार, रयण सुपनउ तिसउ,
लावउ धरम अमूलिक, चिंतामणि जिसउ।
जाणु छुं दूखण, न लाविस$ काहरी,
धावी धार बत्रीस, अछइ जउ ताहरी ॥१७॥

॥ दूहा ॥

[सर्व गाथा ३२४]

वयण सुणी इम मात नां, उत्तर आप्या जेह।
तउ पिण मन आण्या नही, इण नउ अधिक सनेह ॥१॥

---

* जिण × जंजाल + आदरूं ÷ लावे ‡ सगा $ लगाविसु

ताणी तोडीजइ नही, अरज तणउ हिव काम।
माता नइ ऊबेखता, न रहइ जगमइ नाम* ॥२॥
व्रतनी जे मनसा धरी, ते न किणइ मेटाइ।
तउ पिण म सतोषिवा, कीजइ दाय उपाय ॥३॥
[सर्व गाथा ३२७]

ढाल–१६राग गउडी —मोरो मन मोह्यो इण डूंगरे–एहनी

वीनति एक अवधारीयइ, वीनवु बी कर जोडि रे।
पूरवइ कवण जामणि पखइ, पुत्र ना लाड नइ कोडि रे ॥१॥
मात मुझ अनुमति दीजियइ, जिम लीयुं सयम भार रे।
पार संसार सागर तणउ, पामिवा इण अवतार रे ॥२॥मा०॥
भव थकी मुझ मन ऊभग्यउ, खिण इक ढील न खमाइ रे।
सारथवाह सिवपुरि तणउ, नेमि जिणवर मिल्यउ आइ रे ॥३म०
रडवडथउ एकलउ जीवडउ, आज लगि काल अनंत रे।
पुण्य सयोग आवी जुडथउ, भव भय हरण भगवत रे ॥४॥मा०॥
नरक तिरयच भव नव नवी, जेह वेदन विकराल रे।
ते थकी आज मुझ छोडिवइ, यादव परम दयाल रे ॥५॥मा०॥
सरस मदिरा जीसी मोहनी, एहनी अति घणी छाक रे।
परवसि पडियउ जीवडउ, अति कटुक करम विपाक रे ॥६॥म०॥
विषय रस विरस मइं जाणिया, सरस संयम तणउ संगरे।
प्रभु वचन भव तप× मेटिवा, सीतल जेहवउ गंग रे ॥७॥मा०॥
अरथ नइ काम पिण धरम थी, धरम विना सहु धध रे।
आज मइ कारिमउ जाणियउ, सकल मंसार संवध रे ॥८॥मा०॥
करम मल हिव पडथउ पातलउ, प्रभु वचन ओषध जेमरे।
परम आरोग्य कारण हुस्यइ, तिण घणउ ध्रमस्यु प्रेम रे ॥९मा०
मुगति मारग भणी जाइवा, सुद्ध ए साघु नउ वेष रे।

* जनम मे माम × तपति

मात तिण हेतु पडखु नही, धरम विण एक निमेष रे ॥१०॥मा०॥
कुल तणउ तिलक श्रीनेमिजी, हित भणी जे कही वात रे।
तुरत भेदी सुणी माहरी, सात ए धरम सूं घात रे ॥११॥मा०॥
नेह मुझस्यु अछइ तांहरउ, मात निज चित्त विचार रे।
व्रत पखइ माहरउ भव थकी, किम हुवइ छूटकवार रे ॥१२॥मा०॥
मानवी वीनती माहरी, मा नवी जेम* नवि थाय रे।
मानवी गति वली दोहिली, मानवी गत कहिवाइ रे ॥१३॥मा०॥
खिणइ पूराइ खिण मइ गलइ, पुदगल तिण रची काय रे।
अथिर एह तिण कारणइ, धरम आवइ चित दाय रे॥१४॥मा०॥
काम किंपाक तणी परइ, भोग ए जाणि भुयग रे।
कामिनी कटकनी दामिनी, सारिखी किम करूं संग रे ॥१४॥मा०
नेमि पासउ हिव आदरू, सुमति गुपति धरूं सार रे।
दाव पूरइ करम जीपिनइ, हेलिसूं वरूं सिवनारि रे ॥१६॥मा०
सीख री बात कहसी खरी, सिव भलउ किनां स सार रे।
हित हुवइ ते मुझ नइ कहउ, अवर मत करउ विचार रे॥१७म०॥
सकज कुल माँहि होवइ तिको, आपणउ भणी ओठभरे।
आपि नइ ऊंच पदवी दियइ, सुकृत थी सहुय सुलभ रे ॥१८॥म०
नेमि जिणवर तणी मुझ भणी, आपणउ जाणि ए माग रे।
सुद्ध कहचउ सिवपुर तणउ, अधिक तिण एहवइ राग रे ॥१९म०
ताहरइ मात ऊपर हथइ×, सीझस्यइ सकल मुझ काज रे।
नेमि परसादि वधारिस्यु, लोक माहे अधिक लाज रे ॥२०॥मा०॥

[सर्व गाथा ३४७]

॥ दूहा ॥

वचन तिसी परि ए कहइ, सही तजइं घरबार।
इण सम वीजउ को नहो, जीवन प्राण आधार ॥१॥

---

* जे × हवै

माता इम मनि चिंतवइ, वलि काढू मन भास ।
मानउ भावइ नवि मनउ, जिम सउ तिम पचास ॥२॥

[सर्व गाथा ३४६]

ढाल-२० आज लगइ घरि अधिक जगीसे-एहनी

ताहरउ भार वुही* दस मास । मन माहे छइ मोटी आस ।
जउ तूं वीस करइ वेषास । अलगउ न करू जा घटि सास ॥१॥
नीठि जुडइ दुरवल घरि आथि । तिम तू लागउ छइ मुझ हाथि ।
जे मइ दुख दीठा तुझ साथ । तेतउ जाणइ छइ जगनाथ ॥२॥
खमि न सकूं विरहउ खिण मात ।
तउ किम वउलइ मुझ दिन राति ।
सजम ल्यइ न कहुं इण जाति ।
लोहडइ लीक× पटोलइ भाति ॥३॥
सुणतां सवल चढइ छइ टाढि । मुझ आगलि ए वात म काढि ।
एक पखउ इम करतउ गाढि । तू चाढइ छइ विमणउ वाढि ॥४॥
किम छोडिसि वाध्यउ जेवडइ । गलि वधन मुझ सू बेवडइ ।
जउ मुझ नइ जामिणि ऍवडइ । तउ मत घालइ दुख ए वडइ ॥५॥
डलकइ+ कुभ पलक वेगलइ । जलधर जेम नयन वे गलइ ।
किम नीकलइ बचन ए गलइ । मुझ नइ तजि मयम वेग लइ ॥६॥
तू तउ छइ माहरउ केलव्यउ ।
पिण किणही दीसइ छइ भोलव्यउ ।
आज मनोरथ तरू पालव्यउ । ऊपाडि नाखइ तिम— लव्यउ ॥७॥
जे जामणि नइ दुव द्यइ जाणि । कोधउ तासु धरम अप्रमाण ।
निपट करिसे जउ खांचो‡ ताण ।
प्राण हुस्यइ तउ आगेवाण ॥८॥

---

*मुई ×लीह +ढलकै —तेन ‡ताणो

दिन माहे देखुं सउवार । तउ हू सफल गिणुं अवतार ।
तूं मुझ जीवन प्राण आधार। तुझ पाखइ सूनउ संसार ।।६।।
सीयाला नी निसि संभरइ । तउ इवडी कचमूल न विकरइ ।
वारथउ न रहइ किणही परइ । हरि नइ कहिस रहिस तूं तरइ ।।१०
कीधी तुझ ऊपरि वारणइ । मुह वाहिर हासइ कारणइ ।
वात म काढिस घर वारणइ । सुणता चित्त न रहइ धारणइ ।।११
न कहइ फेरि वचन जउ किसा । तइ अनिवड जाणी तो दिसा ।
दीसउ वड वइरागी जिसा । ए वइराग कहउ किण मिसा ।।१२।।

[सर्व गाथा ३६१]

।। दूहा ।।

हरि जाण्यउ बंधव ग्रहइ, व्रत तिण आवी पास ।
ऊभउ तिण अवसर कुमर, इसी करइ अरदास ।।१।।
भाई आगलि भाखतां, हीण पणिइ सी लाज ।
हरि सुप्रसन हूयइ सहू, सीझइ वंछित काज ।।२।।

[सर्व गाथा ३६३]

ढाल-२१ सुणि मिरगावती—एहनी

सुणि मुझ बंधव ए अरदासा रे,
व्रतनी मनसा पूरवि* आसा रे ।।१।।सु०।।
हरखित होई मुझ अनुमति आपउ रे,
थिर मन करि नइ पूठी थापउ रे ।।२।।सु०।।
तुझ परसादइ बहु सुख मइं माण्या रे,
इतला काल न जाता जाण्या रे ।।३।।सु०।।
अनमी कांधा शत्रु नमाया रे,
पांचे इंद्रिय विषय रमाया रे ।।४।।सु०।।

*पूरण

दय-दय कार दान पिण दीधा रे,
समुद्र लगइ कीरति फल लीधा रे ॥५॥सु०॥
आगलि ऊभी सेवक कोडि रे,
जय-जय कार करइ कर जोडि रे ॥६॥मु०॥
देव विमान सरिस आवासा रे,
हरषित हास विनोद विलासा रे ॥७॥मु०॥
सुहणा माहे पिण दुख नाया रे,
पूरव सुकृत तणा फल पाया रे ॥८॥मु०॥
तुझ परसाद न को मुझ साकउ रे,
वाल करी न सकइ कोई वाकउ रे ॥९॥मु०॥
यादव नउ परिवार जु* जोरइ रे,
तीन खड सामी तुझ× तोरइ रे ॥१०॥सु०॥
तिणि कुल माहे लहि अवतारा रे,
पूरि मनोरथ मनना सारा रे ॥११॥सु०॥
हिव जाणु आपणपउ तारू रे,
विषय विलास थकी मन वारू रे ॥१२॥सु०॥
कृष्ण कहइ सांभलि लघु भाई रे,
व्रतनी मनसा किम तुझ आई रे ॥१३॥सु०॥
सोल सहस नरपति मुझ+ केडइ रे,
थूक पडइ तिहा लोई रेडइ रे ॥१४॥सु०॥
आण जिको तुम्हची नवि मानइ रे,
तुरत करू हू तिण नइ कानइ रे ॥१५॥सु०॥
तुझ भत्रीजा अछइ अनाडी रे,
किणहीक ठाम मिल्या वन वाडी रे ॥१६॥सु०॥

---

*मुझ जोरै रे ×तू सबलै तोरै रे +तुझ

जउ तुझ नइ किणही सतायउ रे,
तउ ते फल लहिस्यइ घर आयउ रे ॥१७॥मु०॥
नगर लोक पिण तोसू राजी रे,
मोह घणउ पणि राखइ माजी रे ॥१८॥मु०॥
भावज मन उल्लासइ मुख जोई रे,
सहु को पीरजन हरखित होई रे ॥१९॥मु०॥
व्रत नउ काल नही छइ वीरा रे,
जोवन एह अमोलक हीरा रे ॥२०॥मु०॥
भोगवि भोग पछइ ग्रहि दिख्यारे,
श्री जिनवर नी पाले सिख्या रे ॥२१॥मु०॥
समय कियउ सगलउ ही सोहइ रे,
पावडिए मंदिर आरोहइ रे ॥२२॥मु०।
ऊंतावलि नउ काम न आछइ रे,
पछतावइ पडिथइ जिण पाछइ रे ॥२३॥मु०॥
मात पिता वलि मोटा भाई रे,
सवधी पुर लोक सखाई रे ॥२४॥मु०॥
सहु नइ पूछी कारिज कीजइ रे,
आपण नउ हठ नवि ताणीजइ रे ॥२५॥मु०॥
[सर्व गाथा ३८८]

॥ दूहा :-सोरठा ॥

हरि ना वचन सराग, ते पिण उर लागा नही।
साचउ ए वइराग, गिणियइ गजसुकमाल नउ ॥१॥
मात पिता वलि भाय, विषय तणी विध मुझ भणी।
कहइ घणु दीपाय, तिल भर मन मानइ नही ॥२॥
अबला केरइ अंग, श्रोत अपावन निंतु वहइ।
गुण तिण सु करि संग, केहउ भाई जी कहउ ॥३॥
हरिनी लोपी कार, मात पिता मन चिंतवइ।

इणि जाण्यउ संसार, बाजीगर बाजी जिसउ ॥४॥
एक पखउ हिव नेह, कितलइ काल लगइ करां।
तइ तउ दाख्यउ* छेह, जाणइ तिम करि नान्हडा ॥५॥

[सर्व गाथा ३६३]

ढाल-२२ श्री चंद्रप्रभु प्राहुणउ रे—एहनी

हरि जंपइ बांधव सुणउ रे, तुझ विरहउ न खमाइ रे ।
एक घडी पिण दोहिली रे, किम जमवारउ जाइ रे ॥१॥ह०॥
वार वार कहता हिवइ रे, न रहइ काई सोभ रे ।
काने झाल्या हाथिया रे, केम रहइ थिर थोभ रे ॥२॥ह०॥
बलिहारी तुझ बांधवा रे, दुक्कर करणी कार रे ।
च्यार महाव्रत पालिवा रे, कठिन अछइ निरधार रे ॥३॥ह०॥
तइ अम्हसु मन चोरियउ रे, हूअउ जावण हार।
जाता नइ मरता थका रे, कहि कुण राखण हार रे ॥४॥ह०॥
लूखउ छइ मन ताहरउ रे, तिण नवि लागइ नेह रे ।
पिणx अम्ह माहे वीचिस्यइ रे, जाणइ करता तेह रे ॥५॥ह०॥
पलक मांहि अनिवड हुअउ रे, तिण तुझ नइ साबासि रे ।
जनम लगइ जाण्यउ हुतउ रे, नवि छोडिसि अम्ह पासि रे ॥६॥ह०
मात पिता बाधव तणा रे, रहथा मनोरथ मांहि रे ।
एक सहोदर माहरउ रे, तूं हिज साची बाह रे ॥७॥ह०॥
डोकर पण माता भणी रे, छडइ छइ तूं धीठ रे ।
सुर सानिधि मुख ताहरउ रे, दीठउ थउ तिणि नीठ रे ॥८॥ह०॥
एक वचन मुझ मानिवउ रे, इण नगरी नउ राज रे ।
एक दिवस लगि आदरी रे, पूरवि वंछित काज रे ॥९॥ह०
सांभलि अणबोल्यउ रहयउ रे, कीधउ अंगीकार रे ।

---

*दिखाड्यो ×जे

हरि कोटंबिक तेडिनइ रे, भाखइ एम विचार रे ॥१०॥ह०॥
गजसुकमाल तणउ करां रे, राज तणउ अभिषेक रे।
सुचि तीरथ जल आणिवउ* रे, वलि ओषधी अनेक रे ॥११॥ह०
स्नान करावो शुचि जलइ रे, सुभ ओषधि सयोग रे।
नगर माँहि उच्छव घणा रे, मुदित हुआ सब लोग रे ॥१२॥ह०॥
सधव वधु गुण गावती रे, विचि विचि द्यइ आसीस रे।
जइतवार तू जगत मइ रे, हुइजे विसवावीस रे ॥१३॥ह०॥
हरि आवी लटकउ करइ रे, सोल सहस राजान रे।
मुखि जपइ प्रभु ताहरी रे, आँण धरा असमान रे ॥१४॥ह०॥
छत्र अनइ चामर भला रे, नरवर ना सहिनाण रे।
गज सुकमाल तणइ सिरइ रे, सोहइ जगि सिर आण रे ॥१५॥ ह०
राज ग्रह्यउ पिण अति घणउ रे, चारित ऊपरि चाह रे।
लोक विचारे एहने रे, आ मति आई काह रे ॥१६॥ह०
एक दिवस लगि आदरयउ रे, तुझ आदेसइ राज रे।
हिव मुझ अनुमति दीजियइ रे मरू आतम काज रे ॥१७॥ह०॥
बंधव वचन इसा सुणी रे भजइ हरि मुणि भाइ रे।
कहता जीभ वहइ नही रे, करि ज्यु आवइ दाइ रे ॥१८॥ह०॥
नयण थकी आसू झरइ रे, धीरिज न धरयउ जाय रे।
सुहुको मोह तणइ वसइ रे, प्राणी परवसि थाय रे ॥१९॥ह०॥
राज तणउ उच्छव कीयउ रे, व्रत उच्छव नीवार रे।
अवसर चूकिजइ नही रे, हरि इम करइ विचार रे ॥२०॥ह०॥
नगर सहु सिणगारियउ रे, घरि घरि मगलचार रे।
गीत विनोद विलास सू रे, नाटक ना दोकार रे ॥२१॥ह०॥

[सर्व गाथा ४१४]

॥ दूहा ॥

सिविका आणावी कहइ, हरि सुणि× गज सुकमाल।
इणि चढि भाई ताहरी रे, फलि मनोरथ मालि ॥१॥

*आणिनै ×साभलि

एह वचन सुणि सुख थयउ, ते किण ही न कहाय।
भव हुँती जे ऊभगइ, थिर मन ते इम थाइ ॥२॥
वीटयउ यादव कोडि सू, सोहइ अति आणद।
ग्रह तारा गण परिवरयउ, जिम पून्निम नउ चद ॥३॥
जिम सुरतरु फल फूल सू, लव झत्र सोभाय।
हरि वधव नउ भूषणे, तिम सोभा कहिवाय ॥४॥

[सर्व गाथा ४१८]

ढाल--२३ काम केलि रति हास-एहनी

यादव ना कुल कोडि, मन मइ कोड धरइ रे।
धन धन गज सुकमाल, यहु ससार तरइ री ॥१॥
भारी करमा जीव, धरम न चित्त धरइ री !
उत्तम केई एक, करणी एह करइ री ॥२॥
मदिर चढि २ नारि, गावइ मधुर सरइ री।
जय जय तूं चिर नदि, वयण इसा उचरइ री ॥३॥
अनमिष नयण निहारि, अपछर सोह* लहइ री।
पचाली जिम तेह, निश्चल काय रहइ री ॥४॥
काई जपइ नारि, सोमाप एण× तजी री।
सोभागिणि स सारि, काई होइ अजीरी ॥५॥
वचन अनेक प्रकार, सुणतउ एणि परइ री।
नवि डोलावइ चित्त, सुभ परणाम खरइ री ॥६॥
पच सुभट वसि आणि, सिवपुर वेग लहउ री।
मागध द्यइ आसीस, अपनी टेक रहउ री ॥७॥
तू कुल केतु समान, दरसण पाप हरइ री।
कृष्ण प्रमुख सवि लोक, कहि कहि पाय परइ री ॥८॥

---

*सोम ×ऐणि

च्यार महाव्रत धार*, सूवउ तू निवहइ री।
तिण तुझ वचन प्रमाण, सहु को लोक कहइ री ॥६॥
सोनइ न लागइ स्यांम, जाणइ लोक महीरी।
तिम इणना परिणाम, न डिगइ दीख ग्रही री ॥१०॥
सहस्रांववन माहि, सिबिका थी उतरइ री।
इम चढतइ परिणाम, जेह हुवइ× सुतरइ री ॥११॥
नेम जिणेसर पासि, आवी वचन कहइ री।
अगनि तणी परि कर्म, इणि संसार दहइ री ॥१२॥
तुझ देसन जल धार, संगम सीत थयउ री।
ए प्राणी मइ आज, सुकृत बीज वयउ री ॥१३॥
लेस्युं संजम आज+, एह कुटंब तजी री।
पामिसु सिव मकरद, तुझ पय कमल भजी री ॥१४॥
जिम सुख थायइ तेम, मा प्रतिबंध करउ री।
देवानुप्रिय एम, भगवत वचन खरउ री ॥१५॥
सचित्त भिक्षा प्रभु एह, हम आदेश ग्रहउ री।
मात-पिता कहइ एम, इनकी लाज वहउ री ॥१६॥
पचमुष्टि करी लोच, गजसुकमाल ग्रहइ री।
सूधउ संयम भार, प्रभुनी आण वहइ री ॥१७॥
सामाइक उच्चार, करि सावद्य तजइ री।
क्रोधादिक परिहार, करि सम भाव भजइ री ॥१८॥
सुत सुणि जपइ मात, तुझ नइ सीख किसी री।
तउ पणि मुझ सुणि वात, मीठी ईख जिसी री ॥१६॥
राखे त्रिकरण सुद्ध, जीव निकाय सही री।
देजे तनु आधार, शुद्ध आहार लही री ॥२०॥
न कहे वचन अलीक, जिण थी सोभ घटइ री।
मुख थी जपे साच, जिय थी पाप कटइ री ॥२१॥

---

*भार, पालि ×इम हुवइ मु तरैरी, जे हो वस तरइ रे +आर

न ग्रहे वस्तु अदत्त, इण भवि लोक हणइ री ।
परभव दारूण दुक्ख, जिणवर एम भणइ री ॥२२॥
व्रत ए भाव विसुद्ध, श्रीजउ पालि खरउ री ।
सोहागिणि सिव नारि, करणी एणि वरउ री ॥२३॥
परिग्रह अनरथ मूल, तेम कषाय तजउ री ।
स यम सतर प्रकार, साचइ भाव भजउ री ॥२४॥

[सर्व गाथा ४४३]

॥ दूहा ॥

सोखामणि इम सुत भणी, देई विविध प्रकार ।
दुख करती पाछी वलइ, माता ले परिवार ॥१॥
जल धरती परि हरि नयण, वरसइ आँसू धार ।
पीत वसन जे पहिरिया, ते दामिनि अनुहार । २॥
वाटइ फाटइ तिम हियउ, वलतां न वहइ पाय ।
हार जाणइ सूनउ हियउ, जग रिछडतइ भाय ॥३॥
प्रभु पासइ व्रतआदरो, हिव श्री गजसुकमाल ।
ग्रहण नइ आसेवना, सीख ग्रहइ ततकाल ॥४॥

[सर्व गाथा ४४७]

ढाल—२४ सामाचारी जूजूई—पहनी

पासइ जिनवर नेमि नइ रे, मुखि* भासइ एम ।
तिण हिज दिवसइ मन रसइ रे, धरि उपसम रस प्रेमोरे ॥१॥
मुनिवर वंदीयइ, गुण निधि गजसुकमालो रे ।
चरण करण धरू, जीव दया प्रतिपालो रे ॥२॥मु०॥
मुझ ऊपरि करूणा करी रे, सामी द्यउ आदेस ।
प्रतिमा एक रयण तणी रे, विधि खप करीय विसेसोरे× ॥३॥मु०

---

*भावी ×वहेसो

धीर वीर जाणी करी रे, जपइ इम जग नाहो रे ।
जिम सुख देवानुप्रिया रे, पूरवि मन उच्छाहो रे ॥४॥मु०॥
सांभलि मन हरखित थयउ रे, वदइ जिनवर पाय ।
सीह अनइ वलि* पाखरअउ रे, साहस विमणउ थायो रे ॥५मु०
सहस्रांव वन उद्यान थी रे, नीकलि साहस वत ।
महाकाल समसान मइ रे, आवइ ते एकतो रे ॥६॥मु०॥
साहस न रहइ देखता रे, भू र झल झलकइ झाल ।
मार मार मुख थी कहइ रे, व्यतर अति विकरालो ॥७॥मु०॥
भीषण वचन सिवा तणा रे, श्रवण कटुक न खमाइ ।
मुख पिसाच फाडइ इसा रे, गिरि पिण माँहि समायो रे ॥८॥मु०॥
डोलइ डाइण साइणी रे, मुख धरती पल खड ।
तीखी हाथइ कातरी रे, तुरत करइ सत-खडो रे ॥९॥मु०॥
लांबा ताल तणी परइ रे, दीसइ ताल पिसाच ।
अ तर भेद न को लखइ रे ए छइ झूठ कि साचो रे ॥१०॥मु०॥
धीरज किण नउ नवि रहइ रे, राति समइ तिण ठाम ।
ऐ ऐ साहस साधु नउ रे, वलिहारी जसु नामो रे ॥११॥मु०॥
वडी नीति लघु नीति ना रे, रिषिवर थडिल ठाम ।
पडिलेही काउसग करइ रे, धरतउ प्रभु गुण ग्रामो रे ॥१२॥मु०॥
प्रतिमा एक रयण तणी रे, आदरि त्रिकरण सुद्ध ।
कर्म्म शत्रु जीपण भणी रे, जाणे मांडिअउ जुद्धो रे ॥१३॥मु०॥
[सर्व गाथा ४६०]

॥ दूहा ॥

द्वारवती नगरि थको, सोमिल नामइ विप्र ।
इण अवसरि ते नीकलइ, खति धरी मनि खिप्र ॥१॥

---

*मनै जिम

साम घेयनइ कारणइ, काष्ट डाभ कुश वंधि ।
तुरत तेह पाछउ वल्यउ, साझ तणी तिण* संधि ॥२॥
होणहार, सुख दुख तणउ, कारण किम मेटाय ।
चोट जुडइ जिम दूखतइ, कांणउड़इ भेटाय ॥३॥

[सर्व गाथा ४६३]

ढाल—२९ नायक मोहि नचावीयउ—एहनी-देशी

सोमिल देखी मुनि भणी, कोप करी विकरालो रे ।
चिंतइ इण पापी तणउ विरूअउ एह हवालो रे ॥१॥सो०॥
इण छंडी मुझ कन्यका, तिणनी गति सी थासी रे ।
निरधारइ ते एकली, आप थयो वनवासी रे ॥२॥सो०॥
तिल भर इण नीठुर तणउ, तिणि ऊपरि नवि रागो रे ।
माथइ लगि कव× आवसी, अगूठारी आगो रे ॥३॥सो०॥
जमवारइ लगि जाणतो, ए नवि देसी छेहो रे ।
नेह एहनउ कारिमउ ठार तणउ जिम त्रेहो रे ॥४॥सो०॥
आदरि ऊभगियइ नही, उत्तम ए आचारो रे ।
मुझ कन्या इण परिहरी, अधम एह निरधारो रे ॥५॥सो०॥
मइ दीठउ हरि सामहउ, छोकरवाद न सोच्यउ रे ।
हिव पछतावउ अति घणउ, नवि पहिली आलोच्यउ रे ॥६॥सो०॥
आंत्रलूंहण माहरइ हुती, जे कन्या परधानो रे ।
किम सहसी ते एहवउ, कठिन विरह असमानो रे ॥७॥सो०॥
इण नइ मति सी ऊपनी, अनरथ एह स्यउ कीधउ रे ।
इमही जनम अफल कियउ, नवि खाधउ नवि पीधउ रे ॥८॥सो०॥
विण दूषण इण पापीयइ, तुरत तेह किम छडी रे ।
अंतर खबर नां का पडइ, मुंड थयउ पाखड़ी रे ॥९॥सो०॥

---

*वण ×कबि

लीक लगावूं एहनइ, जाणइ इम नवि कीजइ रे।
खूह पडी भारी हुवइ, जिम-जिम कंबल भीजइ रे ॥१०॥सो०॥
इण नीलज सेती हिवइ, राग नही मुझ कोई रे।
सोढइ मूंकी चाटसूं, जिम भावइ तिम होई रे ॥११॥सो०॥
करता स्युं कीजइ नही, एह महिणउ लागइ रे।
निरगुण भेदीजइ नहो, मुझ ए वीजइ तागइ रे ॥१२॥सो०

[सर्व गाथा ४७५]

॥ दूहा ॥

सालइ साल तणी परइ, जउ चूकूं अवसाण।
पिंड माहि राखुं नहीं, पापो इण ना प्राण ॥१॥
वाल्हउ वइरी इम मिलइ, कीजइ किसउ विलंब।
ए पिण जाणइ किम कदे, आक न लागइ अंब ॥२॥
ध्यान धरी ऊभउ अछइ, थिर मन करि जिम थंभ ॥
पिणि इणि विधि वेदन करूं, दूरि टलइ जिम दंभ ॥३॥

[सर्व गाथा ४७८]

ढाल-२६ कागलीयउ करतार भणी सी पर लिखूं—एहनी

कुमति धरी तिणि पापी पापनी रे, दस दिसि सनमुख देखि।
रिषि मारण साहस सबलउ कीयउ रे,
हरिनउ भय ऊवेखि ॥१॥कु०॥
सरस सरोवरनी माटी ग्रही रे, जिहा किण गजसुकमाल।
तिण थानिक ते निरदय आविनइ रे, माथइ बांधइ पालि ॥२॥कु०
फूल्या केसू जिम राता हुवइ रे, तिसा अरूण अंगार।
जलती चहि* हुंती आणी करी रे,
रिषि सिर ठवइ गमार ॥३॥कु०॥

---

*चिह, चह

मन मांहे भय सबलउ ऊपनउ रे, पापी नइं तिण वार।
आयउ तिम पाछउ वल्यउ रे, आवइ निज आगार ॥४॥कु०॥
वेदन अधिकी रिषि नइ ऊपनी रे, सहता दुक्कर जेह।
मन चिंतइ नरकादिक वेदना रे, आगलि केही एह ॥५॥कु०॥
परवसि पडीयउ प्राणी सहु खमइ रे, गुण थोडउ तिण वात।
सइवसि एक घड़ी पिण जउ खमइ रे,
करइ करम नउ घात ॥६॥कु०॥
सोमिल नउ दूषण तिल भर नही रे, पूरव करम विसेष।
मन माहे इम मुनिवर चिंतवइ रे, धरइ न तिल भर द्वेष ॥७॥कु०
हाड़ परजलइ काठ तणी परइ रे, चट-चट वाजइ चाम।
साते धात दहीजइ सामठी रे, तउ पणि मुनि मन ठाम ॥८॥कु०॥
काया सेती नेह किसउ करू रे, आखर विणसी जाय।
सडण पडण छइ धरम सरीर नउ रे, जिनवर जपइ न्याय ॥९कु०
तिम छंडुं जिम वलि म डुं नही रे, काया सू सवास।
म त जेह छोडइ तिणनी कहउ रे, केही कीजइ आस ॥१०॥कु०॥
इणि परि ते वेदन खमितां थका रे, उलसतइ* सुभ ध्यान।
अधिके गुणठाणे चढतां थकां रे, पाम्यउ केवल न्यान ॥११॥कु०
करम च्यार वलि हणिय अघातिया रे, तुरत लहइ सिव ठाँम।
अजर अमर अक्षय सुख अति घणा रे,
अनत पंच अभिराम ॥१२॥कु०॥
दस विध साध धरम माहे बडा रे, क्षमा धरम ते न्याय।
गज सुकमाल तणी परिजे धरइ रे, तिणि नां वदूं पाय ॥१३॥कु०
[सर्व गाथा ४६१]

॥ दूहा ॥

रिषि महिमा करिवा भणी, आवइ सुर तिण ठांम।
दिव्य सुरभि गधोदके, वृष्टि करइ अभिराम ॥१॥

*उलसै ते, उलसै छइ

पंच वरण फूलाँ तणउ, वरषण करि सुभ भाव।
बिमल वस्त्र ऊंचउ करइ, दिसि दिसि वधतइ दाव ॥२॥
सुर सुभ वाजे वाजते, गावइ मधुरा गीत।
सुणताँ तिल डोलइ नही, चंचल पिण ए चीत ॥३॥
[सर्व गाथा ४६४]

ढाल–२७ खंभाइती राग,-मोरी मातजी अनुमति द्यो-एहनी

कृष्ण नरेसर प्रहसमइ रे, बाहिर साला आइ रे।
अभ्यगन मज्जन करी रे भूषण अंग वणावइ रे ॥१॥
मन माहे उतकंठा वादण तणी रे
नेमीसर हो सुरतरू मम त्रिभुवन धणी हो आँकणी।
कोरट माल सहित भलउ रे, माथइ छत्र विराजइ रे।
धवल चामर बिहु गमइ रे, पेखि गंगजल लाजइ रे ॥२॥म०॥
टोले टोले नर घणा रे, लाखे गाने केडइ रे।
भाव भगति धरि अति घणी रे, एक-एक नइ तेडइ रे ॥३॥म०॥
द्वारवती नगरी तणइ रे, विचि मइ चलतउ आवइ रे।
प्रभु वदी देसण सुणुं रे, एह भावना भावइ रे ॥४॥म०॥
जरा करी जीरण घणुं रे, देह किलामण पामइ रे।
ईंटि रास हुंती ग्रही रे, एक एक निज धामइ रे ॥५॥म०॥
ई टि सचारइ डोकरउ रे, परसेवइ परघलनउ रे।
हरि सेना देखी करी, एकणि पासइ टलतउ रे ॥६॥म०॥
देखी हरि निज चित्तमइ रे, दीनदयाल विचारइ रे।
खिन्न खेद ए नर हूअउ रे, वार वार इणि भारइ रे ॥७॥म०॥
एक ई टि आपण ग्रही रे, तसु मंदिर पहुचाइ रे।
तिमहीज लोक सहू करइ रे, सेवक पति अनुयाई रे ॥८॥म०॥
ई टवाह हरि साँनिधइ रे, मुदित हुअउ इम बोलइ रे।
पर उपगारी तू जयउ रे, तुझ गुण कोइ न तोलइ रे ॥९॥म०॥

इम हरि अनुक्रम चालतउ रे, नेमि जिणेसर पासइ रे।
आवी परदक्षिण करी रे, वंदइ मन उल्लासइ रे ॥१०॥म०॥
बंधव किम दीसइ नही रे, हरि मना माँहि विमासइ रे।
नजरि न आवइ माहरइ रे, दीठउ आसइ पासइ रे ॥११॥म०॥
प्रभु नइ पूछइ माहरउ रे, बंधव किम तुम्ह पासइ रे।
नवि दीसइ जिन इम सुणी रे, साची वाणी भासइ रे ॥१२॥म०॥

[सव गाथा ५०६]

॥ दूहा ॥

कृष्ण सुणउ तुम्ह बांधवइ, भली बधारी लाज।
विषम परीसह तिम सहयउ, सारथा आतम काज ॥१॥
काल्हे अम्हनइ पूछिनइ, महाकाल समसान।
काउसग्ग जाई करइ, धरतउ धरमनो ध्यान ॥२॥
एक पुरुष तिहा आवियउ, तिणनइ अधिकी रीस।
मुनि नइ देखी ऊपनी, जाण्यउ बालु सीस ॥३॥
पान्नि करी माटी तणी, ऊपरि ठवि अंगार।
अधिकी वेदन तिणि करी, रिषि पाम्यउ भव पार ॥४॥
कारिज साध्यउ आपणउ, मन मत करिज्यो* खेद।
कीधउ थोडइ काल मइ, आठ करम नउ छेद ॥५॥

[सर्व गाथा ५११]

ढाल—२८ काल अनतानंत-पहनी

प्रभु जपी ए वात, साँभलि नइ हरि हो सोक करइ घणउ।
पाणी वलि न खमाइ, कठिन विरह दुख हो भाई तुझ तणउ ॥१॥
मिलिस्यइ वार बिच्यारि, बंधव मुझ नइ हो व्रत माँहे छतउ।
एह मनोरथ साच, आज घड़ी लगि मन माँहे हुतउ ॥२॥

---

*धरिज्यो

सास सीम वेसास, आस हजी हिव हो मइ मिलवा तणी।
मनि वीचइ छइ जेह, ते परि सगनी हो जाणइ जगि धणी ॥३॥
हियडउ वज्र समान, तुझ वेदन रंगा हो जिण फाटइ नहीं।
किसउ जणावुं नेह,× लोका आगलि हो हिव वचने वही ॥४॥
यादव बहु+ परिवार, काम न आव्यउ हो तुझ नइ तिणि समइ।
अधिकउ सालइ दुक्ख, तिणि मन मांहे हो कोई नवि गमइ ॥५॥
वीरा तुझ दीदार, विण दीठा किम हो मन धीरिज रहइ।
तुझ विरहउ असमान आगि तणी परि हो मुझ अंतरि दहइ ॥६॥
प्रभुनइ पूछइ एम, हरि कुण निदत हो नीच इसउ अछइ।
मुझ बंधव नइ मारि,जीवित वछइ हो पापी कुंण÷ पछइ ॥७॥
प्रभु जपइ स्यउ कोप, तिणमु जिण नर हो ओठभउ दीयउ।
ईंटि वाहक नइ जेम, मारग माहे हो तइं बहु गुण कीयउ ॥८॥
इम निसुणी सहु वात, हरि हर भातइ हो जाणइ जिण हण्यउ।
हूं किम लखिस्युं तेह, नेमि जिणेसर हो नाम नथी भण्यउ ॥९॥
वलि पूछइ कर जोड़ि, बधव घातक हो प्रभु किम जाणीयइ।
उत्तर भासइ सामि, ससय भजक हो अंतर वांणीयइ ॥१०॥
तुझ नइ देखी जास, काया थावइ⁑ हो प्राण रहित खिणइ।
तेतू जाणे साच, रिपि संहारयउ हो पापीयइ तिणइ$ ॥११॥
[सर्व गाथा ५२२]

॥ दूहा ॥

कृष्ण नरेसर इम सुणी, वदी जिणवर पाय।
वर कुंजर चढि नगर मइ, जावा उद्यत थाय ॥१॥
सोमिल मन मइ चिंतवइ अधिक ध्यान विन्यान।
प्रभु भासइ§ तिणि हरि भणी,सहु कहिस्यइ सहिनांण ॥२॥
मुझ नइ कुमरण मारिस्यइ, वासुदेव ए जोर।
किण भांतइ तजिस्यइ नही, लाख£ करू जउ निहोर ॥३॥

*जे ×हेज +सहु ÷जे ⁑थाये $इणे §पासइ £करतां लाख निहोर

घर हुंती ते निकलइ, घरतउ मन मइ बीह।
मृगलउ वन मइ नवि रहइ, देखी सवलउ सीह ॥४॥

[सर्व गाथा ५२६]

ढाल २९—अन तवीरज मइ ताहरउ* ए जाति

कृष्ण नरेसर प्रहसमइ× पइसण लागउ जाम।
हूंणहार न टलइ किमइ, सोमिल मिलियउ ताम ॥१॥
हरि देखी भय ऊपनउ, प्राण रहित ते थाय।
आउखो तूटण तणउ, भय पिण कारण न्याय ॥२॥
ध्रसकइ ते धरणी ढल्यउ, देखी कृष्ण नरेस।
भाषइ करम चडालइ, पापी बांभण वेस ॥३॥कृ०
सहु को लोको साभलउ, सोमिल बांभण एह।
एणइ मुझ बंधव भणी, दहि कीधउ निरदेह ॥४॥कृ०॥
ए अपत्थिय पत्थियउ, इण नइ हिव सी मारि।
इणि भवि ना इणि भविए+, विरुआ करम विकार ॥५॥
रांढू सेती बांधिनइ, पापी ना पग हाथ।
नगरि परि सरि फेरवउ, जपइ इम यदुनाथ ॥६॥कृ०॥
छेदी दस दिसि वलि करउ, ए छइ अम्हची आण।
सेवक ते तिमही÷ करइ, प्रभु नउ वचन प्रमाण ॥७॥कृ०
जल सेती छाटी करी, पवित्र करइ ते ताम।
विलखउ विरहइ वधु नइ, हरि आवइ निज धाम ॥८॥कृ०॥
सोकातुर धरणी ढली, मात सुणी ए वात।
वात‡ तणइ योगइ पड़इ, जिम तरुवर नो पात ॥९॥

---

*श्री जिनशासन जगि जयो—ए देशी ×नगर में +पच्या ÷हि तिमहिज
‡वायु

सीतल जल चंदन करी, तेह सचेतन थाय ।
तिम २ नेह घणउ* दहइ, सोक जलण बहु ×काय ॥१०॥कृ०॥
विरह विलाप घणा किया, सुत विरहइ जे मात ।
जाणइ ते-सुत विरहणी, जिण नइ वीतक वात ॥११॥कृ०॥
सोक जलंजलि आपिनइ, मात पिता धरि प्रेम ।
अधिकउ कृष्ण नरेस स्युं, नित वरतइ सुख खेम ॥१२॥कृ०॥
जवहर नी परि जोवता, यादव वंस स नीर ।
वलि विसेष सुरमणि समउ, हूअउ हरि लघुवीर ॥१३॥कृ०॥
[सर्व गाथा ५३६]

॥ दूहा ॥

गुण बहु गजसुकमाल ना, जडमति हुं इक जीह ।
पूरा ते न हुवइ किमइ, जउ कहियइ नख+ दीह ॥१॥
क्षमावंत संसार मइ, हुइसी हुआ अनेक ।
वरतइ छइ पिण एहनी, जग मइ अधिको टेक ॥२॥
विषम परीसह ए सहयउ, नामइ गजसुकमाल ।
धन धन करणी एहवी, नमियइ चरण त्रिकाल ॥३॥
[सर्व गाथा ५४२

ढाल-३० राग धन्यासिरी, शांति जिन भामणड़इ जांउं एह जाति
साधुजीनी भावना÷ भावुं, मनवंछित फल पावुं वे ॥१॥सा०॥
गजसुकमाल सदा सलहीजइ,
जिम सिव वास लहीजइ वे ॥२॥सा०॥
हेम जेम कसवटि कसीयउ,
अधिक वान+ जिम लहीयउ वे ॥३॥सा॥
समता घर अधिकउ सोभागी, वय चढ़ती वयरागी वे ॥४॥सा०॥
चदननी परि जसु मन ताढउ, सोमिल ऊपरि गाढउ वे ॥५॥सा०॥

*तणै उदै ×बहुकाय +नित ÷भावन

सत्रु मित्र ऊपरि सम भावइ, इम हुइ ते सिव पावइ बे ॥६॥सा०॥
त्रिकरण सुद्ध क्षमा गुण धारी, तेह तणो बलिहारी बे ॥७॥सा०॥
क्रोध थकी दुरगति पामीजइ, क्रोध तिणइ नवि कीजइ बे ॥८॥सा०
क्रोध करम चडाल कहीजइ, चारित तुरत दहीजइ बे ॥९॥सा०॥
जाणी एम क्षमा नितु धरीयइ, सुगति वधू जिम वरीयइ बे ॥१०सा
सवत सोलह १६ निन्नाणूं ९९ वरसइ,
वइसाखइ सुभ हरखइ बे ॥११॥सा०॥
सुदि पंचमी ५ सुभ दिन सुभ वारइ,
एह रच्यउ सुविचारइ बे ॥१२॥सा०॥
श्रीजिणसिंघसूरि गुणधारा, खरतरगच्छ उदारा बे ॥१३॥सा०
श्री जिनराज तासु परभावइ,
इणि विधि मुनि गुण गावइ बे ॥१४॥सा०॥
ए सबध सदा साँभलिस्यइ, तासु मनोरथ फलिस्यइ बे ॥१५॥सा०॥
आठमइ अ ग तणइ अणुसारइ,जोडि रची मति सारइ बे ॥१६॥सा०
कवि कलपन* अधिक रची जइ,मिच्छादुक्कड़ दीजइ बे ॥१७॥सा०
श्री जिन धरम तणइ परसादइ,
अधिक सदा जस वाधइ× बे ॥१८॥सा०॥
मगल सुख सोहग+ पामीजइ,जिनवर चरण नमीजइ बे ॥१९सा०
[सर्व गाथा ५६१]

इति श्री गजसुकमाल महामुनि चितुष्पदिका समाप्ता ।
सर्व ढाल ३०, सर्वश्लोक स ख्या ८००। श्री रस्तुलेखक वाचकयो ।
सवत १७४३ वर्षे, फाल्गुन मासे ९ तिथौ गुरुवासरे ।
श्री जेसलमेरू वास्तव्य सुश्रावक, पुन्य प्रभावक कोठारी ।
विद्याधर तत्पुत्र कोठारी अमीचद तत्पुत्र कोठारी वशविभूषण
अभयचदजो पुत्र चिर जोवी केसरीचद पठन हेतवे लिखितेय पुस्तिका

*कल्पने, कल्पित ×वाधै +साता

तीर्थराज गीतम्

पगि पगि आव्यां समरता, ललणा अहो प्यारे
आज भलइ सुविहाण कि शेत्रुंज भेटीयइ ललणा।
आज मनोरथ मझ फल्या ललणा अहो प्यारे,
जीवित जनम प्रमांण कि ।।शे०।।१।।
पालीताणइ देहरा ल० ललितसरोवर पालि कि ।।शे०।।
पाजइ चढता पादुका ल० प्रणमु नयण निहालि कि ।।शे०।।२।।
पगि पगि पाप पखालतां ल० साथइ स घ झकुंड कि ।।शे०।।
भाव भगति धरि भेटीयइ ल० पासनाह कलिकुंड कि ।।शे०।।०।।३।।
केसर भरी कचोलड़ी ल० पूजूं रिषभ जिणंद कि । शे०
रइणि तलि पगला भला ल० पेख्या परमाणंद कि ।।मे०।।०।।
चउमुख देहरा देहरी ल० पुंडरीक गणधार कि ।।शे०
खरतर वसही देखतां ल० सफल करू अवतार कि ।।शे०।।५।।
मरुदेवा गयवर चढी ल० अदवुद त्रिव सरूप कि ।।शे०
मन माहरउ मोहीरह्यउ ल० देखी रूप अनूप कि ।।शे०।।६।।
मूल टूक ऊपरि अछइ ल० चउमुख नवल प्रसाद कि ।।शे०
उ चउ शिखर सुहामणउ ल, कइइ सरग सुवाद कि ।।शे०।।७।।
साची शेत्रुंज (य) नदी ल०, सिघवड उलखाझोल कि ।।शे०
दीठी चेल तेला वडी ल०, आजु थयउ रग रोलि कि । शे० ।८।।
तीरथ जिण भेटयउ नही ल०, ते नर गरभावास कि ।।शे०
'राजसमुद्र' मुनिवर भणइ ल०, सफल फली मन आस कि ।।शे०।।९।।

इति तीर्थराज गीतम्

(पत्र १ तत्कालीन हमारे संग्रह मे)

तीर्थ यात्रा मार्ग निरूपक गीतम्

खि भोजिग भाट चाहण, गुणिजण वीजा वली !
मरुदेवि कूंट प्रसाद अनुपम मंडाव्यउ मन नी रली ।।१४।।

करइ सजाइ संघवी, भेटण गढ गिरनार ।
सघ प्रवर 'तत्र' वीनवइ, मारग विषम अपार ॥
अति विषम मारग आकरी रितु, नीर लागइ तिहा तणउ ।
समझावि इण परि संघ आवी, पास भेटण थभणउ ॥
निज न्याति साहमी घरे लाहिण दियइ पुर पुर नवी ।
मारगइ तीरथ अवर भेटी, घरे आवी सघवी ॥१५॥
श्री खरतर गच्छ चिर जयउ, परगल पुण्य पडूरि ।
गरुयउ गछनायक जयउ, जुगवर जिणसिंघसूरि ॥
युगपवर जिणचदसूरि पाटइ, दिवसपति ओपम धरइ ।
धनवत श्रावक पुण्य करणी, मोकलइ मन इम करइ ॥
धन गछ खरतर सुगुरु श्रावक सुजस महिम डलि थयउ ।
गिरि राजसमुद्र दिणिद ता लगि, श्री खरतर गछ चिरजयउ ॥१६॥

इति श्री तीर्थ यात्रा मार्ग निरूपक गीत ।

(पत्राक तीसरा हमारे संग्रह मे)

सुदर्शन सेठ सज्झाय

जी हो कूड कपट तिहाँ केलवो, जी हो तेडाव्री घर माँहि ।
कामातुर वचने थई, जोहो कपिला विलगी बाहि ॥१॥
सुदरसण धन धन तुम अवतार ।
जो हो सील रतन जतने करी, जी हो राल्यउ च्यारे बार ॥२सु०॥
जी हो सेठि कहइ मुझनइ हतो, जी हो कहि कदि पुरुषाकार ।
जी हो रूपे रूडे फूलडे, जी हो राचै कवण गिवार ॥३॥सु०॥
जी हो हाथ बिन्हे धरती पड्या, जी हो सबल लजाणी तेह ।
जी हो ते तो पछतावइ पडे, जी हो करइ विचार न जेह ॥४॥सु०॥
जो हो गहि पूरित अभया कहे, जी हो कपिला नी बात ।
जी हो भोली तूं तिण भोलवी, जी हो पुरुष रम्यो लहिघात ॥५सु०॥
जी हो तो हू जउ तेहने, जी हो हेलि मनावुं हार ।

जी हो छैल पुरुष जे छेतरइ, जी हो साची तेहिज नारि ॥६॥सु०॥
जी हो परव दिवस तेडाविनइ, जी हो कीधा कोडि प्रकार ।
जी हो आप रूप अभया थई जी हो मू की अभया नारि ॥७॥सु०॥
जी हो अणीयाले अणीए मिले, जी हो वार रहइ पय थोभ ।
जी हो अणीय जुडे ताकड गली जी हो ते किम पामइ सोभ ॥८सु०
जी हो आपो आप विलूरनइ, जी हो लागी करण पुकार ।
जी हो चतुर न को पामीसकै, जी हो नारि चरत नो पार ॥६॥सु०॥
जी हो कुमरण मारण मांडीयो, जी हो कोप चढ्यै भूपाल ।
जी हो सूली फीटी नै थयो, जी हो सिंहासन सुविसाल ॥१०॥सु०॥
जी हो थाइ छडी ता ऊजला, जी हो सोनइ शामि न होइ ।
जी हो सेठ महाव्रत आदरे, जी हो चूक पडे मत काइ ॥११॥सु०॥
जी हो धाय अवर नगरी गई, जी हो करि गणिका सु सच ।
जी हो घरि तेडावो साधुतें, जी हो करि करि नवल प्रपच ॥१२सु०
जी हो ते विरती सर वाहती, जी हो पिण न पड्यो नीसाण ।
जी हो सांझ समे ऊपाडि नइ जी हो ले मूक्यो समसाण ॥१३॥सु०॥
जी हो आवो अभया व्यतरी, जा हो रचि माया गभीर ।
जी हो मुनिवर नइ डोल इवा जी हो कीध न क तकसीर ॥१४॥सु०॥
जी हो पावडीए चढि साधुजी, जी हो लहि केवल प्रासाद ।
जी हो जैतह थइ जिणनारि नो,जी हो एम उतार्यउ नाद ॥१५॥सु०
जी हो सील सुरगा मानवी, जी हो पांमइ शिवपुर राज ।
जी हो सील अखडित राखीयो जी हो इम जपइ जिनराज ॥१६सु०॥

इति सुदर्शन सेठ सज्झाय । वा० भुवनविशाल लिखित

श्री जिनसिंहसूरि गीतम्

श्री जिनसिंहसूरीश्वर गुरु प्रतपउ जी निलवट अधिकउ नूर ॥एह गुरु०
दरसण आणद सपजइ गुरु० दुख जाइयइ सवि दूरि ॥एह॥१॥
बुद्धइ सुरगुरु अदगण्यउ गुरु० सायर जेम ग भीर ॥एह०॥

तेजइ सूरिज ज्युं सदा गुरु०, गिरवर जेम सुधीर ॥एह०॥२॥
कोकिल कलरव अभिनवउ गुरु०, सब जननइ सुखकार ॥एह०॥
निरमल मोति तणी पंक्ति गुरु०, दंत पंक्ति अतिसार ॥एह०॥३॥
केलि थुंभ ज्युं नासिका गुरु०, भापणि पत्र सभार ॥एह० ॥
नयण कमल विकस्या जिसा गुरु०, खरतर गच्छ श्रृंगार ॥एह०॥४॥
सोभागी महिमानिलउ गुरु०, चाँपसी शाह मल्हार ॥एह०॥
राजसमुद्र मुनि इम कहइ गुरु०, गच्छपतिम इ सिरदार ॥एह०॥५॥

श्री जिनसिंहसूरि वाणी महिमा गीतम्

गुरु वाणी जग सगलउ मोहीयउ, साचा मोहणवेलो जी।
साँभलताँ सहुनइ सुख संपजइ, जाणि अमीरस रेलो जी ॥१॥गुरु०॥
बावन चंदन तइं अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी।
पाप पखालइम विमल जल तणा,
लागो मुझ मन रंगो जी ॥२॥गुरु०॥
वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि सलेम नरिंदो जी।
अभयदान नउ पड़हो वजावियउ,
श्रीजिनसिंहसूरिंदो जी ॥३॥गुरु०॥
चोपडा वंशइ सोभ चढावतउ, चापसी शाह मल्हारो जी।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ॥४॥गुरु०॥
युगप्रधान सइ हाथइ थापिया, अकबरशाहि हजूरो जी।
'राजसमुद्र' मन रंगइ उचरइ, प्रतपउ जाँ ससि सूरो जी ॥५॥गुरु०

श्री जिनसिंहसूरि द्वादशमास

॥ दूहा ॥

पुरसादाणी पास जिण, निमल आपउ नाण।
गुरु जिणसिंहसूरि गाइसु, भविक कमल वन भाण ॥१॥
जग जाणीता जुगपवर, सिरि जिणचंदसूरिंद।

भवसायर तरवा भणी, नित नित नमइ नरिंद ॥३॥
सुणो वाणी सहगुरु तणी, ए संसार असार।
इम जाणी मन आपणइ, आणि वइराग अपार ॥ ॥
विनयवत इम वीनवइ, सजम लेपु सार।
मुझ अनुमति द्यउ मातजी. पामु जिम भव पार ॥५॥
मात कहइ सुणि मानसिंघ, बारह मास उदार।
सुख भोगवि ससार ना, विपम साधु व्यापार ॥५॥

ढाल-सिंधू १ मल्हार २

चांपलदे चित चोखइ इम कहइ रे, श्रावण मइ सुख स्वाद।
बीजलड़ी चमका चिहुँ दिसि करइ रे
केकि करइ कल नाद ॥चां०॥६॥
दादुर वादुर गहकइ गड़गडइ रे. मानु मदन नीसाण।
पहिर्या प च प्रकार वसन धरा रे, खेलइ चतुर सुजाण ॥चां०॥७॥
भला भला भाँदु मइ भोगवइ रे, भोगी भामिन स ग।
कीन ना मइ कामी क्रीडा करइ रे, रस लुवधा अर र ग ॥चां०॥८॥
सहिवा सही वावीस परीसहा रे, धरम ध्यान चित च ग।
गिरिवर गहिर गुफा मइ गुण निला रे,
गोपवि अ ग उप ग ॥चां०॥९॥
अधिक आणंद आसोज मइ स पजइ वाजइ सीतल वाय।
दीपतउ गयणगण च द्रमा रे. भोगीजन मन भाय ॥चां०॥१०॥
प कज परिमल पसरइ चिहुँ पखे रे, नवलउ जागइ नेह।
विरहणि वनिता नर विरहाकुलो रे दाझइ अहनिसि देह ॥चां०११॥
धान नवा कातिक मइ नीपजइ रे, निरमल तिम वलि नीर।
दीवाली परवइ दिन रली रे, चतुर वणावइ चीर ॥चां०॥१२॥
आहार निर तर नीरस आविसइ रे, उन्हउ उदक असार।
दूषिण दूषित ते पिण ल्यइ नही रे, किम करिस सुकुमार ॥चां०१३

ढल—मेरउ मन मोह्यउ, एहनी

वच्छ ए वात तइ वली विमासवी मोटउ म करि प्रयासो जी।
कठन कह्यउ मुनि मारग जिणवरइ,
ताथइ करि गृहवासो जी ।।वछ०।।१४।।
सरवर निरमल ऋत लहियाँ लियइ, मगसिरि रयणि महतो जी।
राजहस महिमंडल स चरइ ठामि ठामि विलस तो जी ।।वछ०१५।।
पोषइ नवे नवे पकवानडे, सिगला लोक सरीरो जी।
साकर दूध तणा गटका भला, पोष मास सुधीरो जी ।।वछ०।।१६।।
गरम खाना माह मासइ गुण करइ, तेलादिक परिभोगो जी।
परम नरम पटकूल नउ पहिरवउ,सुकृत तणइ सयोगो जी ।।वछ०१७
सीत सबल निसिवासर स भरइ फिणि किय सीतल वायो जी।
निस नर सबल वसन विणु वालहा,
किम करि रयणि विहायो जी ।।वछ०।।१८।।
फाग रमइ फागुण मइ सहु मिली, लाल गुलाब अबीरो जी।
माहो माहि पिचरकी वाहता, भरि भरि केसूं नीरो जी ।।वछ०१९
पंच महाव्रत मनसु पालिवा, नित नित निरतीचारो जी।
कठिन ब्रह्मव्रत तिणमइ पणि बहुतु,
चतुर तुं एह विचारो जी ।।वछ।२०।।

ढाल मल्हारनी

रायबेल रलियावणी वछजी, मरुयइ नउ महकार।
परिमल पसरइ केतकी वछ जी मास वस त उदार ।।२१।।
'सुणरे' नान्हडीया सुख भोगवि तु स सार ना रे ।।आकणी।।
वैसाखइ वन 'फूलिया वछजी', सहु जननइ सुखकार।
कूजइ कोकिल मन रली, वछजी, साख चढी सहकार ।।२२।।सु०।।
दमतां इक इक दोहोलउ, वछ, इंद्री रूप गयंद।
तो पाचे वसि राखिवा,वछ, जिया जीता नर वृंद ।।२३।।सु।।०

आवासे सात-भूमीए, वछ, गरूया गउख मंडाण ।
सयन करइ तिहां सुख भणी, वछ, जेठ मास जगि जाण ॥२४सु०॥
रवि साम्ही आतापना, वछ, करतां दिवस विहाय ।
रातइ भूमि संथारडइ वछ, केलि गरभ सम काय ॥२५॥सु०॥
वाला खाने वइसवउ, वछ, वीजण वीजइ वाय ।
फूल्या फूल गुलाब ना, वछ, मोटी दाम सुहाय ॥२६॥ सु०॥
ईरज्या सुमतइ चालतां, वछ, जाइवउ गोचरि काज ।
ऊंच नीच घरि वहिरवउ, वछ, जेम कह्यउ जिनराज ॥२७॥सु०॥

ढाल—धरम हीयइ धरउ, एहनी

मान कहइ सुण मातजी रे, नहीय करूं गृहवास ।
माया दीसइ कारिमी रे,तिण सुं केही आसो रे ॥२८संजम आदरूं
तणु धन योवन कारिमउ रे. स्वारथ सहु परिवार ।
खिण खिण छीजइ आउखउ रे दीसइ सहु असारो रे ॥२९सं०॥
इम जाणी माता पिता रे, दीधउ व्रत आदेस ।
आदरसुं श्री गुरु कन्हइ रे, ल्यइ मुनिवर नउ वेसो रे ॥३०॥सं०॥
ग्रहणा नइ आसेवना रे,सीखइ सिखया सार ।
अनुक्रमि चवद विद्या तणउ रे, मुनिवर थयउ भंडारो रे ॥३१सं०
युगप्रधान गुरु थापिया रे, अकबर साहि हजूर ।
'करमचंद' कुलचंदलउ रे, उच्छव करइ पडूरो रे ॥३२॥सं०॥
श्री जिनसिंहसूरीसरू रे, दिन दिन अधिकइ नूर ।
त्रिकरण सुद्धइं वांदता रे, दुख जायइ सहु दूरो रे ॥३३॥सं०॥
साहि सलेम प्रतिबोधनइ रे, वरतावो रे अमारि ।
छम्मासालगि त्रिहुं खंडे रे, जाणइ सहु संसारो रे ॥३४॥सं०॥
'जेसलमेरू' जगि परगड़उ रे, राउल भीम सुजाण ।
संवत सोलइ चउसठइ (१६६४)रे,नमि कातिक वदि जाणो रे ॥३५सं०
मनसुं भणतां गावतां रे, अधिक हुइ आणंद ।
'राजसमुद्र' मुनि इम कहइ रे. प्रतपउ जाम गिरिंदो रे ॥३६॥सं०॥
इति श्री गच्छाधीश्वर श्री जिनसिंहसूरि राजानां द्वादसमास वर्णनम्
समाप्तं पंडित लब्धिकुंअर मुनिना लेखि । पत्र २ संग्रहमे नं०७६१२

पं० जयकीर्ति गणि कृत

श्री जिनराजसूरि रास

धरम जागरीया छट्ठी राति, कीजइ दीजइ धन बहु भाति।
इम करतां दिन आयउ दसमउ, थयउ दसूठण करिवा नउ समउ ॥४॥
स्नान मज्जन करि असुचि उतारी, न्यात तेडावइ हिव अवतारी।
अति सखरी करि लापसो आही, मेलि जीमाडइ लोक वेवाही ॥५॥
ऊपरि दीजइ फोफलपान, केसरि छाटणा बहु सनमान।
इम जीमाडो लोक समक्षइ, नाम दीयउ खेतसी बहु हरषइ ॥६॥
लोक सहू मन मइं गहगइता, आंप आपणे मंदिर ते पहुता।
हिव ध्रमसी साह नइ बहुमान, पुण्यइ बाधइ वसुधा वान ॥७॥
मात पिता ना मनोरथ फलीया, धरम प्रसादि थया रंग रलीया।
दिन दिन कुमर बधइ सुखकंद, कलायइ वधइ जिम बीजिनउ चंद ॥८
हरख धरी माता धवरावइ, दिन प्रति कुमर नइ वलि न्हवरावइ।
आखे काजल कानि अवगनिया, माथइ तिलक पाए पानहियां ॥९॥
बांहे बहिरखा कंठइ हार, कुमर नइ सोहइ सोल श्रृंगार।
चादलउ करि पहिरावइ वागउ, बालूडा नइ दृष्टि म लागउ ॥१०॥
प्रेम नजरि भरि माता निरखइ, खिण खिण देखी हीयडइ हरखइ।
कईयइ कंठइ कईयइ छाती, कुमर लगावइ माता राती ॥११॥
कईयइ बयसारइ आपणइ खोलइ, कईयइ पालणइ राखि हीडोलइ।
कईयइ माता कुमर रमाडइ, कईयइ झालि ऊंचउ ऊपाडइ ॥१२॥
कईयइ बोलावइ बाह पसारी, आवउ बेटा हुं तुझ वारी।
कईयइ कुमर नइ माता तेडेइ, कईयइ कुमर नइ जायइ केडइ ॥१३॥
कईयइ चुंबि माता पुचकारइ, ऊतारणउ कईयइ ऊतारइ।
इणि परि माता कुमर खिलावइ, अधिक आणंद मन माहे पावइ ॥१४

ठम ठम चालतउ कुमर विराजइ, घूघरडी पाए वलि छाजइ।
फेरइ लट्टू चकरडी फेरइ, फिरकडी फेरि नजरि भरि हेरइ ॥१५॥
पचेटे खेलइ सारी पासा, सोलही जाणइ खेल तमासा।
पंचरंगी वजाडइ गोटा, इणि परि रमइ धारलदे घोटा ॥१६॥
मामणा वचत वदन सुखकारी, मात मनोरथ पूरइ अवतारी।
सात वरस नउ थयउ सोभागी, कुमर नइ भणिवा नी मति जागी ॥१७

[सर्व गाथा ४९]

॥ दूहा ॥

मात पिता सुत देखिनइ, करइ विमासण एह।
कोइक जोवउ पंडियउ, पुत्र भणावइ जेह ॥१॥
माता वेरिण तेहनइ, पिता सत्रु कहिवाय।
छतइ संयोगइ पुत्र नइ, न भणावइ मनलाय ॥२॥
विधवा कन्या ठोठ सुत २, भोग काजि धन जाय ३।
वृद्धपणइ मरइ भारिजा ४, ए चारे दुखदाय ॥४॥
सभा माहि वयठउ निगुण, सगुण नयन की चोभ।
हंस पंति जिम बक रह्यउ, कबहु न पामइ सोभ ॥५॥
तिणि कारणि ए पुत्र नइ, जिम तिम करी उपाय।
तुरत भणाव्यउ जोईजइ, पंडित सुत सुखदाय ॥६॥

ढाल त्रीजी, जाति चउपई नी, राग-रामगिरी

जोसी तेड़ि मुहूरत जोवइ, मात पिता बहु हरषित होवइ।
माह तणी सुदी पाँचमि सार, भणिवा मुहूरत अति श्रीकार ॥१॥
मेलि महाजन वाटणा कीध, ऊपरि परिघल तबोल दीध।
हाथ माहे मुंक्यउ नालेर, अश्व ऊपरि चढयउ जिसउ कुबेर ॥२॥
सनान मजन करि सोल शृंगार, कुमर दीसइ जाणे देवकुमार।
बाजइ ढोल दमामे घाई, पंच सबद वाजइ सरणाई ॥३॥
अक्षत द्रोव सोहइ मंगलीक, ब्रह्मा रह्यउ जाणे नालीक।

अति सखरी सुंखडी अणावइ, मात पिता खोलउ भरावइ ॥४॥
धरमसी साह करइ गहगट्ट, दान मान लहइ चारण भट्ट ।
इणि परि कुमर लेसालइ आवइ,गुरुजी कुमर नइ पाए लगावइ॥५
वेकर जोडो वयसइ आगइ, गुरुजी पासि विद्या हिव मागइ ।
भले भणावि कहइ गुरु एम,भिलिजे सहु सुं करे वेढि नउ नेम ॥६
भणि गुणि गुरु पूजा करि ऊठइ, तेहवइ सरसति माता तूठइ ।
चटड़ा नइ सुखडी खवरावइ, खड़िया लेखणि वलि दिवरावइ ॥७
इणिपरि भणिवा मुहरत साध्यउ,कुमर तणउ जस सगलइ वाध्यउ।
भलेरें भणइ भणइ अक विचार,सिद्धो समान भणइ मति सार ॥८
चाणायिक नीति शास्त्र उदार,कुमरइ भण्या ग्रंथ विविध प्रकार ।
षड भाषा चउद विद्या निधान, चतुर विचक्षण कुमर प्रधान ॥९॥
पुरुष नी बहुत्तर कला जाणइ, कुमर संसार तणा सुख माणइ ।
भणि गुणि गुरुना पूजइ पाय,तिणि समय आठ वरस नउ थाय ॥१०

[सर्व गाथा ६४]

॥ दूहा ॥

कुमर वधतइ ए वध्या, अंगि लाज मुखि रूप ।
सिद्धि हाथे मन बुद्धि इम, विद्या हृदय अनूप ॥१॥
नयन कमल दल नासिका चचु कीर मुख चद ।
दसन जोति हीरा जिसी, वचन सुधारस कद ॥२॥
कबु कंठ पल्लव करग, केलि जघ हियउ थाल ।
पद कच्छप नख तंब मइं, राता अधर प्रवाल ॥३॥
सीतल ससि रवि तेज गुण, सायर गुण गभीर ।
करण दाता हरिचद सत, सोवनगिरि गुण धीर ॥४॥
गुण सगला निज थानकइ, अवगुण देखि अनेक ।
अवगुण रहित कुमर तणइ, अंगि वसय सुविवेक ॥५॥
नव नवा वागा पहिरि नइ, सुगुण सुलक्षण जाण ।
गज गति चालइ मल्हपतउ, मान दीयइ राय राण ॥६॥

धर्म गोष्टि ध्रम थानकि, करइ दिवस नइ राति।
धर्म बुद्धि मन मइं धरइ, करइ नही परताति ॥७॥
तिणि अवसर आव्या तिहां, खरतर गछि सिणगार।
श्रावक लोक वांदइ सहु, जिनसिंहसूरि गणधार ॥८॥
आवइ कुमर तिहां किणि, वादी सदगुरु पाय।
वेकर जोड़ी सांभलइ, गुरु वखाण सुखदाय ॥९॥

ढाल चउथी राग—गउडी जाति प्रीतम रहउ रहउ सनतकुमार

नर अवतार संसार मइं लहतां, दसे दृष्टांते दोहिलउ।
जीवा जोनि चउरासी लख मइ,
भवमतां भवि भवि सोहिलउ ॥१॥
भविक जन सुणउ सुणउ धरम विचार,
तुम्हनइ थायइ भव निस्तार ॥ भ०॥आंकणी॥
नरभव सार भलउ कुल लहियइ, कुल थी धरम प्रकार।
धरम सार सरदहणा कहियइ, तेहथी वीरिज सार ॥२॥भ०॥
श्रावक नउ कुल लहि ध्रम कीजइ,धरम सामग्री जा छइ।
बत्रीस लाख विमान नउ स्वामी,
इंद्र श्रावक कुल वांछइ ॥३॥भ०॥
विपया सुख मइं सुर लपटाणा, नारकि नइ दुख भोग।
नही विवेक तिरजचा मांहे, तिणि मानव ध्रम जोग ॥४॥भ०॥
अन तकाय वत्तीस बिवर्जइ, बलि बावीस अभक्ष।
मदनइ मांस मांखण लघु एहना, दोष कह्या बहु लक्ष ॥५॥भ०॥
श्रावक नउ कुल पामी न करइ,वच अनइ अपमान।
कूड कपट पर निंदा न करइ, करइ ध्रम नइ ध्यान ॥६॥भ०॥
काल अनंतइ श्रावक कुल लहि, मिथ्यामति प्रतिबुद्ध।
व्रत वारह इकवीस गुणे करि, जे श्रावक ते सुद्ध ॥७॥भ०॥
दस विध साधु धरम कहिवायइ, धरमां मांहि प्रधान।

पंच महाव्रत भार दुहेलउ, पाचा मेरु समान ॥८॥भ०॥
अढार सहस सीलांगरथ जाणइ, गुण मांहे सातवीस ।
अमम अमाय अकिंचण निरमद, न करइ लोभ न रीस ॥९॥भ०॥
एक दिवस नी दीक्षा लहियइ, निश्चय देव विमान ।
जावजीव पालइ जउ चारित, तउ सुख केहइ गान ॥१०॥भ०॥
असार ससार जाणी जे विरमइ, ते नर कहियइ जाण ।
कटुक विपाक तुच्छ सुख मांहे, मु झि रहइ ते अयाण ॥११॥भं०॥
सध्या समय मिलइ जुं रूंखे, पंखो सगला आय ।
राति रही एकठा परभाते, उडि उडि दइ दिसि जाय ॥१२॥भ०॥
इम करम तणइ वसि जीव भमीनइ, पामइ कुटंब नउ मेलउ ।
पांच राति रही कुटव संयोगइ, चालइ अ ति इकेलउ ॥१३॥भ०॥
घन धन जोवन आउखउ, जाणे नय नउ वेग ।
डाभ अग्रजल चचल जीवित, जाणि धरउ सवेग ॥१४॥भ०॥
स्वारथ नउ सहुयइ छइ जगि मइ, स्वारथ विण नहिं कोई ।
इम जाणी नइ करिज्यो संबल, धरम नउ जोई सोई ॥१५॥भ०॥
चिलातीपुत्र अनइ परदेसी, दृढप्रहारी वंकचूल।
इत्यादिक नर तारथा धरमइ, कीधा सुख अनुकूल ॥१७॥भ०॥
कामकुंभ चिंतामणि सरिखउ, धरम सुगति दातार ।
इम जाणी नइ धरम करउ जिम, सफल थायइ अवतार ॥१७॥भ०

[सर्व गाथा ९०]

॥ दूहा ॥

सहगुरु नी वाणी सुणी, ऊठयउ जाणे सीह ।
दयउ दीक्षा मुझ नइ तुम्हे, कुमर वदइ अणबीह ॥१॥
चलता सहगुरु इम भणइ, मात पिता आदेस ।
लेइ आवउ दीजियइ, दीक्षा बिलब न लेस ॥२॥
कुमर वदइ कर जोडिनइ, आवी माता पासि।
सद्गुरु वांदथा धर्म सुण्यउ, माता दयइ साबासि ॥३॥

दीक्षा नउ भाव ऊपनउ, मुझ नइ तिणि प्रस्ताव।
दयउ आदेश तुम्हे मुंनइ, ल्युं दीक्षा सम भाव ॥४॥
वलती माता इम कहइ, वच्छ सुणउ वड भाग।
जोवन वय सुख भोगवउ, नही दीक्षा नउ लाग ॥५॥
दीक्षा नी वात दोहिली, सांभलता पणि कांनि।
भोगवि भोग पछइ दीक्षा, लेज्यो वचन ए मानि ॥६॥
दुकर दीक्षा पालता, लेतां सोहिली होइ।
लेई नइ रूड़ी परि, पावइ विरला कोइ ॥७॥
वच्छ कहइ सुणउ मात जी, जे तुहे कहउ ते साच।
कायर कापुरसां नरां, दोहिली दीक्षा वाच ॥८॥
सूर वीर जे साहसी, अतुली वल महावीर।
व्रत दुक्कर नही तेहनइ, जां लगि धरइ सरीर ॥९॥
वाला जायइ वात मइं, वलती नावइ तेह।
धरम विलंब करइ नही, पुण्यवंत नर जेह ॥१०॥
मात पिता देखाडीयउ, घणउ संसार नउ लोभ।
तउ पिण कुमर रहइ नही, हिव दिक्षा लेतां सोभ ॥११॥
सद्गुरु पणि समझाविनइ, चीतराव्यउ निज बोल।
व्रत आदेस दीयउ हिवइ, दीक्षा ल्यइ रंग रोल ॥२१॥

[सर्व गाथा १०२]

ढाल—पांचमी. राग-मारूणी जाति—जीतउ जीतउ हो यदुपति
राय वसुदेव करउ वधामणा रे एहनी

कीजउ कीजउ हो उच्छव आज दीक्षा नउ रूडी परि हो।
धरमसी साह नइ वारि गह मह सवल थइ घरि हो ॥१॥की०॥
पंडित जोसी पूछि कीधो मुहूरत थापना हो।
तपतोदक न्हवराय कुमर नी सहु फली कामना हो ॥२॥की०॥
थायइ नव वणाव करि पहिरइ आभरण भला हो।

माथइ मउड़ सुचंग, कांनि गंठोड़ा जोडला हो ॥३॥की०॥
उरि मोतिन कउ हार, बाँहि मनोहर बहिरखा।
बाजूबंद सोवन्न दसे, आगुली वेढ सारिखा हो ॥४॥की०॥
कडिए कंचण दोर, पाए वाजइ घूघरी हो।
विन्नायक वयसारि, लाहइ लापसी घूघरी हो ॥५॥की०॥
भाल तिलक सुविशाल, अंजन आखे सोहियउ हो।
कुमरइ सोल शृंगार, कीधा जन मन मोहियउ हो ॥६॥की०॥
तिलका तोरण बारि, घरि घरि मांड्या मांडणा हो।
सहु महाजन मेलि, कीधा केसरि छांटणा हो ॥७॥की०॥
तरल तुरंगम आणि, ऊपरि कुमर बइसारीयउ हो।
फिरइ वरनोला एम, सकल कुटंब परिवारियउ हो ॥८॥की०॥
सूहव गायइ गीत, ताजा नेजा फरहरइ हो।
ढोल सबल नीसाण, नादइ अंबर घरहरइ हो ॥९॥की०॥
बाजइ ताल कंसाल, भेरि नफेरी हूकलइ हो।
सांख झालरि झणकारि, ऊंची गूडी ऊछलइ हो ॥१०॥की०॥
भोजिग चारण भाट, कुमर तणउ जस ऊचरइ हो।
वरनोलइ फिरि गाम, पोसालइ आवी ऊतरइ हो ॥११॥की०॥
वांदइ गुरु ना पाय सधव वधू करि गूंहली हो
वास लेइ सुणि श्लोक, कुमर आवइ घरि मनरली हो ॥१२॥की०॥
इणि परि सगलउ संघ, दयइ वरनोला निज घरा हो।
आडंबर मास सीम, कीधउ अति हरखी घरा हो ॥१३॥की०॥
संवत सोल सतावनइ, मगसिरि वदि दसमी दिनइ हो।
सबली नांदि मंडावि, लीधी दीक्षा शुभ मनइ हो ॥१४॥की०

[सर्व गाथा ११९]

॥ दूहा ॥

तिहां दीक्षा लेई नइ, मुनिवर करइ विहार।
सीखावइ सिक्षा दुविध, जिनसिंहसूरि गणधार ॥१॥

पाच समिति त्रिणि गुपित मइं, पालइ प्रवचन मात।
छज्जीव नी रक्षा करइ, करइ नही परतांत ॥२॥
सामाचारी साधुनी, जाणइ दसे प्रकार।
सत्तावीस गुणे सहित, राजसीह अणगार ॥३॥
मुनिवर मोटउ महीयलइ, निरमल चारित्र पात्र।
विषय कषाय रहित सदा, सुप्रसन वदन सुगात्र ॥४॥
तप दहाडि मांडल तणा, दीधी वडी सु दीख।
राजसमुद्र दीयउ नाम ए, सूधी पालइ सीख ॥५॥
उपधान वूहा भाव सुं, आगम नाँ जे जोग।
तप सगला कीवा तुरत, सहू वखाणइ लोग ॥६॥
गच्छनायक गुरु जे कहइ. मानइ वचन तहत्ति।
सीस सिरोमणि चुंप सुं, गुरु पासइ भणइ भत्ति ॥७॥
[सर्व गाथा १२३]

ढाळ—छट्ठी राग--मारुणी जाति—जोल्हण वहिला आविज्यो रे एहनी—

गुरु पासइ आवी करइ रे, सास्त्र तणउ अभ्यास।
विनय करी विद्या भणइ रे, चारू वचन विलास ॥१॥
भणिवा मांडियउ रे, आँपणड़इ मन रंग ॥भ०॥आँकणी॥
श्री गुरु आगइ हरख सु रे, वयसइ वे कर जोडि।
मुंहड़इ देइ मुहपती रे, भणइ नित आलस छोडि ॥२॥भ०॥
आचारांग १ सूत्र सूगडांग२ रे, ठाणांग ३ समवायांग ४।
भगवती ५ न्याता धरमकथा ६ रे,
उपासकदसा ७ अंतगड ८ चंग ॥३॥भ०॥
अणुत्तरोववाई ९ प्रसन नउ रे, व्याकरण १० विपाक ११ सिद्धांत।
अंग इग्यार भण्या वली रे, अरथ लीयउ अभ्रांत ॥४॥भ०॥
उववाई १ रायपसेणिका २ रे, जीवाभिगम ३ विचार।

पन्नवणा ४ सूरं ५ जंबू६ चंदपन्नती ७,
निरियावलीय ८ उदार ॥५॥भ०॥
कपिय्या ९ कप्पवडसिया १० रे, पुप्फिया ११ वन्हि १२ उपंग।
सुबुद्धियइ बारह भण्या रे, श्री सदगुरु नइ संग ॥६॥भ०॥
पिंड १ ओघनिज्जुत्ति २ ने रे, दसवीकालिक ३ सार।
उत्तराध्ययन ४ प्रधान ए रे. मूल सूत्र भण्याचार ॥७॥भ०॥
चउसरणाउ १ विज्जाचंद थी रे २, आउर ३ महा पचखाण ४।
भत्तपरिन्ना ५ तंदुलवेयाली ६ गणिविज्जा ७ नउ जाण ॥८भ०
मरणसमाही ८ देविंदत्थउ रे ९ संथारा १० दस एह।
पइन्ना जाण निसीथ १ वलि रे, महानिसीथ २ भणइ तेह ॥९भ०
पंच ३ दसश्रुत खंध ४ सहु रे, जीतकल्प ५ विवहार ६।
छ छेद ग्रंथ छाना भण्या रे, पइंतालीस आगम सार ॥१०॥भ०॥
काव्यतर्क ज्योतिष गणित रे, जाणइ व्याकरण छंद अलंकार।
नाटक नाम माला अधिक रे, जाणइ शास्त्र विचार ॥११॥भ०॥
तेरे वरसे आगरइ रे, भण्यउ चिंतामणि तर्क।
सगली विद्या अभ्यसी रे, भटाचारिज संपर्क ॥१२॥भ०॥
चउदह विद्या चालवइ रे, ससमय परसमय जाण।
वादइ को जीपइ नही रे, पंडित राय प्रमाण ॥१३॥भ०॥
बादि मत गज केसरी रे,वादि कंद कुद्दाल।
राजसमुद्र विद्यानिलउ रे, सकल छात्र प्रतिपाल ॥१४॥भ०॥
श्री जिनचंदसूरि सतसट्ठइ रे, वाचक पदवी दीध।
अहमदावादि आसाउलइ रे, जिहाँ सबल प्रतिष्ठाकीध ॥१५॥भ०॥
वाचक राजसमुद्र तिहा रे, समसद्दी सिकदार।
रंजी चोर चउवीस नइ रे, छोडावइ उपगार ॥१६॥भ०॥
घंघाणी प्रतिमा तणी रे, वांची लिपि महाजाण।
अंबिका साधी मेड़तइ रे, केता करूं वखाण ॥१७॥भ०॥
श्री सिद्धाचल फरसीयउ रे, तेणि समय त्रिणि वार।

रतनसी जूठा आसकरण, संघ साथि सुखकार ॥१८॥भ०॥
जात्र करी चउथी वली रे, देवकरण संघि उदार।
उतकृष्टी करणी करी रे, सफल कीयउ अवतार ॥१९॥भ०॥
मानइ मोटा महिपती रे, मानइ मुकरवखान।
राउल राणा अति घणुं रे, दे सद्गुरु नइ मान ॥२०॥भ०॥
मुकरवखान वखाणियउ रे, आगइ श्री पतिसाह।
पाट जोग लायक अछइ रे, राजसमुद्र गज गाह ॥२१॥भ०॥
ठाम ठाम श्रावक वडा रे, वसि कीधा वड़भाग।
वचन कला रंज्या घरा रे, गुरु ऊपरि वहु राग ॥२२॥भ०॥
देस प्रदेसे विचरता रे, जिनसिंहसूरि गणधार।
चउमासउ चावउ करइ रे, वीकानेर मझार ॥२३॥भ०॥
तिणि अवसरि जिणसिंह नइ रे, तेड़ावइ जहांगीर।
चाली आव्या मेटतइ रे, लह वह्यउ तेथि सरीर ॥२४॥भ०॥
अवसर जाण तिसइ समइ रे, वोलइ राजसमुद्र।
सरदहिज्यो तुहे पूजजी रे, आणी भाव अक्षुद्र ॥२५॥भ०॥
गछ पहिरावीसि मुंकिसुं रे, भंडारइ सुजगीस।
पुस्तक सखर लिखावि नइ रे, छलाख सहस छत्रीस ॥२६॥भ०॥
उपवास करिसुं पाचसय रे, नाम तुहारइ जेह।
ते पुण्य थाज्यो तुम्ह नइ रे, सुसीस नी करणी एह ॥२६॥भ०॥
अणसण करि आराधना रे, श्री जिनसिंहसूरिंद।
देवलोकि थया देवता रे, सेव करइ सुर वृन्द ॥२८॥भ०॥

[सर्व गाथा १५१]

॥ दूहा ॥

पाटि प्रभाकर ऊगीयउ, अतुली वल जाणे सीह।
बखत वलइ पायउ तखत, राजसमुद्र अणवीह ॥१॥

~ वत सोल चिहुत्तरइ, फागुण सुदि शनिवार ॥
शुभ वेला शुभ लगन मइ, सातमि दिवस अपार ॥२॥
आसकर्ण संघवी करइ, उच्छव अति विस्तार ।
पद ठवणइ रउ भाव सुं, द्रव्य तणइ अणुसार ॥३॥

[सर्व गाथा १५४]

ढाल—सातमी, जत्तिरी राग—सोरठि

पद ठवणइ उच्छव कीजइ, संघवीयइ सोभाग लीजइ ।
जस श्रवण अंजलि भरि पीजइ,
सहुनइ दान तिहां करि दीजइ ॥१॥
सखरी धरती समरावइ, तिहां चउकी सखर बणावइ ।
तिहां सवली नांदि मडावइ, सहु संघ भणी तेडावइ ॥२॥
दल वादल सरिखा देरा, मुखमल दरियाइ केरा ।
नीलक पंच वरण नवेरा, ऊंचा ताण्या वहुतेरा ॥३॥
चंद्रोदय माँहि विराजइ, जरबाफ मसजर साजइ ।
विधि विधिना वाजा वाजइ, नादइ करि अंबर गाजइ ॥४॥
मिलिया माणस ना थट्ट, करइ गीत गान गहगट्ट ।
जय जय भणइ चारण भट्ट, संघवी राखइ कुलवट्ट ॥५॥
पाटोधर तेथि पधारइ, लोकां माँहि माम बधारइ ।
तिहाँ हेमसूरि गणधारइ, दियउ सूरिमंत्र अघवारइ ॥६॥
भट्टारक पाद पयउ, मिलि सूहव नारि बधायउ ।
श्री श्रीजिनराज सबायउ, खरतर गच्छ अधिक दीपायउ ॥७॥
सोल कला मुखि सोहइ, नर नारी ना मन मोहइ ।
जिनराजसूरि सम को हइ, जगि भविक लोक पड़िबोहइ ॥८॥
जिनसागरसूरि सबाई, आचारिज पदवी पाई ।
तेहिज नादइ अधिकाई, सयं हथि थाप्या सुखदाई ॥९॥

खरचइ धन आसकरण्ण, जाणे दूसरउ राजा करण्ण ।
पोषइ वलि चार वरण्ण, महिमागर मोटइ मण्ण ॥१०॥
जिणरइ घरि आदि वडाइ, माला स ग्राम सवाई ।
दीपकदे कउ सुखदाई, कचरइ सहु करणी दीपाई ॥११॥
उदयवंत अमरसी तात, स घवणि अमरादे मात ।
अजाइवदे नारि कहात, इम आसकण्ण विख्यात ॥१२॥
अमील कपूरहचदह, भाई जेहनइ निरद द ।
कंधोधर सुक्खना कद, सेव करइ नर वृंद ॥१३॥
ऋषभदास सूरदास, पुत्र वेई वुद्धि निवास ।
सुख भोगवइ लील विलास, ईहणाँ नर पूरइ आस ॥१४॥
आसकरण इंद्र अवतार, चोपडा वंसइ दिनकार ।
वड वखती वड़ दातार, जाणइ सगलउ संसार ॥१५॥
सेत्रुंजइ संघ चलायउ, घरे सत्रूकार मंडायउ ।
देहरउ सखरउ कारायउ, ध्रमकरणी कुल दीपायउ ॥१६॥
पद ठवणइ दीजइ दान, साहमी पामइ सनमान ।
संघवी आसकरण प्रधान, वसुधा माँहि थाप्यउ वान ॥१७।

॥ दूहा ॥

[सर्व गाथा १७१]

देस प्रदेशे सांभली, पदठवणउ विख्यात ।
संघ सहू हरषित थयउ, ए थई जुगतो वात ॥१॥
भट्टारक पद पामिनइ, सूरीसर जिनराज ।
सुख समाधि मइ भोगवइ, खरतर गच्छ नइ राज ॥२॥
तेड़ाव्या तिणि अवसरइ, राउल कल्याणदास ।
जेसलमेरि पधारि नइ, श्रीसंघ पूरउ आस ॥३॥
लाभ जाणि आग्रह थकी, तिहां थी करी विहार ।
देस वंदावो आविया, जेसलमेरि मझार ॥४॥

[सर्व गाथा १७५]

ढाल—आठमी, जाति वेलिनी, राग–आसाउरी

श्री जिनराजसूरीसर आवइ, परिवर्‌या मुनिवर थाट।
आया एम वधाऊ बोल्यउ, जोता जेहनी बाट ॥१॥
आगम साभलि संघ सहू को, हरषित थयउ अपार।
वधाऊ नइ वधाई देई, संघ वांदइ गणधार ॥२॥
एह वात सुणि राउलजी पणि, संतोषपणा मूंकइ।
कुमर मनोहरदास नइ मोटा, अवसर थी नवि चूकइ ॥३॥
जीवराज भणसाली भावइ, पइसारउ करि आण्या।
आग्रह मानि चउमासउ रहिया, सगले लोके जाण्या ॥४॥
श्री गुरुराज प्रभावि घणा मेह, वूठा थयउ सुगाल।
देस मांहि जस सबलउ गुरु नउ, बोलइ बाल गोपाल ॥५॥
धरम तणी महिमा थई सबली, देहरइ पूजी स्नात्र।
सामायक पोषउ पड़िकमणउ, पोषीजइ सद पात्र ॥६॥
सूत्र सिद्धांत वचावइ श्री संघ, सभलइ अधिकइ भाव।
परजुषणा परवइ संघ परघल, धन खरचइ लहि दाव ॥७॥
अमरसिंह सुत साह सवाई, धोरी जीदउ साह।
पोसीता नइ दीयइ रूपईयउ, सेर खाड उच्छाह ॥८॥
वांदिवा कुमर पधारइ दिन प्रति, राउल दे बहुमान।
भोजिग भाट गध्रप जे आवइ, पामइ वंछित दान ॥९॥
कुसल खेम चउमास करीनइ, जेहवइ करइ विहार।
तेहवइ परतीठ करावइ बिंबनी, श्रीमल साह मल्हार ॥१०॥
धरम धुरंधर धरम तणी करइ, करणी विविध प्रकार।
सात खेत्र वितवावरइ आपणउ, सफल करइ अवतार ॥११॥
लोद्रपुरइ जीरण प्रासाद नउ, जिणि कीधउ उद्धार।
गामि गामि खरतर गच्छ मांहे, भरावइ ज्ञानभडार ॥१२॥
दीन हीन दुखियांनइ अरथइ, मंडावइ सत्रूकार।

चिहुं ए अठाई प्रतिमा पूजइ, चारिसय चारिहजार ॥१३॥
नीलक मुखमल दरियाई, जरवाफ मन उल्लास।
तेह तणो धजा चाढो साते, देहरइ दीसइ खास ॥१४॥
गीतारथ गुरु पासि सिद्धान्तना, सांभलइ अरथ विचार।
त्रिणि कालि करइ पूजा देहरासरि, समरइ नित नवकार ॥१५॥
इत्यादिक सबली ध्रम करणी, करतउ थाहरूसाह।
पुण्यवत परतीठ करावइ, चोखइ चित धरी चाह ॥१६॥
सवत सोल पंचोत्तर वरसइ, मगसिर सुदि सुभवार।
सिद्धियोग वरसि सुभ दिवसइ, मुहुरत अति श्रीकार ॥१७॥
तिहां कणि श्री जिनराजसूरीसर, करइ प्रतिष्ठा सार।
सहसफणा चितामणि वेई, पारसनाथ सुखकार ॥१८॥
बीजा पणि त्रिब प्रतिष्ठा माडया, लोद्रपुर देहरा माहि।
मूलनायक चितामणि स्वामी, सघनइ करइ उछाह ॥१९॥
तेणि समय इ द्रमाल अनोपम, बि सय रूपईया देइ।
लीधी जीदइ साह उच्छाह सुं, मन मइ भाव धरेई ॥२०॥
श्री जिनराजसूरि पहिरावइ, साहनइ आपणइ हाथि।
सकल महाजन मांहे सोहइ, जीवराज सुत साथ ॥२१॥
देस प्रदेस नउ सघ घणउ मिल्यउ, राउल श्री कलियाण।
राज लोक कुमार सुं आवइ, संतोषण श्रव जाण ॥२२॥
अवसर जाणि थिरु भणसाली, वरसइ सोवन धार।
तिहु रूपईए असरफी नाणउ, लाहइ वड दातार ॥२३॥
संतोष्यउ द्रव्य देइ झाझउ, राउल कल्याणदास।
भोजिग भाट चारण जे मिलिगया, तेहिनी पूरइ आस ॥२४॥
जाचक दे आसीस प्रतीठइ, लीधउ सबल सोभाग।
हरराज मेघराज स घाति, चिरजीवे बडभाग ॥२५॥
भट्टारक जिनराजसूरीसर, एह प्रतीष्टा कीधी।
तेहवइ स घपति रूपजीनी चीठी, नफरइ आणी दीधी ॥२६॥

लाभ जाणी नइ चालइ जेहवइ, तेहवइ करमसी साह ।
महियलि मोटिम माल्हू अरजुन, स घ करइ उच्छाह ॥२७॥
वेई स घ करीनइ चाल्या, गहमह सबल दिवाजइ ।
भट्टारक जिनराजसूरीसर, साथि सोभा काजइ ॥२८॥
गामि गामि लाहरिण परभावना, देता वछित दान ।
आया एम सेत्रु जइ तीरथ, देखी द्यइ बहुमान ॥२९॥
स घ चढी पुंडर गिरि ऊपरि, भेटया आदि जिणद ।
रायण तलि पगला पूजीनइ, पाम्यउ परमाणंद ॥३०॥
मु छाल भुजाल हाथाल देईधन, फरसी तीरथ सार ।
स घवी करमसी अरजुन आंपणउ, सफल कीयउ अवतार ॥३१॥
हिव एक वात सुणउ सहु कोई, रूप जी साह अधिकार ।
सोमजी साह सिवा बे बांधव, खरतर श्रावक सार ॥३२॥
व तुपाल तेजपाल तणा आज, परतखि ए अवतार ।
एह तणी उत्तम छइ करणी, कहता नावइ पार ॥३३॥
स बत सोल चिमाला वरसइ, शत्रु जय स घ कराया ।
अवह मारग जेणइ वहराया, पुण्य भडार भराया ॥३४॥
वले प्रतिष्टा सवल करावी, अहमदाबाद मझारा ।
खभायत पाटण स घ तेडया, पहिराया सुप्रकारा ॥३५॥
राणपुरि गिरनारि सेरीसउ, गउड़ी आबू जात्र ।
सहु तीरथ ना स घ कराया, पोष्या साहमी पात्र ॥३६॥
खरतर गच्छ मइं सगले देसे, लाहिणि कीधी एह ।
घरि घरि दीधउ आधउ रूपईयउ, बूठउ जाणे मेह ॥३७॥
साहमी नइ वलि वेढ सोना ना, पहिराव्या बहुवार ।
सेत्रु ंज ऊपरि चैत्य करायउ, सातिनाथ सुखकार ॥३८॥
सोमजी साह तणा सुत उत्तम, रतनजी रूपजी जाण ।
रतनजी पुत्र सुंदरदास सिखरा, दीपता दड दीवाण ॥३९॥
रूपजी साह करायउ आठमउ, सेत्रु ंज नउ उद्धार ।

बोल फव्यउ मोटउ खरतर गच्छि, सहु जाणइ संसार ॥४०॥
संवत सोल छिहत्तरा वरसइ, वैसाख सुदि शुभवार ।
सरव सिद्धा त्रयोदशी दिवसइ, प्रतिष्ठा चउमुख सार ॥४१॥
पुण्यवंत रूपजी संघवीयइ, आणीमन माहि भाव ।
परतिष्ठा आठमइ उद्धारनी, करावइ तिण प्रस्ताव ॥४२॥
सिद्धाचल ऊपरि आगे हूवा, सात उद्धार उदार ।
वड़वखती जिनराज प्रतिष्टइ, आठमउ ए उद्धार ॥४३॥
उद्धार तणी प्रतिष्ठा करतां, अखी थयउ गुरु नाम ।
रूपजीयइ पणि राख्यउ नामउ, करतइ मोटउ काम ॥४४॥
परिघल द्रव्य देइ संतोषो, भोजिग चारण भाट ।
मारू संघ अनइ गुजराती, आयउ घरि वहि बाट ॥४५॥
तिहां थी श्री जिनराजसूरीसर, संघ सुं करी विहार ।
नवइ नगरी आवीनइ सदगुरु, चउमासउ करइ सार ॥४६॥
करावी भाणवडइ साह चापसी, बिंब प्रतिष्ठा जेह ।
अमीझरयउ विंव देह तिहां कणि, श्री गुरु महिमा तेह ॥४७॥
मेडतइ आसकर्ण तेडावी, भट्टारक जिनराज ।
शांतिनाथ परतीठ करावइ, सोल सतहोत्तरइ आज ॥४८॥
वीकानेर चउमास करीनइ, सिंधु देस वदावइ ।
मुलताण मरोठ फतैपुर देरा, श्री संघ साम्हउ आवइ ॥४९॥
मुलताणी संघ घणउ धन खरचे, लीधउ सबल सोभाग ।
गणधर सालिभद्र नइ पारिख, तेजपाल वडभाग ॥५०॥
संघ करी जिनराजसूरीस नइ, करावइ दादा जात्र ।
देराउरि जिनकुशल सूरीसनी, पोषइ उत्तम पात्र ॥५१॥
सिंधु देसि जस सबलउ लेई, मानवी पांचे पीर ।
वीकानेर नगर पधारया, श्री गुरु साहस धीर ॥५२॥
करमसी साह तेड़ाया आया, रिणी करी चउमास ।
जेसलमेरे पधारया श्री गुरु, बीजी वार उल्लास ॥५३॥

सबल विछित्ति करी पयसारउ, अरजुन माल्हू राय ।
दसारणभद्र राजानी परि, बाँदइ सदगुरु पाय ॥४५॥
नांदि मंडावि चउथउ व्रत लेई, गुरु मुखि करमसी साह ।
गाम माहे हवासी लाहे, लीधउ लखमी लाह ॥५५॥
जेसलमेर चउमास करीनइ, पाली पाटण आवइ ।
चैत्य प्रतीठ करी रह्या तेहुवइ, संघवी भूठइ तेडावइ ॥५६॥
नगर सेठ नेतउ साह वांदइ, श्री संघ सुं गुरु पाय ।
पाटणि नगरि रह्या चउमासउ, राजसूरि निर पाय ॥५७॥
अहमदाबाद नउ श्री संघ आवी, आग्रह करी अपार ।
श्री जिनराज सुगुरु नइ राख्या, चउमासुं सुविचार ॥५८॥
पाठक वाचक दीक्षा देई, सगलउ गच्छ सन्तोषइ ।
वस्त्र पात्र अन पान संघाति, साधु पात्र नइ पोषइ ॥५९॥
चउरासी गछ माँहि भट्टारक, को नही ताहरइ तोलइ ।
श्रीजिनराजसूरि चिरजीवे, जयकीरति इम बोलइ ॥६०॥

[सर्व गाथा २३५]

॥ दूहा ॥

बड वखती बड साख जुं, वाध्यउ तुझ परिवार,
सीस सवाई ताहरइ, घणा थया सुखकार ॥१॥
पार्श्वनाथ नी सानिधि, कीधी ए अखियात ।
घांघणी प्रतिमा तणी वांची लिपि विख्यात ॥२॥
सहगुरु साधी अंबिका, थई कहइ परतक्ष ।
भट्टारक पद पाँचमइ, वरसइ पामिसि दक्ष ॥३॥
मिल्या जिके कह्या अंबिका, बीजा बोल पचास ।
करइ सानिधि गुरु राज नइ, हाजरि रही उल्लास ॥४॥
जयतिहुअण समरया थकी, प्रहिरूपइ धरणिंद ।
बोल्यउ थाइसि वच्छ तुं खरतर गच्छ मुणिंद ॥५॥

आज थकी चउथइ वरसि, फागुण सुदि सुखकार ।
सातमि दिवसइ तुं लहिसि, भट्टारक पद सार ॥६॥
तिहुं दिहाड़े थाकते, तइं जाण्यउ जिनराज ।
मरणउ जिनसिंहसूरि नउ, ए सबल करामति आज ॥७॥
वालपणइ पणि ताहरउ, पूरयउ परचउ एक ।
थिरपाद साचोर विचइ तुरत, अविका रागी टेक ॥८॥
राउल भीम सभा चढी, जेसलमेरि कहाय ।
वाद करी हाराविय़उ, सोमविजय उवज्झाय ॥९॥
गच्छ पहिरायउ, लाख छह, पुस्तक सहस छत्रीस ।
भंडारइ उपवास सय, पांच किया सूरीस ॥१०॥
विद्याबलि कीयउ भलउ; सारो सिन्धु विहार ।
पांच पीर सानिधि करी · वरत्यऐ जय जय कार ॥११॥
श्री सिद्धाचलि आठमउ; परतिष्ठयउ उद्धार ।
अविचल कीयउ आपणउ; नाम सुजस संसार ॥१२॥
जेता ही दिन ताहरा, तेता ही अवदात ।
एक जीव हु किम कहु, कहिया जे विख्यात ॥१३॥
वड़भागी महिमानिलउ, सोभागी सब जाण ।
चिरजीवे जिनराज गुरु, उनय करइ जाँ भाग ॥१४॥

[सर्व गाथा ३४९]

ढाल-नवमी राग धन्यासिरी

जाति-तीर्थंकर रे चउवीसे मइ संस्तव्यारे एहनी

चिर जीवउ रे श्री जिनराजसूरीसरू रे,
खरतर गच्छ सिणगार, संघ उदय करू रे ॥१॥चि०॥
पाटइ रे श्री जिनसिंहसूरीस नइ रे, धरमसी साह मल्हार ।
कुल बोहिथ भलउ रे सोभागी रे रूपकला गुण आगलउ रे ॥२॥चि०
इहाँ संवत रे सोलड़ सय इक्यासीयउ रे, जेसलमेर मझार ।

राणड़ी पूनिम दिनइ रे, श्री पूज्य नउ रे,
रास भण्यउ मइं शुभ मनइ रे ॥३॥चि०
खरतर गछि रे जुगप्रधान जिनचंदजी रे 'सकलचंद' तसु सीस।
'समयसुन्दर' पाठक वरू रे,
वादी राय रे 'हर्षनन्दन' आणंदकरू रे ॥४॥चि॥
तसु सीसइ रे 'जयकीरति' रलियामणउ रे, रास कीयउ सुजगीस।
जिनराजसूरि नउ रे मनि आणी रे।
भाव अधिक गुरु राज नउ रे ॥५॥चि०
श्री गुरुनउ रे रास भणइ सोहामणउ रे, साभलइ जे नरनारि।
नव निधि तसु तणी रे, जयकीरति रे,
दिन दिन महिमा अति घणी रे ॥६॥चि०॥

इति श्री श्री श्री श्री श्री जिनराजसूरीश्वराणा रासः

ग्रंथाग्र० २५५ (गाथा) कृतश्च पंडित जयकीर्ति गणिना। श्री जेसलमेर नगरे ॥ शुभभवतु। लेखक पाठकयोः ॥ लिखितोयं श्री जेसाणनगरे ॥ श्री स्तात् ॥

[पत्र २ से ८, श्री अभय जैन ग्रंथालय प्रति नं० ७६१३]

अमिअझरा पार्श्व जिन स्तवन

परतिख पास अमीझरउ, भेंटीजइ अभिअण भावइ रे।
राति दिवस अमृत झरइ, तिण साचउ नाम कहावइ रे ॥१॥प०।
भगतवछल निज भगतनइ, दाखो दरसण परिचावइ रे ।
तउ थे सेवइ स्या भणी जउ, परतउ मूल न पावइ रे ॥२॥प०॥
अपणपइ परगट थई, सेवक नउ वान वधावइ रे ।
कारिज करिवा करइ, ते परनइ केम भलावइ रे ॥३॥प०॥
पुरिसादाणी पास जी, जऊ इम अतिसय न दिखावइ रे।
इणि कलजुग रा मानवी, तउ जात्र करण किम आवइ रे ॥४॥प०
एकणि रहणी जे रहइ, नित चरण कमल चितलावइ रे ।
सकल मनोरथ तेहना, प्रभु अलवि प्रमाण चढावइ रे ॥५॥प०॥
प्रभु विण देव अनेरडउ ते माहरइ मनि न सुहावइ।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ; तउ कवण कनकन खावइ रे ॥६॥प०
अलिय विघन दूरइ हरइ, अरिअण नइ आण मनावइ रे ।
श्री 'जिनराज' सदा जयउ, इम दिन दिन चढ़तइ दावइ रे ॥७॥प०

इति श्रीभाणवड नगर मंडन भट्टारक युगप्रधान श्री जिनराज सूरि प्रतिष्ठित श्री अमिअझरा पार्श्व जिन स्तवनं

(पत्र १ वृहत् ज्ञान भंडार अबीरजी सं० ब० १६)

राजस्थानी शब्द कोश

भावार्थ

अ

अंगोवग ५६ अगोपाग
अदोह १८१ खेद
अउल्हाइ ४९ सकुचितहोना
अउले १२६ तरल, अवलेह
अउहटइ ३८८९ दूर हटना
अकिती ५६ अकीर्ति
अखियात १४७ आख्यात यश
अखी २४० अक्षय
अगुरु लहु ५६ अगुरु लघु पर्याय
अच्छक १३४ उत्सुक
अछता ३८,३९ अनहोने
अछेप ६ अस्पृष्ट
अज्जवसाण ५६ अध्यवसाय, परिणाम विशेष
अजोगी ५४ अयोगी
अटकाणउ १६५ अटक गया
अमटठ् तप १८२ तेला, तीन उपवास
अड ५४ आठ
अडवन ५६ अठावन
अडोली १३४ आभरण हीन
अढलक १२३ अखूट
अण ५५ बिना
अणुपुव्वि ५४,५५ अनुपूर्वसि
अणुहार १८५ अनुकार
अत्थ १७२ अर्थ
अथिर ५६ अस्थिर
अपमत्त ५४ अप्रमत्त
अनइ ५५ और
अनियट ५४ अनिवृत्ति
अनिवड १९६, २००, २०३
अनेथि १५५ अन्यत्र
अनेरडउ २४४ दूसरा
अपजत ५५ अपर्याप्त
अपत्थिय २१५ अप्रार्थित
अणवीह २२९ निर्भय
अवीह १७४ निर्भय
अमलीमाण ७४, १४५ अगजित
अमामो १२१ अमूल्य
अयाण २२९ अज्ञान
अरइ ५६ अरति
अरणि १९१ जगली
अरियण १९० अरिजन, शत्रु
अलजयउ ७६,७८, ७९, १२८, १६२,
लअवइ १६१ १६३ क्रीडा मात्रसे सहज विनोद लीला लहरसे
अलवि १, ५, ९, ४५, ५०, ७४, १३५,१४०, १४८,१६३ १७२, १९१, १९२
अलवेसर २८ प्रभु, प्रियतम ऐश्वर्यशाली

ऐश्वर्य शाली
अलसाणउ १४ आलसी हुआ
अलीक १५६ मिथ्या
अवगण्यउ २२० अवगणना की
अवगणिया- २२५ कर्णाभरण
अवदात २४२ विरुद
अवसाण २१० मौका
अवाणगू १३५ गुमसुम
अविहड़ १९१ अविघटित
असाय ५६ अशाता
अहल्यउ ३२४ व्यर्थं
अहारग ५५ आहारक शरीर
अहिनाणे १७० अवधिज्ञानसे

आ

आत्र लूहण २०९ आत्मज
आंबिली १६८ इमली
आतलूहण १५२ आत्मज
आडम ५५ आदिम
आउ ५४ आयु—
आउकार १३५ आवकार, स्वागत
आउखउ २२९ आयुष्य
आखडी २० नियम
आखेप ६ आक्षेप
आछणची ७४ निरस
आछइ १९४, २२० है
आछे १४१,१४२ है
अजूणउ १६५ आज का
आडइ ७ हठ करके
आडउ १८० हठ
आडी १४४ रुकावट मे
आडी आवै ८ रुकावट डालती है
आडो १४४ काम आना
आणतउ १९२ लाता हुआ
आणि २३१ ला कर
आथ ७२,१३२,१७६, १७७ घन, अर्थं
आथमै १२९ अस्त होता है
आदरण १३८ लेने का
आपणडइ २६२ अपने
आपतउ १६९ देता हुआ
आफाणी १० स्वयमेव, अपने आप
आभोपो १६८
आमणदूमणी १७७ १८० उदास
आमलउ ३८, ५०
आरडी ५०, १५८ रोने-लगी, चिल्लाकर
आल ११४ कलक मिथ्यारोप
आलोवु ३८ आलोचना करू
आवसही १६४ धर्मस्थान से निकलते बोलने का शब्द (निवृत्ति से प्रवृत्तिमें आना)
आवसी १९१ आवेगी

आससेन ५७ अश्वसेन (भ० पार्श्वनाथ के पिता)
आसगा १२९, १४४ आशका
आसग १३१ आश्रय
आसगायत ७६, १४८ आश्रित
आहीठाण ३५, ६९, १५२ अघिस्थान

ई

इकलास १३६, १६३ प्रीति
इगसय ५५ एक सौ
इच्छे वेय ५५ स्त्री वेद
इवड १५९ ऐसे

ई

ईहणा २३६ इच्छुक

उ

उकसइ १७५ उत्कर्षित
उखाणो १५६ कहावत
उगतउ १६९ उदय होता
उच्छक १४२ उत्सुक
उछलइ २३१ फहराती है
उछाछलउ १७७ चचल
उछहामणउ १७७
उछेरइ १७७ (वच्चे को) खेलाना
उछेरयउ १५९, १७८ खेलाया पाला पोषा
उज्जोय ५५ उद्योत
उझित १६४

उतावला १४२ जल्दबाज
उदीरनै १४२ उदयमे (कर्मो को) प्रयत्नसे लाना
उन्हाले १५५ उष्णकाल
उपरवाड १३८ ऊपरी मार्ग
उपाड १६६ उठाव
उपाडिस ७४ उठाऊ गा
उभग्यउ १९७ उद्भग्न हुआ
उभगइ १९१ उथप जाना अधा जाना
उरै १४७ इधर
उलगाण १२९ सेवक
उलट १६५ उल्लास
उलभा ७८ उपालभ
उलंलिये १३७ उलट जाने
उवइसइ ५४ उपदेश देते हैं
उलसतइ २११ उल्लासमान हो
उवघाइ ५४ उपघात
उवटि १४० उन्मार्ग
उवसत ५४ उपशात
उवसिमिग ५५ औपशमिक
उवेख २७ उपेक्षा
उवेखसे १४१ उपेक्षा करेगा
उसास ५४ उश्वास

ऊ

ऊ घ १९० निद्रा
ऊकसि ७५ उत्कर्षित
ऊगटी ९

ऊगामी ७४, १८०
ऊगै १२९ उदय होताहै
ऊघड़ी १९२ खुल गई उद्घटित
ऊणी झ़णी १३७ उदास, न्यून, मदध्वनि
ऊन्ही १२२ उष्ण
ऊभगियइ ८३, २०९ उकताना तग आना, विपरीत
ऊभगी २० तग आना, उव जाना
ऊभगै १४७ उव जाय
ऊपाडइ २२५ उठाना
ऊपाडि दे १६६ उठादिया
ऊवरयउ ७५ वचगया
ऊवेखि २१० उपेक्षा कर

ए

एकणवार १६३ ऐक ही वार
एकणि २६९ एक ही
एकरस्यो ६० एक वार
एग ५५ एक
एगारमि ५७ ग्यारहवा
एवड़ ७५ ऐसा

ओ

ओझा १८६ उपाध्याय, शिक्षक
ओठभ १९८, २१४
ओलगइ २, ७, ८, १४, २१, २८ १२१ सेवा करते है।
ओलजो १३९
ओलीजे १३८

क

कइयइ १८० कभी
कउगला १२५ कुल्ला
कचरता १३ रोदता है
कचोलडी २१८ कटोरी
कडनो १४२ गोद का
कडि १२९ कटि
कडै १२९, १७४ पीछे
कन्हा १५६ पास
कनकची १७१ सोने की
कनकफल २४४ धतूरा
कमाई १९१ उपार्जित
कम्म ५६ कर्म
कयावि ५५ कदापि
कहाणउ १६५ कहा जाना
कसै १५५ कष्ट दे
काठलि १७७ कठ मे
काख वजाइ १९९ उल्लास व्यक्त करना
काच सकल ४५ काचका टुकड़ा
काचली ७३१ लघु काष्ट पात्र
काछ वाचनिकलक १६३ लगोट और जवान का सच्चा

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
काछली	१५५, १९५	लघु काष्ट पात्र
काठउ	९४	कठोर
काढइ	१७३	निकालती है
काढिसु	१९४	निकलू गा उखाडु गा
काण	७१	लिहाज
कामगवी	१६९	कामधेनु
कामण	१४३	कामिनी
कारग	५०	हल्ला
कारिमउ	७२	व्यर्थ
कारिमा	१३२	व्यर्थं
काल्हा	१९३	भोदू, अज्ञानी
काल्हे वाल्हे	९४	
का वलि	७१	कौन फिर
किलामण	२,२	कष्ट
किसण	५७	कृष्ण पक्ष
कोकीयउ	१८०	गीगा, बच्चा
कुजकोइ	२९, १३१	हरेक
कुलीक	१४०	
कूड	१४७	कूट, मिथ्या
केड	२	पीछा
केडइ	१३७,२०१,२२५	पीछे
कितला	१६६	कितने ही
केरउ	१७०	का
केहर	१३२	कशरीसिह
केही	२१३	कैसी
कोहाईय	५५	क्रोधादि

ख

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
खंडिया	२२७	दवात
खडोखलि	१३३	पानीका होद
खप	२५	आवश्यकता
खमइ	२११	क्षमा करे, सहै
खमी	७५	क्षमाकर,सहन
खाडी	१६३	खडित
खाटै	१५५	भोगे, प्राप्तकरे
खाधउ	१९१	खाया
खिसै	१४०	सरक जाय
खीजी	१५४	खीज कर
खीण	१२२	दुर्वल
खीणा	५४	क्षीण
खीवें	१३८	कडकै, चमकै
खह	२१०	स्कन्धा
खेलणा	१२०	क्रीडा
खोडि	१५, १६६, १८५	दोष, त्रुटि
खोल्उ	२२७	गोद, वस्त्रमे मेवा मिष्टान्न का खोला भराना

ग

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
गठोडा	२३१	कान का आभरण
गध्रप	२३७	गन्धर्व गवैये
गउण	१४८	गमन
गइ	५५	गति
गण्यउ	४५	गिना जाना

गय ५४ गति
गलिसाहै १४० गला पकड़कर
गाने १८९ ज्ञाने
गुणठाणे २११ गुणस्थानक
गुहिर १६९ गभीर
गूडी २३१ पतग
गुरुलहु पणउ ५४
गोठिसे १४१ संलग्न करेगा
गोरस १५६ दूध

घ

घरणी १६३ गृहिणी
घाइ ५४ घात
घाट १०७, १७७ न्यून
घातिसु १५१ डालू गा
घालइ १७३ डालती है
घासै १२८ घिसती है
घिरइ ३ लौटते हैं
घोल १३४ दही का गाढा घोल

च

चउ ५४, ५६ चार
चउतरइ १६३ चौंतरा
चउनाणी १८८ चार ज्ञान (मन पर्यवज्ञान) धारी
चउप १८६ चतुराई
चउरिंद्रि ५५ चौरिन्द्रिय चार इन्द्रिय वाले जीव
चउसाल १६२
चकरडी २२६ काठ की चकरी (खिलौना)
चटडा २२७ छात्र
चन्द्रोदय २३५ चन्द्रोवां, चांदनी
चरड १८५ चोर डाकू
चहि २१० चिता
चाख ३१ दृष्टिदोष, नजर
चाखिवउ १९४ चखना
चाम २११ चमडी
चीतराव्यउ २३० याद दिलाया
चादलउ १८४ चन्द्र
चादलउ २२५ तिलक
चाप्यउ ७५ दबाया
चावइ १६३ चाहता है
चिंतवी १६२ सोचकर
चीर १४५ वस्त्र ओढणा
चूक १७८ भूल
चौनाणी १३८, १६४ देखो— चउनाणी
चौवारे १४३, १५३
चोलणा ८ वेश

छ

छग	५४	छ
छछोहा	३, १३८, १९५	
छउगाला	१२९	तुर्रा कलगी वाला
छडी	२३९	छोड कर
छगवीस	५६	छब्बीस
छडी	२२०	एकेली हाथ मे लेकर चलने की पतली लकडी
छडु	२११	छोडु
छाक	१९७	नशा
छाका	१३९	
छाटणा	२३१	छीटे
छानउ	१७९	गुप्त
छाना	२३३	गुप्त
छीपइ	६	स्पर्श करे
छेतरइ	१६३	
छेतरइ	२२०	छलती है
छेवका	१४०	छिपकर
छेवट्टि	५५	छेवट्टा सस्थान
छेहलउ	६९	अ तिम
छोकरवाद	१४१, २०९	लडकपन
छोरूनी	१२९, १७८	टावर की, पुत्र की
छोलज्यो		छिलना

ज

जंपइ	१९१, २११	जल्पति कहता है
जगीस	१४५	आशा, इच्छा
जणस्यइ	१६९	जन्मेगी
जनेता	१६९	माता
जमची	१७१, १९२	यमकी
जमार	७१	जन्म, भव
जरवाफ	२३५, २३८	वस्त्र विशेष
जावतउ	१९४	यत्न
जामण	१३२	जन्म
जामण जाया	१४६	भाई
जामणि	७७,१६२,१६९,१७७	माता
जायउ	१८०	पुत्र (जन्म) दिया
जीमणी	१२९	दाहिनी
जीह	१४२	जिह्वा
जुया	५५	जुदा
जुहार	४२, ४३	नमस्कार
जूजूआ		भिन्न भिन्न
जूजूई	२५	भिन्न भिन्न
जूनी	१९६	पुरानी
जेवडइ	१६४	रस्सी
जेतला	१६६	जितना
जोडला	२३१	जोडी
जोवा	१७९	देखने के लिए
जोसी	१५४	ज्योतिषी
जोगे	१३८	योग्य

झ

झाक झमाल १८५ जगमगाहट
झाझउ २३८ बहुत सा
झाण ५७ ध्यान
झावउ ४२ झोला
झाल १२६, १६३, ज्वाला
झालि १४८, १५३, २२५ पकड कर
झीणी ३५ बारीक
झूलरइ ४२ झुंड

ट

टाढि १९९ ठढ
टीवी १७७ टीकी
टीसी १७७ नाक की डाडी

ठ

ठकुराला १२९ ठकुराई वाला
ठवी १९० रखी
ठार २०९ ठड
ठारै १२२ ठडी करना
ठावउ ९२ ठिकाने सर

ड

डगला १९१ कदम
डावी १२९ बायी
डिगल २०६ विचलित हो
डोकरउ १०३, २१२ वृद्ध
डोकर पण २०३ वृद्धावस्था
डोलइ १६९ कम्पित हो
डोलतो १६७ कापती
डोलायउ १६९ कम्पाने ने
डोलाव्यो १५६ विचलित
डोहला १८२ दोहद

ढ

ढाढी ७१ डोलती, घूमती फिरती
ढूकडो १६० निकट
ढूकै १४३ पहुचे

त

तत ९४ तत्र
तणउ २११ का
तहत्ति २३२ प्रमाण, तथास्तु
तहाविह ५६ तथाविध
तात ९३ निन्दा
तावड १८१ घूप
तावडि ७० घूप में
ताहरी १९६ तुम्हारी
तिग ५५ तीन
तिहुयण ५७ त्रिभुवन
तुम्हची १७८ तुम्हारीच
तुहारइ २३४ तुम्हारे आपके
तूठइ २२७ तुष्ट होती है
तुरिया १३२ घोडे
तुस १६५ लेश मात्र

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
तेडाविनइ	२२०	बुलाकर
तेडीजय	४२	बुलाना
तेय	५६	तेज
तेरमि	५७	तेरहवा
त्रिखा	१९१	प्यास
त्रिह	१६७	तीन
त्रेवडी	१९२	मान लिया
त्रेवडिस्यउ	१५	मानोगे
त्रेह	२०९	वर्षाके पानी से पडी दरार
त्रोटइ	१६६	टोटा

थ

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
थडिल ठाम	२०८	स्थडिल भूमि
थभाणा	१३० १६५	स्तभित हो गये
थट्ट	२३५	ठाठ
थकी	२३६	से
थडी	१८०	वच्चे को खडा होने का अभ्यास कराना
थाइसि	२४२	होऊ गा
थाकते	२४२	रहते
थाकी	१३८	थक गई
थापण	१५४	धरोहर
थापणि	३९	धरोहर
थास्यइ	१८२	होगी
थिवरा	४८	स्थविरो, वृद्ध साधु
थीणधी	५५	निद्रा
थोक	१८९	बहुतायत

द

शब्द	पृष्ठ	अर्थ
दसण आवरणी	५७	दर्शनावरणीय कर्म
दय दयकार	१६३, २०१	दान दिया जाता है
दरियाई	२३५, २३८	वस्त्र विशेष
दसग	५४	दस
दसूठण	२२५	जन्मसे दसवें दिन का उत्सव
दहीजइ	२११	जलती, दग्ध होती है
दाखउ	७, १९	दिखाओ
दाधी	१४८	दग्ध
दिखाडो	१३७	दिखाओ
दिणयर	५८	दिनकर
दियइ	१७७	देकर
दीठ	१२१	प्रति
दीठउ	७६	देखा
दीसइ	१६६	दीखता
दीह	१२९, १४२	दिन दिवस
दुक्कर	२११, २३०	दुष्कर
दुग	५४, ५५	दो
दुगधा	५६	घृणा दुर्गछा
दुनी	१६६	ससार

दुभग ५५ दुर्भाग्य
दूसर ५५ दुस्वर
दूजण १४५ दुर्जन
दूझती १६१ दूध देती हुई
दूहवी १४५, १८० दुख दिया
दूहव्यो १३६ कष्ट दिया
देखाड़ीयउ २३० दिखाया
देस ५४ देशविरति
देइसवंघ ५५ देश बघ
दोभागिणि १८० दुर्भागिनी
दोहिली १२२ दुर्लभ

ध

धण १५० धनस्त्रीय
धणी १६३ स्वामी
धरती १९१ पृथ्वी
धवरावइ १७७ दुग्धपान कराती है, पालन पोषण करती है
धवराव्यउ १७८ पालन पोषण किया
ध्रसकइ २१५ भय से
धसकाई १३७, १४४ छिटकाना
धाड १६६ डाका
धाडिसी १९४ डाकुओ का दल आवेगा
धाड़ि १९१ डाका
धावतउ १७७ स्तन पान करते
धावी १९६ धाय
धिंगडमाल १४६ जवरदस्त
धीज ७२, ८३ परीक्षा
धुरीन २६ धुरधर
धूजण (लागी १४४ कापने लगी
धैनड १२३ पुत्र
धोख १६५ स्तोक ढगला नमस्कार
धोटा ७१, २२६ पुत्र

न

नजीक १९० निकट
नफरइ २३८ डाकिया
नय २२९ नदी
नरग ५५ नरक
नाक नमणि २९ सिर नवाना
नाखतउ १९१ गिराता हूआ
नाखो १३१ डालो
नातरउ ७२ सम्बन्ध
नाणउ १९० मत लाओ (न आणउ)
नादेय ५५ अनादरणीय
नान्हडा १४१,२०३ बच्चा,पुत्र
नाम कम्मसस ५४ नाम कर्म का
नामणउ ४८ नमन करना
नालइ १६९ नाल द्वारा
नावइ १६८ न आवे

नाह	७८	नाथ
नाहलीयै	१५३	नाथ
निगमस्यै	१२३	गवावेगा
निद्दा	५६	निद्रा
निम्माण	५४	निर्माण
नियट	५४	निवृति
निरनिचार	५७	अतिचाररहित
निलउ	१६९	निलय, घर
निगरण	१७७	गालना
निहाण	१२२	निधान
नीड	७४	माला, घोसला
नीम	१३२, १९४	नियम, त्याग
नीय गोय	५५	नीच गोत्र
नीलक	२३५, २३८	वस्त्र विशेष
नीलज	२१०	निर्लज्ज
नीवडचा	१९४	समाप्त होने पर
नीआवि	१६४	
नीगमस्यइ	१६९	निर्गमन करेगी
नीगमी	१३२	विताई
नीठ	१२१	कठिनतासे
नीरती	१५७	
नेट	२७	अन्त मे
नेडै	१२९	निकट
नेव	७५	नल
नेवज	१७२	नैवेद्य

प

पचाली	१६५, २०५	पूतली
पचेटे	२२६	बालको का अेक खेल
पडियउ	२२६	पण्डित
पतै	१४४	पक्ति मे
पइसण	२१५	प्रवेश करना
पखइ	२३, १६२	बिना
पखालिवा	१९१	धोनेके लिए
पखै	१२६, १२९	बिना
पग	५४	पाव
पगल्ले	४०	पैदल
पच्चक्खाण	५७	प्रत्याख्यान, त्याग
पटोलइ	१९९	वस्त्र
पणनाणी	१८८	केवली
पडखइ	७६	प्रतीक्षा कर
पडख्या	१९६	प्रतीक्षा की
पडखु	१९८	प्रतीक्षा करू
पडखो	१४२, १४६	प्रतीक्षा करो
पडिवोह	५४	प्रतिबोधक
पडिलाभी	७२	प्रतिलाभ देकर
पडिलेही	२०८	प्रतिलेखना कर
पडिस्यइ	१६५	पडेगा
पढूर	१८३	प्रचुर
पढम	५४, ५५	प्रथम
पण	५४	पाच
पणवीस	५५	पचीस
पणिदिय	५६	पचेन्द्रिय

पतडै १५४ पचाग
पदठवणैं २३६ पदस्थापना
पनोता ११५
पमज्जणा ४३ प्रमार्जन
पभणइ १९२ कहता है
पमावस्यै १२३ गर्व करेगा
पयडि ५४, ५६ प्रकृति
पयला ५६ प्रचला
पयसरउ २४१ प्रवेशोत्सव
परघलतउ २१२ पिघलता हुआ
परचावइ ५० धैर्य देना
परचावू १२६ राजी करू
परजलइ २११ प्रज्वलित होता है
परजालि ७६ जला कर
परठि २८, १४३ १४४
परतउ ५०, २४२ परिचय चमत्कार
परतिखि १८२ प्रत्यक्ष
परतीठ २३८, २४० प्रतिष्ठा
परतीति २३२ परनिंदा,ईर्ष्या
पर पूठ १६३ पीठ पीछे
पर समय २३३ पराये शास्त्र
परसरइ ३४
परसेवइ २१२ पसीयना प्रस्वेद
पराभव्यउ १८७ हार कर
परियागति १२५ परपरागति
परीठ १२८ वृनात

परीसै १२२ परोसती है
पवाडइ ७ दिलाता है?
पसाइ १२० प्रसाद से
पहडइ ७२
पहडे २७, ७२
पहाण १७० प्रधान
पहिडे १६०
पहिराविसि २३४ पहनाऊ गी
पाखती १८५ पास, तरफ, निकट
पाखलि ६ पीछे
पागे १२९ पगडी
पाजइ ३४ पद्या सीढी
पाड २८, १२९ आभार उपकार
पाडइ १७७ हिसावमें डालना
पाडी पाइ ६९ पैरोमे लगाना
पाड़े १६४ मुहल्ले
पांडो १३७ नकालो
पांणीवल ६, २०, २१, २३' ४९, ७३, ८९, १३५ १४६
पातरइ १६३, १६७ धोखा खांना, धोखा देना
पातरउ १६५ प्रमाद, भूल
पातरै १५६ प्रमाद करता है
पातर्यो १५४ ठगा, प्रतारित किया
पातल १३४ पतली

पाथरी	९४, १३८	बिछाइ हुई
पाघरसी	१८४	
पांनहियाँ	२२५	पगरखियाँ
पारथिया	२७	प्रार्थना करने वाले
पालणडइ	१८०	पालने मे
पालव	१४८, १५३	पल्ला छोर
पावडिए	१४२, २०२	पगथिए
पिंड	२१०	शरीर
पुग्गल	५५	पुद्गल
पुरिमादानी	२४४	पुरुषो मे प्रधान
पूजतइ	२९	पूर्ति होते
पूरी (आसन)	१३५	(आसन) जमाकर
पेखि	२११	प्रेक्ष्य
पैंमण	१५६	प्रवेश करने
पोढ डि	१८०	सुला कर
पोरमि	१६४	प्रहर
पोलिये	१५६	द्वारप ल
पोसालइ	२३१	पौषधशाला
प्रजूजने	१२५	प्रयुक्त कर
प्रांशुक	१७८	पुत्र
प्रीसें	१३४	परोसे

फ

फिरकडी	२२६	काठकी चकरी, खिलौना
फीटी	२२०	नष्ट
फीटो	१४३	नष्ट होना उड जाना
फेडुँ	१८१	दूर करू
फोफलपान	२२५	पान सुपारी

ब

वडा	१४७	पकौडी
वडाला	१२९	महान
वलगाइ (अगुलिए)	१८०	अगुली पकड कर चलाना
वलिया	१७५	वलय,चूडियाँ
वहुअर	१३२	वहू
वाझडी	१४७, १५१	वन्ध्या
वाझणि	६९	बन्ध्या
वाथि	१५१	बाह
बापूकारया	१५०	ललकारने पर
बार	१५६	वार
वारणइ	१६६, १८१	द्वार पर
वारमि	५७	बारहवा
वारि	१८४	द्वार पर
वालूडा	२२५	बालक
बावलि	१७१	एक काटे-दार वृक्ष
बावीस	५५	बाईस
वाहर	१३७	सहाय

वि ति	५५	दो तीन
विमणा	१६५, १८४	दुगुणित
विमणो	१४०	दुगुना
वीज	१५४	विजली
वीजा वसु	१२	परवश
वीडो	१२१	जिम्मा लेना
वीहामणउ	२२	भयानक
वुगचइ	१०३	वस्त्र रखने का अलंकृत वेष्टन
वूठा	१३८, २३७	वरसा वृष्टि हुई
वू वन वाहिर	१९४	न चिल्लाहट न सहायता
वूटी	१२३, १६९	चली
वेखास	४८, १४५	विकल्प
वेड़ली	७३	नौका
वेवे	१९२, १९६	दोनो
वैसाणी	१२२	वैठाकर
भ		
भभेरयो	१३५	झकझोरना
भणी	१८२, २११	लिए प्रति
भमीनइ	२२९	भ्रमण कर
भयणा	५६	भजना
भलावइ	२४४	सौंपते हैं
भवण	५८	भवन

भले	२२७	अक्षर (स्वर व्यजन)
भाख्यउ	१७०	कहा
भागइ	५६	भाग मे
भाडउ	१६४	शुल्क, किराया
भामणइ	१८१	वलैयैंओ से
भामणि	१४३	भामिनी
भाखइ	५७	कहते है
भिलिजे	२८७	मिलना जुलना
भुई	७३	भूमि
भूय	१५२	भूमि
भूजाल	२३८	वडी भुजाओ वाला वीर
भेदाणो	१७०	
भेय	५४	भेद
भेव	१२६	भेद
भोलवी	२१९	भुलाई
म		
मत	९४	मत्र
मइ	५७	मैं
मउड	२३१	मुकुट
मडडउ	७४	विलम्ब से
मउमाल	१६२	ननिहाल
मग	५१	मणि
मछराल	१६३	गुमानी, जोरावर
मछराला	१२९	गुमानी
मजीठो	१४३	मजीठ का रग
मल्हपतउ	२२७	मस्ती से चलना गजगति चाल

मल्हावइ ५ दुलार करता है
मसजर २३५ वस्त्र विशेष
मसाकति ६, ७ परिश्रम,पारिश्रमिक
महिणउ २१० आक्षेप
महीयारी ६८ १५६ ग्वालिन
मा जणी १६३ मा जायी बहिन
माडणा २३१ चित्राकन
माडियउ २३२ प्रारभ किया
माणतउ १९२ भोगता
माणै १३२ भोगे
माथै १४४ ऊपर
मामणा २२६ मनमने वचन
मामणे वचने १७७ बच्चो की मनमनाती बोली तुतलाती
मारू घाला १२८ मारवाडी घाघरा
माल्हती ४३ घूमती हुई
मायीत १८१ माता पिता
मावीत १३८ माता पिता
माहण १८६ ब्राह्मण
माहोमाहि १८४ परस्पर
मिच्छात ५४, ५५ मिथ्यात्व
मिच्छत्ति ५५ मिथ्यात्व (गुणस्थान)
मिरी १७७ मिर्च
मीजी १४३, १७० मज्जा
मीटइ १६९ दृष्टि मे
मीटि १२, १८, १९, १३५ नजर दृष्टि
मीढता २४ तुलना करते
मीत १३६ मित्र
मीनति ७२ वीनति
मीस मोहनि ५५ मिश्र मोहनीय
मीसा ५४ मिश्र
मुक्खलडेह १७७ मुह से
मुखमल ३६, २३५ मखमल
मुछाल २३८ मूछों वाला मर्द
मुझि २२९ मुग्ध होकर
मुरकतउ १७७ मुस्कराता
मुरडइ २८ मुडता हे
मूआ १७४ मृतक
मूकइ १६९ छोडे
मूकस्यै १४५ भेजगा
मूकिसू २३४ रखूगा
मेलउ २२९ मिलाप
मेलवणी १६२ मिलान
मेलावडो १६० मिलाप
मेल्हाणी १६८ छोडनी
मेवासी ११ चरवाहा, डाकू
मोकला ३१ खुला पर्याप्त
मोभय १४३ बड़ी, ज्येष्ठा

मोसाल	१५९	ननिहाल
मोसालो	१४६	विवाहके समय ननिहाल से आने वाली सोगात रस्म

र

रढ माडि	१४८	जिद्द पकड़ कर
रढाला	११९	रणवीर
रखे	१८	मत, निपेधात्मक अव्यय
रचीजइ	५६	करना
रडइ	७०	रोता है
रणवावला	१६३	युद्धातुर
रमाडइ	२२५	खिलातीहै
रयणि	१८२	रात्रि
राई	१३५	दरार
राखडि	१७७	राखी बांधना
राचतो	१३८	रचता हुआ
राजवी	१६३	राजा
राडि	१९४	झगड़ा
राता	२१०	लाल
रामति	१४२	खेल
रामेकड़उ	१९५	खिलोना
रीव	१८७	चिल्लाहट
रूख	२२९	वृक्ष पर
रूड़ो	२३०	अच्छी
रूसणउ	९४	रुष्ट होना
रूहाड़ि	४३, १६८, १८०,	अभिलाषा
रेडुं	१७८, २०१	गिराऊं
रेडै	१३७	गिराती हैं
रोतउ	१७७; १८०	रोता हुआ
रोवाडयउ	१८०	रुलाया

ल

लगइ	२०१	पर्यन्त
लजाणउ	१७४	लज्जित हुआ
लडथडै	१३०	लड़खडाता हैं
लद्धउ	५७	प्राप्त किया
लवणिमा	१६८	लावण्य
लहवहयउ	२३४	अस्वस्थ हुआ
लाखीणउ	९४, १९०	लाखो के मूल्य वाला अमूल्य
लाजवी	१६३	लजाकर
लाड	१२९, १७७	प्यार
लीधउ	१६१	लिया
लाधी	१२२	पाई
लावन	१८९	लावण्य
लाहइ	२३८	(लाहण) बांटना
लुणियइ	५२	फसल पाना
लुणिवा	३२	फसल पानेके लिये
लूधी	१७९	लुब्धी
लूही	१२८	पौछकर
लेखइ	१७७	गणना

लेखणि	२२७	लेखनी
लेखवो	१४३	मानो
लेसालइ	२२७	लेखशाला पाठशाला
लोइ	२०१	खून
लोभाण	१६५	लुब्ध
लोयणे	१३५	नेत्रो से
लोह	५७	लोभ
लोही	१४७	रक्त
लोहडइ	१९९	लोह पर

व

व्यावर	१४७	प्रसूति
वउलइ	७, २३	बीतते हैं
वउलाऊ	६४	पहुचाने वाला
वच्छ	२३०	पुत्र, वत्स
वछर	५७	वत्सर
वट्ट तउ	५६	वर्त्तमान रहता हुआ
वजाडइ	२२६	वजाता है
वटाह	७	मार्ग
वण	५६	वर्ण
वध्यउ	१७९	बढा
वयण	२०५	वचन
वयसारि	२३१	बैठाकर
वरइ पडइ	१४, २२, १२३	सफल हो
वरनोला	२३१	वर या, दीक्षार्थी का भोज निमत्रण
वरय न पड़स्ये	१२५	सफल नही होगा
वरसइ	१६९	वर्षा करता है
वरियाम	१४७	बलवान
वरियाम	१४७	प्रसव की वेदना
वनती	१६३	वापिस
वसु	१२७	वशवर्त्ती
वहाडि	२३२	वहन कराके
वाँक	१७८	टेढ, भूल
वागे	१२९	चोगे की तरह का पुराना पहनाव
वागइ	२३०	वागे का
वागउ	२२४	वागा पौशाक
वागरी	६	शिकारी
वान	५०	मान इज्जत
वान	१३२	वर्ण
वारीजिती	१७९	मना करते हुए
वारू	१९०	उत्तम
वालभ	९३	वल्लभ
वावण	३२	बोने मे
वावरइ	२३७	खरचता है
वास	२३९	वासक्षेप
वाहर	१९१	सहायतार्थं
विगइ	१६४	विकृति,
विघटइ	१६९	विघटितहोना
विछिति	२४१	शोभा
विणजारा	९३	वाणिज्य करने वाला
विणठो	१३६	विनष्ट
विणसाडै	१४२	नष्ट करतेहैं

विणसी जाय २११ विनष्ट हो जाती है
विनडइ २२, ९० नमा लेता है, पराभव
विमासी २६,१५६ विमर्शकर
विरचइ १६९ विरत होना
विरूअउ २०९ विरूप
विलकतउ १७७ विलक्ष होता
विलूधउ ७० विलुब्ध
विलूधी ७८ विलुब्ध हुई
विलूरनइ २२० विदीर्ण करके
विवरयउ ५८ विवेचन किया
विहाण ५७ विधान
वीगताला १२१ व्यक्तिलशाली
वीटियउ ७४ वेष्टित, घेरा हुआ
वीजइ १८८ ढुलाते है, व्यजन करतेहै
वीर १४१ भाई
वीटयउ २०५ घिरा हुआ
वीरा १२६ भ्राता
वुज्जोय ५४ उद्योत
वूहा २३२ वहन किया
वेगलउ ६, ३६ शीघ्र
वेठि ७५ प्रतीक्षा
वेढ २३१ वेल, अगूठी
वेढि २०७ लडाई
वेत १८९ विधान माप
वेय ५५ वेद
वेयण ५६, ५५ वेदन, वेदनीय कर्म
वेवाही २२५ वैवाहिक सम्बन्धी सगे
वेसास २७, ७५, १६९ विश्वास

स

श्रव २३८ सर्व
सइमुख १७० स्वयमुख से, रूबरू
स घयण ५४ शरीर का सगटन
सघाडउ १६५ शृ घाटक, समुदाय
साघति २३८ साथ
सजलनउ ५७ सज्वलन कषाय
सजुउ ५८ सयुक्त
सजोडि १८५ जोडी
सथुउ ५८ सस्तुत, सस्तवना की
सपजइ १९१ समाप्त हो
सपेखि १२० देखकर
ससो १५७ सशय
सङगू ३६ साथी
सइवसि २११ स्ववश
सकज १४५ समर्थ
सकजउ १८१ समर्थ
सखरउ २३६ सुन्दर,अच्छा
सघाडै १५४ देखो सघाडउ
सनपीढिया १६७ परम्परागत
सतसट्ठि ५४ सडसठ
समउ २२५ समय
सम्म ५५ सम्यक्त्व
समापू १२७ दू,समर्पितकरू
समापउ १७८ दो

शब्द	पृष्ठ	अर्थ	शब्द	पृष्ठ	अर्थ
सीझस्यइ	७०	सिद्ध होगा	हाउ	१८०	हौआ
सुकयत्थ	१५८	सुकृतार्थ	हाच विछाइ	१४८	अचल पसारकर
सुखडी	१७७, २२७	मेवा मिष्ठान्न	हत्थइ	१७७	हाथ को
सुखम	५५	सूक्ष्म	हाथाल	२३८	शक्तिशाली लबे हाथ वाला
सुगाल	२३७	सुकाल	हाम	२२, १२७ १८४	इच्छा स्वीकृति
सुरगइ	५५	देव गति	हालइ	१७३	चलता है
सुहम	५४	सूक्ष्म	हालरियइ	१८०	लोरी
सुहणा	२०१	स्वप्न	हालाहल	१६९	जहर
सुहिणो	१३०	स्वप्न	हालरो	१५१, १७७	लोरी
सूग	१५५	घृणा	हालिरउ	६९	पुत्र
सूड	३९	सूदन	हिम	५५	अब
सूयइ	१७७	सोती है	हिव	२३०	अब
सूल	१४१	समाधान	हिवइ	२१०	अब
सूहव	२३५	सुहागिनी	हिवणा	७८	अब
सेहरो	१३८	मुकुट	हुडा	५५	हुडिक सस्थान
सैवसि	१३४	अपने वश	हुकलइ	२३१	बाजा
सोवन	२३८	स्वर्ण	हुण	५५	ढग
सोस	१८	चिन्ता	हुलरावती	१७७	बच्चे को लोरी देकर खेलाती
सोह	१८१	शोभा	हेज	८, १८, ३४, १३६	स्नेह, प्रेम
सोहग	५४	सौभाग्य	हेठि	७५	नीचे
ह			हेलइ	५२, १६३	सहज
हटकइ	१७७	डाटती है	हेलि	१९८, २१९	सहज मे
हटकण री	१७७	डाटने की	होडि	१८२	तुलना
हटकी	१४५, १५४	डाटी फटकारी			
हमाल	१२७	मजदूर			
हवासी	२४१	ढग, अच्छा			
हसीय गुदारै	१४८	हसकर टाल देना			

श्री जिनराज सूरि प्रयुक्त देशी सूची

जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि का शुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१८	या नउ	स्यानउ
१५	१३	ईनरीझ	न रीझइ
३०	११	झलदेव	वलदेव
३०	२२	अनुस रइ	अनुसारइ
३१	६	विमलाचज	विमलाचल
३३	१६	जाजियउ	जागियउ
३३	२१	वाखरा	वखाण
३४	१३	आखड़ी	आखड़ी
४२	२	हूं	हुँ
४७	१४	वौचि	वीचि
४८	४	जगदील	जगदीस
४८	७	छोदिवा	छेदिवा
५०	१२	अनरेड़ा	अनेरड़ा
५२	११	सुझ	मुझ
५८	६	भय	भव
६२	२१	अघ	अघ
६३	७	उइसइ	उवइसइ
६६	१४	एफ	एक
६७	८	तउतउ	तइं तउ
६६	१२	घरि	घरि
७१	६	पघलइ	पघलइ
७२	१४	घोट	घोटा
७४	२२	घाल्या	घाल्या

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	२२	साभली	साँभली
८४	१०	वयुं	क्युं
८५	२१	राज धार होत मन मिलइ ...... अमूणउ	राज जीव होत अधीर मिलइ सीयण मुणउ
८६	१८	आण	आगइ आण
८८	६	षति	पति

९१ विशेष.--कूड कपट करत जिन कारण, सो परिवार विरग ।
स्वारथ विणु सब छेह दिखावत, तरुवर जेम विहग ॥४॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९४	१४	ने	जे
९४	१४	उखार	उरबार
१०२	८	कउन	कोउ
१०४	२१	करि	करिहु
१०६	६	पइमज नृथ इजाजित	प्रेम जहर तइ जाजत
१०६	१२	करउ के	करउगे
१०६	१३	रहत	कहत
११०	२	निकस	निकसत
१११	७	अच	अउ
११७	८	जिभ	निज
११७	२३	नगर	नरक
१२०	१३	पते न्याय	पोते न्याय
१२०	२४	कहियं विर	कइयइ वीर
१२१	४	५-६ ठी गाथाएं डबल आ गईं हैं	
१२१	६	अलिवि	अलवि
१२१	१३	,जाजगृह	राजगृह
१२४	८	दाजीयं	दीजियं
१२६	४	भी भीनो	भीनो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२६	४	दिन दिन दिन	दिन दिन
१३१	१८	नथ	नाथ
१३२	२२	जाचंद	जाचंध
१३२	२३	जिस	जिसा
१३४	६	पप हिरे हिलो	पहिरं पहिलो
१३५	६	रग	रग
१३६	५	पतग	पतंग
१४०	६	सजम	संजम
१४८	२७	डलाणो	डोलाणो
१५२	२	लोख	लाख
१५९	८	नदन	नंदन
१६५	६	मादक	मोदक
१६६	२०	घरणी	घरणी
१६८	३	ध्रानोपम	अनोपम
१६८	१६	आबिला	आँविली
१६९	२	षिमाणसण	निमासण
१७०	७	हुवरइ	हुवइ
१७२	१२	हिरइ	हिवइ
१७३	२	हयउ	हियउ
१७४	९	घिरतो	घिरती
१७८	८	कह उस्युं	कहउ स्युं
१८१	१०	मोटु	मेटुं
१८१		घू घलउलो	घू घलउ
१८४		रण	रिण
१८७	७	ब्यास	व्यास
१८८	१०	प्रकार	प्राकारो
१८८	१५	भाम लड	भाम डल
१८८	१६	प्रमु	प्रभुं
१८८	१६	असोको	असोको

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८८	२२	बह	बहु
१९०	१	थास्यइ	थास्यइ
१९१	१२	दसड गला	दस डगला
१९१	१२	व्हुचावासी	पहूँचावसी
१९३	१०	ऊबरीय	ऊबरथा
१९४	९	निरा तिचारी	निरतिचार
१९४	१८	सापोतउ	सापतउ
१९७	४	पिणाम	पिण मां
१९७	१	वो	वे
१९९	१८	सयम	संयम
२०२	६	पोरजन	परिजन
२०२	१४	पडिथइ	पड़ियइ
२०४	५	घणा	घणा
२०४	१५	सरूं	सारूं
२०५	१७	सोमाप	सोमा
२०७	१४	रिछडतइ	विछड़तइ
२०८	७	भूल	भूल
२१२	७	अम्यंगन	अभ्यंगन
२१२	८	उतकठा	उत्कंठा
२१२	१३	घणी	घणी
२१२	१६	घणुं	घणुं
२१३	२१	घणाउ	घणाउ
२१३	७	सब	सर्व
२१५	५	पहसण	पइसण
२१७	१०	गच्च	गच्छ
२१७	२०	चितुष्पदिका	चतुष्पदिका
२१७	२१	इलोक	श्लोक
२१८	४	मभ	मुभ
२१८	८	स घ भकुंड	संघ कुंड

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१८	११	रइणि	राइणि
२१८	१७	कइइ	करइ
२१८	१९	तेला वडी	तलावडी
२२०	१७	डोलइवा	डोलाइवा
२२०	१७	क	का
२२१	९	घाणी	वाणी
२२५	६	मेलि	मेलि
२२५	९	गहगइता	गड़गहता
२२५	१८	कठइ	कठइ
२२६	५	वचत वदन	वचन वदत
२२८	१०	भवमतां	भमतां
२२९	९	दइ	दह
२३३	३	कपिप्या	कप्पिया
२३३	११	दस श्रु तखव	दसाश्रु तखंध
२३३	१९	वादि	वादी
२३५	१	वत	सवत
२३५	१९	अघवारइ	अवधारइ
२३८	६	ध्रम	ध्रम
२३८	२५	सं घाति	स घाति
२३९	१३	व तुपाल	वस्तुपाल
२४०	२०	घणाउ	घणाउ
२४०	२४	सिधु	सिंधु
२४१	१०	घांघणी	घं घाणी
२४१	५२	समरपा	समरथा
२४४	२	अभिअरण	भविअरण
२४४	७	कारिज	जे कारिज